सर्वोत्तम
रूसी साहित्य
पुस्तकमाला

Тургеневъ

Иван Тургенев

ОТЦЫ

Роман

ИЗДАТЕЛЬСТВО ЛИТЕРАТУРЫ НА ИНОСТРАННЫХ ЯЗЫКАХ

МОСКВА

इवान तुर्गेनेव

पिता और पुत्र
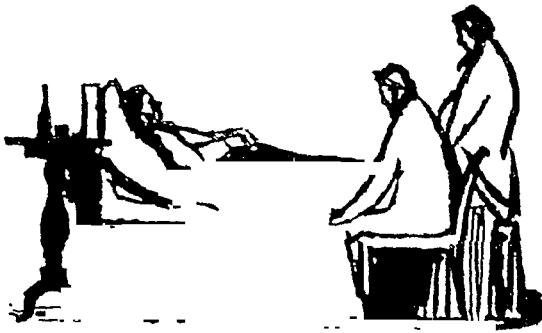
उपन्यास

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह

मास्को

१

"क्यों प्योत्र, अभी भी उनका कोई चिन्ह नजर नहीं आता?"

चालीस से कुछ ऊपर आयु के एक सज्जन ने जो धूसर कोट और चारखाने की पतलून पहने थे, 'क' सड़क पर स्थित एक छोटी-सी देहाती सराय में से नंगे सिर बाहर निकल चौखट पर पांव रखते हुए अपने नौकर से पूछा, जिसके गाल गोलमटोल, ठोड़ी सफ़ेदी लिए और आंखें चमक-विहीन थीं। यह बीस मई सन् १८५६ की बात है।

नौकर अपने समूचे हाव-भाव से—चिकने-चुपड़े और पट्टियां-कढ़े बालों, कान में एक फ़ीरोज़ी मुरकी और शाइस्ता चाल-ढाल से, एकदम

नए साल में इन्ही पीढ़ी की उपज मालूम होता था। सड़क पर उसने एक नज़र डाली और जवाब दिया

नहीं मालिक, अभी तो कुछ नज़र नहीं आता।

कुछ भी नज़र नहीं आता? मालिक ने फिर दोहराया।

नहीं मालिक।

उसाँस छोड़कर मालिक एक छोटी-सी बेंच पर बैठ गए। पाँवों को उन्होंने समेट लिया और उदास भाव से अपने इर्द गिर्द नज़र डालने लगे।

आइए, इस बीच आपसे उनका परिचय करा दें।

निकोलाई पेत्रोविच किरसानोव उनका नाम है। सराय से दस मील दूर दो सौ प्राणियों से युक्त एक भरी-पूरी जागीर के वह मालिक हैं, अथवा जैसा कि वह खुद कहना पसंद करते हैं पाँच हज़ार एकड़ की उनके पास जायदाद है। काश्तकारी के अधिकार देकर अपने किसानों को उन्होंने मुक्त कर दिया है और अपना एक निजी फार्म वह अब चलाते हैं। उनके पिता एक फौजी जनरल थे और सन १८१२ की लड़ाई में लड़ चुके थे। उजड्ड और अनगढ़ होते हुए भी वह हृदय के अच्छे थे। सारी उम्र वर्दी कसे रहे। पहले ब्रिगेड का कमान किया फिर डिवीजन का। हमेशा सूबों में ही रहे और उनके ओहदे ने उन्हें महत्वपूर्ण बनाए रखा। अपने भाई पावेल की भाँति, जिनसे परिचित होने का अवसर आपको जब-तब मिलता रहेगा, निकोलाई पेत्रोविच भी दक्खिनी रूस में पैदा हुए थे। चौदह वर्ष की आयु तक घर पर ही उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई। सस्ते मास्टरों, शेखी बघारनेवाले और जी हज़ूरी करनेवाले सहकारियों तथा रेजीमेण्ट और स्टाफ के लोगों के बीच उनका जीवन बीतता। उनकी माँ कोल्याजिन परिवार की लड़की थी। कुमारेपन में उसका नाम अगाथी था और जनरल की पत्नी बनने पर अगाफोक्लेया कुज़्मीनिश्ना किरसानोवा कहलाने लगी। वह उन भली स्त्रियों में से थी

जो घरेलू ही नही, वल्कि दफ्तर के मामलों का भी सूत्र-संचालन करती है। वह खूव सजधज से रहती, – भड़कीली टोपियां और सरसराते रेशम के कपड़े पहनती, गिरजे में सवसे पहले क्रास के पास पहुंचती, जोर से और खूव जल्दी जल्दी वोलती, रोज सुवह बच्चों से अपना हाथ चुमवाती और रात को आशीर्वाद देकर उन्हें सुलाती। थोड़े में यह कि जीवन सुख से वीत रहा था। जेनरल का बेटा होने के नाते, अपने भाई पावेल की भांति, निकोलाई पेत्रोविच को भी फ़ौज में भेजने का निश्चय किया गया था, हालांकि साहस से उसका दूर का भी वास्ता नही था, यहां तक कि लोग उसे दव्वू और कायर कहते थे। लेकिन ठीक उसी दिन जवकि उसे फ़ौजी कमीशन मिलने की खवर आई, उसने अपनी टांग तोड़ डाली, दो महीने तक चारपाई को सेता रहा और अच्छा होने पर भी, जीवन भर के लिए, हल्का-सा लंगड़ापन उसके पांव में रह गया। तंग आकर पिता ने उसे फ़ौजी बनाने की उम्मीद छोड़ दी और उसे सिविल सर्विस में धकेलने का वीड़ा उठाया। अठारह वर्ष का होते ही उसे पीतर्सवर्ग ले जाकर विश्वविद्यालय में भर्ती करा दिया। उसका भाई पावेल, लगभग इसी समय, गारद-सेना का अफ़सर नियुक्त हुआ। दोनों युवक, अपने मामा इल्या कोल्याजिन की दूर की निगरानी में, जो एक वड़ा अफ़सर था, एक साथ रहने लगे। लड़कों का वहां वन्दोवस्त कर पिता अपने डिवीजन और पत्नी के पास लौट आए। वीच वीच में, खाकी कागज के तावों में, खूव वड़े वड़े अक्षरों और क्लर्को-जैसी लिखावट में, अपने लड़कों के नाम वह खरीते भेजते जिनके अन्त में – वहुत ही सजावट और शान के साथ – वह अपना नाम टांकते: "प्योत्र किरसानोव, मेजर जेनरल"। १८३५ में निकोलाई पेत्रोविच ने विश्वविद्यालय से अपनी डिग्री प्राप्त की। उसी साल, एक दुर्भाग्यपूर्ण मुआइने के फलस्वरूप, जेनरल किरसानोव को अपनी नौकरी से अवकाश

जाना पड़ा और अपनी पत्नी के साथ वह भी सन्त-पीतरबर्ग चले आए। सदोवस्की उद्यान के पास उन्होंने मकान लिया और एक अंग्रेज़ी क्लब के वह सदस्य बन गए। लेकिन तभी अचानक पक्षाघात का शिकार हो वह इस दुनिया से चल बसे। इसके शीघ्र बाद ही अनास्तासिया कुस्मीनिश्ना ने भी उनका अनुगमन किया। राजधानी में एकाकी और सूने जीवन को वह बरदाश्त न कर सकी, विरक्त जीवन की भयानकता ने उसकी कमर तोड़ दी। इस बीच निकोलाई पेत्रोविच, अपने माता पिता के जीवन-काल में ही अपने भूतपूर्व मकान-मालिक तथा सरकारी अफसर प्रेपोलोवेन्स्की की लड़की के प्रेम में फंस गया। इससे उनके हृदय को काफी चोट पहुंची। वह एक सुन्दर और तथाकथित अग्रगामी विचारों की लड़की थी—पत्रों में प्रकाशित ज्ञान विज्ञान सम्बन्धी भारी भरकम लेख पढ़ा करती थी। मातम की अवधि पूरी होते ही निकोलाई ने उससे विवाह कर लिया, प्रतिपालन मंत्रालय की उस नौकरी को उसने छोड़ दिया जिसे अपने पिता के प्रभाव से उसने प्राप्त किया था, और अपनी माशा के साथ लोकान्तर आनन्द में रम गया। पहले उसने जंगल विद्या भवन के निकट एक छोटे से बंगले में अपना मधु-स्वर्ग बसाया, फिर नगर में एक छोटा-सा सुन्दर फ्लैट लिया जिसका ज़ीना खूब साफ़-सुथरा और ड्राइंग रूम खूब शीतल था। इसके बाद उसने देहात की ओर रुख किया और स्थायी रूप से वहीं बस गया। यहां, कुछ ही दिन बाद, उसके लड़के अर्कादी ने जन्म लिया। युवा दम्पति के दिन बहुत ही सुख से बीत रहे थे। न कोई विघ्न था, न बाधा। दोनों, करीब करीब, एक-दूसरे के साथ इस तरह जुड़े थे कि कभी अलग न होते—वे एक साथ पढ़ते, एक साथ पियानो बजाते और साथ साथ गाते। वह फुलवाड़ी को सींचती-बोती, मुर्गीखाने की देखभाल करती। पति जब-तब शिकार के लिए जाते और जागीर के मामलों को सुलझाते।

सुख के इसी उतार-चढ़ाव विहीन वातावरण में आरकादी अनवरत बढ़ और बड़ा हो रहा था। दस वर्ष यों ही सपने की भांति गुजर गए। सन् १८४७ में किरसानोव की पत्नी चल बसी। इस आघात ने उन्हें बेदम कर दिया। कुछ ही सप्ताह के भीतर उनके बाल सफ़ेद हो गए। जी को बहलाने के लिए वह विदेश जानेवाले ही थे कि सन् १८४८ बीच में आ गया ... उन्हे फिर अपने देहात लौटना पड़ा और बहुत अधिक लम्बी अवधि तक निष्क्रिय रहने के बाद अपनी जागीर का सुधार करने का काम उन्होंने अपने हाथों में उठाया। १८५५ में अपने बेटे को विश्वविद्यालय में भर्ती कराने वह पीतर्सबर्ग गए और वहां तीन जाड़े उसके साथ बिताए। वह कभी बाहर न निकलते, सदैव आरकादी के युवा मित्रों से जान-पहचान बढ़ाने का प्रयत्न करते। पिछले जाड़ों में वह उसके पास नही जा सके और इसी लिए, सन् १८५९ के मई के महीने में, हम उन्हें अपने लड़के की प्रतीक्षा करते देखते हैं। उनके बाल अब एकदम पक चुके हैं, काया भी स्थूल हो गई है और कंधे कुछ झुक आए हैं। लड़का अपनी डिग्री लेकर घर लौट रहा है, ठीक वैसे ही जैसे कभी वह अपनी डिग्री लेकर लौटे थे।

नौकर, अदब के ख़याल से या शायद इसलिए कि अपने मालिक की नजरों से वह बचना चाहता था, फाटक की ओर खिसक गया और वहां पहुंचकर उसने अपना पाइप सुलगाया। निकोलाई पेत्रोविच सिर नीचा किए जीर्ण-शीर्ण पैड़ियों की ओर ताक रहे थे। मुर्गी का एक अतिपुष्ट चूजा, अपने पीले पंजों से जोरों की आवाज करता, पोर्च की पैड़ियों को नाप रहा था। मुंडेर पर, बहुत ही चुपचाप, एक मैली-कुचैली बिल्ली बैठी थी और चूजे की ओर वैर भाव से ताक रही थी। सूरज आग उगल रहा था और गलियारे की धुंधली परछाइयों में से राई की गर्म रोटियों की महक आ रही थी। निकोलाई पेत्रोविच तन्मयता में खो गए।

मेरा बच्चा ... विश्वविद्यालय का स्नातक ... मेरा आरखाशा

हर फेर कर यही बात उनके दिमाग में चक्कर लगा रही थी। उन्होंने प्रयत्न किया कि कुछ और सोचें, लेकिन अन्ततोगत्वा फिर उन्हीं विचारों पर आकर लौट आते। उन्होंने अपनी मृत पत्नी की याद को ताजा किया। काश कि वह आज के दिन देखने के लिए जीवित रहती। उदास भाव में उन्होंने फिर उसाँस छोड़ी।

एक मोटा-ताजा बजनर उड़कर सड़क पर उतरा और पानी पीने के लिए कुएँ के निकट एक गड्ढे की ओर बढ़ चला। निकोलाई पत्रोविच इस दृश्य को देखने में व्यस्त थे। तभी उन्हें निकट आती गाड़ी के पहियों की आवाज सुनाई दी।

मालूम होता है कि वे आ रहे हैं, मालिक! फाटक की ओर से प्रकट होते हुए नौकर ने कहा।

निकोलाई पत्रोविच उछलकर खड़े हो गए और सड़क की ओर उन्होंने नजर डाली। एक तरन्तास आती दिखाई दी जिसमें डाक के तीन घोड़े जुते थे। फिर विश्वविद्यालय की टोपी के नीचे पीत की झलक दिखाई दी और प्रिय चेहरे की परिचित रेखाएँ उभरने लगीं।

आरकाशा, आरकाशा! अपनी बाँहों को हिलाते और चिल्लाते किरसानोव दौड़कर आगे बढ़ चले। कुछ ही क्षण बाद उनके होंठ युवा स्नातक के दाढ़ी-विहीन, धूल-धूसरित, तप्त ताम्र-से गालों का चुम्बन कर रहे थे।

२

आह, पिताजी! अपने पिता के दुलार के जवाब में प्रसन्नता से दमकते हुए आरकादी ने सफर से कुछ ममरसी, किन्तु किशोर-सुलभ और ताजगी भरी आवाज में कहा, मुझे जरा धूल तो झाड़ लेने दीजिए। देखिए न, मैंने आपको भी कितना गन्दा बना दिया है।

"ठीक है, ठीक है," सुखद मुसकान के साथ निकोलाई पेत्रोविच ने कहा और अपने तथा अपने लड़के के कोट के कालर से धूल को झटकाते और एक डग पीछे हट उसे देखते हुए बोले, "जरा देखें तो, कैसा लग रहा है तू!" फिर उतावली से सराय की ओर बढ़ चले, बराबर यह कहते हुए, "इधर भाई, इधर। जल्दी ही हमें घर भी पहुंचना है।"

निकोलाई पेत्रोविच अपने पुत्र से भी अधिक विह्वल हो उठे थे। ऐसा मालूम होता था जैसे वह सकपका और घबरा गए हों। आरकादी ने उन्हें टोका।

"पिता," उसने कहा, "यह देखो, जरा इनसे भी तो मिल लो। यह है मेरे अच्छे मित्र बजारोव। अपने पत्रों में अक्सर इन्ही का मै जिक्र किया करता था। यह इनकी कृपा है जो इन्होने फिलहाल हमारे मेहमान होना स्वीकार किया है।"

निकोलाई पेत्रोविच झट मुड़े और गाड़ी से अभी-अभी उतरकर बाहर आए लम्बे कद के एक आदमी के निकट पहुंचे जो फुदनेदार सफ़री कोट पहने था। उसके लाल हाथ को–जिसमें वह दस्ताने नही पहने था और जिसे वह तुरत आगे नहीं बढ़ा सका–अपने हाथ में लेकर बड़ी हार्दिकता से उन्होंने दबाया।

"हार्दिक खुशी हुई आपसे मिलकर," उन्होंने कहा, "बड़ी कृपा की जो यहां आए। मै कृतज्ञ हूं। आशा है ... भला क्या नाम है आपका–अपना पूरा नाम बताइएगा।"

"येवगेनी वसीलियेविच," अपने कोट का कालर उलटते हुए, अलस किन्तु परुष आवाज में, बजारोव ने कहा। निकोलाई पेत्रोविच को अब उसका पूरा चेहरा दिखाई दिया। लम्बा और दुबला। चौड़ा ललाट। नाक ऊपर से चौड़ी और सिरे पर पतली। थोड़ा हरापन लिए बड़ी बड़ी

आखें। नीचे को झुका हुआ रंगीन गलमुच्छ। स्थिर मुसकान से दीप्त चेहरा, आत्म विश्वास और प्रखर बुद्धि की झलक लिए।

हां तो प्रिय यवगेनी वसील्येविच, निकोलाई पेत्रोविच कह रहा था मुझे उम्मीद है कि हम लोगों के साथ तुम्हारा जी नहीं उकताएगा।

बजारोव के होंठ कुछ हिलकर रह गए। उसने जवाब में कुछ नहीं कहा। अपनी टोपी को थोड़ा-सा उठाया, और बस। भूरे रंग के लम्बे और घने बाल उसकी लम्बी-चौड़ी खोपड़ी के उबड़-खाबड़पन को छिपाने में असमर्थ थे।

'क्या तुम्हारी क्या राय है, आरकादी?" अपने लड़के की ओर मुड़ते हुए निकोलाई पत्रोविच ने फिर कहना शुरू किया। "घोड़ों को जोतवाकर अभी सीधे ही चल चलें या कुछ देर सुस्ताना चाहोगे?

घोड़े जोतवा लो। घर चलकर ही दम लेंगे।"

'बहुत ठीक बहुत ठीक," पिता ने हामी भरी, "अरे ओ प्योत्र, कहां मर गया? जरा फुर्ती से काम लो, मेरे भाई! जल्दी करो।'

प्योत्र ने—आखिर नये नमूने का नौकर तो वह था ही—छोटे मालिक का हाथ चूमकर नहीं, बल्कि दूर से ही केवल सिर झुकाकर, अभिवादन किया था। मालिक का आदेश सुनकर वह एक बार फिर फाटक के पार ओझल हो गया।

सराय मालिक की बीवी इस बीच लोहे की डोलची में पानी ले आई थी और आरकादी अपना गला तर कर रहा था। बजारोव अपना पाइप सुलगाकर गाड़ीवान के पास पहुंच गया था जो घोड़ों की जोत उतार रहा था।

"मैं गाड़ी ले आया था," निकोलाई पेत्रोविच ने व्यग्र भाव से कहा। "तुम्हारी तरन्तास के लिए भी तीन सुस्ताये हुये घोड़ों का प्रबंध हो जाएगा। लेकिन मेरी गाड़ी में केवल दो के बैठन की जगह है। कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम्हारे मित्र ..."

"वह तरन्तास मे चला चलेगा," दबे हुए स्वर मे आरकादी ने बीच में ही कहा। "उसके साथ इतना तकल्लुफ़ बरतने की कोई आवश्यकता नहीं। वह बहुत ही बढ़िया आदमी है। एकदम सरल... तुम्हें खुद पता चल जाएगा।"

निकोलाई पेत्रोविच का कोचवान घोड़े ले आया।

"हां तो अब जरा चेतन हो जाओ, लम्ब-दाढ़ी!" बजारोव ने अपनी भाड़ा-गाड़ी के कोचवान से कहा।

"कुछ सुना मित्या?" गाड़ीवान के साथी ने जो भेड़ की खाल के अपने कोट की जेबों में हाथ खोंसे पास ही खड़ा था चिल्लाकर कहा। "ज़रा देख तो इन साहब ने क्या नाम रखा है तेरा,—लम्ब-दाढ़ी। सच, बहुत ही ठीक नाम है!"

मित्या ने केवल सिर हिलाया और गर्म हुए बम पर से घोड़े की रास खींची।

"हां तो अब तेजी से लपक चलो," निकोलाई पेत्रोविच न चिल्लाकर कहा। "देखें, तुम में से कौन कितने इनाम का हक़दार होता है!"

देखते न देखते घोड़े जुत गए। पिता और पुत्र गाड़ी में सवार हुए। प्योत्र- बोक्स पर जा बैठा। बजारोव लपककर तरन्तास में सवार हुआ और चमड़े की गुदगुदी गद्दी में धंस गया। दोनों गाड़ियां चल पड़ीं।

हाँ तो तुम आ गए कभी आरकादी के कंधों और कभी उसके घुटनों को स्पर्श करते हुए निकोलाई पेत्रोविच कह रहे थे, विश्वविद्यालय की डिग्री ले ली आखिर तुम अपने घर आ गए!

चाचा कैसे हैं अच्छी तरह तो हैं न? आरकादी ने पूछा। बावजूद इसके कि उसका हृदय एकदम सच्ची—बालकों जैसी—खुशी से छलछला रहा था वह बातचीत के सिलसिले को भावुकता से मुक्त, यथार्थ चीजों की ओर मोड़ने के लिए उत्सुक था।

अच्छी तरह हैं। तुमसे मिलने वह भी मेरे साथ आना चाहते थे लेकिन फिर किसी वजह से इरादा बदल दिया।

क्या तुम्हें बहुत राह देखना पड़ा? आरकादी ने पूछा।

ओह और कुछ नहीं तो करीब पाँच घंटे तो हो ही गए होंगे!

ओह मेरे दद्दा तुम कितने अच्छे हो!

अनायास ही आरकादी अपने पिता की ओर मुड़ा और हार्दिकता के साथ गालों पर उन्हें चुम्मा दिया। निकोलाई पेत्रोविच का चेहरा गुलाबी हँसी में खिल गया।

यह देखो कितना शानदार घोड़ा मैंने तुम्हारे लिए लिया है उन्होंने कहा। देखकर खुश हो जाओगे। और तुम्हारे कमरे में मैंने नयी अबरी चढ़वा दी है।

और बज़ारोव? उसके लिए भी तो कमरा चाहिए न?

उसे भी मिल जाएगा। चिन्ता न करो।

दद्दा उसका पूरा ख्याल रखना। मैं कह नहीं सकता कि उसकी मित्रता को मैं कितना अधिक मूल्यवान समझता हूँ।

क्या तुम्हारी उससे पुरानी जान-पहचान है?

"नहीं, ऐसी बहुत पुरानी तो नही।"

"यही मैं भी सोचता था। पिछले जाड़ों में जब मैं तुम्हारे पास गया था तो उसे देखने का मौक़ा नहीं मिला। उसने कौन-सा विषय लिया है?"

"पदार्थ-विज्ञान। यों वह हरफ़न मौला है। उसका इरादा अगले साल डाक्टर की डिग्री लेने का है।"

"तो यह कहो कि वह चिकित्सा-विज्ञान का अध्ययन कर रहा है," निकोलाई पेत्रोविच ने कहा और यह कहकर वह चुप हो गए। इसके बाद, तुरत ही, अपने हाथ से आगे दिखाते हुए बोले, "उधर देखो प्योत्र, ये हमारे ही किसान हैं न?"

प्योत्र ने उस दिशा में देखा जिधर मालिक ने इशारा किया था। संकरी देहाती गली में से अनेक गाड़ियां हचकोले खाती लपकी जा रही थी। बेलगाम घोड़े उन्हें खींच रहे थे। हर गाड़ी में एक, या अधिक से अधिक दो, किसान बैठे थे। भेड़ की खाल के अपने कोटों के पल्ले उन्होंने खोल रखे थे।

"हां मालिक," प्योत्र ने जवाब दिया।

"ये कहां जा रहे है? नगर की ओर?"

"ऐसा ही मालूम होता है। बहुत सम्भव है, दारूघर जा रहे हों!" प्योत्र ने भौह चढ़ाते और कोचवान की ओर झुकते हुए कहा, मानो उसे भी वह साक्षी बनने के लिए उसका रहा हो। लेकिन वह हिला तक नही। वह पुरानी छाप का आदमी था और नये विचारों को अपने से दूर ही रखता था।

"इस साल इन किसानों ने बुरी तरह तंग कर डाला है," अपने पुत्र की ओर मुड़ते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने कहना शुरू किया। "अपना लगान तक नही देते। न उन्हें उठाए बनता है, न रखते!"

"क्या तुम अपने खेत-मजूरों से सन्तुष्ट हो?"

"हां," निकोलाई पेत्रोविच ने बुदबुदाते हुए कहा। "परेशानी यही है कि उन्हें भी भीतर ही भीतर गड़बड़ाया जा रहा है। इतने दिन हो गए, लेकिन ढंग से काम में जुटने की उन्हें आदत नहीं पड़ी। औज़ार खराब कर देते हैं। फिर भी यह मानना पड़ेगा कि उन्होंने जोताई बुरी नहीं की। लगता है, अन्त में सब ठीक हो जाएगा। लेकिन खेती-बारी में तुम्हारी भला अब क्या दिलचस्पी हो सकती है? क्या, ठीक है न?"

"अपने यहां कोई सायादार जगह नहीं है," पिता के आखिरी प्रश्न का कोई जवाब न दे आरकादी ने कहा। "यह बात बुरी तरह अखरती है।"

"उत्तर की ओर, बाल्कनी के ऊपर, मैंने एक बड़ा-सा सायबान तनवा दिया है," निकोलाई पेत्रोविच ने कहा। "अब हम खुले में भोजन कर सकते हैं।"

"यह तो कुछ ज़रूरत से ज्यादा बंगलेनुमा हो गया... लेकिन कोई हर्ज नहीं। ओह, यहां की हवा कितनी प्यारी है! कितनी भीनी सुगंध है! सच, यहां जैसी महक कहीं ढूंढे नहीं मिलेगी। और यहां का आकाश..."

आरकादी एकाएक रुक गया, नज़र बचाकर उसने पीछे की ओर देखा, और इसके बाद और कुछ नहीं बोला।

"बेशक," निकोलाई पेत्रोविच ने कहा, "आखिर तुमने यहां जन्म लिया है न! यहां की हर चीज़ तुम्हें अद्भुत नहीं मालूम होगी तो और किसे मालूम होगी..."

"क्या सचमुच? नहीं दद्दा, जन्म लेने या न लेने से कोई अन्तर नहीं पड़ता।"

"फिर भी..."

"नहीं, इससे कतई अन्तर नहीं पड़ता।"

निकोलाई पेत्रोविच ने कनखियों से अपने पुत्र की ओर देखा। इस बीच गाड़ी आधा मील निकल गई थी। दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा।

"मुझे याद नही पड़ता कि मैंने तुम्हें लिखा था या नहीं," निकोलाई पेत्रोविच ने फिर कहना शुरू किया, "कि तुम्हारी बूढ़ी आया येगोरोव्ना, अब इस दुनिया में नही रही।"

"अरे? बेचारी बुढ़िया! लेकिन प्रोकोफ़िच तो अभी जिन्दा है न?"

"हां, और बिल्कुल वैसा ही — जरा भी नही बदला। अब भी वैसे ही झींकता रहता है। सच पूछो तो मारिनो में तुम्हें ऐसे कोई खास परिवर्तन नजर नही आयेंगे।"

"तुम्हारा कारिन्दा तो अभी भी वही है न?"

"बस, एक यही तब्दीली मैंने की है। मैंने निश्चय किया कि जागीर में काम करनेवाले अपने उन्मुक्त बन्धक-दासों में से किसी को भी मैं अपनी नौकरी में नही रखूंगा, या कम से कम, उनमें से किसी को भी जिम्मेदारी का काम नही सौंपूंगा।" (आरकादी ने प्योत्र की ओर इशारा किया) "Il est libre, en effet,"* निकोलाई पेत्रोविच ने दबी आवाज़ में कहा, "लेकिन यह तो केवल मेरा टहलुवा है। मेरा नया कारिन्दा नगर से आया है। अपने काम का जानकार मालूम होता है। ढाई सौ रूबल सालाना मैं उसे दे रहा हूं। लेकिन," हाथ से अपने माथे और भौंहों को खरोंचते हुए — भीतर परेशानी अनुभव होने पर सदा वह ऐसा ही करते थे — निकोलाई पेत्रोविच ने कहा, "जैसा कि मैंने अभी तुम्हें

---

* बेशक यह उन्मुक्त है। (फ़्रेंच) — सं०

बनाया मास्को में तुम्हें कोई खास परिवर्तन नजर नहीं आयेंगे इस तुम एकदम सच ही न समझ लेना। सो मैं तुम्हें पहले से ही चेताएं

एक क्षण के लिए वह अचकचाए फिर फ्रेंच भाषा में कहना शुरू किया

ननिकता के कट्टर पुजारी को मेरी साफगोई बजा मालूम हो सकती है। लेकिन सर्वप्रथम तो यह कि चीजों को छिपाकर नहीं रखा जा सकता। दूसरे तुम जानते ही हो कि पिता पुत्र के सम्बंधों के बारे में मेरे कुछ अपने विचार हैं। फिर भी मुझसे असहमति प्रकट करने का पूरा अधिकार है। मेरी इस उम्र में तुम जानते ही हो थोड़े में यह लड़की जिसके बारे में शायद तुम सुन भी चुके हो

फनिचका? आरकादी ने कमसे मे पूछा।

निकोलाई पत्रोविच के चेहरे पर लाली दौड़ गई।

अरे नहीं! उसका नाम उन्न और से न लो हां तो वहां अब मेरे साथ रह रही है। उसे मैंने घर में ही जगह दे दी है दो छोटे कमरे थे उसे दे दिए। लेकिन कहने की आवश्यकता नहीं इस सब में उलट फेर किया जा सकता है।

नहीं ददा नहीं। इसकी भला क्या जरूरत है?

तुम्हारा मित्र भी तो हमारे साथ ठहरेगा मैं सो यह कुछ अस्पष्ट मालूम होगा अगर

जहां तक बजारोव का सम्बंध है उसके बारे में चिन्ता करने की जरूरत नहीं। वह इन सब चीजों से ऊपर है।

"लेकिन तुम भी तो हो निकोलाई पेत्रोविच ने कहना जारी रखा। छोटा बाजू मनहूस-सा है। यही उसमें सबसे बड़ी खराबी है।

"अरे नहीं दद्दा," आरकादी ने वीच में ही कहा, "अगर कोई सुने तो क्या कहे। लगता है जैसे माफ़ी मांग रहे हो। कुछ तो लाज करो।"

"सचमुच, मुझे लज्जित होना चाहिए–मैं इसी योग्य हूं," निकोलाई पेत्रोविच ने कहा और उसके चेहरे की लाली और भी अधिक गहरी होती गई।

"वस भी करो, दद्दा! तुम तो सचमुच अण्ड-वण्ड वहकने लगे!" आरकादी ने कहा और उसके चेहरे पर प्रेमपूर्ण मुसकान खेल गई। "भला यह भी कोई अनुताप करने की वात है," उसने मन ही मन सोचा और अपने भले, कोमल-हृदय पिता के प्रति एक तरह की गुप्त श्रेष्ठता से अनुरंजित सहज मुद्रा की भावना से उसका हृदय छलछला उठा। "क्या वकवास है," उसने दोहराया और समझदारी तथा आजादी की भावना अनायास ही उसके रोम रोम में हिलोरें लेने लगी।

निकोलाई पेत्रोविच का हाथ माथा खरोंच रहा था। उंगलियों के वीच दराजों के भीतर से उन्होंने अपने पुत्र पर एक नजर डाली और उनका हृदय जैसे किसी पैनी चीज से विंध गया... लेकिन उन्होंने तुरत अपने आपको संभाल लिया।

"यह देखा, हमारे खेत यहां से शुरू होते है," एक लम्वी खामोशी के वाद उसने कहा।

"और इनसे आगे, अगर मै भूलता नहीं तो, हमारा जंगल ही है न?" आरकादी ने पूछा।

"हां। केवल इतना ही कि उसे मैंने वेच दिया है। इस साल यह कट जाएगा।"

"क्यों, उसे वेच क्यों दिया?"

मन्द पमा की जरूरत थी। इसके अलावा यह जमीन अब किसानों की होने जा रही है।

उन्ही किसानो की जो तुम्हे लगान तक नही देते ?

यह तो उनके ममझने की बात है। जो हो लगान तो वे देंगे ही आज नहीं तो फिर किसी दिन !

फिर भी जगल का जाना कतई अच्छा नहीं मालूम होता आरकादी ने कहा और अपने चारो ओर नजर डालकर देखने लगा।

देहात के जिस इलाके म से वे गुजर रहे थ उसे मुश्किल से ही चित्रमय कहा जा सकता है। एक के बाद एक दूर क्षितिज तक खेत ही खेत नजर आते थ—लहरो की भाति उठते और फिर गिरते हुए। जहा-तहा जगलो की पट्टिया और चक्करदार खाइया नजर आती थी जिनपर नीची किस्म की झाडिया उगी थी। लगता था जैसे कथरीन महान के काल का पुरानी चाल का नक्शा आखो के सामने खुल रहा हो। नीचे पानी म कटे किनारे निर्बल तटो स युक्त नदी नाले गिरे ढहे छोटे बाध-टाल काले पड अधनगे छप्परो वाली चपटी झोपडिया से युक्त छोटी बस्तिया पड की कटी डालियो म घिरे छोटे छोटे दीन हीन खलिहान परित्यक्त खलिहानो के मुह बाए फाटक गिरजे जिनमे कुछ ईटो के थ जिनका पलस्तर जहा तहा से झड गया था बाकी लकडी के जिनके सलीबो के घुटने टूटे थ और कब्र ढह गई थी एक एक कर गुजरते जा रहे थे। आरकादी का हृदय भीतर ही भीतर बैठा जा रहा था। दुर्भाग्य से राह में जो भी किसान मिले वे सब चिथडो के पुतले मालूम होते थ—बेजान और बेजार हुए। उनके घोडे भी वैसे ही मरियल थ। बेद वृक्षो की टहनिया टूटी थी और उनके तनो की छाल उतरी हुई थी—जीर्ण शीर्ण भिखारियो की भाति वे सडक के किनारे खडे थ। पिचकी पिचकाई सी

गाएं, जिनके अंजर-पंजर ढीले हो चुके थे और हाड़ उभर आए थे, खाइयों के किनारे उगी घास में मुह मार रही थीं। ऐसा मालूम होता था जैसे वे अभी किसी भयानक कसाई के हाथों से छटकर आई हों। वसन्त की उस मनोहारी छटा के बीच, जीर्ण-शीर्ण पशुओं का दयनीय दृश्य ऐसा मालूम होता था जैसे वसन्त को ऊजड़ अन्तहीन शिशिर और उसके प्रचण्ड तूफ़ानों, धुध-पालों और बर्फ़ के बवण्डरों ने ग्रस लिया हो। "नहीं," आरकादी ने सोचा, "यह उपजाऊ प्रदेश नहीं है। सम्पन्नता या उद्यमशीलता की यह हृदय पर जरा भी छाप नहीं छोड़ता। नही, इस तरह नही चलेगा—चल नही सकता। सुधार अनिवार्य है... लेकिन सुधार किए कैसे जाएं, कहां से और कैसे उनका शुरुआत हो?..."

आरकादी यही सब सोच रहा था... वह सोच में डूबा था और उधर वसन्त अपना पूरा उभार दिखा रहा था। उसके चारों ओर वसन्त की सुनहरी आभा तथा हरियाली की छटा छाई थी। पेड़, झाड़ियां, घास—हर चीज में एक चमक, जीवन का स्पन्दन दिखाई पड़ता था। सुखद मृदु वायु की कोमल सरसराहट सबमें व्याप्त थी। हर कहीं लवे पक्षी चहचहा रहे थे। लगता था जैसे गूंजदार संगीत की वेगवती निर्झरियां फूट रही हों। निचली चरागाहों के ऊपर पंख फड़फड़ाते या पहाड़ियों के ऊपर निःशब्द उड़ते लैपविंग पक्षियों की विलाप-ध्वनि वायु को बींध रही थी। वसन्त कालीन अन्न की अधपकी फ़सलों की कोमल हरियाली पर अपनी काली छाया डालते कौवे भी पीछे नहीं थ। राई के पके खेतों में वे डुबकी लगाते और लहराती हुई बालों के बीच केवल उनके सिर जब-तब उतराते हुए नज़र आते।

आरकादी देर तक इस दृश्य को देखता रहा, देखते देखते उसका सोच-विचार—उसके चिन्तन की रेखाएं—धुंधली पड़ती गईं और अन्त

में बिल्कुल ही विलीन हो गए उसने अपना कोट उतार डाला और अपने पिता की ओर कुछ इतनी मोहक बालसुलभ नज़र से देखा कि पिता से न रहा गया – उन्होंने फिर उसे अपने दुलार में समेट लिया।

"बस, अब अधिक दूर नहीं है " निकोलाई पेत्रोविच ने कहा, "बस, इस पहाड़ी के निकट पहुंचते न पहुंचते घर दिखाई देने लगेगा। देखना, हम दोनो मिलकर किस तरह जीवन को अपने सांचे में ढालते हैं। अगर तुम्हारा जी न ऊबे तो खेती-बारी के काम में मेरा हाथ बटाना। मित्र की भांति हम दोनो रहें, एक-दूसरे से घनिष्ठता प्राप्त करें। क्यों, ठीक है न?"

"बेशक," आरकादी ने कहा। "ओह, कितना सुहावना मौसम है आज!"

"तुम आए हो न, इसलिए। बसन्त, अपने पूरे परिवार के साथ, तुम्हारा स्वागत कर रहा है। जो हो, मैं तो पुश्किन की बात से सहमत हूं। तुम्हें याद है न 'येवगेनी ओनेगिन' की वे पंक्तियां

"बसन्त! प्रेम और प्यार का मौसम!
बसन्त, तुम्हारा आगमन
मुझे कितना उदास बना देता है,
कितना '

"आरकादी!" सहसा तरन्तास में से बज़ारोव की आवाज़ आई। "भई, जरा दियासलाई तो भेजो। पाइप सुलगाने के लिए यहां मेरे पास कुछ नहीं है।"

निकोलाई पेत्रोविच का कविता-पाठ बीच में ही रुक गया और आरकादी ने, जिसने अचरज लेकिन कुछ सहानुभूति से पुश्किन की पंक्तियां सुननी शुरू की थी, तुरन्त अपनी जेब में से दियासलाई की चांदी की डिबिया निकाली और प्योत्र के हाथ उसे बज़ारोव के पास भेज दिया।

"तुम्हें चुरुट तो नहीं चाहिए?" बजारोव ने फिर चिल्लाकर पूछा।

" अच्छा अच्छा, भेज दो," आरकादी ने जवाब दिया।

दियासलाई की डिबिया और एक काला-सा मोटा चुरुट लिए हुए प्योत्र लौट आया। आरकादी ने उसे सुलगा लिया। कड़े तम्बाकू की तेज और तीखी गंध उसके इर्द-गिर्द फैल गई, यहां तक कि निकोलाई पेत्रोविच को, जिसने अपने जीवन में कभी तम्बाकू नहीं पिया था, अपनी नाक फेर लेनी पड़ी। और यह उसने बहुत ही अप्रकट रूप में किया, जिससे उसके पुत्र के हृदय को कोई ठेस न पहुंचे।

पंद्रह मिनट बाद दोनों गाड़ियां लकड़ी के एक नये घर की पैड़ियों के सामने जा लगी। घर भूरे रंग में रंगा था और लोहे की लाल चद्दरों की उसकी छत थी। यहीं मारिनो था। इसे 'नव कुटीर' या किसानों के शब्दों में 'ऊजड़ फ़ार्म' भी कहा जाता था।

४

मालिकों का अभिनन्दन करने के लिए पोर्च में बन्धक-दासों की कोई भीड़ उमड़कर नहीं आई। ले-देकर बारह वर्ष की एक छोटी लड़की और उसके पीछे एक नौजवान प्रकट हुआ जो शक्ल-सूरत में प्योत्र से अत्यधिक मिलता था और सुरमई रंग की जाकेट पहने था जिसमें सफ़ेद जिरहबख्तरी बटन टंके थे। यह पावेल पेत्रोविच किरसानोव का नौकर था। उसने चुपचाप गाड़ी का दरवाजा और तरन्तास के पर्दे के बन्द खोल दिए। अपने लड़के और बजारोव के साथ निकोलाई पेत्रोविच ने एक अंधेरे, क़रीब क़रीब एकदम सूने, हॉल में प्रवेश किया। हॉल के दरवाज़े में से उन्हें एक युवती स्त्री के

चेहरे की क्षणिक झलक दिखाई दी। इसके बाद वे दीवानखाने में पहुंचे जो नवाबनुमा ढंग के साज-सामान से भरा था।

हां तो यह लो हम अब अपने घर आ गए अपनी टोपी उतारते और बालों को झटककर पीछे फेंकते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने कहा। और अब सबसे मुख्य बात यह है कि पेट में कुछ डालकर आराम कर लिया जाए।

ख्याल तो बुरा नहीं है सोफ़ा पर पसरते और अपने बदन का बोझ कम करते हुए बज़ारोव ने कहा जरूर कुछ खा लिया जाए।

ठीक है। भोजन–अच्छा तो भोजन ही कर लिया जाए, निकोलाई पेत्रोविच ने बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के अपना पांव पटकते हुए कहा। और यह देखो प्रोकोफिच भी आ गया। इस वक्त ठीक इसी की जरूरत भी थी।

पीतल का बटन लगा मखमली की दुमनुमा कत्थई कोट पहने और गले में गुलाबी रूमाल बांधे करीब साठ वर्ष के एक दुबले पतले सांवले और सफेद बालोंवाले आदमी ने प्रवेश किया। उसने खीसें निपोरीं आरकादी के पास पहुंच उसका हाथ चूमा और मेहमान के सामने दोहरा होने के बाद उलटे पांव दरवाज़े पर लौटा और कमर के पीछे हाथ बांधकर खड़ा हो गया।

हां तो प्रोकोफिच निकोलाई पेत्रोविच ने कहना शुरू किया देखा तुमने आखिर आ ही गया कहो कैसा लगा?

छोटे सरकार बहुत ही अच्छे मालूम हो रहे हैं मालिक कहते हुए वृद्ध ने फिर अपनी खीसें निपोरीं और इसके बाद तुरंत ही अपनी घनीनुमा पलकों को सिकोड़कर वह गम्भीर हो गया। फिर रौबदार अन्दाज़ में बोला कहें तो मेज़ पर खाना लगा दूं, मालिक?

"हां हां, जरूर। लेकिन येवगेनी वसीलियेविच, शायद तुम पहले अपने कमरे में जाना चाहो?"

"नहीं, धन्यवाद, इसकी कोई जरूरत नहीं," बज़ारोव बोला, "बस, इनसे मेरा वह पुराना सूटकेस और लबादा मेरे कमरे में पहुंचा देने के लिए कह दीजिए," अपना मुसाफ़िरी चोगा उतारते हुए उसने कहा।

"बहुत अच्छा। प्रोकोफ़िच, इनका कोट ले लो।" (अचकचाकर प्रोकोफ़िच ने अपने दोनों हाथों में उसका लबादा थाम लिया और उसे अधर मे उठाए पंजों के बल बाहर चला गया।) "और तुम, आरकादी, तुम क्या कहते हो? कुछेक देर के लिए अपने कमरे में जाओगे न?"

"हां, हाथ-मुह धोना ज़रूरी है," दरवाजे की ओर बढ़ते हुए आरकादी ने जवाब दिया। लेकिन तभी काले रंग का अंग्रेजी कोट, फ़ैशनदार नीचा गुलूबंद और चमकदार चमड़े के जूते पहने मझोले कद के एक आदमी ने दीवानख़ाने में प्रवेश किया। यह पावेल पेत्रोविच किरसानोव थे। आयु क़रीब पैंतालीस के तो अवश्य होगी। छोटे छंटे हुए सफ़ेद बाल नयी चांदी की भांति ख़ूब चमक रहे थे। चेहरा कुछ बुझा हुआ किन्तु झुर्रियों से मुक्त था। नाक-नक्श बहुत ही साफ़-सुथरे और उभरे हुए थे। ऐसा मालूम होता था जैसे महीन छेनी से उन्हें गढ़ा गया हो। असाधारण सौन्दर्य के चिन्ह उनमें अभी भी मौजूद थे। निर्मल, स्याह और बादाम जैसी उनकी आंखें ख़ासतौर से आकर्षक थी। कुलीनता और नफ़ासत में पगे आरकादी के ताऊजी के समूचे आकार-प्रकार में किशोर-सुलभ चपलता और ऊपर—धरती से ख़ूब ऊंचे—उठने की आकांक्षा का वह भाव अभी तक मौजूद था जो, आमतौर से, बीस साल की आयु के बाद मानव का साथ छोड़ देता है।

चेहरे की शमिंदा झलक दिखाई दी। इसके बाद व दीवानखाने में पहुंचे जो नवीनतम ढंग के साज-सामान से भरा था।

हां तो यह ला हम अब अपने घर आ गए अपनी टोपी उतारते और बालों को पकड़कर पीछे करते हुए निकोलाई पत्रोविच ने कहा। और अब सबसे मुख्य बात यह है कि पेट में कुछ डाल कर आराम कर लिया जाए।

खयाल तो बुरा नहीं है सोफे पर पसरते और अपने बदन को सीधा करते हुए बजारोव ने कहा जरूर कुछ खा लिया जाए।

ठीक है। भोजन – अच्छा तो भोजन ही कर लिया जाए, निकोलाई पेत्रोविच ने बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के अपना पाँव पटकते हुए कहा। और यह देखो प्रोकोफिच भी आ गया। इस वक्त ठीक इसी की जरूरत भी था।

दीतन का बटन लगा अबाबील की दुमनुमा कत्थई कोट पहने और गले में गुलाबी रूमाल बाँधे करीब साठ वर्ष के एक दुबले पतले सांवले और सफेद बालोंवाले आदमी ने प्रवेश किया। उसने खास तिपोरी मारकादी के पास पहुँच उसका हाथ चूमा और मेहमान के सामने दोहरा होने के बाद उलटे पाँव दरवाजे पर लौटा और कमर के पीछे हाथ बाँधकर खड़ा हो गया।

हाँ तो प्रोकोफिच निकोलाई पेत्रोविच ने कहना शुरू किया देखा तुमने आखिर आ ही गया कहो कैसा लगा?

छोटे सरकार बहुत ही अच्छे मालूम हो रहे हैं भांजिक करते हुए बूढ़े ने फिर अपना खीसे निपोरी और इसके बाद तुरत ही अपनी झाड़ीनुमा पलकों को सिकोड़कर वह गम्भीर हो गया। फिर रोबदार अन्दाज में बोला, कहें तो मेज पर खाना लगा दूं मालिक?

"हां हां, जरूर। लेकिन येवगेनी वसीलियेविच, शायद तुम पहले अपने कमरे में जाना चाहो?"

"नहीं, धन्यवाद, इसकी कोई जरूरत नहीं," वजारोव वोला, "वस, इनसे मेरा वह पुराना सूटकेस और लवादा मेरे कमरे में पहुंचा देने के लिए कह दीजिए," अपना मुसाफ़िरी चोगा उतारते हुए उसने कहा।

"बहुत अच्छा। प्रोकोफिच, इनका कोट ले लो।" (अचकचाकर प्रोकोफ़िच ने अपने दोनों हाथों में उसका लवादा थाम लिया और उसे अधर में उठाए पंजों के वल बाहर चला गया।) "और तुम, आरकादी, तुम क्या कहते हो? कुछेक देर के लिए अपने कमरे में जाओगे न?"

"हां, हाथ-मुंह धोना जरूरी है," दरवाजे की ओर वढ़ते हुए आरकादी ने जवाव दिया। लेकिन तभी काले रंग का अंग्रेजी कोट, फैशनदार नीचा गुलूवंद और चमकदार चमड़े के जूते पहने मझोले कद के एक आदमी ने दीवानखाने में प्रवेश किया। यह पावेल पेत्रोविच किरसानोव थे। आयु क़रीव पैतालीस के तो अवश्य होगी। छोटे छंटे हुए सफ़ेद वाल नयी चांदी की भांति खूव चमक रहे थे। चेहरा कुछ वुझा हुआ किन्तु झुर्रियों से मुक्त था। नाक-नक्श वहुत ही साफ़-सुथरे और उभरे हुए थे। ऐसा मालूम होता था जैसे महीन छेनी से उन्हें गढ़ा गया हो। असाधारण सौन्दर्य के चिन्ह उनमें अभी भी मौजूद थे। निर्मल, स्याह और वादाम जैसी उनकी आंखें खासतौर से आकर्षक थीं। कुलीनता और नफ़ासत में पगे आरकादी के ताऊजी के समूचे आकार-प्रकार में किशोर-सुलभ चपलता और ऊपर—धरती से खूव ऊंचे—उठने की आकांक्षा का वह भाव अभी तक मौजूद था जो, आमतौर से, वीस साल की आयु के वाद मानव का साथ छोड़ देता है।

पावेल पत्राविच ने अपनी पतलून की जेब से हाथ निकालकर अपने भतीजे की ओर बढ़ा दिया। बहुत ही नफ़ीस हाथ था वह, गुलाबी नाखूनों से युक्त, जो आगे की ओर पतले होते गए थे। कमीज़ के सफ़ेद कफ़ ने, जिसमें दूधिया रंग का एक बड़ा नगदार बटन लगा था, हाथ के सौन्दर्य में और भी अधिक वृद्धि कर दी। यूरोपीय ढंग से प्रारम्भिक शिष्टाचार—हाथ आदि मिलाने—के बाद रूसी ढंग से उसने चुम्बन लिया, बल्कि कहिए कि इस मौके पर अपनी मूंछों से तीन बार उसके गालों पर कूचीं-सी फेरते हुए उसका स्वागत किया।

निकोलाई पत्राविच ने बज़ारोव से उनका परिचय कराया। अपने लचीले बदन को थोड़ा झुकाकर और होंठों पर धुंधली मुसकान के साथ उन्होंने उनका अभिवादन किया, लेकिन अपना हाथ नहीं बढ़ाया, जिसे उन्होंने फिर अपनी पतलून की जेब में डाल लिया।

मुझे तो आशंका हो चली थी कि आज तुम नहीं आओगे, शिष्टतापूर्वक अपने बदन को झुलाते, कंधों को बिचकाते और अपने शानदार सफ़ेद दांतों को चमकाते हुए मधुर स्वर में उन्होंने कहा। क्या रास्ते में कोई गड़बड़ हो गई थी?

नहीं, ऐसी कोई बात नहीं हुई, आरकादी ने जवाब दिया। हम थोड़ा रुक जाना पड़ा, बस। लेकिन फ़िलहाल तो पेट में चूहे कूद रहे हैं। अर्कोफ़िच से कहो कि ज़रा जल्दी करे, मैं अभी लौट आऊंगा, ददा।

ज़रा ठहरो, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं, सहसा सोफ़े से उछलते हुए बज़ारोव ने चिल्लाकर कहा। दोनों युवक एक साथ चल दिए।

"यह कौन है?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"आरकादी का मित्र। आरकादी के शब्दों में बहुत ही चतुर जीव।"

"क्या हमारे साथ ही रहेगा?"

"हां।"

"क्या कहते हो—यह भालू हमारे साथ रहेगा?"

"क्यों, हां।"

पावेल पेत्रोविच ने अपनी उंगलियों की नोक से मेज को ठकठकाया।

"मेरे ख़याल में आरकादी s'est dégourdi*," उन्होंने कहा, "मुझे ख़ुशी है कि वह घर लौट आया।"

भोजन के समय बातचीत भूले-भटके हुई। ख़ासतौर से बज़ारोव ने बात कम की, खाया अधिक। निकोलाई पेत्रोविच ने, ख़ुद उसी के शब्दों में, अपने किसान-जीवन की छुटपुट घटनाएं सुनाईं, शीघ्र ही चालू होनेवाली सरकारी योजनाओं की चर्चा की, कमेटियों, डेप्युटेशनों और मशीनों से काम लेने की आवश्यकता का ज़िक्र किया। पावेल पेत्रोविच ने खाने को हाथ नहीं लगाया। वह कमरे में इधर से उधर टहलते रहे। कभी कभी लाल मदिरा का गिलास उठाकर एकाध चुस्की ले लेते। उनके मुंह से कोई टिप्पणी या "आह, अहा, हूं:" जैसे उद्गार और भी कम—विरले ही—निकलते। आरकादी ने सन्त-पीतर्सबर्ग का नया हाल-चाल सुनाया। लेकिन वह बराबर एक हल्की-सी झिझक का अनुभव करता रहा जो आमतौर से उन युवकों को उस समय घेर लेती है जब वे अपने बचपन की देहरी को अभी अभी लांघ उस

---

* अधिक बेतकल्लुफ़ हो गया है। (फ्रेंच)—सं०

जगह लौटन हूँ जहा उन्ह सदा बच्चा ही समझा जाता रहा है। वह शब्दों को साचकर बात रता था। दद्दा सम्बोधन मे उसने बचने का प्रयत्न किया पिता का भी उसने एक बार ही प्रयोग किया—सो भी कुलबुलाकर स्पष्ट रूप म नहा। और अतिरंजित 'बहादुरी' का भाव दिखलात हुए बल्कि अपनी इच्छा से भी अधिक उसने मदिरा उडेली और उस गल के नीचे उतार गया। प्राकाश्चि बराबर उस पर नजर जमाए था। उसका मुह बराबर चल और घुमघुमा रहा था। भोजन खत्म होते ही सब चल दिए।

अजीब आदमी हैं तुम्हारे यह ताऊजी, बजारोव न आरकादी से कहा। वह अब सात का चोगा पहन था और आरकादी के पलग की पाटी पर बैठा छोटे-से पाइप से कश ल रहा था। देहात में भी यह बनाव सिंगार—है न अद्भुत! और उसके नाखून,—आह व तो नुमाइश में रखन लायक हैं!

वाकई तुम्हे नहीं मालूम, आरकादी ने जवाब दिया, अपने जमाने में वे समाज के सिरताज थ। किसी दिन उनकी कहानी सुनाऊगा। बहुत ही जानदार सौन्दर्य था उनका और स्त्रियाँ तो उनके पीछे पागल थी।

ओह यह बात है। तो यह सब उस गुजरे जमाने की खुरचन है। काश कि यहाँ भी कोई होती—अपने सिरताज पर न्योछावर होने के लिए। जो हो कम से कम मुझे तो उन्होंने मत्रमुग्ध कर ही लिया—लकडी की तरह सख्त उनका वह शानदार कालर और एकदम सफाचट ठोडी। क्या तुम्हें यह सब हास्यास्पद नहीं मालूम होता, आरकादी निकोलायविच?

सो तो है। लेकिन सच आदमी बहुत अच्छे हैं।

अजायबघर में रखने लायक! लेकिन तुम्हारे पिता खूब हैं।

हालांकि कविता-पाठ को अगर वह वख्श दें तो ज्यादा अच्छा हो। और मुझे तो लगता है कि खेती-वारी में भी उनका कोई खास दखल नही है। जो हो, वह नेक हैं।"

"एकदम हीरा ही समझो!"

"पता नहीं, तुमने उस समय ध्यान दिया या नही—लगता था जैसे एकदम अपनापन भूल गए हों?"

आरकादी ने सिर हिलाकर हामी भरी, मानो वह खुद विह्वलता से मुक्त रहा हो।

"इन रोमाण्टिक बूढ़ों का भी जवाब नही," बज़ारोव कहता गया। "अपने स्नायु-तंत्र को ये इतना तानते है कि वह चरचरा उठता है ... और, जैसा कि स्वाभाविक है, सन्तुलन गड़बड़ा जाता है। जो हो, अब सोया जाए। मेरे कमरे में अंग्रेज़ी ढंग का हाथ-मुंह धोने का नल तो है, लेकिन दरवाजे में खटका नहीं है—वह वंद नहीं किया जा सकता। फिर भी इन चीज़ों को—मेरा मतलब अंग्रेजी ढंग के हाथ-मुंह धोने के नल से है—बढ़ावा मिलना चाहिए। ये प्रगति के सूचक है।"

वजारोव चला गया और आरकादी उल्लास की तरंगों में डूबने-उतराने लगा। खुद अपने घर में, परिचित विस्तरे पर और चाव-भरे हाथों से संजोई रजाई के नीचे सोना कितना मधुर मालूम होता है। शायद वे चाव-भरे हाथ—मृदु, कोमल और अनथक हाथ—उसकी प्यारी नर्स के हों। आरकादी को येगोरोवना का ध्यान हो आया, एक उसांस उसके हृदय से निकली, उसे दुआएं दीं ... लेकिन अपने लिए उसने न कोई प्रार्थना की, न दुआ।

वह और वजारोव, दोनों शीघ्र ही सो गए। लेकिन घर में अन्य लोग भी थे जो काफ़ी देर तक नहीं सो सके। पुत्र के घर-आगमन ने निकोलाई पेत्रोविच को उद्वेलित कर दिया था। विस्तरे पर वह गए,

करते समय एक नयी हवेली बनवाने के लिए निकोलाई पेत्रोविच ने दस एकड़ की एकदम सपाट परती भूमि अलग निकाल ली थी। घर और उसके इर्द-गिर्द की इमारतें उसने बनवा ली थी, बाग़ लगवा लिया था, एक तालाब और दो कुवें खोदवा लिए थे, लेकिन पौधे ठीक से बढ़ नहीं सके। तालाब में पानी कम था और कुवें खारे निकले। केवल लिलक की झाड़ियां और बबूल ही कुछ दमदार निकले। इन्हीं की छाया में कभी कभी चाय-पान या भोजन किया जाता था। कुछ मिनटों में ही बजारोव ने बाग़ को छान डाला, मवेशी-घर और अस्तबल का चक्कर लगाया, दो छोटे लड़कों से भेंट की, जिन्हें उसने तुरत अपना मित्र बना लिया और उन्हें लेकर, घर से एक मील के भीतर, मेंढकों का शिकार करने एक छोटे-से दलदली भूखण्ड की ओर निकल गया।

"मेंढकों का आप क्या करेंगे, मालिक?" लड़को में से एक ने पूछा।

"सुनो, मैं तुम्हें बताता हूं," बजारोव ने जवाब दिया जो निम्न स्तर के लोगों का विश्वास पाने का नुस्खा जानता था, हालांकि उन्हें खुश करने के लिए वह कभी कोई प्रयत्न नही करता था और लापर्वाही से उनके साथ पेश आता था। "मै मेंढकों को चीरकर देखूंगा कि उनके भीतर क्या कुछ हो रहा है। और चूंकि हम और तुम मेंढकों के समान ही है–सिवा इसके कि हम दो पांवों पर चलते है–इसलिए मुझे यह भी पता चल जाएगा कि हमारे भीतर क्या हो रहा है।"

"यह सब आप क्यों जानना चाहते है?"

"इसलिए कि अगर तुम बीमार पड़ जाओ और मुझे तुम्हारा इलाज करना पड़े तो कोई भूलचूक न हो।"

"तो आप डाक्टर है, क्यों?"

"हां।"

"वास्का, सुना तुमने, ये कहते हैं कि हम और तुम मेंढकों के समान हैं। है न मज़े की बात?"

"ना बाबा, मुझे तो मेंढकों से डर लगता है!" वास्का ने कहा। वह सात साल का लड़का था — नंगे पाँव, सुनहरे बाल, खड़े कालर का सलेटी कोट पहने हुए।

"क्यों, उनसे डरने की क्या बात है? वे किसी को नहीं काटते।"

"हाँ तो मेरे दार्शनिक," बज़ारोव ने कहा, "अब ज़रा पानी में उतर चलो।"

इस बीच निकोलाई पेत्रोविच भी जाग गए और आरकादी से मिलने चल दिए। वह पहले से जागा हुआ था और कपड़े पहनकर तैयार था। पिता और पुत्र बरामदे पर निकल आये जिसके ऊपर तम्बू तना था। मुँडेर के पास लिलक की घनी टहनियों के बीच, समावर में पानी खौल रहा था। एक छोटी लड़की आई, वही जो यहाँ आने पर सबसे पहले उन्हें मिली थी, और कर्णवेधी आवाज़ में बोली

"फ़ेदोसिया निकोलायेवना की तबीयत ठीक नहीं है। वह नहीं आ सकती। कहा है कि अपनी चाय खुद बना लें नहीं तो फिर दुन्याशा को वह भेज दें।"

"ठीक है। हम खुद बना लेंगे," निकोलाई पेत्रोविच ने झट से कहा। "क्यों आरकादी, तुम अपनी चाय में क्या लेना पसंद करोगे — नींबू या क्रीम?"

"क्रीम," आरकादी ने जवाब दिया और फिर, कुछ क्षण की चुप्पी के बाद, प्रश्नसूचक अन्दाज़ में बोला "डैडी?"

निकोलाई पेत्रोविच ने, कुछ परेशानी का अनुभव करते हुए, सिर उठाकर देखा।

"क्यों, क्या बात है?"

आरकादी ने अपनी आखे झुका ली।

"अगर मेरा सवाल कुछ अटपटा मालूम हो तो मुझे माफ़ करना, दद्दा," आरकादी ने कहना शुरू किया, "लेकिन कल जिस साफ़गोई का आपने परिचय दिया था, वह मुझे उकसा रही है कि मैं भी उतनी ही साफगोई का परिचय दू ... आप नाराज तो न होगे?"

"कहो जो तुम्हारे मन में हो।"

"आपसे साहस पाकर ही मैं यह पूछ रहा हूं ... क्या इसी कारण न फ़ेनिच ... क्या मेरी मौजूदगी की वजह से ही वह चाय डालने के लिए यहां नही आना चाहती?"

निकोलाई पेत्रोविच ने अपना सिर थोड़ा उसकी ओर से फेर लिया।

"शायद," उसने फिलहाल कहा, "हो सकता है कि वह ... शरमाती हो ..."

आरकादी की आंखे तेजी से अपने पिता के चेहरे की ओर उठ गई।

"सच पूछो तो उसके लिए शरमाने की कोई बात नही है। सर्व-प्रथम इस सम्वंध में मेरे विचारो को आप जानते ही हैं," (आरकादी रस लेकर बोल रहा था), "और दूसरे, आपके जीवन के तौर-तरीको और आपकी आदतों में दखल देने के लिए मै किसी भाव पर तैयार नही हूंगा। इसके अलावा मेरा विश्वास है कि आप ग़लत चुनाव नहीं कर सकते। अगर आपने उसे अपने घर में जगह दी है तो मानना होगा कि वह इसके योग्य है। और सबसे बढ़कर यह है कि एक पुत्र अपने पिता का न्यायकर्ता नही हो सकता – ख़ासतौर से मै, खासतौर से आप जैसे पिता का जिसने कभी भी, किसी रूप में भी, मेरी आजादी पर कोई रोक नही लगाई।"

थरथराती आवाज म आरकादी ने अपनी बात शुरू की थी। उस एसा लगा जसे वह उदारता का परिचय द रहा है। साथ ही उसन यह भी अनभव किया कि वह अपन पिता को एक तरह का उपदेश-सा दे रहा है। लेकिन अपनी आवाज का भी आदमी पर गहरा असर पडता है और आरकादी न अपने अन्तिम शब्दों को दृढता के साथ—यहा तक कि शान के साथ उच्चारण किया।

शक्रिया आरकादी शक्रिया। निकोलाई पत्रोविच न फसफुसी आवाज म कहा। उनकी उगलिया अब फिर उनकी भौंहो और माथे को खरोच रही थी तुमन जो कहा वह बिल्कुल ठीक है। निश्चय ही अगर लडकी इस योग्य न होती यह कोई मेरे उथले मन की तरग नहीं है। इस सम्बध म तुमसे बात करना बडा अटपटा-सा लगता है। लकिन तुम समझते ही हो वह तुमसे लजाती है—खासतौर से इसलिए कि तुम्हारे यहा आन का आज पहला दिन ही है।

अगर एसा है तो म खुद उसके पास जाऊगा उदारता के नय उभार के साथ और अपनी कुर्सी स उछलकर खडे होते हुए आरकादी न कहा म उसके सामन यह एकदम साफ कर दगा कि उसे मुझसे शरमान की जरा भी जरूरत नहीं है।

निकोलाई पेत्रोविच भी उठकर खडे हो गए।

आरकादी उसने कहना शुरू किया देखो उधर न जाना सच प्रसग में मुझ पहले ही तुम्हे बता देना चाहिए था कि

लेकिन आरकादी ने अब कुछ नहीं सुना और भागकर बरामदे से चला गया। निकोलाई पत्रोविच न आखों से उसका पीछा किया और फिर कुर्सी म ढह गए। उनकी समझ ने जवाब द दिया था और उनका हृदय धडक रहा था क्या वह उस क्षण यह अनुभव कर सके कि अपन

पुत्र के साथ उनके भावी सम्बंध अनिवार्यतः कितने विचित्र होने जा रहे हैं? क्या यह बात उनके दिमाग़ में आई कि आरकादी, इस पचड़े से अलग रहकर, शायद उनके प्रति अधिक सम्मान प्रकट कर सकता है? क्या उन्होंने, जरूरत से ज्यादा कमजोरी दिखाने के कारण, अपने आपको कोंचा? यह सब कहना कठिन है। वह इन सभी भावनाओं का अनुभव कर रहे थे, लेकिन केवल सनसनियों के रूप में, सो भी अस्पष्ट और धुंधली। उनका चेहरा अभी भी तमतमाया हुआ था, उनका हृदय अब भी धड़क रहा था।

तभी तेजी से आते डगों की आवाज सुनाई दी और आरकादी बरामदे में आ गया।

"हम दोनों में जान-पहचान हो गई, पिता!" आरकादी ने चिल्लाकर कहा। उसके चेहरे पर जैसे मृदु और कृपापूर्ण विजय के भावों की झलक थी। "फ़ेदोसिया निकोलायेवना की तबीयत आज सचमुच ठीक नही है। वह कुछ देर बाद आएंगी। लेकिन तुमने यह क्यों नहीं बताया कि मेरा एक भाई भी है? कल रात ही मैं उसे प्यार करता, जैसा कि अब करके आ रहा हूं।"

निकोलाई पेत्रोविच कुछ कहना चाहते थे, उठना चाहते थे, अपनी बांहों को फैलाना चाहते थे। तभी आरकादी लपककर उनके गले से लिपट गया।

"ओहो, अब फिर दुलार हो रहा है?" पीछे से पावेल पेत्रोविच की आवाज सुनाई दी।

इस क्षण उनके आ जाने से पिता और पुत्र दोनों को समान रूप से राहत मिली। कभी कभी भावावेश की स्थितियां ऐसी हो जाती है कि उनसे पीछा छुड़ाकर मानव सुख का अनुभव करता है।

"क्या तुम्हें यह अचरज की बात मालूम होती है?" निकोलाई

पेत्रोविच ने त्सगी से हुमकते हुए कहा। न जाने कब से मैं आरकादी की प्रतीक्षा कर रहा था और जब से यह आया है, इसे जी भर देख तक नहीं सका हूं।

यहां मैं अचरज जरा भी नहीं करता पावेल पेत्रोविच ने कहा। मैं खुद भी इस दुनियादारी से कन्नी काटना नहीं चाहूंगा।

आरकादी अपने ताऊजी के निकट पहुंचा और इस में बसी उनकी मूछों की सरसराहट को एक बार फिर अपने गालों पर अनुभव किया। पावेल पेत्रोविच मेज़ पर बैठ गए। वह अंग्रेज़ी कोट का प्रातःकालीन सूट पहने थे। सिर पर एक छोटी फैज़ टोपी सुशोभित थी। फैज़ टोपी और लापरवाही से बंधा एक छोटा गुलूबंद देहाती जीवन की अकृत्रिमता के सूचक थे लेकिन उनकी कमीज़ का कड़ा कालर—अब वह रंगीन कालर पहने थे जो सुबह के इस वक्त के लिए उपयुक्त था—उनकी चिकनी सफाचट ठोडी को अनिवार्य रूप से ऊंचा ताने था।

तुम्हारा वह नया मित्र कहां है? उन्होंने आरकादी से पूछा।

घूमने चला गया है। आमतौर से वह जल्दी तड़के ही, उठ जाता है। मुख्य बात यह है कि उसकी ओर ध्यान देने की ज़रूरत नहीं। तकल्लुफ और दिखावे से वह दूर भागता है।

यह तो साफ ज़ाहिर है फुरसत के अन्दाज़ में अपनी रोटी पर मक्खन लगाते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा। क्या वह काफ़ी दिनों तक रहेगा?

यह परिस्थितियों पर निर्भर है। वह अपने पिता के घर जा रहा है। रास्ते में यहां रुक गया।

उसके पिता कहां रहते हैं?

हमारे इसी ज़िले में यहां से करीब ५० मील दूर। वहां उनकी एक छोटी-मोटी-सी जागीर है। कभी वह फौज में सर्जन थे।

"ओह्, अब याद आया। काफ़ी देर से मै इस उलझन मे था कि यह नाम—बज़ारोव—मैंने कही सुना है। निकोलाई, अगर मैं भूलता नहीं तो हमारे पिता के डिवीजन में एक डाक्टर था। उसका नाम भी वजारोव था। क्यों था न ?"

"हां, याद तो पड़ता है।"

"यक़ीनन। सो वह डाक्टर ही इसका पिता है। हुं: !" अपनी मूंछों में ताव देते और अपनी आवाज को खींचते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा, "और यह पुत्र वजारोव—यह खुद क्या है?"

"वजारोव क्या है?" आरकादी ने कौतुक का भाव झलकाते हुए कहा। "क्या तुम सचमुच जानना चाहते हो कि वह क्या है, ताऊजी ?"

"हां हां, कहो न, भतीजे!"

"वह निहिलिस्ट है—ध्वंसवादी!"

"ऐं, क्या?" निकोलाई पेत्रोविच के मुंह से निकला। और पावेल पेत्रोविच को तो जैसे एकदम सकता मार गया। चाकू की नोक पर मक्खन का लोंदा थामे उनका हाथ हवा में ही स्थिर रह गया।

"वह निहिलिस्ट है," आरकादी ने फिर दोहराया।

"निहिलिस्ट," निकोलाई पेत्रोविच ने स्पष्ट उच्चारण के साथ कहा। "जहा तक मै समझता हूं, यह लैटिन भाषा का शब्द है। निहिल, अर्थात् 'कुछ नही'। तो क्या इसका मतलब ऐसे आदमी से है जो ... किसी चीज़ में विश्वास नही करता?"

"कहिए: 'जो किसी चीज का मान नहीं करता'," पावेल पेत्रोविच ने कहा और फिर मक्खन लगाने के काम में जुट गए।

"जो हर चीज को आलोचक की नजर से देखता है," आरकादी ने कहा।

"यह भी तो वही बात हुई न?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

और सचमुच बाग म लम्बे डग भरता फूलो की क्यारियो को लाघता बज़ारोव चला आ रहा था। उसका डस्टकोट और पतलून दोनो कीचड म सने थे। उसके पुराने गोल हैट के कुल्ले के इद गिर्द दलदली सरपत लिपटी हुई थी। दाहिने हाथ म वह एक छोटा-सा थैला लिए था जिसम कोई जानदार चीज़ किलबिला रही थी। वह जल्दी ही बरामदे के पास आ गया और थोडा सिर झुकाकर अभिवादन करते हुए बोला

गुडमौनिंग सज्जनो। अफसोस कि चाय पर आने में मुझे देर हो गई। म अभी आया ज़रा इन बन्दियो को ठीक ठिकाने से रख आऊ।

क्या है उसम—जोंके ? पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

नही मेढक।

क्या तुम उन्हे खाते हो या पालते हो ?

अपने प्रयोगो के लिए म इनका इस्तेमाल करता हू बज़ारोव ने असम्पृक्त भाव से कहा और भीतर घर में चला गया।

वह इनकी चीर-फाड करेगा पावेल पेत्रोविच ने कहा। वह सिद्धान्तो म विश्वास नही करता मेढकों में विश्वास करता है।

आरकादी ने कुछ इस तरह अपने ताऊजी की ओर देखा जैसे उनपर तरस आ रहा हो। निकोलाई पेत्रोविच ने नामालूम-से अन्दाज़ में अपने कधे बिचकाए। पावेल पेत्रोविच को खुद यह अनुभव करते देर नही लगी कि उनका वार खाली गया है। बात बदलते हुए उन्होंने फाम और नये कारिन्दे का ज़िक्र छेड दिया जिसने हाल ही म उनसे शिकायत की थी कि फ़ोमा—जो किराये पर काम करनेवाले मजूरो में से एक था—झगडालू आसामी है और काबू से एकदम बाहर हो गया है। वह पूरा फितरती है अन्य बातों के अलावा उसने कहा था उसने अपने आपको एक बदनाम शोहदा बना रखा है। बहुत ही बुरा अजाम होगा उसका मेरी यह बात गाठ बाध लो।

बजारोव लौट आया, मेज पर बैठा और जल्दीबाजी के साथ चाय पीने लगा। दोनों भाई चुपचाप उसको देखते रहे। उधर आरकादी की आंखें, छिपे तौर से, ताऊजी से पिता और पिता से ताऊजी की ओर चक्कर लगाती रही।

"क्या दूर निकल गए थे?" आखिर निकोलाई पेत्रोविच ने बजारोव से पूछा।

"चिनार के झुरमुट के पास यहां एक छोटा-सा दलदल है। मेरी आहट पाते ही पांच चाहा पक्षी फुर्र से उड़ गए। तुम्हारे लिए शिकार का अच्छा मौक़ा है, आरकादी।"

"क्या तुम्हे शिकार का शौक नहीं है?"

"नही।"

"सुना है, तुम भौतिक विज्ञान का अध्ययन कर रहे हो?"

"हां, भौतिक विज्ञान का, मोटे तौर से समूचे पदार्थ-विज्ञान का।"

"ग्यूश्लांदरों ने इस क्षेत्र में काफी प्रगति की है।"

"हां, इस विषय में जर्मन हमारे गुरु हैं," बजारोव ने अनमनेपन से जवाब दिया।

पावेल पेत्रोविच ने जर्मनो के बजाय ग्यूश्लांदरो शब्द का प्रयोग व्यंग के लिए किया था। लेकिन उसपर किसी का ध्यान नही गया।

"क्या आपकी राय मे जर्मन इतने ऊंचे है?" पावेल पेत्रोविच ने जैसे-तैसे अपनी आवाज को नर्म बनाते हुए पूछा।

उनके हृदय में, भीतर ही भीतर, झुंझलाहट ने सिर उठाना शुरू कर दिया था। बजारोव की निरी असंलग्नता ने उनकी रईसाना

प्रवृत्ति को भड़का दिया था। फौजी जर्राह का यह छोकरा, अदब-लिहाज तो दूर, बेमन से और मुहफट जवाब देता था, और उसके लहजे से गवारपन की—करीब करीब गुस्ताखी पर उतरी—ध्वनि निकलती थी

"उनके वनानिक अमली जीव होते हैं।"

"बस, बस। और मैं समझता हूं कि रूसी वैज्ञानिकों के बारे में तुम्हारी राय बहुत अच्छी न होगी। क्यों, ठीक बात है न?"

"है तो ऐसा ही।

"वाह, कितनी सराहनीय निःस्वार्थता है!" अपने बदन को सीधा तानने और सिर को पीछे की ओर फेंकते हुए पावेल पेत्रोविच ने पलटकर जवाब दिया। "लेकिन आरकादी निकोलायेविच हमें अभी अभी बता रहे थे कि आप किसी अधिकारी को—चाहे जो भी वह हो—नहीं मानते और उनका विश्वास नहीं करते।"

"मानने और विश्वास करने की इसमें क्या बात है, मैं क्यों उन्हें मानूं, क्यों किसी पर विश्वास करूं? जब कोई समझ की बात करता है तो मैं सहमत हो जाता हूं। सीधी-सी बात है।"

'क्या जर्मन सब समझ की बात करते हैं?" पावेल पेत्रोविच ने बुदबुदाकर कहा और उनके चेहरे पर एक ऐसा निर्लिप्त और निस्संगता का भाव छा गया, मानो उनके विचार गूलर के फूल बटोरने चले गए हों।

"नहीं, सब नहीं करते," बजारोव ने जमुहाई को दबाते हुए जवाब दिया। स्पष्ट था कि शब्दों के इस खिलवाड़ को वह जारी नहीं रखना चाहता था।

पावेल पेत्रोविच ने आरकादी की ओर इस तरह देखा मानो कहना चाहते हों "तुम्हारे इस मित्र के सलीके की दाद देनी चाहिए!"

फिर, प्रयास के साथ वह कहते गये:

"जहां तक मेरा अपना सम्बंध है, मुझे अपना भी अपराध स्वीकार करना चाहिए कि मैं जर्मनों को नापसंद करता हूं। रूसी जर्मनों को मैं छोड़े देता हूं। उनके कैण्डे से हम परिचित हैं। यहां तक कि जर्मनी के जर्मनों को भी मैं बरदाश्त नहीं कर सकता। पुराने ज़माने के तो फिर भी ग़नीमत थे– उन्हें एक हद तक बरदाश्त किया जा सकता था, तब उनके पास अपने ... तुम जानते ही हो, शिलर और ग्येटे थे... मेरे यह भाई साहब, मिसाल के लिए, उन्हें बहुत बड़ा मानते है ... लेकिन अब तो वे सब रसायनशास्त्री और भौतिकवादी बन गए हैं ..."

"बढ़िया रसायनशास्त्री किसी भी कवि से बीस गुना अधिक उपयोगी होता है," बजारोव ने बीच मे ही कहा।

"क्या सचमुच?" अपनी पलकों को थोड़ा उठाते और उनीदेपन का भाव दिखाते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा। "तो, मेरी समझ में, कला को आप नही मानते?"

"धन कमाने की कला, या बवासीर को मार भगाने की कला!" खिल्ली-सी उड़ाते हुए बजारोव ने कहा।

"बस बस, जनाब। समझा, आपको मजाक सूझा है। तो आप हर चीज़ का खण्डन करते हैं–क्यों, ठीक है न? अच्छा ऐसा ही सही। इसका मतलब यह कि आप केवल विज्ञान में विश्वास करते है?"

"पहले ही बता चुका हूं कि मैं किसी चीज में विश्वास नहीं करता। और विज्ञान–सामान्य विज्ञान–है क्या? जैसे अन्य धंधे और पेशे हैं, वैसे ही भांति के विशेष विज्ञान है। इनके अलावा सामान्य विज्ञान जैसी चीज का कही कोई अस्तित्व नही है।"

बहुत खूब जनाब। लेकिन अन्य मान्यताओं के बारे में आप क्या कहेंगे – उनके बारे में जिन्हें मानव समाज अपनी परम्परा में स्वीकार कर चुका है। क्या उनके प्रति भी आप वही नकारात्मक रवैया बरतते हैं?

आखिर मामला क्या है कटघरे का जीव समझकर क्या जिरह की जा रही है? बजारोव ने प्रतिवाद किया।

पावेल पत्रोविच का रंग कुछ पीला पड़ गया निकोलाई पेत्रोविच को लगा कि अब बीचबचाव करना जरूरी है।

प्रिय यवगनी वसीलियेविच, इस विषय पर और किसी दिन तुमसे अधिक विस्तार के साथ बात करेंगे। तुम्हारे विचार सुनेंगे, अपने सुनाएंगे। जहां तक मेरा अपना सम्बंध है यह जानकर मैं बहुत खुश हूं कि तुम पदार्थ विज्ञान का अध्ययन कर रहे हो। सुना है कि धरती की उत्पादनशीलता के बारे में लीबिग ने कुछ शानदार आविष्कार किये हैं। कृषि-कार्य में तुम मेरी मदद कर सकते हो। तुम्हारी सलाह मेरे लिए उपयोगी हो सकती है।

मैं तो आपकी सेवा में हाजिर हूं निकोलाई पेत्रोविच। लेकिन लीबिग तक पहुंचना अभी बहुत दूर की बात है। पढ़ना शुरू करने से पहले क ख ग सीखना होता है। हमने तो अभी अक्षरों पर नजर जमाना भी नहीं सीखा।

इसमें शक नहीं हो तुम निहिलिस्ट निकोलाई पेत्रोविच ने सोचा। फिर कहा

फिर भी, मौका आने पर मैं तुम्हें परेशान किये बिना न रहूंगा। उम्मीद है इसका तुम मुझे अधिकार दोगे। हां तो भाई साहब मैं समझता हूं कि कालिन्दे से मिलने का समय हो गया। चलिए उधर चलें।

पावेल पेत्रोविच अपनी जगह से उठकर खड़े हो गये।

"हां," किसी की भी ओर खासतौर से न देखते हुए बोले, "हमारी तरह, युग के महान मस्तिष्कों के सम्पर्क से वंचित, पांच पांच या इससे भी अधिक सालो तक देहात में रहना वड़ी वदक़िस्मती है। अनायास-अनजाने ही आदमी गधा वन जाता है। चाहे जितनी कोशिश करो कि जो कुछ सीखा है वह भूल न जाओ, लेकिन तभी – एक दिन पता चलता है – कि तुम्हें जंग लग गया है, लोग कहते है कि इस तरह की मामूली मामूली बातों पर समय बरबाद करना समझदारी का लक्षण नही, और यह कि तुम खुद, बुढ़भस का शिकार हो गए हो। आह, लगता है जैसे युवा पीढ़ी ने चतुराई में हमें पछाड़ दिया है।"

पावेल पेत्रोविच धीरे धीरे अपनी एड़ियों के बल मुड़े और धीरे ही धीरे बाहर चले गए। निकोलाई पेत्रोविच ने भी उनका अनुसरण किया।

"क्या वे हमेशा से ही ऐसे है," दोनों भाइयों के जाने के बाद दरवाजे के बंद होते ही बजारोव ने शान्त भाव से पूछा।

"सुनो येवगेनी," आरकादी ने कहा, "इससे इन्कार नहीं किया जा सकता, और तुम भी यह जानते हो कि तुमने उन्हें बुरी तरह रौंद डाला है। तुमने उनका अपमान किया है।"

"नही बाबा, इन गंवार रईसों को गुदगुदाना, उनकी लल्लो-चप्पो करना मेरे बूते की बात नही। खोखले दम्भ, खोखली आदतों और खोखली टीमटाम के सिवा इनमें और कुछ नही है। अगर वह अपने को इतना गिनता है तो पीतर्सवर्ग में ही क्यों नही बना रहा... लेकिन बहुत हो चुका, अब छोड़ो उसे। मैंने एक पनियल गोबरैला पकड़ा

है एक दुर्लभ नमूना Dytiscus marginatus, कभी सुना है यह नाम ?
मैं तुम्हें दिखाऊँगा।

मैंने वायदा किया था कि तुम्हें उनकी कहानी सुनाऊँगा

आरकादी ने कहना शुरू किया।

गुबरैले की कहानी ?

बस बस बहुत बनो नहीं यवगनी। अपने ताऊजी की कहानी। तुम खुद जान जाओगे कि जैसा तुम समझते हो, वैसे आदमी वह नहीं हैं। उपहास और ताना के नहीं वह सहानुभूति के अधिकारी हैं।'

मैं कब इससे इन्कार करता हूँ। लेकिन तुम उनका राग अलापने के लिए क्यों इतना तुले हो ?

हमें किसी के प्रति अन्याय नहीं करना चाहिए यवगनी।

मतलब ?

सो कुछ नहीं। बस सुनो

और आरकादी ने उसे अपने ताऊजी की कहानी सुनाई। यह कहानी पाठकों को अगले परिच्छेद में मिलेगी।

७

अपने छोटे भाई निकोलाई की भाँति पावेल पेत्रोविच किरसानोव की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर हुई थी, और इसके बाद सामन्तों के सैन्य प्रशिक्षण केन्द्र में। छुटपन से ही वह अत्यन्त सुन्दर था। इसके अलावा उसमें आत्मविश्वास था एक तीखा मसखरापन था, वह लोगों को बिना चूके खुश करना जानता था। फौजी अफसरी का कमीशन मिलते ही उसने समाज में पाँव रखना शुरू किया। लोगों ने उसे खूब बढ़ाया चढ़ाया और वह दुनिया भर के मनमाने कौतुक

रचता, अपनी हर प्रकार की उचित-अनुचित इच्छा पूरी कर लेता, खूब नकलें उतारता, और इन सबके लिए भी उसे वाहवाही मिलती। स्त्रियां उसे देखकर पागल हो उठतीं, पुरुष उसे 'कुड़क-मुर्ग़' कहते और मन ही मन उससे जलते। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, वह अपने भाई के साथ उसी घर में रहता था। वह उसे हृदय से चाहता था, हालांकि दोनों में ज़रा भी साम्य नहीं था। निकोलाई पेत्रोविच के पांव में एक हल्का-सा कज था, उसका चेहरा-मोहरा छोटा, देखने में सुहावना लेकिन कुछ उदास-सा था। उसकी आंखें छोटी और काली थीं, वाल मुलायम और महीन। वह चीजों को सहज भाव से ग्रहण करना पसंद करता था, लेकिन वह पढ़ने का शौकीन था और सोसायटी से बचता था। पावेल पेत्रोविच सांझ होते ही कभी घर पर न टिकता, साहस और चुस्ती में वह मशहूर था (सोसायटी के युवकों में जिमनास्टिक का शौक उसी ने चलाया था) और पांच या छे से अधिक फ़्रेंच पुस्तकें उसने नहीं पढ़ी थीं। अठारह वर्ष की आयु में ही उसने कप्तानी प्राप्त कर ली थी और भविष्य का शानदार मानचित्र उसकी आंखों के सामने खुला था। सहसा सभी कुछ उलट गया।

उन दिनों सन्त पीतर्सबर्ग की सोसायटी में एक स्त्री थी जो विरल मौकों पर ही प्रकट होती थी। यह थी राजकुमारी 'र' जिसकी याद अभी भी बहुतों के हृदय में ताजा है। उसका पति बहुत ही सलीकेदार, प्रतिष्ठित, लेकिन अपेक्षाकृत भावशून्य था। उसके बच्चे नहीं थे। मोटे तौर पर यह कि वह कुछ अजीब जीवन बिताती थी। अचानक विदेशों के लिए चल पड़ती, और फिर अचानक ही रूस लौट आती। वह एक छिछली स्वच्छन्द युवती के रूप में प्रसिद्ध थी, मौज-मजे के भंवर में बरबस कूद पड़ती, इतना नाचती

कि निढाल हो जाता । यदा लोगों में हँसी ठिठोली करती धुँधली रोशनी में पकड़ अपने ड्राइंगरूम में—दोस्त से पन्ने—उनका मन बहलाती। लेकिन रात को वह रोती और प्रार्थना करती। उस जन में मिलना व आवेग उद्वेग से भरी अपने कमरे में चक्कर लगाते लगाते बहुधा सुबह कर देती वेदना से अपने हाथों को मरोड़ती या धम-सुस्त होते पीली और स्थिर बैठी रहती। दिन निकलता और वह एक बार फिर फैशन की पुतली बन जाती मित्रों के यहाँ चक्कर लगाती हँसती और बतियाती जो बहलाव का जरा-सा भी अवसर पाने पर उसमें कूदने के लिए तैयार नजर आती। उसका आकार प्रकार बहुत ही शानदार था। उसके बाल घने और सुनहरे थे। गुँथी हुई चोटियाँ नज घटनों के नीचे तक लटकती तो ऐसा मालूम होता जैसे सोने की नागिनें बल खा रही हों। लेकिन फिर भी उसे कोई सुन्दर नहीं कह सकता था। उसके चेहरे में केवल एक ही चीज अच्छी थी—उसकी आँखें और आँखें भी इतनी नहीं इसलिए कि वे बड़ी और कुछ बड़ी नहीं थीं—बल्कि उनकी नजर जो बहुत ही गतिशील और गहरी थी दुनिया से बेपरवाह उपेक्षा का भाव लिए उदासीनता की हद तक असम्भव उमंगों आकांक्षाओं में डूबी एक ऐसी नजर जिसकी थाह नहीं मिलती थी। उनमें उसकी उन आँखों में एक अजीब चमक थी जो उस समय भी उसका साथ नहीं छोड़ती थी जब वह बमानी लतीफों का लुभार झाड़ती थी। अत्यन्त नफासत के साथ वह कपड़े पहनती थी। एक नृत्य-समारोह में पावेल पेत्रोविच की उससे मुठभेड़ हुई उसके साथ माजुर्का नृत्य में वह शामिल हुआ और इस नृत्य के दौरान में एक भी शब्द उसके मुँह से ऐसा नहीं निकला जिसमें कोई तत्व हो। पावेल पेत्रोविच जी-जान से उस पर न्योछावर हो गया। सहज विजय पाने में वह माहिर था। यहाँ

भी जल्दी ही उसने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया। लेकिन सफलता से उसका जोश ठंडा न पड़ा, बल्कि इस स्त्री के साथ उसका लगाव और भी अधिक प्रबल तथा कसकपूर्ण हो गया। कारण कि इस स्त्री में, पूर्ण आत्मसमर्पण के क्षणों में भी, कोई ऐसी चीज बच रहती थी जो अनुल्लंघनीय तथा पहुंच से बाहर रह जाती थी, ऐसी जिसे कोई नहीं छू सकता। उसकी आत्मा में कुछ था जो रहस्यमय था, सिवा परमात्मा के जिसे अन्य कोई नही जान सकता था। ऐसा लगता था जैसे उसमें किन्ही दैवी शक्तियों का वास हो जिनकी थाह वह खुद भी नही पा सकती थी, जो उसे अपने इशारे पर नचाती थीं और जिनकी मनमानी के सामने उसकी दीन-हीन समझ की कोई हस्ती नही थी। उसका आचरण क्या था, असंगतियों का बेतुक मेल था। वह पत्र भी लिखती तो एक ऐसे आदमी को जो उसके लिए क़रीब क़रीब अपरिचित था। इन पत्रों के सिवा और कोई ऐसी चीज नही थी जो उसके पति के जायज सन्देहों को उकसाती। उसका प्रेम शोक में डूबा होता। जिसे वह अपने प्रेम का पात्र चुनती, उसके साथ न कभी वह हंसती, न मज़ाक़ करती, बस चुपचाप सुनती और अचरज का भाव लिए उसकी ओर ताकती रहती। कभी कभी, और अधिकांशतः अचानक, अचरज का यह भाव कण्टकित कर देनेवाले भय में बदल जाता। उसके चेहरे पर एक मुर्दनी-सी छा जाती, वहशियों जैसी वह दिखने लगती। वह अपने आपको शयनकक्ष में बंद कर लेती और उसकी दासी, ताली के छेद पर कान लगाकर, घुटी हुई उसकी सुबकियों की आवाज सुनती। मृदु प्रेम-क्रीड़ा के बाद जब कभी किरसानोव उसके पास से अपने कमरे में लौटकर आता तो, अदबदाकर, पूर्ण विफलता की भावना से उसका हृदय मरोड़ खाता, प्रतारणा की भावना उसके हृदय को बुरी तरह कचोटती। उसका हृदय वेदना में डूब जाता और

वह अपन स पूछता आखिर मैं और क्या चाहता हू? एक बार उसन उसे एक अगूठी भट की जिसके नग पर स्फिक्स* का चित्र अकित था।

यह क्या है? उसन पूछा। स्फिक्स है?

हा उसन कहा और यह स्फिक्स तुम हो।

मैं? उसन प्रश्न किया और धीरे धीरे, अपनी उसी अभद्य नजर से उसकी ओर देखा। फिर अपनी उसी विचित्र नजर से देखते हुए अस्पष्ट व्यग्य के स्वर में बोली यह बहुत अधिक चापलूसी का प्रदर्शन है समझ!

पावेल पेत्रोविच उस समय भी यत्रणा पाता था जब राजकुमारी र उससे प्रम करती थी लेकिन जब वह उसकी ओर से ठडी पड गई— और यह जल्दी ही हुआ—तो इसन उसे करीब करीब पागल ही बना दिया। प्रम और ईर्ष्या ने उसे झझोड डाला। वह उसे सताता जहा भी वह जाती उसका पीछा करता। उसकी हरकतो से तग आकर वह विदेश चली गई। उसन अपने कमीशन से त्यागपत्र दे दिया। मित्रो न समझाया अफसरो ने हुज्जत की लेकिन बेकार। वह भी राजकुमारी के पीछ पीछ चल दिया। चार साल तक उसन विदेशो की खाक छानी—कभी राजकुमारी के साथ लगा रहता कभी उसे जान-बूझकर आखो से ओझल हो जाने देता। वह अपन आपको खुद अपनी नजरो में गिरा हुआ अनुभव करता अपन हृदय की इस अस्थिरता से घृणा करता लेकिन सब बेकार। उसकी वह छवि—

---

*ग्रीक पौराणिक गाथाओ में वर्णित एक ऐसा प्राणी जिसका धड शेरनी का और सिर स्त्री का है।—स०

चकरा देनेवाली, क़रीब करीब बेहूदा, लेकिन मुग्धकारी छवि–उसके हृदय में खूब गहरे उतर चुकी थी। बाडेन में, संयोगवश, पुराने स्तर पर वे फिर एक-दूसरे के निकट आ गए। ऐसा मालूम होता था जैसे राजकुमारी ने इतना प्यार पहले कभी उसपर न्योछावर नहीं किया था ... लेकिन अभी मुश्किल से एक महीना भी न बीता होगा कि सब कुछ ग़ायब हो गया–प्रेम की लौ जैसे आखिरी बार भड़ककर सदा के लिए बुझ गई। यह अनुभव कर कि विच्छेद के सिवा अब और कोई चारा नहीं है, उसने चाहा कि वह, कम से कम, उसका मित्र ही बना रहे, मानो उस जैसी स्त्री से मित्रता बनाए रखना सम्भव हो... लेकिन वह बाडेन मे उसे चकमा देकर खिसक गई और इसके बाद उससे कतराती रही। किरसानोव रूस लौट आया। उसने कोशिश की कि अपने पुराने जीवन को फिर शुरू करे, लेकिन पुरानी चूल में बैठना उसके लिए सम्भव नही हुआ। अभिशप्त की भांति कभी वह यहां जाता, कभी वहां। सभा-सोसायटी में भी वह निकलता, दुनियादारी का भी परिचय देता, यहां तक कि दो या तीन नयी विजयों का सेहरा बांधने में भी वह सफल हुआ, लेकिन खुद अपने या दूसरों के लिए भरी-पूरी आशा-आकांक्षाओ से–उमंगों की रवानी से–उसका हृदय सूना हो चुका था, और अपनी स्थिति को बेहतर बनाने का वह कोई प्रयास नही करता था। वह बूढ़ा हो चला, सिर के बाल सफ़ेद होने लगे। सांझ को किसी क्लब में जाकर बैठना, झुझलाहट भरी ऊब या घरवाली-विहीन मित्रो के साथ गप्पें हाकने मे समय बिताना उसके लिए जरूरी हो गया। निश्चय ही यह कोई अच्छा लक्षण नहीं। ऐसी हालत में, कहने की आवश्यकता नही, घर बसाने का सवाल ही नही उठता –यह बात उसके मन से कोसों दूर थी। इस तरह दस साल गुजर गए –बेरंग, बंजर, और गतिवान–

भयानक रूप मे गतिवान। रूस म समय जितनी तेजी से गुजरता है उतनी तजी से अन्य कहा नही और कैदखान में—लोग कहते हैं—वह और भी तजी से गजरता है एक दिन उस समय जबकि वह क्लब में भोजन कर रहा था पावेल पत्रोविच न राजकुमारी र की मत्यु का समाचार सुना। करीब करीब पागलपन की स्थिति में पेरिस में उसकी मत्यु हुई थी। वह मज पर मे उठ गया और क्लब के कमरा म इधर से उधर टहलन लगा। फिर उस जगह जहा लोग ताश खल रह थ वह इस तरह रुककर खडा हो गया मानो पत्थर की मूर्ति हो। यह सब होन पर भी उस दिन अन्य दिनो की अपेक्षा वह कुछ पहले घर नही लौटा। इसके कुछ दिन बाद उसे एक छोटा-सा पारसल मिला। इसम वही अगूठी थी जो उसने राजकुमारी र को दी थी। स्फिक्स के चित्र पर क्रास का चिन्ह बना था और पावेल पेत्रोविच के लिए उसन कहला भजा था कि क्रास ही उसकी पहेली का जवाब है।

यह १८४८ के प्रारम्भ की घटना है। ठीक उन्ही दिनो अपनी पत्नी की मत्यु के बाद निकोलाई पेत्रोविच सन्त पीतसबग पहुचा। देहात म जाकर निकोलाई पत्रोविच के बसन से लेकर अब तक पावेल पेत्रोविच अपन भाई की खर-खबर से करीब करीब एकदम बगाना था। निकोलाई पेत्रोविच का विवाह सयोग की बात उन्हा दिनो हुआ था जिन दिनो कि राजकुमारी र के साथ पावेल पेत्रोविच के परिचय का शुरुआत चल रहा था। विदेशो म भटकने के बाद वह अपन भाई के पास गया था। उसका इरादा था कि अपन भाई के दाम्पत्य सुख की छाया में कुछ महीन वह गुजार देगा। लेकिन वह इसे एक सप्ताह से अधिक नहा सह सका। दोनो भाइयो की स्थिति का अन्तर जरूरत से ज्यादा उभर आया। १८४८ म यह अन्तर उतना नही उभरा। निकोलाई पेत्रोविच

अपनी पत्नी को गंवा चुका था, पावेल पेत्रोविच की स्मृतियों का भी अब कोई अवशेष नही रहा था। राजकुमारी की मृत्यु के बाद उसने उसे अपनी स्मृति से निर्वासित करने की भरसक कोशिश की थी। लेकिन निकोलाई पेत्रोविच को यह सुख-सन्तोष तो था कि उसका जीवन भली भांति गुज़रा —एक वेटा था जो उसकी आंखो के सामने बढ़ रहा था। उधर पावेल—ठीक इसके प्रतिकूल—एकाकी और विधुर, जीवन के उस धुंधलके में प्रवेश कर रहा था जिसमें आशाएं खेद का स्थान ले लेती है और खेद आशाओं का स्थान ले लेता है, जब कि युवावस्था तो विदा हो जाती है लेकिन वृद्धावस्था का अभी पदार्पण नहीं होता।

जीवन का यह काल यो सभी के लिए कठिन होता है, लेकिन पावेल के लिए तो और भी भारी पड़ा। कारण कि अतीत के साथ उसने अपना सर्वस्व—अपना सभी कुछ—खो दिया था।

"तुम्हें अब मारिनो चलने का न्योता नही दूगा," निकोलाई पेत्रोविच ने एक समय उनसे कहा (जागीर का यह नाम उसने अपनी पत्नी के सम्मान में रखा था), "जब मेरी प्रिय पत्नी जीवित थी, तभी तुम वहां ऊब उठे थे, और अब तो मुझे डर है कि तुम्हारा एकदम दिल ही वैठ जाएगा।"

"उन दिनों न तो मेरा चित्त ठिकाने था न वुद्धि," पावेल पेत्रोविच ने जवाव दिया था, "अब वुद्धि चाहे ठिकाने पर न आई हो, लेकिन चित्त जरूर आ गया है। अव वह वात नही, और अगर तुम्हें ऐतराज न हो मैं हमेशा के लिए तुम्हारे साथ रहना पसंद करूंगा।"

निकोलाई पेत्रोविच ने इसका जवाव उसे अपनी वांहों में भरकर दिया। लेकिन, इस वातचीत के वाद भी डेढ़ साल गुजर गया,

तब कहीं आकर पावेल पत्राविच अपने इरादे को कायरूप में परिणत कर सका। और एक बार जब वह देहात में आकर बस गया, उसके बाद वह फिर कभी वहां से नहीं हिला—उन तीन जाडों में भी नहीं जब कि निकोलाई पत्राविच अपने पुत्र के पास पीतर्सबर्ग में आकर रहा था। उसने पुस्तकें—अधिकांशत अंग्रेजी—पढ़ने में मन लगाया। यों, सच पूछो तो उसका समूचा जीवन ही अंग्रेजी सांचे में ढला था। वह विरले ही अपने पड़ोसियों से मिलता था, केवल चुनाव के दिनों में ही बाहर निकलता था और तब भी—आमतौर से—अपना मुंह नहीं खोलता था, और अगर खोलता भी था तो उस समय जब अपनी उदार फब्तियों से वह पुराने जमाने के जागीरदार कुलीनों को चिढ़ाना और चौंकाना चाहता था। इसी के साथ साथ वह नयी पीढ़ी से भी कन्नी काटता था। दोनों ही दल उसे अहंकारी समझते, लेकिन दोनों ही उसकी इज्जत भी करते। उनके ऊपर उसकी बेदाग कुलीन मुखाकृति का, उसकी 'विजयों' की ख्याति का, कपड़े पहनने के उसके उत्कृष्ट ढंग और सर्वश्रेष्ठ होटलों के उत्कृष्ट कमरों में उसके ठहरने का, भोजन करने के उसके बढ़िया तौर-तरीकों का और इस तथ्य का कि एक बार लुई फिलिप की मेज पर वह वैलिंगटन के साथ भोजन कर चुका था रोब छाया हुआ था। वह हमेशा अपने साथ असली चांदी का ड्रेसिंग केस और मुसाफिरी बाथ-टब (स्नान करने का पात्र) लेकर चलता था उसका बदन एक खास—बहुत ही शानदार—इत्र में बसा रहता था, ताश खेलने में वह बेजोड़ था और मजा यह कि हमेशा उसमें हारता था—इन सब बातों के लिए, और अन्त में इस बात के लिए भी कि वह अपने ईमान का एकदम पक्का था, सब उसका मान करते थे। स्त्रियां उसे उदासी में खोया एक आकर्षक व्यक्ति समझतीं, लेकिन वह उनकी संगत पाने का प्रयत्न न करता

"सो देखा, येवगेनी," अपने वर्णन को पूरा करते हुए आरकादी न कहा, "अब तुम खुद समझ सकते हो कि ताऊजी के साथ तुमने कितना अन्याय किया है। इस बात का मै जिक्र नही करूंगा कि कितनी बार उन्होंने मेरे पिता को कठिनाइयों में से उबारा, अपनी सारी पूंजी उन्हें सौंप दी—तुम्हें शायद मालूम न हो, लेकिन जागीर का हिस्सा-बांट नहीं हुआ है— फिर भी वह हर किसी की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं और हमेशा किसानों की तरफ़दारी करते हैं। हां, यह सच है कि जब वह किसानों से बात करते हैं तो नाक विचकाते और इत्र की महक छोड़ते है ..."

"दिमागी सनक—इसमें शक नही!" बजारोव ने बीच मे ही कहा।

"हो सकता है, लेकिन उनका हृदय ठिकाने पर है। इसके अलावा, उन्हें मूर्ख भी किसी तरह नही कहा जा सकता। उन्होंने जाने कितनी नेक सलाहें मुझे दी हैं... खासतौर से ... खासतौर से स्त्रियों के बारे में।"

"ओह, अपने दूध से खुद को जलाने के बाद दूसरों के ठंडे पानी पर फूंक मारना। यह सब हम खूब जानते है।"

"संक्षेप में यह कि," आरकादी कहता गया, "विश्वास करो, वह बेहद दुःखी है। उनसे घृणा करना शर्म की बात है।"

"लेकिन उनसे घृणा कौन करता है?" बजारोव ने प्रतिवाद किया। "फिर भी, यह तो मानना ही पड़ेगा कि वह आदमी जिसने एक स्त्री के प्रेम के दांव पर अपना समूचा जीवन लगा दिया और जो, दांव में हार जाने के बाद टुकड़े टुकड़े हो जाता है और अपने आपको बर्बाद होने देता है— इस तरह का जीव आदमी नहीं है, उसे मर्द नहीं कहा जा सकता। तुम कहते हो कि वह दुःखी है।

तुम से ज्यादा यह और कौन जानेगा। लेकिन उस सारी मुटासात से अभी तक उनका पीछा नहीं छूटा है। मेरा यह पक्का विश्वास है कि वह अपने आपको सचमुच चतुर समझते हैं। सिर्फ इसलिए कि वह गालिगनानी जैसे चिथड़ा-पत्र पढ़ते हैं और कभी कभी भूले भटके किसी देहकान को कोड़ों की मार से बचा लेते हैं।

लेकिन तुम्हें यह भी याद रखना चाहिए कि किस तरह की शिक्षा दीक्षा उन्हें मिली है और किस जमाने में उन्हें जीवन बिताना पड़ा है। आरकादी ने कहा।

शिक्षा दीक्षा? बजारोव बोल उठा। हर आदमी खुद अपने को शिक्षित करता है—मिसाल के लिए जैसे कि मैं और जहां तक जमाने का सम्बंध है मैं क्या उसपर निर्भर रहूं? अच्छा यही है कि वह मुझपर निर्भर रहे। नहीं मेरे प्यारे साथी यह सब कुछ नहीं। यह निरा भ्रम है खोखलापन है। और जरा यह तो बताओ कि पुरुष और स्त्रियों के बीच के उन रहस्यमय सम्बंधों का भला इससे क्या वास्ता? हम शरीर विज्ञानशास्त्री इन सम्बंधों का सारा रहस्य जानते हैं। जरा आंख की बनावट का अध्ययन करके तो देखो वह भेद भरी चितवन तुरत हवा हो जायगी जिसके पीछे तुम मरते हो। यह सब रोमांटिकता है बकवास है कूड़ा-करकट और मन का भुलावा है। इससे तो यह कहीं अच्छा है कि चलो जरा अपने गोबरैले को देखें।

और वे दोनों बजारोव के कमरे की ओर चल दिए। कमरे से एक विचित्र प्रकार की अस्पताली तथा सस्ते तम्बाकू की मिश्रित गंध आ रही थी।

जागीर के कारिन्दे के साथ अपने भाई की बातचीत के समय पावेल पेत्रोविच अधिक देर तक वहां नही टिके। कारिन्दा लम्बे कद और छरहरे बदन का आदमी था। क्षयग्रस्त-सी मीठी उसकी आवाज थी और आंखों से पाजीपन झलकता था। अपने मालिक की सभी बातों के जवाब में एक ही अलाप उसके मुह से निकलता – "क्यों नहीं, मालिक! बेशक, मालिक!" और सभी किसानों को वह पियक्कड़ तथा चोर जताने का प्रयत्न करता। हाल ही में नये ढर्रे पर ढाला गया फ़ार्म बिना तेलियाए छकड़े की भांति चूं-चरर करता और घर के बने कच्ची लकड़ी के सामान की भांति तड़क चला था। निकोलाई पेत्रोविच नाउम्मीद तो नही हुए, लेकिन वह रह रहकर उसांसें छोड़ते और सोच में पड़ जाते। उन्होंने अनुभव किया कि बिना पूंजी के गाड़ी नहीं चल सकती, लेकिन पास की जमा-पूंजी क़रीब करीब सब ख़त्म हो चुकी थी। आरकादी ने सच ही कहा था। पावेल पेत्रोविच एक से अधिक बार अपने भाई को उबार चुके थे। अधिकतर जब वह उन्हें चूर चूर होते तथा मुसीबतों से छूटने के लिए सिर खपाते देखते तो वह धीमे डगों से खिड़की के पास जाकर खड़े हो जाते और अपनी जेबों में हाथ खोंसते हुए बुदबुदाते – "Mais je puis vous donner de l'argent*," और उन्हें कुछ धन दे देते। लेकिन उस दिन खुद उनके पास कुछ नही था, इसलिए उन्होंने वहां से खिसक जाना ही अच्छा समझा। कारबार की चिन्ताओं से उन्हें बेहद ऊब मालूम होती थी। इसके अलावा यह सन्देह भी उन्हें बराबर कुरेदता रहता था कि अपने

---

* मेरी जेब तुम्हारे लिए बराबर खुली रहेगी। (फ़्रेंच) – सं०

तमाम जोश और क्रियाशीलता के बावजूद निकोलाई पेत्रोविच चीज़ों को ठीक ढंग से नहीं संभाल पाते। हालांकि यह वह खुद भी नहीं बता सकते थे कि वह क्या ग़लती करते हैं। मेरा भाई काफ़ी व्यवहार कुशल नहीं है वह मन ही मन अपने से कहते, 'उसे धोखा दिया जा रहा है। इसके प्रतिकूल निकोलाई पेत्रोविच अपने भाई की समझ बूझ की भारी कद्र करते थे और हमेशा उनसे सलाह लेते थे। मैं एक मुलायम और कमज़ोर इरादे का आदमी हूं। मेरा सारा जीवन इन पिछड़े इलाकों में ही गुज़रा है वह कहते जबकि तुम्हारा लोगों से खूब रब्त-ज़ब्त रहा है और तुम उनकी रग रग पहचानते हो। तुम्हारी दृष्टि गिद्ध की भांति पैनी है। जवाब में पावेल पेत्रोविच केवल मुंह फेर लेते अपने भाई के मस्तिष्क को ठिकाने पर लाने का प्रयत्न न करते।

निकोलाई पेत्रोविच को अपने अध्ययन कक्ष में छोड़ वह उस गलियारे में निकल आए जो घर के अग्रभाग को उसके पिछले हिस्से से अलग करता था और एक नीचे दरवाज़े के सामने चिन्तित मुद्रा में ठिठककर खड़े हो गए। उन्होंने अपनी मूंछों को नोचा और दरवाज़े को खटखटाया।

कौन है? आइए भीतर चले आइए फेनिचका की आवाज़ आई।

मैं हूं दरवाज़े को खोलते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा।

फेनिचका कुर्सी पर अपने बच्चे को लिए हुए बैठी थी। वह उछलकर खड़ी हो गई। उसने बच्चे को एक लड़की के हाथों में थमा दिया जो उसे लेकर तुरंत कमरे से बाहर चली गई। फेनिचका ने [illegible] सिर का रूमाल ठीक किया।

बाधा [illegible] लिए क्षमा करें उसकी ओर देखे बिना ही पावेल

पेत्रोविच ने कहना शुरू किया, "मुझे तुमसे केवल एक बात कहनी थी... मेरा विश्वास है कि आज कोई न कोई शहर जा रहा होगा... मेहरबानी हो अगर मेरे लिए कुछ हरी चाय मंगवा दो।"

"बहुत अच्छा, मालिक," फ़ेनिचका ने जवाब दिया, कितनी चाहिए?"

"ओह, मेरे खयाल में आधा पौंड काफ़ी होगी," पावेल पेत्रोविच ने कहा और फिर इर्द-गिर्द तथा फ़ेनिचका के चेहरे पर भी एक उड़ती-सी नज़र डालते हुए बोले, "आज तो यहां कुछ परिवर्तन नज़र आ रहा है।" यह देखकर कि वह समझ नहीं पाई है, उन्होंने फिर कहा—"ये पर्दे..."

"अरे हां, ये पर्दे, मालिक! निकोलाई पेत्रोविच ने मुझे दिए थे। लेकिन ये तो काफ़ी दिनों से टंगे हैं।"

"हां, और तुम्हारे कमरे में आए भी मुझे काफ़ी दिन हो गए। अब यह बढ़िया हो गया।

"यह सब निकोलाई पेत्रोविच की कृपा का फल है," फ़ेनिचका ने बुदबुदाकर कहा।

"अपने पुराने कमरे के मुक़ाबिले में यहां तो ज़्यादा आराम से हो न?" बहुत ही विनम्रता के साथ, अपने होंठों पर ज़रा-सी मुसकराहट लाए बिना, पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"हां, मालिक।"

"तुम्हारे पुराने कमरे में अब कौन है?"

"धोबीघर की दासियां।"

"ओह!"

पावेल पेत्रोविच चुप हो रहे। "अब ये जा रहे हैं," फ़ेनिचका ने सोचा, लेकिन वह गए नहीं। फ़ेनिचका उनके सामने, अपनी

उसी जगह पर स्थिर खड़ी अपनी उगलियां को तोड़ती-मोड़ती रही।

बच्चे को तुमने बाहर क्यों भेज दिया? आखिर पावेल पेशाविच ने कहा। बच्चों का मुझे शौक है। जरा बुलवाओ न उसे।

घबराहट और आनन्द से फनिचका के गालों पर लाली दौड़ गई। पावेल पेशाविच से उसे डर लगता था। विरले ही वह उससे बोलते थे।

दुन्याशा! उसने आवाज दी जरा मित्या को यहां ले आओ! (घर में किसी को भी वह तू से सम्बोधित नहीं करती थी) नहीं जरा ठहरो। पहले उसे कपड़े तो पहना लो। फनिचका दरवाजे की ओर बढ़ी।

अरे छोड़ो भी।

अभी आई। बस एक मिनट। फनिचका ने जवाब दिया और ओझल हो गई।

अकेले रह जाने पर पावेल पेशाविच ने कमरे का सावधानी से पर्यवेक्षण किया। छोटा-सा नीची छतवाला यह कमरा बहुत ही सुहावना और साफ-सुथरा था। ताज़ा रंग हुए फर्श के तख्तों से कामामिल तथा मेलिसा की खुशबू आ रही थी। दीवारों के सहारे पखनुमा पीठवाली कुर्सियां रखी थीं। स्वर्गीय जनरल ने इन्हें लड़ाई के दिनों में पोलैण्ड में खरीदा था। एक कोने में पलंग बिछा था जिसके ऊपर मसलिन का चन्दोवा तना था। उसी से सटा मेहराबदार ढक्कनवाला एक सन्दूक था जिसमें पत्तियां जड़ी थीं। इसके सामनेवाले कोने में सन्त निकोलाई की एक बड़ी काली प्रतिमा के आगे एक छोटा-सा दीप जल रहा था। आलोक मण्डल से एक लाल फीता लटका था। इसके दूसरे छोर पर चीनी का एक छोटा-सा

क़ुमक़ुमा बंधा था जो सन्त के वक्ष पर झूल रहा था। खिड़कियों की ओटक पर, जिनका हरा रंग चमक रहा था, मर्तबान रखे थे। इनमें पिछले साल के अचार-मुरब्बे भरे थे। इनके मुह, बड़ी सावधानी से, काग़ज से बंद थे और फ़ेनिचका ने, अपनी टेढ़ी-मेढ़ी लिखावट में, कागज़ पर लिख रखा था: "गूजबैरी"। निकोलाई पेत्रोविच को यह मुरब्बा खासतौर से पसंद था। छत से बंधी रस्सी में एक पिंजरा लटका था। उसमें टुंडी दुमवाला सिसकिन पक्षी निरन्तर चहचहा रहा था, इधर से उधर फुदक रहा था, और पिंजरा लगातार हिल और डोल रहा था। पटुवा के बीज फर्श पर गिरकर पटापट की आवाज कर रहे थे। खिड़कियों के बीच की दीवार पर, खानेवाली एक छोटी अलमारी के ऊपर, विभिन्न मुद्राओं में निकोलाई पेत्रोविच के कुछ रद्दी-से फोटो लटके थे। उन्हें किसी मामूली फ़ोटोग्राफ़र ने उतारा था। इनकी बगल में ही खुद फ़ेनिचका का एक फ़ोटो लटका था जो एकदम वाहियात था। छोटे-से काले चौखटे के भीतर से एक अंधा और अस्वाभाविक मुसकान से युक्त चेहरा झांक रहा था, बाक़ी सब लिप-पुतकर बराबर हो गया था। फ़ेनिचका के चित्र के ऊपर सिरकासी ढंग का नम्दे का चोगा पहने जेनरल येरमोलोव का चित्र था। अपनी भौंहों को सिकोड़, दूर हवा में अटके काकेशी पहाड़ों को वह घूर रहे थे। जूते की शक्ल का एक रेशमी पिनकुशन उनकी भौंहों के आगे झूल रहा था।

पांच मिनट हो गए। बराबरवाले कमरे में सरसराहट और फ़ुसफ़ुसाहट-सी हो रही थी। पावेल पेत्रोविच ने अलमारी में से एक किताब उठाई जो अंगूठे के धब्बों से भरी थी। यह मस्साल्स्की कृत 'शाही स्त्रेल्त्सी' की कोई जिल्द थी। उन्होंने उसके पन्ने पलटने शुरू किए... तभी दरवाजा खुला और अपनी बांहों में मित्या को लिए

हुए फेनिचका ने प्रवेश किया। उसने उसे एक छोटी-सी लाल कमीज़ पहना रखी थी जिसके कालर में ज़री की बेल कढ़ी थी। उसके बाल संवारे हुए थे और मुंह साफ किया हुआ था। वह हांफ रहा था, अपने बदन को किलबिला और छोटे-छोटे हाथों को हिला रहा था जैसा कि सभी स्वस्थ बच्चे करते हैं। अपनी लकदक कमीज़ में, साफ मालूम होता था, कि वह एक ठाठ का अनुभव कर रहा है —उसका नन्हा गुदगुदा बदन आनन्द से खिला पड़ता था। फेनिचका ने भी अपने बालों को संवार लिया था और रूमाल भी बदल डाला था, हालांकि इतना कष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। कारण स्पष्ट है। गोद में हृष्ट-पुष्ट शिशु लिए सुन्दर युवती मां से अधिक मुग्धकर चीज़ इस दुनिया में और क्या हो सकती है?

वाह, मेरे नन्हे पहलवान! दुलार में भरकर मित्या की दोहरी ठोडी को अपनी तर्जनी उंगली के नाखून से गुदगुदाते हुए पावेल पत्रोविच ने कहा। बच्चे ने सिसकिन पक्षी की ओर ताकते हुए हुमक-कर किलकारी भरी।

'अरे देख, ताऊजी हैं, उसे एक हल्का-सा झटका देते और अपना मुंह झुकाकर उसके निकट ले जाते हुए फेनिचका ने कहा। दुन्याशा ने खिड़की की ओटक के ऊपर ताम्बे की मुद्रा पर धूपबत्ती जलाकर रख दी।

"यह कितने महीने का है?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"छै महीने का। ग्यारह तारीख़ से सातवां लग जाएगा।"

"सातवां क्या, आठवां नहीं लगेगा, फेदोसिया निकोलायेवना?" दुन्याशा ने दबे अन्दाज़ में कहा।

"नहीं, एकदम सातवां!"

बच्चा फिर गुदगुदा उठा। सन्दूक से उसकी आंखें जा चिपकीं

और फिर, अचानक, एक साथ अपनी पांचों उंगलियों से मां की नाक तथा होंठों को पकड़ लिया।

"पाजी, पाजी कहीं का!" अपना मुंह हटाने का प्रयत्न न करते हुए फ़ेनिचका ने कहा।

"अरे यह तो मेरे भाई जैसा है," पावेल पेत्रोविच ने कहा।

"उन जैसा नहीं होगा तो कैसा होगा?" फ़ेनिचका ने मन में कहा।

"हां," पावेल पेत्रोविच कहता गया, जैसे अपने से ही बातें कर रहा हो, "सच, रत्ती-भर भी फ़र्क़ नहीं!"

उन्होंने बड़े ध्यान से, क़रीब क़रीब उदासी पर उतरे भाव से, फ़ेनिचका की ओर देखा।

"इधर देख... ताऊजी!" फ़ेनिचका ने दोहराया, इस बार फुसफुसाती आवाज़ में।

"ओह, पावेल। सो आप यहां हैं!" सहसा निकोलाई पेत्रोविच की आवाज सुनाई दी।

पावेल पेत्रोविच, भौंहों में बल डाले, घूमकर मुड़ गए। लेकिन उनका भाई कुछ इतने अकृत्रिम उल्लास तथा गदगद भाव से उनकी ओर देख रहे थे कि जवाब में वह भी मुसकराए बिना नहीं रह सके।

"तुम्हारा यह नन्हा बहुत ही प्यारा है," कहते हुए उन्होंने अपनी घड़ी की ओर देखा। "अपने लिए थोड़ी चाय मंगानी थी। सोचा, कहता चलूं।"

और लापरवाही का सा भाव दिखाते हुए तुरत कमरे से चले गए।

"वह खुद अपने आप आए थे?" निकोलाई पेत्रोविच ने फ़ेनिचका से पूछा।

"हां। उन्होंने दरवाजा खटखटाया, और बस भीतर आ गए।"

ठीक। और क्या ग्रारवादी भी फिर तुम्हारे पास आया था? '

नहा। लेकिन निकोलाई पत्रोविच, क्या यह अच्छा न होगा कि मैं फिर अपन पुराने कमरे में लौट जाऊ?"

सो किस लिए?

म सोच रही थी कि मौजूदा सूरत में यह सबसे अच्छा होगा।

नहीं नहीं कुछ हकलाते और अपन माथ पर उगलियां फरते हुए निकोलाई पत्रोविच न कहा। ऐसा ही था तो सब पहले सोच लेना चाहिए था। फिर सहसा हसकर और बच्चे के पास जाकर उसके गाल का चुम्बन लेते हुए वह उठे हैल्लो मेरे नाटल कबूतर! इसके बाद थोडा झुककर उन्होंने अपन होठो से फनिच्का के हाथ का स्पर्श किया जो बच्चे की लाल कमीज से सटा मक्खन की भाति सफेद मालूम होता था।

ओह नहीं यह आप क्या कर रहे हैं निकोलाई पेत्राविच? अपनी आखो को नीचे गिराते और उन्हे फिर धीरे धीरे उठाते हुए फनिच्का न उखड़ी-सी आवाज में कहा उस समय उसके चेहरे की मुद्रा बहुत ही प्यारी लग रही थी। उसकी पलके झुकी थी होठो पर मुसकान काप रही थी और वह हतबुद्धि-सी झुकी पलको के झरोखे में से झाक रही थी।

जिन परिस्थितियो में निकोलाई पेत्रोविच का फनिच्का स मिलन हुआ वे इस प्रकार हैं

कोई तीन साल पहले की बात है। एक दिन किसी दूरस्थित देहाती कस्बे की सराय म उन्हें रात बितानी पड़ी। अपन कमरे की सफाई और बिछावन की ताजगी देखकर वह मुग्ध रह गए। सराय की मालकिन निश्चय ही जमन होगी उन्होंने मन में सोचा, लेकिन

वह रूसी ही निकली। श्रायु क़रीब पचास वर्ष, साफ़-सुथरे कपड़े पहने, चेहरे पर बुद्धिमानी की झलक, बोलने में गम्भीर। चाय के समय उससे बातचीत करने का मौक़ा मिला। वह उनपर रीझ गई। उन दिनों निकोलाई पेत्रोविच ने अपन नये घर में रहना शुरू किया ही था। और चूंकि अपने इर्द-गिर्द वह वंधक-दासों की फ़ौज खड़ी करना नहीं चाहते थे, इसलिए उन्हें वेतन पर काम करनेवाले नौकरों की तलाश थी। उधर सराय की मालकिन मुसाफ़िरो की कमी से परेशान और बुरे दिनों से तंग थी। निकोलाई पेत्रोविच ने प्रस्ताव किया कि वह घर का काम-काज संभाल ले। उसने स्वीकार कर लिया। उसका पति बहुत पहले ही मर गया था और सन्तान के नाम पर केवल एक लड़की – फ़ेनिचका – छोड़ गया था। एक पखवारे के भीतर ही अरीना साविशना (नयी भण्डारिन का यही नाम था) अपनी लड़की के साथ मारिनो आ गई और घर के छोटे हिस्से में उसने अपना आसन जमा लिया। निकोलाई पेत्रोविच की पसंद अच्छी सिद्ध हुई। देखते-न-देखते अरीना ने घर की शक्ल निखार दी। फ़ेनिचका तब सत्रह साल की थी। वह विरले ही दिखाई देती, और न ही उसका कभी कोई जिक्र चलता। वह अलग-थलग और चुपचाप रहती और केवल रविवार के दिनों में ही, बस्ती के गिरजाघर के किसी कोने में, निकोलाई पेत्रोविच को ताजगी लिए उसके चेहरे की कोमल रेखाओं की झलक मिलती। इस तरह एक साल से भी कुछ अधिक गुज़र गया।

एक दिन, सुबह के समय, अरीना उनके अध्ययनकक्ष में आई और अपनी आदत के अनुसार नीचे तक झुककर अभिवादन करते हुए बोली कि उसकी लड़की की आंख में तन्दूर से उड़कर एक चिंगारी गिर गई है। ज़रा उसे देख लें। सभी घर-जीवियों की भांति निकोलाई

पेत्रोविच भी थोडी-बहुत घरेलू डाक्टरी कर लेते थे और होमियोपैथी की दवाइयों का एक बक्सा भी उन्होंने अपने पास रख छोड़ा था। उन्होंने हुक्म दिया कि रोगी को तुरत उनके पास लाया जाय। फनिचका ने जब यह सुना कि मालिक उसे बुला रहे हैं तो वह डर के मारे सिकुड़ गई लेकिन फिर भी अपनी मां के साथ चली गई। निकोलाई पेत्रोविच उसे खींचकर खिड़की के पास ले गए और अपने दोनों हाथों में उसका सिर थाम लिया। उसकी सूजी हुई आंख को सावधानी से देखने के बाद उन्होंने एक लोशन तजवीजा, उसे खुद तैयार किया और अपने रूमाल से धज्जियां फाड़कर बताया कि उसे किस तरह इस्तेमाल करना होगा। सब कुछ सुन लेने के बाद फनिचका जाने के लिए मुड़ी। अरी पगली, मालिक का हाथ तो चूम! अरीना ने कहा। निकोलाई पेत्रोविच ने अपना हाथ नहीं बढ़ाया और वह खुद भी सकपका उठे थे—उन्होंने उसके झुके हुए सिर की मांग पर एक चुम्बन अंकित कर दिया। फनिचका की आंख जल्दी ही ठीक हो गई। लेकिन निकोलाई पेत्रोविच के मन पर उसने जो छाप छोड़ी थी वह जल्दी मिटनेवाला नहीं था। उसका वह निश्छल मधुर और ऊपर को उठा हुआ कम्पनशील चेहरा भुलाए न भूलता। हर घड़ी उसकी याद आती अपनी हथेलियों में उसके मुलायम बालों के स्पर्श को वह अभी भी अनुभव करते उसके उन अद्‌भुत थोड़े खुले हुए होठों का चित्र उनकी आंखों के सामने मूर्त हो उठता जिनके भीतर से ओस के मोतियों की भांति उसके दूधिया दांत सूरज की रोशनी में चमक रहे थे। फिर से उन्होंने उसे अदब और बड़ी लगन के साथ देखना शुरू किया उससे बातचीत करने की भी कोशिश की। पहले-पहल तो वह लाज के मारे जैसे धरती में समा जाना चाहती। एक सांझ—उस समय जब वह राई के खेत में से निकली एक सकरी

पगडंडी पर चले आ रहे थे–तो वह राई, वर्मवुड और कौर्नफ़्लावर के एक घने ऊंचे झुरमुट में छिप गई, इस डर से कि कहीं वह उनके सामने न पड़ जाय। लेकिन राई की सुनहरी जाली के बीच से उन्हें उसके सिर की झलक दिखाई दी। किसी नन्हे जंगली जीव की भांति वह उनकी ओर ताक रही थी।

"गुडईवनिंग, फ़ेनिचका! डरो नही, मैं तुम्हें काट नहीं खाऊंगा!" उन्होंने मुलायम स्वर में कहा।

"गुडईवनिंग," उसने अस्फुट आवाज में कहा और वहीं दुबकी रही।

धीरे-धीरे वह उनकी अभ्यस्त हो गई, लेकिन उनकी उपस्थिति में उसका शरमाना अभी दूर नही हुआ। सहसा उसकी मां अरीना हैजे में चल बसी। अब वह क्या करती? क़ायदे से रहना, सहज बुद्धि, और गम्भीरता उसने अपनी मां से प्राप्त की थी, लेकिन वह इतनी कम-उम्र, इतनी अकेली और निकोलाई पेत्रोविच इतने भले और इतने नम्र थे... इसके बाद जो हुआ सो प्रत्यक्ष है...

"हां तो भाई साहब दर असल तुमसे मिलने आए थे?" निकोलाई पेत्रोविच ने उससे पूछा। "दरवाज़ा खटखटाया और बस चले आए ?"

"हां, मालिक।"

"सच, यह बहुत अच्छा हुआ। लाओ, जरा मित्या से खेल लिया जाय।"

और निकोलाई पेत्रोविच ने उसे उछालना शुरू किया–इतना कि वह छत को छूता मालूम होता। बच्चा तो खुशी से किलकारी मारता और मां की जैसे जान सूख जाती। हर बार, जब भी वह

ऊपर जाता, वह उसके उघरे हुए छोटे छोटे पावों को पकड़ने के लिए अपनी बाहें फैलाकर रह जाती।

उधर पावेल पेत्रोविच लौटकर अपने ठाटदार अध्ययन कक्ष में चले आए जिसकी दीवारों पर बहुत ही नफीस सलेटी अबरी लगी थी और रंगबिरंगे ईरानी कालीन पर हथियार लटके थे। गहरे रंग के हरे नुमाइशी मखमल की गद्दियों से नैम अखरोट की लकड़ी का फर्नीचर सजा था। एक रिनेसा किताबघर था जो पुराने काले बलूत की लकड़ी का बना था। एक शानदार डेस्क पर कांसे की मूर्तियां सजी थीं और आगदानी के पास बैठने की बहुत ही सुहावनी जगह थी। अध्ययन कक्ष में आकर वह एक सोफे पर ढह गए और हाथों को सिर के नीचे रख निश्चल पड़े रहे और करीब करीब गहरी निराशा में डूबी नजर से छत की ओर ताकते रहे। फिर, शायद दीवारों तक से अपने चेहरे का भाव छिपाने के लिए—या अन्य किसी वजह से—वह उठे और खिड़कियों के भारी पर्दे गिराने के बाद सोफे पर आ पड़े।

६

उसी दिन बजारोव का भी फेनिचका से परिचय हो गया। आरकादी के साथ वह बाग में टहल रहा था और उसे यह बताने का प्रयत्न कर रहा था कि कुछ पेड़, खासतौर से बलूत के पौधे, क्यों अच्छी तरह नहीं पनप सके।

"तुम्हें यहां अधिकतर सफेद चिनार, फर और शायद लैम के पेड़ लगाने और उनमें चिकनी उपजाऊ मिट्टी डालनी चाहिए थी। तुम्हारा वह कुंज अच्छा हरा भरा है," उसने कहा, "कारण कि बबूल और लिलक के पौधों में अपने आपको स्थिति के अनुकूल ढालने की क्षमता

होती है। उन्हें अधिक पालने-पोसने की आवश्यकता नही होती। लेकिन ठहरो, उधर कोई मालूम होता है!"

कुंज में फ़ेनिचका, दुन्याशा और मित्या मौजूद थे। बजारोव ठिठककर खड़ा हो गया। आरकादी ने, पुराने जान-पहचानी की भांति, अभिवादन में थोड़ा सिर झुका दिया।

"यह कौन है?" आगे बढ़ जाने पर बज़ारोव ने पूछा। "ओह कितनी सुन्दर!"

"कौन?"

"बिल्कुल प्रत्यक्ष है। केवल एक ही सुन्दर लड़की तो वहां है।"

आरकादी ने, कुछ परेशानी के साथ ही सही, थोड़े में उसे बता दिया कि फ़ेनिचका कौन है।

"ओह," बजारोव ने कहा, "बड़े मार्के की परख है उनकी—तुम्हारे पिता की। सच, मैं मुग्ध हूं उनपर। यह वही कर सकते थे। लेकिन छोड़ो," उसने कहा और उसके पांव कुंज की ओर लौट चले, "उससे परिचय तो कर लें।"

"येवगेनी!" आरकादी ने सकपकाते हुए कहा। "खुदा के लिए इसमें अपनी टांग न अड़ाओ।"

"घबराओ नहीं," बजारोव ने कहा, "हम लोग कोई नये रंगरूट नही हैं, शहर के रहनेवाले हैं।"

फ़ेनिचका के निकट पहुंच उसने अपनी टोपी उतारी और सलीके से झुककर अभिवादन करते हुए बोला:

"इजाज़त हो तो अपना परिचय दूं। मैं हूं आरकादी निकोलायेविच का मित्र—एक बहुत ही निरीह जीव!"

फ़ेनिचका बैंच पर से उठ खड़ी हुई और चुपचाप उसकी ओर देखती रही।

ऊपर जाता वह उसके उधर टूए छोटे छोटे पावों को पकड़ने के लिए अपना बाहे फैलाकर रह जाता।

उधर पावेल पत्रोविच लौटकर अपने ठाटदार अध्ययन कक्ष में चले आए जिसकी दीवारों पर बहुत ही नफीस सलेटी चादरें चढ़ी थीं और रंगबिरंगे ईरानी कालीन पर हथियार लटके थे। गहरे रंग के हरे नमाइशी मखमल की गद्दियों से लैस अखरोट की लकड़ी का फर्नीचर सजा था। एक किताबघर था जो पुराने काले बबूल की लकड़ी का बना था। एक शानदार डेस्क पर कांसे की मूर्तियां सजी थीं और आगदानी के पास बैठने की बहुत ही सुहावनी जगह थी। अध्ययन कक्ष में आकर वह एक सोफे पर ढह गए और हाथों को सिर के नीचे रख निश्चल पड़े रहे और करीब करीब गहरी निराशा में डूबी नजर से छत की ओर ताकते रहे। फिर शायद दीवारों तक से अपने चेहरे का भाव छिपाने के लिए—या अन्य किसी वजह से—वह उठे और खिड़कियों के भारी पर्दे गिराने के बाद सोफे पर आ पड़े।

९

उसी दिन बजारोव का भी फेनिचका से परिचय हो गया। आरकादी के साथ वह बाग में टहल रहा था और उसे यह बताने का प्रयत्न कर रहा था कि कुछ पेड़ खासतौर से बलूत के पौधे क्यों अच्छी तरह नहीं पनप सके।

तुम्हें यहां अधिकतर सफेद चिनार, फर और शायद नीम के पेड़ लगाने और उनमें चिकनी उपजाऊ मिट्टी डालनी चाहिए थी। तुम्हारा वह कुंज अच्छा हरा भरा है, उसने कहा, कारण कि बबूल और लिलक के पौधों में अपने आपको स्थिति के अनुकूल ढालने की क्षमता

होती है। उन्हें अधिक पालने-पोसने की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन ठहरो, उधर कोई मालूम होता है!"

कुंज में फ़ेनिचका, दुन्याशा और मित्या मौजूद थे। बज़ारोव ठिठककर खड़ा हो गया। आरकादी ने, पुराने जान-पहचानी की भांति, अभिवादन में थोड़ा सिर झुका दिया।

"यह कौन है?" आगे बढ़ जाने पर बजारोव ने पूछा। "ओह कितनी सुन्दर!"

"कौन?"

"बिल्कुल प्रत्यक्ष है। केवल एक ही सुन्दर लड़की तो वहां है।"

आरकादी ने, कुछ परेशानी के साथ ही सही, थोड़े में उसे बता दिया कि फ़ेनिचका कौन है।

"ओह," बजारोव ने कहा, "बड़े मार्के की परख है उनकी— तुम्हारे पिता की। सच, मैं मुग्ध हूं उनपर। यह वही कर सकते थे। लेकिन छोड़ो," उसने कहा और उसके पांव कुंज की ओर लौट चले, "उससे परिचय तो कर लें।"

"येवगेनी!" आरकादी ने सकपकाते हुए कहा। "खुदा के लिए इसमें अपनी टांग न अड़ाओ।"

"घबराओ नहीं," बजारोव ने कहा, "हम लोग कोई नये रंगरूट नहीं हैं, शहर के रहनेवाले हैं।"

फ़ेनिचका के निकट पहुंच उसने अपनी टोपी उतारी और सलीके से झुककर अभिवादन करते हुए बोला:

"इजाज़त हो तो अपना परिचय दूं। मैं हूं आरकादी निकोलायेविच का मित्र—एक बहुत ही निरीह जीव!"

फ़ेनिचका बैंच पर से उठ खड़ी हुई और चुपचाप उसकी ओर देखती रही।

बहुत ही प्यारा बच्चा है बज़ारोव कहता गया। चिन्ता न करो हम मेरी नजर नहीं लग सकती। अरे, इसके गाल इतने लाल क्यो ह क्या दात निकल रहे ह ?

हा श्रीमान फनिचका कुनमुनाई चार निकल चुके ह और अब फिर इसके मसूढे फूले ह।

जरा देख डरो नहीं मैं डाक्टर हू।

बज़ारोव न बच्चे को अपनी बाहो म ले लिया। फनिचका और दुन्याशा दोनो हैरान थी कि बिना किसी प्रतिरोध या भय के वह उसके पास चला गया।

अच्छा ठीक सब ठीक। इसके दात बडे सुन्दर होग। मगर कुछ गडबड हो तो मुझे खबर करना। और तुम तुम तो अच्छी तरह हो न ?

हा बिलकुल अच्छी तरह। भगवान का शुक्र है।

भगवान का शुक्र इससे बढकर और कुछ नही। और तुम कैसी हो ? दुन्याशा की ओर मुडते हुए उसने पूछा।

दुन्याशा जो घर के भीतर भारी भरकम तथा बाहर बहुत ही शैतान बन जाती था जवाब म खिलखिलाकर रह गई।

बहुत खूब अच्छा तो यह लो अब अपने पहलवान को सभालो।

फनिचका ने बच्चे को उससे ले लिया।

तुम्हारी गोद म यह कितना शान्त था फनिचका न धीमी आवाज़ म कहा।

मेरे साथ सभी बच्चे शान्त रहते ह बज़ारोव ने जवाब दिया। एक नन्ही चिडिया मेरे कान म इसका भेद फूक गई थी।

बच्चे भाप जाते ह कि उन्ह कौन प्यार करता है दुन्याशा ने कहा।

"यही बात है," फ़ेनिचका नें समर्थन किया। "मित्या को ही लो। कुछ लोगों के पास वह कभी नहीं जाएगा, चाहे कितना ही फुसलाओ।"

"मेरे पास आएगा?" आरकादी ने पूछा। वह कुछ दूर खड़ा था, अब उनके निकट आ गया। उसने हाथ पसारकर उसे अपनी गोदी में लेना चाहा। लेकिन मित्या ने सिर झटककर पीछे कर लिया और ज़ोरों से चीख़ उठा। फ़ेनिचका बुरी तरह त्रस्त हो उठी।

"अगली बार आएगा, जब मुझे जरा और अच्छी तरह पहचान लेगा," आरकादी ने दुलार जताते हुए कहा, और दोनों मित्र वहां से चल दिए।

"भला क्या नाम बताया था तुमने उसका?" बजारोव ने पूछा।

"फ़ेनिचका... फ़ेदोसिया," आरकादी ने जवाब दिया।

"और उसका पितृ नाम? वह भी जानना चाहिए न?"

"निकोलायेवना।"

"Bene*। उसकी यह बात मुझे बड़ी पसंद आई कि वह सकपकाती नहीं। हो सकता है कि कुछ लोग इसे दोष समझें। एकदम वाहियात! भला वह क्यों सकपकाए? वह मां है—और यह बिल्कुल वाजिब है।"

"सो तो है," आरकादी ने कहा, "लेकिन मेरे पिता, तुम्हीं देखो..."

"वह भी ठीक है," बजारोव ने बीच में ही कहा।

"लेकिन मैं ऐसा नहीं कह सकता।"

"समझा, एक अतिरिक्त वारिस तुम्हें पसंद नहीं।"

"मेरे सिर पर ऐसे विचारों को थोपते तुम्हें शर्म भी नहीं मालूम

---

* अच्छा। (लैटिन)—सं०

होती' आरकादी ने गर्म होते हुए जवाब दिया। "अपने पिता को इस वजह से मैं गलत नहीं कहता। मैं समझता हूं कि उन्हें उससे विवाह कर लेना चाहिए था।

आ-आ! बजारोव ने शान्त भाव से कहा। सो यही है हमारे विचारों की उदारता। तुम अब भी विवाह पर आस लगाए बैठे हो। मुझे तुमसे इसकी उम्मीद न थी!

कुछ देर तक दोनों मित्र चुपचाप चलते रहे।

मैंने तुम्हारे पिता का समूचा धंधा देखा है, बजारोव ने फिर कहना शुरू किया। फार्म के मवेशी गए बीते हैं घोड़े मरियल टट्टू बने हुए इमारतें उन दिनों को पार कर चुकी हैं जब कि वे अच्छी थीं नौकर चाकर एकदम लोफरों का झुंड मालूम होते हैं और तुम्हारा कारिन्दा – या तो वह पक्का बदमाश है या मूर्ख – मैं कुछ ठीक से नहीं समझ सका कि वह क्या है।

आज तो तुम सबकी खबर लेने पर तुले हो, यवगनी वसीलियेविच।

और तुम्हारे ये किसान जो इतने सीधे-सादे नजर आते हैं यह तुम निश्चय ही समझ रखो कि वे तुम्हारे पिता के कपड़े तक उतार लेंगे। यह कहावत तो तुम जानते ही हो – रूसी देहकान खुदा को भी अपनी अण्टी में लिए घूमता है।

ताऊजी की राय से मैं भी अब सम्मत हो चला हूं आरकादी ने कहा कि रूसियों के बारे में तुम्हारी राय सिवा काना पुकारने के और कुछ नहीं है।

इसमें क्या? रूसियों के पक्ष में सबल बात यही है कि वह अपने बारे में बहुत ही बुरी राय रखता है। असल में तत्त्व की बात यह है कि दो और दो मिलकर चार होते हैं। बाकी सब भुलावा है।

"तो क्या प्रकृति भी भुलावा है?" दूर क्षितिज के पास नीचे उतरते सूरज के मृदु आलोक से रंजित खेतों की पट्टियों की ओर उदास भाव से देखते हुए आरकादी ने पूछा।

"हां, यह प्रकृति भी भुलावा है–जिस रूप में कि तुम उसे समझते हो। प्रकृति उपासना का मन्दिर नहीं बल्कि एक कारखाना है और मानव इस कारखाने का एक मजदूर है।"

तभी, घर की ओर से आते, संगीत के अलस स्वर उन्हें सुनाई दिए। कोई वायोलीन पर शुवर्ट कृत 'प्रत्याशाएं' की धुन बजा रहा था। बजाने में अनाड़ीपन भले ही हो, लेकिन हृदय जैसे उमड़ा पड़ रहा था। मनोहर गीत के रुपहले स्वर हवा में तैर रहे थे।

"यह क्या?" बजारोव ने पूछा।

"मेरे पिताजी है।"

"क्या तुम्हारे पिता वायोलीन बजाते है?"

"हां।"

"खूब। उनकी अब उम्र क्या होगी?"

"चवालीस।"

बजारोव सहसा हंस पड़ा।

"क्यों, हंस क्यों पड़े?"

"बाप रे! चवालीस वर्ष की उम्र, pater familias,* देहात का जीवन, और वायोलीन-वादन!"

बजारोव अभी भी हंस रहा था। लेकिन आरकादी–इस आदर्श मित्र का चाहे जितना भी रौब उसपर छाया हो–इस बार मुसकराया तक नहीं।

---

*परिवार का मुखिया। (लैटिन)–सं०

१०

क़रीब दो सप्ताह गुज़र गए। मारिनो का जीवन पूर्ववत अपने उसी ढर्रे पर चलता रहा। आरकादी ऐश व आराम के जीवन में मगन था और बज़ारोव काम करता था। घर के लोग उसके, उसकी आकस्मिक हरकतों और रंग-ढंग के, उसकी दो-टूक और मुंहफट बोल-चाल के, आदी हो गए थे। सच तो यह है कि खुद फ़ेनिचका इस हद तक उससे अपनत्व बरतती कि एक रात — उस समय जबकि मित्या को ऐंठन हो रही थी — उसने उसे सोते से जगवाया। उसने भी चूं-चा नहीं की, क़रीब दो घंटे तक वह उसके पास बैठा रहा, अपनी आदत के अनुसार आधा बतियाता और आधा जमुहाइयां लेता रहा, और बच्चे को उसने चंगा कर दिया। लेकिन पावेल पेत्रोविच, अपने हृदय की समूची शक्ति से, उससे घृणा करते थे। वह उसे दम्भी, गुस्ताख़, मानव-द्रोही और कमीना समझते थे। उन्हें शक था कि बज़ारोव उनकी इज़्ज़त नहीं करता — बल्कि कहिए कि वह उन्हें, पावेल किरसानोव को, नीची नज़र से देखता है, उन्हें तुच्छ समझता है। निकोलाई पेत्रोविच पर उसका — इस युवक निहिलिस्ट का — कुछ रौब-सा छाया था। साथ ही उन्हें यह भी आशंका थी कि आरकादी पर उसकी संगत का कोई भला असर नहीं पड़ रहा है। लेकिन फिर भी वह उसकी बात सुनने के लिए खुशी से तैयार हो जाते, उसके भौतिक तथा रासायनिक प्रयोगों के दर्शक बनने से आनाकानी न करते। बज़ारोव अपने साथ एक खुर्दबीन लाया था और घंटों उसके साथ चिपका रहता था। नौकर-चाकर भी — बावजूद इसके कि उन्हें चिढ़ाने में उसे मज़ा आता था — उससे हिलमिल गए थे और उन्हें लगता जैसे वह उन्हीं की पांत का जीव हो, कुलीनों की पांत का नहीं। दुन्याशा उसके साथ

खिलखिलाने से बाज़ न आती और जब कभी उधर से गुजरती तो कनखियों से भेदभरी नजर उसपर डालती। प्योत्र, जो जरूरत से ज्यादा घमंडी और मूर्ख था, जो तुनुक मिजाजी में भौंहें चढ़ाए मंडराता रहता था, जिसकी एक मात्र खूबी यह थी कि वह सलीके से पेश आना जानता था, एक एक अक्षर मिलाकर पढ़ लेता था और जो अपनी आदत से मजबूर रह रहकर अपने कोट को कपड़े के झाड़न से बड़ी लगन से झाड़ता रहता था—इस प्योत्र तक की बत्तीसी चमक उठती जब बजारोव उसकी ओर नजर डालता। और फ़ार्म में बसनेवाले बच्चों की बरात पिल्लों के झुंड की भांति, 'डाक्टर बाबू' के साथ साथ लगी रहती थी। सिर्फ़ बूढ़ा प्रोकोफ़िच उसे कतई पसंद नहीं करता था, उसे 'पाजी' और 'लुच्चा' कहता था और उसके गलमुच्छों की ओर संकेत कर झाड़ी मे छिपे सुअर से उसकी तुलना करता था। प्रोकोफ़िच, अपने ढंग से, पूरा रईस था—एकदम पावेल पेत्रोविच का जोड़ीदार!

साल के सबसे अच्छे, जून के प्रारम्भिक दिन शुरू हो गए। मौसम असाधारण रूप से बढ़िया था। खतरा था कि हैजे का प्रकोप फिर से न फूट पड़े, लेकिन ज़िले के लोग उसके आदी-से हो गए थे। बजारोव आमतौर से तड़के ही उठता और डेढ़-दो मील तक निकल जाता—घूमने के लिए नहीं, खाली, बिना किसी मतलब, सैर करने का वह शौकीन नही था—बल्कि जड़ी-बूटियां और कीड़े-मकोड़े बटोरने के लिए। कभी कभी वह आरकादी को भी अपने साथ ले जाता। लौटते समय अक्सर कोई बहस छिड़ जाती जिसमें, अधिकतर, आरकादी को बुरी तरह मात खानी पड़ती, बावजूद इसके कि वही सबसे ज्यादा बोलता था।

एक दिन वापिस लौटने में उन्हें अपेक्षाकृत देर हो गई। उन्हें खोजने निकोलाई पेत्रोविच बाग़ की ओर गए। कुंज की बगल में पहुंचे ही थे कि सहसा उन्हें तेजी से उठते डगों और दोनों युवकों के बोलने

की आवाज़ सुनाई दी। वे कुज की दूसरी ओर से आ रहे थे और निकोलाई पेत्रोविच को देख नहीं सकते थे।

तुम मेरे पिताजी को अभी ढंग से जानते ही कहां हो? आरकादी कह रहा था।

निकोलाई पेत्रोविच एकदम स्थिर खड़े हो गए।

तुम्हारे पिता बहुत ही भले आदमी हैं बज़ारोव ने कहा लेकिन पिछड़े हुए हैं। अब उनकी दाल नहीं गल सकती।

निकोलाई पेत्रोविच ने कान लगाकर सुनने की कोशिश की आरकादी खामोश रहा।

पिछड़े हुए निकोलाई पेत्रोविच एक या दो मिनट तक निश्चल खड़े रहे फिर उनके डग धीरे धीरे लौट चले।

उस दिन मैंने देखा कि वह पुश्किन पढ़ रहे थे बज़ारोव ने फिर कहना शुरू किया। तुम्हीं उन्हें समझाओ कि यह एकदम समय को बरबाद करना है। आखिर वह बच्चे नहीं हैं कम से कम अब तो इन वाहियातों से बाज़ आएं। हमारे इस युग में भी यह रोमांटिकता! उन्हें कोई ऐसी चीज़ पढ़ने को दो जो किसी मसरफ की हो।

तुम उन्हें क्या देते? आरकादी ने पूछा।

मेरा पूछते हो? मैं शायद बुखनर कृत स्टौफ उण्ड क्राफ्ट* से शुरू करता।

हां मेरी भी यही राय है आरकादी ने रज़ामन्दी प्रकट की। स्टौफ़ उण्ड क्राफ्ट लोकप्रिय शैली में लिखी हुई है।

---

* पदार्थ और शक्ति। (जर्मन) —सं०

"कुछ सुना तुमने," उसी दिन, भोजन के बाद, अपने भाई के अध्ययन कक्ष में निकोलाई पेत्रोविच उन्हें बता रहे थे, "कि हम, तुम और मैं, अब क्या हो गए हैं? हम अब पिछड़े हुए बन गए हैं, फाख़ता उड़ाने के हमारे दिन हवा हो चुके है। अच्छा, यही सही। हो सकता है कि बजारोव का कहना ठीक हो। लेकिन एक बात मुझे कहनी पड़ेगी जिसका मुझे भारी दुःख है। आशा करता था कि ठीक यही वह मौक़ा है जबकि आरकादी और मैं घनिष्ठ मित्र बन सकते हैं। लेकिन लगता है कि मैं पीछे पड़ गया हूं और वह आगे निकल गया है, और अब हम एक-दूसरे को समझ भी नहीं सकते!"

"तुमने कैसे जाना कि वह आगे निकल गया है?" पावेल पेत्रोविच ने व्यग्रता से कहा। "और जरा यह भी बताने की कृपा करो कि वह किस प्रकार हमसे भिन्न है? यह सारी खुराफ़ात उसके दिमाग में उस तुर्क ने—उस निहिलिस्ट ने—भरी है। मैं उससे—डाक्टर की उस मनहूस दुम से—घृणा करता हूं। अगर मुझसे पूछो तो वह निरा ढोंगी है। सच मानो कि अपने समूचे मेंढक-प्रेम के बावजूद शरीर-विज्ञान में भी उसकी कोई खास गति नहीं है।"

"नहीं, भैया, नहीं, इतनी आसानी से उसे रद्द नहीं किया जा सकता। बजारोव चतुर और काफी पढ़ा-लिखा आदमी है।"

"और भयानक रूप में स्वाभिमानी!" पावेल पेत्रोविच ने फिर अधीरता से कहा।

"हां," निकोलाई पेत्रोविच ने सहमत होते हुए कहा, "वह स्वाभिमानी बहुत है। लेकिन, मेरी समझ से, यह कोई ऐसी अनहोनी बात नहीं। फिर भी एक चीज मेरी समझ में नहीं आती। समय का साथ देने के लिए अपनी ओर से मैंने कुछ भी उठा नहीं रखा—किसानों को मैंने बसा दिया है, एक फ़ार्म भी मैंने शुरू किया है, समूचा

जिला मुझ लाने कहना है मैं पढ़ता हू, अध्ययन करता हू और, आमतौर म हर आधुनिक चीज के लिए अपना दिमाग खुला रखता हू फिर भी व कहते हैं कि मरे फाख्ता उड़ाने के दिन बीत गए। और सच भाई म खुद भी कुछ एसा ही सोचने लगा हू।

सो कस?

हां तो सुनो। तुम खुद ही फसला करना। आज बैठा हुआ मैं पुश्किन की रचना पढ़ रहा था मुझ याद है रचना का नाम था खानाबदोश तभी एकदम अचानक आरकादी मेरे पास आया और बिना कुछ कहे और अपनी उसी सहृदय अनुकंपा भरी नजर से देखते हुए कुछ एसी मुलायमियत से उसन मरे हाथ से किताब ल ली मानो मैं कोई बच्चा हू और मेरे सामन एक दूसरी—जमन—पोथी रख दी फिर वह मुसकराया और चला गया। पुश्किन की पुस्तक भी वह अपन साथ लेता गया।

बाप रे! और वह कौन-सी पुस्तक थी जो तुम्ह दे गया?

यह देखा।

और निकोलाई पत्रोविच न अपनी पिछली जब में बुखनर की बदनाम पुस्तक का नवा सस्करण निकालकर सामन कर दिया।

पावल पैत्रोविच ने पुस्तक को अपन हाथो में लेकर उलट-पुलट कर देखा।

हु! वह भुनभुनाया। आरकादी निकोलायविच को तुम्ह शिक्षित करन की चिन्ता है इसमें सन्देह नहीं। हा तो तुमन इसे पढ़न की कोशिश की?

की।

तो ?

"या तो मैं खुद मूर्ख हूं, या यह पुस्तक निरी बकवास है। शायद मैं ही मूर्ख हूं।"

"तुम्हारा जर्मन का अभ्यास कुन्द तो नहीं हो गया, क्यों?"

"नही, मैं जर्मन समझ लेता हूं।"

पावेल पेत्रोविच ने पुस्तक को फिर अपने हाथों में उलटा-पलटा और भौहों के नीचे से अपने भाई पर एक नजर डाली। लेकिन कहा कुछ नहीं। दोनों चुप रहे।

"हां, याद आया," आखिर निकोलाई पेत्रोविच ने खामोशी तोड़ी और, स्पष्ट ही, विषय को बदलने के लिए कहा: "कोल्याज़िन का मेरे पास एक पत्र आया है।"

"मातवेई इलिच का?"

"हां। जिला का सरकारी मुआइना करने की ग़रज से वह शहर आया है। अब वह एक बड़ा आदमी बन गया है। लिखा है कि कुटुम्बी के नाते वह हमसे मिलने के लिए इच्छुक है। उसने हम दोनों और आरकादी को शहर आने का बुलावा दिया है।"

"क्या तुम जा रहे हो?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"नहीं। और तुम?"

"मैं भी नही। मेरे सिर पर क्या भूत सवार हुआ है जो बिना मतलब तीस-चालीस मील की धूल फांकूं। यह Mathieu* पूरी शान के साथ हमें अपना रौब दिखाना चाहता है। शैतान कहीं का। हमारे गए बिना भी उसकी आरती उतारनेवाले लोग वहां ढेरों मिल जाएंगे। बड़ा आदमी, प्रीवी कौन्सिलर, वाह! अगर मैंने नौकरी न छोड़ी होती और उसी मूर्खतापूर्ण घिस घिस में जुता रहता तो मैं अब तक एडजुटैण्ट जेनरल

---

* मातवेई। (फ्रेंच) – सं०

हो जाता। फिर भी यह न भूल जाना कि तुम और मै अब पिछड हुए लोग ह।

हा भाई अब समय आ गया है कि ताबूतसाज़ को बुलाकर अपने नाप का ताबूत बनवा डाल। एक उसास-सी छोडते हुए निकोलाई पेत्रोविच न कहा।

कुछ भी हो मैं इतनी जल्दी कब्र में जाने के लिए तैयार नही हू उनके भाई न बुदबुदाकर कहा। मुझ लगता है कि डाक्टर की उस दुम से अभी दो दो हाथ होना बाकी है।

और दो दो हाथ उनम हुए उसी साझ चाय पीने के दौरान में। पावेल पेत्रोविच पहले से ही आस्तीन चढ़ाकर बहस के मैदान में कूदने का दढ निश्चय करके ड्राइंगरूम में आए थ। दुश्मन पर टूट पडने के लिए उन्ह केवल एक बहाने की टोह थी और बहाना मिलने म देर लगी। बजारोव आमतौर से गाव के इन खूसट चौधरियो (किरसानोव बन्धुओ को वह एसा ही कहता था) की उपस्थिति में अधिक नही बोलता था और उस साझ कुछ अस्तव्यस्त-सा होने के कारण वह चुपचाप एक के बाद दूसरा प्याला चढाए जा रहा था। पावेल पेत्रोविच भीतर ही भीतर उमड घुमड रहा था कोई राह न मिलने के कारण उसका दम घुटा जा रहा था। आखिर उसे मौक़ा मिल ही गया।

बातचीत के दौरान म पडोस के एक जमीदार का नाम उभर आया। बजारोव इस आदमी से सन्त पीतसबग म मिल चुका था। बजारोव न यो ही एक चुटकी म उसे उडा दिया

एक सडा हुआ और मनहूस रईस।

क्या म एक बात पूछ सकता हू? थरथराते हुए होठो स पावेल पेत्रोविच न पूछा। तुम्हारे कहने के मुताबिक क्या सडा हुआ और रईस एक-दूसरे के पर्यायवाची ह?

"मैंने 'मनहूस रईस' कहा था," अलस भाव से चाय की चुस्की लेते हुए बज़ारोव ने जवाब दिया।

"वही तो, और मैं समझता हूं कि 'रईसों' के बारे में भी तुम्हारी राय वही है जो कि 'मनहूस रईसों' के बारे में। मैं तुम्हें बता देना अपना फ़र्ज समझता हूं कि मैं तुमसे सहमत नहीं हूं। साथ ही मैं यह कहने का भी साहस करता हूं कि हर कोई मुझे उदार विचारों का आदमी मानता तथा प्रगति का हिमायती समझता है। और ठीक इसी वजह से मैं रईसों की—सच्चे कुलीनों की—इज़्ज़त करता हूं। जरा याद करो, श्रीमान," (इन शब्दों को सुनते ही बजारोव की आंखें पावेल पेत्रोविच के चेहरे की ओर उठ गई) "हां, जरा याद करो, श्रीमान," उन्होंने और भी जोरों से दोहराया, "अंग्रेजी कुलीनों को। वे अपने अधिकारों को तिल-भर भी नहीं छोड़ते, और इसी लिए वे दूसरों के अधिकारों की इज़्ज़त करते हैं। उनकी मांग है कि लोग उनके प्रति अपने दायित्वों को पूरा करें, और ठीक इसी लिए वे दूसरों के प्रति ख़ुद अपने दायित्वों को पूरा करते हैं। कुलीनों के इस वर्ग न ही इंग्लैण्ड को उसकी आजादी दी है, और वह उस आजादी को ऊंचा उठाए है।"

"यह राग हम पहले भी सुन चुके है," बजारोव ने जवाब दिया। "लेकिन इस सबसे आप सिद्ध क्या करना चाहते है?"

"सुनिए जनाब, मैं सिद्ध जो करना चाहता हूं वह यह है," (जब पावेल पेत्रोविच गुस्सा होते थे तो जान-बूझकर व्याकरण को तोड़ने-मरोड़ने लगते थे। उनकी यह सनक सिकन्दरी परम्परा का अवशेष थी। उन दिनों के अमीर-उमरा, उन विरल अवसरों पर जब कि वे अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते थे, उनकी ज़बान बहुत ही भद्दा रूप धारण कर लेती थी, मानो वे कह रहे हों: हम देशज रूसी है तो क्या, लेकिन हम ग्रान्दी (अमीर-उमरा) भी तो हैं जिनके लिए व्याकरण का उल्लंघन

करना जायज़ है।) "हा तो मैं जो कुछ सिद्ध करना चाहता हू यह यह है कि जब तक आदमी में आत्मसम्मान और निजी गौरव की भावना न हो—और ये भावनाए कुलीनो में खूब विकसित रूप में मिलती हैं—तब तक सामाजिक bien public* सामाजिक ढाचे की कोई सुरक्षित नीव नही हो सकती। व्यक्तित्व ही, समझे जनाब, मुख्य चीज है। व्यक्तित्व को चट्टान की भाति दृढ होना चाहिए, कारण यही वह नीव है जिसपर समूची इमारत खडी होती है। मिसाल के लिए मुझे यह भली भाति मालूम है कि तुम्हें मेरी आदत, मेरा पहनावा, यहा तक कि मेरी निजी नफासत भी, मज़ाक की चीज़ मालूम होती है। लेकिन मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हू कि ये चीजें आत्मसम्मान का, कर्तव्य का—हा, जनाब, कर्तव्य का— विषय हैं। मैं देहात का, पिछडे हुए क्षेत्र का, निवासी हू। लेकिन मैं अपने आत्मसम्मान को, निजी गौरव की भावना को, तिलाजलि नही दूगा।"

"बुरा न मानें, पावेल पेत्रोविच," बज़ारोव ने कहा, "आप आत्मसम्मान की बातें करते है, और इधर-उधर बैठकर मक्खिया मारते हैं—समय गवाते हैं। जरा यह तो बताइए कि इससे bien public का क्या हित होता है? यह काम तो आप आत्मसम्मान की भावना के बिना भी कर सकते हैं।"

पावेल पेत्रोविच का चेहरा पीला पड गया।

"यह बिल्कुल दूसरी बात है। और इस क्षण तुम्हारे सामने यह सफाई देने के लिए मैं बाध्य नही कि मैं क्यो—जैसा कि तुम कहते हो—मक्खिया मारने में समय गवाता हू। मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि कुलीनत्व एक सिद्धान्त की चीज़ है, और केवल अनैतिक या छिछले

---

* सामाजिक कल्याण। (फ्रेंच)—स०

दिमाग़ के लोग ही आजकल बिना सिद्धान्तों के जी सकते हैं। यहां आने के बाद अगले दिन मैंने आरकादी के सामने भी यही कहा था, और यही मैं आज तुमसे कह रहा हूं! क्यों, ठीक है न, निकोलाई?"

निकोलाई पेत्रोविच ने सिर हिलाकर हामी भरी।

"कुलीनत्व, विचारों की उदारता, प्रगति, सिद्धान्त," बजारोव इधर कह रहा था, "ओह, विदेशी शब्दों की कितनी बड़ी ... और कितनी बेकार—फ़ौज है यह! मुफ़्त में मिलें, तब भी रूसियों के लिए इनकी दरकार नही!"

"तो फिर उन्हें किस चीज की दरकार है—ज़रा यह तो बताओ? तुम्हारे कहने के मुताबिक तो हम मानवता से, उसके विधि-विधानों से, बाहर हैं। मेरी समझ से तो इतिहास के तर्क का यह तक़ाजा है कि..."

"किसे दरकार है आपके इस तर्क की? उनके बिना भी हमारा काम चल रहा है।"

"मतलब?"

"यही तो मैं कह रहा हूं। आपको, मेरा विश्वास है, भूख लगने पर मुह में रोटी का निवाला डालने के लिए किसी तर्क का सहारा लेने की जरूरत नही होती। आखिर इन हवाई विचारो से भला क्या काम निकलता है?"

पावेल पेत्रोविच ने हवा में अपने हाथ फेंके।

"इसके बाद तुम्हें समझना मेरे बूते से बाहर है। तुम रूसियों का अपमान करते हो। मेरी समझ में नही आता कि सिद्धान्तों और आदर्श वाक्यों से कोई कैसे इन्कार कर सकता है? आखिर तुम किस चीज से प्रेरणा पाते हो?"

"यह तो, ताऊजी, मै आपको पहले ही बता चुका हूं कि हम किसी अधिकारी को प्रमाण नही मानते।" आरकादी ने बीच में ही कहा।

जिसे हम उपयोगी समझते हैं बजारोव ने कहा उसी से हमें प्रेरणा मिलती है। आजकल खण्डन अन्य सब चीजों से अधिक उपयोगी है इसलिए हम खण्डन करते हैं।

हर चीज़ का?

हां हर चीज़ का।

क्या मतलब? केवल कला कविता का ही नहीं बल्कि उफ, कहते भी ज़बान लरजती है *

हां हर चीज़ का। विचलित कर देनेवाले अविचलित भाव से बजारोव ने दोहराया।

पावेल पेत्रोविच आंखें फाड़ उसकी ओर ताक रहे थे। उन्हें इसकी आशा नहीं थी। आरकादी के गाल खुशी से दमक रहे थे।

लेकिन ज़रा इधर ध्यान दो निकोलाई पेत्रोविच ने कहा। तुम हर चीज़ का खण्डन करते हो—या सही शब्दों में तुम हर चीज़ का नाश करते हो तब फिर निर्माण कौन करेगा?

वह हमारा काम नहीं पहले मलबा साफ करना है।

जनता की मौजूदा स्थिति का यही तकाज़ा है आरकादी ने गर्वीले अन्दाज़ से कहा। हमें इस तकाज़े को पूरा करना है। अपने अहं के साथ खिलवाड़ करते रहने का हमें कोई अधिकार नहीं है।

आरकादी की बात का अन्तिम अंश प्रत्यक्षतः बजारोव को अच्छा नहीं लगा। उसमें दार्शनिकता का—बल्कि कहिए कि रोमाण्टिकता का—पुट था। कारण बजारोव दर्शन को भी रोमान्सवाद मानता था। लेकिन उसने अपने युवा शिष्य का खण्डन नहीं किया।

नहीं हर्गिज़ नहीं! सहसा आवेग में आते हुए पावेल

---

*यहां तत्कालीन शासन व्यवस्था से लक्ष्य है।—सं०

पेत्रोविच ने चिल्लाकर कहा। "मैं यह मानने के लिए कतई तैयार नहीं कि तुम लोग सचमुच रूसी जनता को जानते हो, उसकी जरूरतों और आशा-आकांक्षाओं के प्रतिनिधि हो। नहीं, रूसी जनता वह नहीं है जैसा कि तुम उसकी कल्पना करते हो। उसके मन में परम्परा के प्रति श्रद्धा का भाव है, वह पितृसत्ता पर आधारित है, बिना आस्था के वह जी नहीं सकती..."

"यह सब लेकर मुझे झगड़ा करने की जरूरत नहीं," बजारोव ने बीच में ही कहा। "बल्कि, मैं तो आपसे सहमत होने तक आगे बढ़ सकता हूं कि आपने जो कहा वह ठीक है।"

"अगर ऐसा है तो फिर ..."

"फिर यह कि इससे कुछ भी सिद्ध नहीं होता।"

"यही तो, इससे कुछ भी सिद्ध नही होता," शतरंज के एक पक्के खिलाड़ी की भांति जो अपने प्रतिपक्षी की घातक चाल को पहले ही भांप चुका है और इसलिए जरा भी विचलित नहीं है, आरकादी ने भी स्वर में स्वर मिलाया।

"यह तुम कैसे कहते हो?" पावेल पेत्रोविच ने आश्चर्य से हकलाते हुए कहा। "कुछ भी कैसे सिद्ध नहीं होता? तो तुम अपने देश की जनता के खिलाफ़ जा रहे हो?"

"जा भी रहा हूं तो इससे क्या?" बजारोव ने चिल्लाकर कहा। "बादलों की गरज सुनकर लोग विश्वास करते है कि पैगम्बर इलियास आकाश मे अपना रथ दौड़ा रहे हैं। अब बोलिए? क्या कहेंगे कि मुझे भी इससे सहमत होना चाहिए? हां, वे रूसी हैं, लेकिन क्या मैं भी रूसी नही हूं?"

"नहीं, तुम रूसी नहीं हो। तुमने जो कुछ कहा, वह इसका साक्षी है। मैं तुम्हें रूसी नहीं मान सकता।"

'मेरे दादा हल चलाते थे,' बजारोव ने उद्धत गर्व से कहा। अपने यहां के किसी दहकान से पूछ देखिए कि हममें से किसे वह अधिक तत्परता के साथ अपना देश भाई मानने के लिए राजी होता है—आपको या मुझे? और तो और आप यह तक नहीं जानते कि एक दहकान से कैसे बातचीत की जाती है।

और तुम एक साथ दोनों काम कर सकते हो—बातचीत भी और घृणा भी।

अगर उसमें घृणा की बात हो तो? आप मेरे दृष्टिकोण पर आगबबूला होते हैं लेकिन यह आपने कैसे समझ लिया कि मैंने इसे यों ही कहीं से अपना लिया है और यह कि यह भी ठीक उसी राष्ट्रीय भावना से उद्भूत नहीं है जिसकी आप इतनी जी-जान से हिमायत करते हैं?

मानता हूं। लेकिन इन निहिलिस्टों से किसी का क्या भला हो सकता है?

जहां तक उनसे भला होने या न होने का सम्बन्ध है, इसका निर्णय करना हमारा काम नहीं। यों अगर धृष्टता न समझी जाय तो मैं कह सकता हूं कि आप भी एक तरह से, अपने आपको उपयोगी समझते हैं।

बस बस सज्जनो, व्यक्तिगत आक्षेप नहीं! अपनी जगह से उठते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने चिल्लाकर कहा।

पावेल पेत्रोविच मुसकराए, और अपने भाई के कंधे पर हाथ रखते हुए दबाकर उन्हें फिर कुर्सी पर बैठा दिया।

आप निश्चिन्त रहें, उन्होंने कहा, मैं अपनी सुध नहीं बिसरा सकता—आत्मसम्मान की ठीक उसी भावना के कारण जिसका हमारे मित्र हमारे यह डाक्टर मित्र इतनी बेरहमी से मजाक

उड़ाते हैं। माफ़ करना," बजारोव की ओर मुड़ते हुए उन्होंने फिर कहना शुरू किया, "कहीं आपको यह ग़लतफ़हमी तो नहीं कि आप अपने इन सिद्धान्तों को नया समझ बैठे हैं? अगर ऐसा है तो आप अपने को धोखा दे रहे हैं। जिस भौतिकवाद का आप प्रचार करते हैं, उसकी हवा अनेक बार पहले भी बह चुकी है, लेकिन वह कभी अपने पांव न जमा सकी ..."

"फिर वही विदेशी राग!" बजारोव बीच में ही बोला। उसका दिमाग अब गरमा चला था और उसके चेहरे का रंग कच्चे ताम्बे जैसा हो गया था। "सबसे पहली बात तो यह कि हम किसी चीज का प्रचार नहीं करते, हमारा यह चलन नहीं है..."

"तो आप क्या करते हैं?"

"बताता हूं। अभी एकदम हाल तक हम अपने अफ़सरों की घूसखोरी की, सड़कों के अभाव की, व्यापार की दयनीय स्थिति की तथा न्याय की अदालतों की चर्चा करते थे ..."

"ओह, ठीक, ठीक। बेशक, आप लोग—अगर मैं भूलता नही तो—पर-निन्दक है। क्यों ठीक यही कहा जाता है न? तुम्हारी पर-निन्दा की बहुत-सी बातों से मैं ख़ुद भी सहमत हूं, लेकिन ..."

"फिर हम चेते। हमने देखा कि अपनी बुराइयों को लेकर सिर्फ़ बातें बघारना अपने ही गले की ताक़त नष्ट करना है। छिछलेपन और कोरे सिद्धान्तवाद के सिवा इससे और कुछ पल्ले नही पड़ता। हमने देखा कि हमारे चतुर साथी—वे जो आगे बढ़े हुए और पर-निन्दक कहलाते थे—किसी काम के नही हैं, और यह कि कला के बारे में, अचेतन सृजन-शक्ति के बारे में, धारासभावाद, न्यायतंत्र और जाने अन्य कितनी अलायों-बलायों के बारे में बेकार की बातें बघारकर हम लोग अपनी शक्ति का अपव्यय कर रहे हैं, सो भी उस समय जब कि सीधे सीधे

लोगों के लिए दो-जून रोटी मुहैया करने का सवाल हमारे सामने था, जबकि घोर अंधविश्वास हमारा गला घोट रहे थे, जबकि हमारी सारी स्टाक-कम्पनियां केवल इसलिए धूल में मिल रही थी कि ईमानदार लोगों का अकाल पड गया था, जबकि दासों की मुक्ति तक से—जिसका सरकार इतना ढोल पीट रही थी—कोई भला होनेवाला नहीं था, कारण ताडी के एक कुल्हड में डूबने के लिए हमारा दहकान बडी खुशी से अपना घर तक फूकने को तैयार हो जाएगा।"

"मां," पावेल पत्रोविच ने टोका। "मां इन सब बातों को अपने दिल में बैठाने के बाद अब आपने यह निश्चय किया है कि किसी भी चीज को संजीदगी से हाथ नहीं लगाएंगे।"

"और हमने निश्चय किया कि किसी भी चीज को हाथ नहीं लगाएंगे," बजारोव ने गम्भीर मुद्रा में, पलटकर उन्हीं के शब्दों को वापिस फेंक दिया। एकाएक, इस कुलीन के सामने अपनी जुबान के इस तरह बेकाबू हो जाने पर उसे अपने से बडी कुढन मालूम हुई।

"और निन्दा के सिवा और कुछ नहीं करेंगे?"

"हां, निन्दा के सिवा और कुछ नहीं करेंगे।"

"और इसी को निहिलिज्म कहते हैं?"

"हां, इसी को निहिलिज्म कहते हैं," बजारोव ने, इस बार तीखी उद्दंडता के साथ, दोहराया।

पावेल पत्रोविच ने अपनी आंखों को थोडा सिकोड लिया।

"तो यह बात है!" विलक्षण रूप से शान्त आवाज में उन्होंने कहा। "निहिलिज्म हमारे सभी रोगों की दवा है और आप—आप लोग हमारे मुक्तिदाता, हमारे नायक हैं। ठीक। लेकिन, आप दूसरों को आडे हाथों क्यों लेते हैं—मिसाल के लिए जैसे

पर-निन्दकों को? क्या आप भी उन सब लोगों की तरह ही बलबलाते नहीं फिरते?"

"हममें और दोष चाहे जो हों, लेकिन यह हममें नही है," बजारोव ने बुदबुदाते हुए कहा।

"नहीं है तो फिर? क्या तुम लोग अमल करते हो? अमल करने का इरादा रखते हो?"

बजारोव ने कोई उत्तर नहीं दिया। पावेल पेत्रोविच ने एक बल-सा खाया, लेकिन अपने को संभाल लिया।

"हुं: ! अमल करना, तोड़ना-गिराना... " वह कहते गए, "लेकिन जब क्यों या किस लिए तक मालूम न हो, तब तोड़ने-गिराने के काम में क्यों कर जुटोगे?"

"हम एक शक्ति हैं जिसका काम तोड़ना-गिराना है!" आरकादी ने कहा।

पावेल पेत्रोविच ने अपने भतीजे को एक नज़र तौला और व्यंग से मुसकराए।

"हां, एक शक्ति–एक निर्बाध शक्ति," अपने आपको सीधा करते हुए आरकादी ने कहा।

"कम्बख़्त छोक़रे!" अपने को और अधिक क़ाबू में न रख पावेल पेत्रोविच उबल पड़े। "कम से कम एक बार रुककर तुझे यह तो सोचना चाहिए कि अपने इस रटे-रटाए 'सत्य' को दोहराकर रूस में किस चीज़ का समर्थन तू कर रहा है। तेरी यह बात फ़रिश्तों तक का सब्र आज़माने के लिए काफ़ी है। शक्ति! शक्ति तो जंगली कालमीकों और मंगोलों में भी है, लेकिन कौन चाहता है उसे? हम सभ्यता को अपने हृदयों में संजोए हैं, समझे जनाब, और साथ ही सभ्यता के सुफलों को भी। यह न कहना कि ये सुफल नगण्य हैं। एक

रही स रही चित्रकार भी La barbouilleur* एक सस्ता पियानोवादक भी जो सिर्फ पाच कोपक म रात का महफ़िल में पियानो बजाने चला आता है तुम लोगा स कहा अच्छा है। कारण वह सभ्यता का प्रतिनिधि है बबर मगान शक्ति का नही। तुम लोग अपने आपको एक प्रगतिशील तत्व समझते हो लेकिन तुम किसी कालमीकी तम्बू के जीव बनने के सिवा और किसी लायक नही हो। शक्ति! और शक्ति के पुजारी महानभावा यह न भूलना कि एक ओर तुम्हारी बिरादरी जो सिर्फ मुट्ठी भर लागा की है वहा दूसरी ओर लाखो लोग ह। उनके पवित्र विश्वासा का तुम कभी अपने पावा तले नही रौंद सकाग! हा वे लाग तुम्हे कुचलकर रख दग!

अगर हम कुचल दिए जाते ह तो अपने ही किए का फल भुगतग बज़ारोव न कहा। लेकिन यह कहना आसान है करना कठिन फिर हम इतन कम भी नही ह जितने कि आप सोचते ह।

क्या आ? क्या तुम सचमच यह सोचते हो कि तुम समूची क़ौम के विरुद्ध खड हो सकोग?

दो पसे की मामबत्ती न ही समचे मास्को को जलाकर खाक कर दिया था यह आपसे छिपा नही है बज़ारोव न जवाब दिया।

समझा। पहले तो यह रौब कि हम हा ह जो दुनिया को प्रकाश देते ह फिर हर चीज की खिल्ली उडाना। सो यह है वह नवीनतम हवा जो नयी पौध को लगी है अनभवहीन छोकरो की कल्पना को जो अपने साथ बहा ले जाती है। इन्ही युवको म स एक को देखो ठीक तुम्हारी बगल म विराजमान है देखो न जस

---

*वह जो सिर्फ फुवारा करना जानता है। (फ्रच) —स०

तुम्हारे पांव की धूल अपने माथे लगाने के लिए तैयार हो!" (भौंहों मे वल डाल आरकादी ने मुंह फेर लिया।) "और यह महामारी काफ़ी व्यापक रूप से फैल भी चुकी है। मैंने सुना है कि रोम में हमारे चित्रकार वैटीकन के भीतर कभी पांव तक नही रखते। रैफ़ल को वे निरा पोंगा समझते है, क्योंकि–तुम्हीं देखो न –वह चित्रकला का माना हुआ आचार्य है जवकि वे खुद वुरी तरह बेजान और वंजर हैं। उनकी कल्पना, लाख सिर मारने पर भी, 'फौवारे के पास खड़ी युवती' से आगे उन्हें नही ले जाती। और उसे भी वे अत्यन्त घिनौने ढंग से चित्रित करते है। अव, अगर तुम्हारी चले तो, तुम इन्ही को आदर्श कहोगे? क्यों, ठीक है न?"

"मेरे अनुसार," वजारोव ने कहा, "रैफ़ल दो कौड़ी का भी नही है, और न ही मैं उन्हें अच्छा कहूंगा।"

"वाह, खूब! कुछ सुना, आरकादी... यह आज के युवकों के बात करने का नमूना है! भला, क्यों न वे तुम्हें अपना आदर्श मानें? पहले युवा लोगों को अध्ययन करना होता था, वे नहीं चाहते थे कि उन्हें कोई बुद्धू समझे। सो वे बरबस गहरी मेहनत करते थे। लेकिन अब तो केवल इतना ही उगल देना काफ़ी है–'दुनिया की हर चीज वकवास है!' और बस, करिश्मा हो गया। वाहवाही के लिए आपस में ही एक-दूसरे की पीठ ठोंक ली। सच तो यह है कि कल तक जो कूढ़-मग़ज थे वे ही अव–रातोंरात–निहिलिस्ट बन बैठे है।"

आरकादी तमतमा उठा, उसकी आंखें आग उगलने लगीं। लेकिन वजारोव अविचलित था।

"सो, निज गौरव की अपनी सुप्रशंसित भावना को भी आपने ताक पर रख दिया," वजारोव ने कहा। "लगता है कि बहस कुछ जरूरत से ज्यादा आगे बढ़ गई... अच्छा हो कि उसे बंद कर दिया

जाय। और फिर," उठते हुए बज़ारोव ने कहा, "मैं आपसे सहमत होने के लिए भी तैयार हू। लेकिन तभी जब हमारे इस राष्ट्रीय जीवन के सामाजिक या घरेलू क्षेत्र में आप हमें एक भी ऐसी सस्था दिखा देंगे जिसे एकदम और अत्यन्त बेरहमी के साथ रद्द करने की ज़रूरत न हो।"

"एक नही, मैं तुम्हे लाखो ऐसी सस्थाए दिखा सकता हू," पावेल पेत्रोविच ने चीखकर कहा, "हा, लाखो। मिसाल के लिए हमारी गाव की बिरादरी को ही लो।"

बज़ारोव के होठो पर घृणा से बल पड गए।

"जहा तक गाव की बिरादरी का सम्बध है," उसने कहा, "अच्छा होता अगर अपने भाई से ही पूछ लेते। गाव की बिरादरी का, एक दूसरे के प्रति दायित्व का, शराबबदी और इसी तरह के अन्य ढकोसलो का, मेरी समझ में उन्हे काफी निजी ज्ञान है।"

"और परिवार? हमारे किसानो में परिवार जिस रूप में आज भी मौजूद है, उसके बारे में क्या कहते हो?" पावेल पेत्रोविच चिल्ला उठे।

"यह भी एक ऐसा विषय है जिसे, मेरी समझ में अधिक बारीकी से जाचना खुद आपके ही हित में अच्छा न होगा। शायद अपनी ही पतोहू से मुह काला करने की बात आपसे छिपी न होगी। मेरी बात मानिए, पावेल पेत्रोविच, और एक-दो दिन का समय ज़रा खर्च कीजिए, मेरा दावा है कि आप एक भी सस्था आसानी से खोजकर सामने नहीं रख सकेगे। हमारे सभी वर्गों और श्रेणियो को देख डालिए, एक एक को ध्यान से खोजबीन कीजिए, और इस बीच आरकादी और मैं "

"हर चीज़ की खिल्ली उडाते रहें, यही न?" पावेल पेत्रोविच ने बीच में ही कहा।

"नही, मेंढको की चीरफाड कर। चलो, आरकादी। अच्छा नमस्कार।"

दोनों मित्र चले गए। दोनों भाई, अकेले रह जाने पर, शुरू में कुछ देर तक चुपचाप केवल एक-दूसरे को देखते रहे।

"देखा तुमने," आखिर पावेल पेत्रोविच ने कहना शुरू किया। "ऐसी है हमारी यह युवा पीढ़ी। ऐसे है हमारे ये उत्तराधिकारी!"

"उत्तराधिकारी," निकोलाई पेत्रोविच ने उदासी से एक लम्बी सांस भरते हुए दोहराया। बहस के समूचे दौरान मे वह जैसे कांटों पर बैठे थे और नजर छिपाकर, व्यथित भाव से, जब-तब आरकादी की ओर देख लेते थे। "जानते हैं भाई साहब, मैं क्या सोच रहा था? एक बार अपनी प्यारी अम्मा से मेरा झगड़ा हुआ। वह थीं कि बस चिल्लाए जाती थीं, और मेरी एक नहीं सुनती थीं ... आखिर मैंने उनसे कहा कि वह मेरी बात नहीं समझ सकती, कि हम दो भिन्न पीढ़ियों के जीव हैं। वह बुरी तरह कटकर रह गई, और मैंने सोचा—'और चारा भी क्या है। गोली कड़ुवी जरूर है, पर बिना निगले निस्तार नहीं।' वैसे ही अब हमारी बारी है, और हमारे उत्तराधिकारी हमसे कह सकते हैं: 'तुम हमारी पीढ़ी के नहीं हो। यह कड़ुवी गोली निगलनी ही पड़ेगी।'"

"तुम कुछ ज़रूरत से ज्यादा भले और विनयशील हो," पावेल पेत्रोविच ने प्रतिवाद किया। "इसके प्रतिकूल मेरा विश्वास है कि इन युवा लोगों की अपेक्षा तुम और मैं कहीं ज्यादा सही हैं, हालांकि हम—शायद—अपने आपको पुराने ढंग से व्यक्त करते हैं, vieilli*, और हममें वह मुंहजोरी नहीं है जो कि उनमें है... लेकिन आज की यह नयी पीढ़ी कितनी मुंहजोर है। अगर तुम इनमें से किसी से पूछो—'बोलो, कौन-सी मदिरा लोगे—लाल या सफ़ेद?'

---

*पुराने ढंग से। (फ्रेंच)—सं०

तो वह बहुत ही गहरी आवाज में और चेहरे को कुछ ऐसा गम्भीर बना कर मानो उस क्षण सारा भूमण्डल उसी की धुरी पर घूम रहा हो कहेगा – जी मेरा रंग तो लाल है

क्या आप और चाय लेंगे? तभी दरवाजे में से झांकते हुए फ़ेनिचका ने पूछा। जब तक बहस की आवाज़ आती रही वह ड्राइंगरूम में आने का साहस नहीं कर सकी थी।

नहीं। उनसे कहो समोवार यहां से उठा ले जाए। उससे मिलने के लिए उठते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने जवाब दिया। पावेल पेत्रोविच ने संक्षेप में "Bon soir" * कहा और अपने अध्ययन-कक्ष में चले गए।

११

आधे घंटे बाद निकोलाई पेत्रोविच बाग़ में निकल आए अपने उसी प्रिय कुंज में। उदास विचारों ने उन्हें घेर लिया। केवल अब उन्होंने पूरी तीव्रता से अनुभव किया कि वह और उनका लड़का अलग जा पड़े हैं। उन्होंने देखा कि समय के साथ साथ स्वरों की यह भिन्नता यह दरार उत्तरोत्तर अधिक होती जाएगी। इसका मतलब यह कि जाड़ों के दिनों में सन्त पीतसबर्ग में दिन रात नयी पुस्तकों में उनका सिर खपाना बेकार हुआ बेकार ही वह युवा लोगों की बातों को इतना कान लगाकर सुनते थे और उनकी बहसों की तेज रवानी में अपनी ओर से भी एकाध शब्द डालकर इतनी खुशी का अनुभव करते थे। भाई साहब कहते हैं कि हम सही हैं, उन्होंने सोचा। दम्भ की बात नहीं, मैं सचमुच यह सोचता हूं कि वे लोग

---

* शुभ सन्ध्या। (फ्रेंच) – सं०

हमसे भी कहीं ज्यादा सत्य से दूर हैं, फिर भी मैं अनुभव करता हूं कि उनके पास कुछ है जो हमारे पास नहीं है, उनका पक्ष हमसे प्रबल है... क्या इसलिए कि उनके पास युवावस्था है? नहीं, केवल इतना ही नहीं। तो क्या इसलिए कि उनमें कुलीनता का वह दम्भ नहीं है जो कि हममें है?"

निकोलाई पेत्रोविच का सिर झुककर उनके सीने को छूने लगा। उन्होंने अपने चेहरे पर हाथ फेरा।

"लेकिन कविता को रद्द करना," उन्होंने फिर सोचना शुरू किया, "कला और प्रकृति के प्रति अनुभूतिशून्य होना ..."

और उन्होंने अपने चारों ओर देखा, मानो यह हृदयंगम करना चाह रहे हों कि प्रकृति के प्रति कोई कैसे अनुभूतिशून्य हो सकता है। सांझ घिरती आ रही थी। सूरज आस्पेन वृक्षों के एक छोटे से झुरमुट के पीछे छिप गया था जो बाग़ से कोई एक-तिहाई मील दूर होगा। उसकी छाया निस्पंद खेतों को पार कर लगातार रेंगती आ रही थी। झुरमुट की बग़लवाली सड़क काली पट्टी की भांति मालूम हो रही थी और सफ़ेद टट्टू जैसे घोड़े पर सवार एक किसान धीमी चाल से उसपर चला आ रहा था। हालांकि वह झुट-पुटे में था, फिर भी उसका समूचा आकार-प्रकार साफ़ दिखाई पड़ रहा था, यहां तक कि वह थेगली भी जो उसके कंधे पर पड़ी थी। फुर्ती से उठती घोड़े की अलग अलग टांगें बड़ी चित्रमय मालूम हो रही थीं। दूर ओट में छिपे सूरज की किरनें झुरमुट को बींधती हुई आस्पेन वृक्षों के तनों को कुछ ऐसी गुलाबी आभा में रंग रही थी कि वे सनोवर के वृक्षों जैसे मालूम होते थे; उनकी हरियाली ने मानो नीली चादर ओढ़ ली थी। ऊपर, पीलापन लिए नीला आकाश छिपते हुए सूरज की आभा से धुंधला गुलाबी होता जा रहा था। ऊंचे, खूब ऊंचे अबाबीलों के झुंड उड़ रहे थे। वायु थम गई थी। इक्की-दुक्की पीछे छूटी मधु-मक्खियां, लिलक के

फूलो के पास अभी तक अलस और उनीदे भाव से भनभना रही थी। नीचे लटक आई एक एकाकी टहनी पर मच्छरो और भुनगो की एक पात टूटी पड रही थी। "ओह् मेरे भगवान, कितना सुन्दर है यह सब!" निकोलाई पेत्रोविच ने सोचा, और उनके प्रिय छन्द उनके होठो पर थिरक आए, लेकिन तभी आरकादी तथा, 'स्टौफ उण्ड क्राफ्ट' की याद ने जैसे उनका गला घोट दिया। उनका गुनगुनाना रुक गया, और वह वैसे ही स्थिर बैठे रहे—उदास और सुहानी तन्मयता में डूबे हुए। विचारो-स्मृतियो में बहना उन्हें अच्छा लगता था, देहात के जीवन ने उनमें इस प्रवृत्ति को विकसित कर दिया था। अभी उस दिन, छोटी-सी सराय में बैठे जब वह अपने लडके की बाट जोह रहे थे, तब भी वह इसी प्रकार दिवा-स्वप्नो में रम गए थे। लेकिन तब से अब में एक परिवर्तन आ गया है। उन सम्बन्धो ने जो तब धुधले थे, अब एक आकार—सुनिश्चित आकार—ग्रहण कर लिया है। उन्हें एक बार फिर अपनी मृत पत्नी की याद हो आई, लेकिन घरेलू पत्नी और घर की मालकिन वाले उस रूप में नही, जिसमें कि वह इतने बरसो से परिचित थे—बल्कि एक लोचदार युवती के रूप में जिसकी आखो में निश्छल कौतुक खेलता था, जिसकी आखें बडी मासूमियत से कुछ पूछती नजर आती थी और जिसकी बच्चो जैसी कोमल गरदन पर कसी हुई चोटी झूलती थी। उन्हें अपने पहले मिलन की याद हो आई। वह तब पढते थे। निवासालय के जीने पर उनकी उससे मुठभेड हुई। अनजाने उससे टकराने पर माफी मागने के लिए वह मुडे और बडी मुश्किल से, सकपकाते हुए, इतना ही उनके मुह से निकल सका "Pardon monsieur*!" उसने अपना सिर झुका लिया, होठो-ही-होठो में

---

* माफ करना, श्रीमान! (फ्रेंच)—स०

मुसकराई और फिर, जैसे एकाएक डरकर, भाग निकली और जीने के एक मोड़ पर रुककर निकोलाई पेत्रोविच पर उसने एक तेज नज़र डाली, अपनी मुद्रा को उसने कुछ गम्भीर-सा बनाया और उसके गाल लाल हो उठे। और फिर, डरते-सहमते, शुरू शुरू का वह मिलना-जुलना, अधबोले शब्द और अधखुली मुसकानें, असमंजस, उदासी, चाहतें, और अन्त में बेसुध कर देनेवाला वह उल्लास ... सब जाने कहां लोप हो गए? वह उनकी पत्नी बनकर घर में आई और उन्होंने वह सुख देखा जो दुनिया में विरलों को ही नसीब होता है ... "लेकिन," उन्होंने सोचा, "सुख के वे पहले मधुर क्षण, क्यों नही वे इतने अमर हो सके कि चिरकाल तक जीवित रहते?"

उन्होंने अपनी भावनाओं का विश्लेषण करने का प्रयत्न नहीं किया, वह शान्ति और सुख से भरपूर उन दिनों को किसी ऐसी चीज से बांध रखना चाहते थे जो स्मृति से ज़्यादा मजबूत हो, वह एक बार फिर अनुभव करना चाहते थे जैसे मरीया उनके पास आकर खड़ी हो गई हो, जैसे वह उसके सुहावने स्पर्श का अनुभव कर रहे हों, उसकी सांसें उन्हें छू रही हों, और उन्हें लगा जैसे मरीया की मौजूदगी उन्हें अभिभूत करती जा रही है...

तभी, कही पास से ही, फ़ेनिचका की आवाज सुनाई दी:

"निकोलाई पेत्रोविच, कहां है आप?"

वह चौक उठे। लेकिन वह त्रस्त नही हुए, न ही उन्होंने कोई घबराहट अनुभव की... कहां उनकी पत्नी, और कहां फेनिचका; दोनों की तुलना करने की बात कभी सपने तक में उनके दिमाग़ में नहीं आती थी। लेकिन उन्हें इसका खेद था कि फ़ेनिचका ने उन्हें खोज निकाला। उसकी आवाज ने उन्हें फिर वास्तविकता में ला पटका— पके हुए बालों और ढलती हुई आयु की वास्तविकता में ...

जिस जादुई दुनिया का जाल अतीत की धुंधली तरंगों से उन्होंने बुना था और जिसमें वह अब प्रवेश करने जा ही रहे थे, ग़ायब हो चुकी थी।

"यहां हूं," उन्होंने जवाब दिया। "तुम चलो, मैं अभी आया।" साथ ही, बिजली की भांति, उनके दिमाग़ में कौंधा "ओह, यही तो है वह अभिजात्य का—कुलीनत्व का—दम्भ, जो छोड़े नहीं छूटता!" फ़ेनिचका ने, बिना कुछ कहे, झांककर देखा और ग़ायब हो गई। उन्हें यह देखकर अचरज हुआ कि वह सपनों में ही खोए रहे और रात घिर आई। चारों ओर अंधेरा और निस्तब्धता छाई थी। और फ़ेनिचका का चेहरा जो इतना छोटा और कुम्हलाया-सा दिख रहा था, तैरकर विलीन हो गया। घर लौटने के लिए वह उठे, लेकिन उनका हृदय कुछ इतना तरल हो उठा था और भावों से इतना भरा था कि वह बाग़ में ही धीरे धीरे टहलने लगे। कभी वह, चिन्तित-से, धरती की ओर देखते, कभी उनकी आंखें आकाश की ओर उठ जातीं जहां सितारों के झुरमुट चमक और टिमटिमा रहे थे। वह टहलते रहे, थककर एकदम चूर भी हो गए, लेकिन बेचैनी की वह भावना जो उनके हृदय को घेरे थी—एक तरह की ललक, एक धुंधली, उदासी का संचार करनेवाली व्यग्रता—फिर भी कम नहीं हुई। ओह, अगर बज़ारोव को यह मालूम हो जाता कि इस समय उनके अन्तर में क्या हलचल मची है, तो वह कितनी खिल्ली उड़ाता! और आरकादी भी इसका समर्थन न करता। उनकी आंखों में आंसू उमड़ आए, अवांछित आंसू,—वह, चवालीस साल का आदमी, एक फ़ार्म का मालिक, नौकरों-चाकरों का स्वामी, और ये आंसू! यह तो वायोलीन बजाने से भी सौ गुना बदतर है!

निकोलाई पेत्रोविच बाग़ में टहलते रहे, और अपने जी को इतना कड़ा न बना सके कि घर की ओर डग बढ़ा सकें। घर, उनका वह शान्त और सुहावना आवास, रोशनी से आलोकित अपनी सारी खिड़कियों से

मुसकराता हुआ उनकी ओर निहार रहा था। लेकिन वह अंधेरे से, आग से, चेहरे पर ताजी हवा के दुलार-भरे स्पर्श से, हृदय की कसक और व्यग्रता से पीछा छुड़ाकर अपने आपको अलग नहीं कर सके ...

पगडंडी के एक मोड़ पर पावेल पेत्रोविच से वह टकरा गए।

"बात क्या है?" उन्होने निकोलाई पेत्रोविच से पूछा। "चेहरा इतना पीला पड़ गया है कि एकदम छाया-से नजर आते हो। क्या तबीयत ठीक नही है? जाकर विस्तर पर आराम क्यों नही करते?"

निकोलाई पेत्रोविच ने गिने-चुने शब्दों में अपनी मानसिक स्थिति का परिचय देकर उनसे छुट्टी ली। पावेल पेत्रोविच टहलते हुए बाग के छोर पर पहुंचे और वह भी विचारों में खो गए, उन्होंने भी अपनी आंखें उठाकर आकाश की ओर देखा। लेकिन उनकी सुन्दर काली आंखों में तारों की चमक के सिवा और कुछ प्रतिबिम्बित नहीं हुआ। रोमाण्टिकता उनकी घुट्टी में नहीं पड़ी थी और उनकी वह नफ़ासत पसन्द, नीरस, किन्तु अनुरागमयी, आत्मा–जो इस हद तक फ़्रेंच थी कि अन्य सब को नीची नजर से देखती थी–सपने देखने की आदी नहीं थी।

उसी रात बज़ारोव आरकादी से कह रहा था:

"जानते हो, मुझे एक अनोखी वात सूझी है। तुम्हारे पिता आज एक निमंत्रण की बात कर रहे थे। वही जो तुम्हारे एक नामी सम्बंधी ने उनके पास भेजा है। तुम्हारे पिता जा नहीं रहे हैं। बोलो, तुम क्या कहते हो? क्यों न एक चक्कर शहर का भी लगा लिया जाय। उन्होंने तुम्हें भी बुलाया है। देखो न, कितना बढ़िया मौसम है। चलो, शहर की सैर कर आएं। पांच या छे दिन तक वहां खूब घूमें-फिरेंगे, बड़े मजे से समय बीतेगा।"

"तो तुम भी मेरे साथ ही लौटोगे न?"

नहीं मुझ अपने पिता के पास जाना है। तुम जानते ही हो, वह शहर स करीब बीस मील दूर रहते हैं। मुद्दत हो गई उनसे मिले, और मा से भी। बूढा को उनके इस सुख से क्यो वचित किया जाए। बहुत ही नक लोग हैं आमतौर से पिता। सच, बूढा बडा मजदार है। फिर जानते ही हो मैं उनका इकलौता लडका ठहरा! बस, सन्तान के नाम पर एक मैं ही हू, और कोई नहीं!'

क्या वहा अधिक दिन रुकोग?

ऐसी उम्मीद तो नहीं है। तबीयत भी वहा अधिक नहीं लगती।

तो वहा स लौटते समय यहा आओग?'

कह नहीं सकता देखा जाएगा। हा तो बोलो, क्या कहते हो? चलोग न?

जैसा तुम कहो आरकादी न बिना किसी उछाह के कहा।

असल में अपने मित्र के प्रस्ताव स वह बहुद खुश था, लेकिन अपने सच्चे भावो को तुरत प्रकट करना उसे ठीक नहीं जचा। आखिर वह भी तो निहिलिस्ट ही था न?

अगले दिन वह और बजारोव शहर के लिए चल दिए। मारिनो के युवा प्राणी उनके जाने से उदास थ। दुन्याशा की आखो में तो सचमुच आसू आ गए लेकिन बड-बूढा न राहत का अनुभव किया।

१२

जिस शहर की ओर हमारे मित्रो न रुख किया वह एक नौजवान गवर्नर के मातहत था। गवर्नर प्रगतिशील भी थ और निरकुश भी जैसा कि हमारे इस पुराने रूस में अक्सर देखने में आता है। सूबे की बागडोर अपने हाथ में लेने के पहले साल में ही कुलीनो के सूबाई मार्शल और

अपने मातहतों, दोनों से, उनका झगड़ा हुआ। मार्शल घोड़सवार गारद सेना के अवकाश-प्राप्त कैप्टेन, एक घोड़ा-पालन-केन्द्र के मालिक और बहुत ही रंगीन तबीयत के मेजवान थे। झगड़ा, और उसके फलस्वरूप तनातनी, यहां तक बढ़ी कि अन्त में सन्त पीतर्सबर्ग के मंत्रालय को मौक़े पर पहुंचकर जांच करने के लिए एक कमिश्नर भेजने का फ़ैसला करना पड़ा। इसके लिए मातवेई इलिच कोल्याजिन को चुना गया। यह उन्हीं कोल्याज़िन के सुपुत्र थे जिनकी निगरानी में किरसानोव बन्धु किसी समय सन्त पीतर्सबर्ग में रह चुके थे। मातवेई इलिच कोल्याज़िन भी 'युवा स्कूल' के थे, मतलब यह कि हाल ही में उन्होंने चालीसवें साल में पांव रखा था। राज-पुरुष बनने का लक्ष्य साधना उन्होंने शुरू कर दिया था और अपने वक्ष के दोनों ओर एक एक स्टार लगाते थे। इनमें से एक, इसमें शक नहीं, कोई विदेशी पदक था और उसका ऐसा कोई महत्व नही था। गवर्नर की भांति, जिनका फ़ैसला करने का काम उन्हें सौंपा गया था, वह खुद भी प्रगतिशील माने जाते थे और 'बड़ों' में गिनती होने पर भी वह अधिकांश 'बड़ों' से भिन्न थे। अपने बारे में उनकी बहुत ही ऊंची राय थी। उनकी अहंमन्यता की भी कोई सीमा नहीं थी। लेकिन उनके ठाठ-बाट में बनावट नहीं थी, देखने में वह सहृदय मालूम होते थे, दया-भाव के साथ औरों की सुनते थे, और इतने भले स्वभाव के साथ हंसते थे कि देखनेवाला पहली नजर में ही कह उठे: "आदमी खरा मालूम होता है।" लेकिन, जरूरत पड़ने पर, जैसी कि कहावत है–वह रौब गांठना भी जानते थे। "शक्ति ही मूल मंत्र है," ऐसे मौक़ों पर वह कहते, "L'énergie est la première qualité d'un homme d'état*," लेकिन,

---

*शक्ति ही सरकारी आदमी का प्रधान गुण है। (फ़्रेंच)–सं०

इस सबके बावजूद, उनकी शक्ति अक्सर जवाब देती नज़र आती और ऐसा एक भी—थोड़ा अनुभव रखनेवाला—अफ़सर नहीं था जो नाक पकड़कर उन्हें मनचाही दिशा में न मोड़ सकता हो। मातवेई इलिच गुड्ज़ोन के प्रति अपनी गहरी श्रद्धा प्रकट करते थे और छोटे-बड़े सभी लोगों पर यह छाप डालने का प्रयत्न करते थे कि लकीरपंथी और प्रतिगामी अफसरशाही से उनका कोई वास्ता नहीं है, और यह कि सार्वजनिक जीवन के किसी भी पहलू को वह आखों की ओट नहीं होने देते इस तरह के टकसाली कथनों से वह खूब परिचित थे। इतना ही नहीं, आधुनिक साहित्य के रुझान पर भी वह नज़र रखते थे, लेकिन एक गर्वीली उपेक्षा के अन्दाज़ से, बिल्कुल वैसे ही जैसे कि एक वयस्क आदमी, बाज़ार में छोटे लड़कों का जलूस देखकर, कभी कभी उनके साथ हो जाता है। सच पूछो तो मातवेई इलिच अलेक्सान्द्र के दिनों के उन अफसरों की स्थिति से कुछ आगे नहीं बढ़ पाए थे, जो सन्त पीतसबर्ग में, मदाम स्वेचीना के सैलून में होनेवाले सन्ध्या-समारोह में शामिल होने के लिए सुबह ही सुबह कोन्दिलाक की पोथी के पन्नों पर नज़र दौड़ाते थे। अगर अन्तर था, तो इतना ही कि मातवेई इलिच के तरीके उनसे भिन्न और अधिक आधुनिक थे। वह मजे हुए दरबारी थे, खूब चतुर-चालाक, इसके सिवा और कुछ नहीं। काम-काजी मामलों में वह अयोग्य थे और सूझ-बूझ में कमज़ोर। लेकिन अपने निजी मामलों में वह पूरे चौकस थे, एक मक्खी तक वह अपनी नाक पर नहीं बैठने देते थे—क्या मजाल जो कोई उन्हें इधर से उधर मोड़ दे। और, अन्तत, यही मुख्य—सबसे बड़ी चीज़ है।

मातवेई इलिच ने आरकादी का स्वागत बड़ी मिलनसारी से किया,—ऐसी मिलनसारी से जो कि उन्नत लोगों की एक अपनी विशेषता होती है। इतना ही नहीं, हम तो कहेंगे कि उन्होंने काफी

हंसमुखपन का परिचय दिया। लेकिन, साथ ही, उन्होंने बड़ी हैरानी भी प्रकट की जब उन्हें यह मालूम हुआ कि उनके सम्बंधी–बावजूद इसके कि उन्हें भी निमंत्रण दिया गया था–नहीं आए, वे देहात में ही रह गए।

"तुम्हारे दद्दा शुरू से ही कुछ अजीब जीव रहे है," अपने भड़कीले मखमली ड्रैसिंग गाउन के फुन्दनों को झुलाते हुए उन्होंने फ़ब्ती कसी और फिर, एकाएक, उस युवक अफ़सर की ओर मुड़ते हुए, जो चुस्ती से बटन-कसी वर्दी मे सलीकेदारी का अवतार बना खड़ा था, व्यस्त-सी मुद्रा और पैनी आवाज में पूछा: "क्यों, क्या है?" युवक अफ़सर के होंठ, सुदीर्घ अर्से से बोलने के अनभ्यस्त, एक-दूसरे से जुड़े थे। वह अपने पांवों पर खड़ा हुआ और सकपकाई-सी मुद्रा में अपने आला अफ़सर की ओर देखने लगा... अपने मातहत को निष्प्रभ कर देने के बाद मातवेई इलिच फिर जैसे उसे भूल ही गए। हमारे बड़े लोग, आमतौर से, अपने मातहतों को चकरा देने में एक खास रस लेते है। इसके लिए तरह तरह के तरीक़े वे अपनाते है। इनमें से एक तरीक़ा, जो कि बहुत ही प्रचलित है या जैसा कि अंग्रेज़ लोग कहते हैं, "is quite a favourite", उस समय देखने में आता है जब उच्चाधिकारी, एकाएक, अपने मातहत के अत्यन्त सीधे शब्दों को भी समझने से इन्कार कर देता है और ऐसा बन जाता है जैसे वह बहरा हो। मिसाल के लिए वह पूछेगा:

"आज कौनसा दिन है?"

अत्यन्त विनय के साथ मातहत जवाब देगा:

"आज शुक्र है, म-हा-म-हि-म!"

"एं? क्या? क्या कहा? शुक्र क्या? कैसा शुक्र..?"

"शुक्र म-हा-म-हि-म, शुक्रवार–सप्ताह का एक दिन।"

हा हा "क ममथा! अब और कौनसा पाठ पढ़ाओग मुझे!

मातवेई इलिच भी आखिर उच्चाधिकारी ही थ हालांकि उन्हें उदार माना जाता था।

मेरी सलाह मानो मित्र उन्होंने आरकादी स कहा और गवर्नर से भी मिलो। तुम तो जानते ही हो यह सलाह मैं इसलिए नहीं द रहा हू कि मेरे विचार पुराने फैशन के हैं और तदनुसार जो सत्ताधारी ह उनके आगे सलामी दागनी चाहिए बल्कि केवल इसलिए कि गवर्नर बहुत ही नफीस आदमी ह। इसके अलावा शायद तुम स्थानीय उच्च समाज म भी परिचय करना चाहोग मैं समझता हूं तुम भालू नहीं हो परसों वह एक बहुत ही शानदार नाच का आयोजन कर रहे हैं।

क्या आप भी नाच म होंग? आरकादी न पूछा।

यही तो। नाच का आयोजन मेरे ही सम्मान में हो रहा है मातवेई इलिच न करीब करीब खेद स डूबे स्वर में जवाब दिया तुम तो नाचना जानते हो न?

हां मगर कुछ यों ही।

तब घाटे म रहोग। यहां कुछ बहुत ही सुंदर लडकियां हैं और इसके अलावा यह शर्म की बात है कि कोई युवक नाचना न जाने। लेकिन यह न समझ बैठना कि इस मामले में मेरी धारणाएं पुराने फैशन की हैं। नहीं एक क्षण के लिए भी म यह नहीं सोचता कि आदमी की बुद्धि उसके पांवों म होनी चाहिए। लेकिन बायरनवाद एक बेहूदा चीज है Il a fait son temps*।

लेकिन सच पूछो तो चाचा सवाल बायरनवाद का नहीं है

---

*उसका जमाना बीत चुका। (फ्रेंच) स०

"चलो, यहां की कुलीनवर्गीय पुतलियों से तुम्हारे हाथ मिलवाऊंगा," मातवेई इलिच ने बीच में ही कहा और फिर अपने आप में सन्तुष्ट हंसी के साथ बोला, "मेरे अपने आदमी की हैसियत से तुम वहां सवपर छा जाओगे। काफ़ी गरमी मिलेगी तुम्हे, सच!"

तभी एक नौकर ने आकर प्रशासन-चैम्बर के अध्यक्ष के आने की सूचना दी। वह वृद्ध थे— आंखों में मिठास और चेहरे पर झुर्रियां लिए। वह प्रकृति के अत्यन्त शौक़ीन थे, खासतौर से ग्रीष्म के सुहावने दिनों के, जबकि—उन्हीं के शब्दों में—"हर नन्ही मक्खी हर नन्हे फूल से कुछ-न-कुछ घूस लिए बिना नही मानती..." आरकादी वहां से चला आया।

बज़ारोव वहीं सराय में मौजूद था, जहां वे ठहरे थे। गवर्नर के यहां चलने के लिए काफ़ी देर तक उसे मिन्नत करनी पड़ी। आखिर बज़ारोव राजी हो गया। "अच्छी बात है, चलो," उसने कहा, "जब उंगली थमाई है तो कलाई भी सही। इन जमींदार कुलीनों का भी रंग देख लिया जाए। और फिर आए भी तो हम इसीलिए है।" गवर्नर बड़े चाव से उनसे मिले, मगर न तो उन्होंने उनसे बैठने के लिए कहा और न खुद ही बैठे। वह हमेशा ही किसी न किसी अटपटी व्यस्तता और चहल-पहल का बुखार चढ़ाए रहते थे। सुबह होते ही वह सबसे पहले चुस्त कसी हुई वर्दी चढ़ाते-डाटते, और गुलूबंद को बेहद कसकर गले में लपेटते। खाने-पीने का उन्हें कोई ध्यान न रहता और फ़रमान जारी करने की चिरन्तन धुन और चहल-पहल में सोने तक का नाम न लेते। समूचे सूबे में लोगों ने उनका नाम 'बूरदालू' रख छोड़ा था। इसकी प्रेरणा उन्होंने इसी नाम के सुप्रसिद्ध फ़्रेंच प्रचारक से नहीं, बल्कि बूरदा नाम

के एक वदखायरा पेय मे ली थी। उन्होंने विरमानाव और बझारोव का अपने यहा नाच में शरीक होने का निमत्रण दिया और इसके दो मिनट बाद ही दोनो को भाई समझकर और 'बैमारोव' नाम से सम्बोधित करते हुए, उन्हे फिर एक नया निमत्रण दिया।

गवनर के यहा से अपने ठिकाने पर लौटते समय पास से गुजरती एक ड्रोस्की गाडी में से सहसा एक आदमी कूदा। वह नाटे कद का आदमी था और पान-स्लाविस्ट* ढग की जाकेट पहने था। यवगनी वसीलियविच, यवगनी वमीलियविच! पुकारता वह बझारोव की ओर लपका।

अरे तुम हो हर सितनिकोव! बझारोव ने कहा। तुम यहा कैसे टपक पडे? और बझारोव सडक की पटरी पर चलता रहा।

सच एमे ही एकदम सयोगवश उसने जवाब दिया और फिर गाडीवान की ओर मुडते हुए कम से कम छ बार उसने हाथ हिलाया और गुनगुनाते हुए बोला— चल आओ गाडीवान, हमारे साथ-साथ चले आओ! फिर नाली को छलागते हुए उसने कहना जारी रखा मेरे पिता का कुछ काम-काज था यहा। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं ही उसे निपटा आऊ। आज ही सुना कि तुम यहा हो और मैंने तुम्हारे ठिकाने का पता भी लगा लिया (सचमुच अपने कमरे में लौटने पर दोनो मित्रो ने देखा कि एक विजिटिंग कार्ड पडा है जिसके कोने मुडे हैं और जिसके एक ओर रूसी में और

---

*पान-स्लाविस्ट १९ वी शती के रूसी सामाजिक आन्दोलन में एक प्रतिक्रियावादी विचारधारा के पोषक थे। उन्होंने रूस के विकास के लिए एक विशिष्ट पथ के सिद्धान्त की स्थापना की।—स०

दूसरी ओर स्लाव लिखावट में सितनिकोव नाम लिखा है।) "मैं समझता हूं कि गवर्नर के यहां से तुम लोग नहीं आ रहे हो?"

"अपनी इस समझ को तुम ताक़ पर रखो, हम सीधे वहीं से आ रहे हैं।"

"ओह, तब तो मैं भी उनके यहां हाजिरी दे आऊंगा," सितनिकोव ने कहा। "लेकिन येवगेनी वसीलियेविच, परिचय तो करा दो जरा... अपने इनका..."

"यह है सितनिकोव, और यह किरसानोव," एक ही सांस में बुदबुदाते हुए बजारोव ने कहा।

"अहो भाग्य! सच, बड़ी खुशी हुई आपसे मिलकर!" कहते कहते सितनिकोव का बदन डोल गया और एक अटपटी-सी मुसकान उसके होंठों पर खेल गई। हाथों में पहने बेहद नफ़ीस दस्तानों को जल्दी जल्दी उतारते हुए बोला: "आपके बारे में बहुत कुछ सुन चुका हूं... येवगेनी वसीलियेविच से मेरा बहुत पुराना परिचय है, बल्कि कहिए कि मैं इनका शिष्य हूं। अपनी 'दीक्षा' के लिए मैं इन्हीं का ऋणी हूं..."

आरकादी ने बज़ारोव के शिष्य को परखा। उसके बने-संवरे चेहरे की रेखाएं–नाक-नक्श–छोटे किंतु बुरे न थे। लगता था जैसे किसी चिन्ता ने उन्हें कुण्ठित कर दिया हो। उसकी आंखें छोटी और भीतर को धंसी थीं और बेचैन-सी नजर से एकटक ताकती मालूम होती थी। और उसकी हंसी भी एक बेचैन-सी हंसी थी–तीखी, काष्ठवत् हंसी।

"शायद तुम यक़ीन न करो," वह कहता गया, "लेकिन येवगेनी वसीलियेविच के मुंह से जब पहली बार मैंने यह सुना कि हमें किसी अधिकारी को प्रमाण नहीं मानना चाहिए तो मेरा रोम रोम खिल उठा... लगा जैसे मेरे अन्तर की आंखें खुल गई हों! मैंने सोचा, यही तो है वह आदमी जिसकी जाने कब से मुझे तलाश थी! लेकिन

छोड़ा। और सुनो प्रवगनी वसीलियेविच, सब काम छोड़कर भी यहां तुम एक महिला से जरूर मिलना। वह तुम्हारी बातों को पूर्णतया समझ सकेगी और तुमसे भेंट करके उसे हार्दिक आनन्द प्राप्त होगा। मैं समझता हूं तुमने उसके बारे में सुना भी होगा।"

वह कौन है? बज़ारोव ने बिना किसी उत्साह के पूछा।

कुक्शिना Eudoxie—यवदोक्सीया कुक्शिना। वह एक शानदार चरित्र है—सच्चे मानों में emancipee*, एक प्रगतिशील नारी। और सुनो अगर उसके पास हम सब अभी चलें चलें तो कैसा हो? वह पास ही रहती है। वहीं भोजन करेंगे। मैं समझता हूं, अभी तुमने भोजन किया भी न होगा?

नहीं अभी नहीं किया।

तब तो और भी अच्छी बात है। वह अपने पति के साथ नहीं रहती तुम जानो—एकदम स्वतन्त्र है।

सुन्दर है? बज़ारोव ने पूछा।

'सुन्दर सो तो नहीं कहा जा सकता।'

'तो फिर हमें वहां क्या घसीटे लिए जा रहे हो?'

हा-हा वह खूब है शैम्पेन की बोतल से स्वागत करेगी।'

'सो तुरत पहुंचो। मतलबी आदमी छिपाए नहीं छिपता। लेकिन यह तो बताओ, तुम्हारे बुढ़ऊ क्या कर रहे हैं? क्या अब भी ठेके की दलाली कर रहे हैं?

"हां, चिचियातीन्सी हंसी के साथ सितनिकोव ने उतावली में कहा। "तो चल रहे हो न?"

---

*उन्मुक्त नारी। (फ्रेंच)—स०

"ठीक कह नही सकता।"

"तुम यहां के लोगों को देखना चाहते थे। जाओ, हो आओ," आरकादी ने धीमे स्वर में कहा।

"और तुम, किरसानोव, तुम खुद अपने बारे में क्या कहते हो?" सितनिकोव ने कहा। "ऐसे नही होगा। तुम्हें भी चलना पड़ेगा।"

"जान न पहचान, हम सब उसके यहां एकाएक कैसे धमक सकते हैं?"

"सो कोई बात नही। तुम कूक्शिना को जानते नहीं। एकदम हीरा है।"

"तो वहां शैम्पेन की एक बोतल खुलेगी न?" बजारोव ने पूछा।

"एक नहीं, तीन!" सितनिकोव चहका। "उसका जिम्मा मै लेता हूं।"

"ऐसे नहीं, कुछ बाजी लगाते हो?"

"तो मेरा सिर हाजिर है।"

"सिर नहीं, अपने बाप की थैलियां हारो तो कुछ बात भी बने... अच्छा तो चलो।"

१३

मास्को शैली के एक छोटे-से मकान में आवदोत्या निकितिश्ना (या येवदोक्सीया) कूक्शिना रहती थी। यह उस सड़क पर था जिसे हाल ही में आग ने नष्ट कर दिया था। सभी जानते हैं कि हमारे सूबाई शहर, हर पांच साल में एक बार सचमुच की अग्नि-परीक्षा देते है। दरवाजे पर एक तिरछे-से नाम-कार्ड के ऊपर घंटी

बजानेवाली द्वारा लगी थी। हॉल में पहुँचने पर घर की नौकरानी से—या वह मालकिन की सखी थी?—भेंट हुई। वह कनटोप टोपी पहने थी जो निस्सन्देह मालकिन की प्रगतिशील रुचि का एलान कर रही थी। सितनिकोव ने पूछा

आव्दोत्या निकितिश्ना घर पर हैं हैं न?

अरे क्या तुम हो Victor? बराबरवाले कमरे में से मोटी जैसी आवाज़ सुनाई दी। आओ चले आओ।

टोपीवाली स्त्री खिसक गई।

मैं अकेला नहीं हूँ सितनिकोव ने कहा। चुस्ती के साथ आरकादी और बज़ारोव की ओर एक नज़र देखा और फुर्ती के साथ अपनी अनोखा जाकेट उतार डाली। नीचे किसानों के ढंग का बिना आस्तीन का एक अजीब सा कपड़ा पहने था ऐसा कि जिसे कोई नाम नहीं दिया जा सकता।

कोई बात नहीं भीतरवाली आवाज़ ने जवाब दिया "Entrez"*।

तीनों युवक भीतर पहुँचे। यह कमरा ड्राइंगरूम से ज्यादा अध्ययनकक्ष मालूम होता था। कागज़-पत्तर चिट्ठियाँ मोटे-ताज़े रूसी पत्र-पत्रिकाएँ अधिकांशतः अनखुले धूल-छाई मेज़ों पर इधर-उधर बिखरे थे। सिगरेट के टोंट जहाँ भी नज़र डालो वहीं छितरे नज़र आते थे। चमड़े के सोफे पर एक महिला अधलेटी-सी बैठी थी। उसका यौवन अभी विगत नहीं हुआ था। गोरा चम्पई रंग और सुनहरे बाल बनाव सिंगार कुछ बिखरा हुआ सा रेशमी चोगा पहने जिसे एकदम निर्दोष नहीं कहा जा सकता ठूँठ-सी

---

* चले आओ। (फ्रेंच)—स०

बांहों में बड़े बड़े कड़े और सिर पर बेल-बूटेदार रूमाल। वह सोफ़े से उठी और सुनहरे एर्मिन-फर की गोट लगे मखमली चोगे को लापर्वाही से अपने कंधों पर खींचती हुई अलस अन्दाज़ में गुनगुनाई:

"गुडमोर्निंग, विक्टर!" और यह कहते हुए उसने सितनिकोव से हाथ मिलाया।

"यह हैं बजारोव, और यह किरसानोव," बज़ारोव के संक्षिप्त ढंग का अनुसरण करते हुए सितनिकोव ने छोटा-सा परिचय दिया।

"बड़ी खुशी हुई मिलकर," कूक्शिना ने जवाब दिया। अपनी गोल-मटोल आंखों को, जिनके बीच थोड़ी ऊपर को उठी उसकी गुलाबी नाक एकाकी दुबकी-सी बैठी थी, बजारोव पर टिकाते हुए बोली, "मैं आपके बारे में सुन चुकी हूं।" और फिर उससे भी हाथ मिलाया।

बज़ारोव ने मुह बिचकाया। अटपटे से कपड़े पहने इस उन्मुक्त नारी के संक्षिप्त से आकार-प्रकार में ऐसा कुछ नहीं था जो मुंह फेरनेवाला हो, लेकिन उसके चेहरे का भाव नागवार असर डालता था। उसे देखकर पूछने को जी चाहता था–"बात क्या है, क्या आज खाने को नहीं मिला? या तुमपर ऊब सवार है? या दिमाग़ किसी उलझन में फंसा है? आखिर क्यों तुमने यह अजीब–हास्यास्पद–सूरत बना रखी है?" ऐसा मालूम होता था जैसे वह भी सितनिकोव की भांति, ग़लत चेहरे से हंसती है। उसके बोलने और चलने-फिरने में एक नुमाइशी लापर्वाही का भाव था, लेकिन भोंडापन लिए हुए। साफ़ था कि वह अपने आपको खुशमिजाज और भले हृदय का जीव समझती थी। फिर भी, जो कुछ भी वह करती थी, हमेशा उसकी एक ही छाप मन पर पड़ती थी–यानी यह कि जो वह नहीं करना चाहती, ठीक वही कर रही है। वह हर काम किसी उद्देश्य से करती

मालूम होती थी अर्थात माध-माते और सहज-स्वाभाविक ढंग से नही।

हा हा बजारोव मैं आपके बारे में सुन चुकी हू उसने दोहराया। (मुफस्सिल और मास्को की कतिपय कुलीन वर्गीय महिलाओं की भांति उसकी यह आदत थी कि पुरुषो को परिचय के पहले दिन से ही उनके सरनाम से सम्बोधित करने लगती थी।) सिगरेट पिएंगे ?

सिगरेट से या हम कोई कर नही सितनिकोव ने जवाब दिया जो अब एक टाग को अपने घुटने पर टिकाए आराम कुर्सी में कुनमना रहा था। लेकिन पहले कुछ कलेवा तो कराओ। बुरी तरह भूख लगी है। साथ म शम्पेन भी हो तो क्या कहने!

बोतलानन्दी! यवदोक्सीया न कहा और हम पडी। (जब वह हसती थी तो उसके ऊपर के मसूड़े तक दिखने लगते थे।) यह पूरा बोतलानन्दी है बजारोव! क्यो है न ?

मैं जीवन को आनन्द म डुबाने का हामी हू सितनिकोव न शान के साथ कहा और इससे मेरी उदारपथी में कोई बाधा नही पहुचती।

जी नही पहुचती है बाधा पहुचती है यवदोक्सीया न तुरत कहा और साथ ही अपनी दासी को भोजन तथा शम्पेन दोनो का प्रबन्ध करने का आदेश भी दे दिया। फिर बजारोव की ओर मुडते हुए बोली आपकी क्या राय है? म समझती हू आप मुझसे सहमत होगे।

कतई नही बजारोव न जवाब दिया रोटी के टुकडे से मास की बोटी कहीं बेहतर है। रसायन विज्ञान तक यही सिद्ध करता है।

"तो क्या रसायन-विज्ञान आपका विषय है ? ओह, मैं उसपर जान देती हूं। मैंने खुद अपने एक लेप का भी आविष्कार किया है।"

"लेप ? और आपने ?"

"हां, मैंने। और जानते है, किसलिए ? गुड़ियों के सिर के लिए जिससे उनमें पक्कापन आ जाए – वे टूटे नही। देखा तुमने, मैं भी एक अमली जीव हूं। लेकिन वह अभी तैयार नहीं हुआ है। जरा देखना होगा, लीविग क्या लिखता है। हां, याद आया, क्या आपने 'मोस्कोव्स्कीए वेदोमोस्ति' में प्रकाशित नारी-श्रमिकों की स्थिति पर किसल्याकोव का लेख देखा ? जरूर देखिए। स्त्रियों के अधिकार की समस्या में तो आप दिलचस्पी लेते है न ? और स्कूलों की समस्या में भी ? आपके मित्र क्या करते हैं ? क्या नाम भला है इनका ?"

एक अलस लापर्वाही के साथ मदाम कूक्शिना ने अपने सवालों की अनवरत झड़ी लगा दी थी, जवाब मिले चाहे न मिले। बिल्कुल वैसे ही जैसे कि मुंह चढ़े बच्चे अपनी आया पर बातों की बौछार करते रहते हैं।

"जी, मुझे आरकादी निकोलायेविच किरसानोव कहते है," आरकादी ने कहा, "और मै काम-धाम कुछ नहीं करता।"

येवदोक्सीया ठठाकर हंस पड़ी।

"है न अद्भुत बात ! लेकिन आप सिगरेट पीजिए न ? और सुनते हो विक्टर, आज मै तुमसे नाराज हूं।"

"किस लिए ?"

"मैंने सुना है कि तुम फिर जार्ज सैण्ड का राग अलापने लगे हो। अनुन्नत विचारों की स्त्री – इसके सिवा और क्या है उसमें ? इमर्सन से उसकी भला क्या तुलना ? न वह शिक्षा के बारे में कुछ जानती है, न शरीर-विज्ञान के, और न ही अन्य किसी चीज़ के।

श्रौर मेरा विश्वास है कि भ्रूण-विज्ञान का तो उसने नाम तक न सुना होगा। ग्राज के इस जमाने में है न यह मजे की बात!" (कहते हुए येवदाक्सीया ने हवा में अपने हाथ तक उठा लिए।) "ग्रोह, इस विषय पर येलिसेयेविच ने कितना सुन्दर लेख लिखा है! सचमुच प्रतिभा है उस सज्जन में!" (जहां 'ग्रादमी' शब्द का प्रयोग करना चाहिए वहां येवदोक्सीया बराबर 'सज्जन' शब्द का प्रयोग कर रही थी।) "बजारोव, यहां ग्राग्रो, इधर मेरे पास सोफे पर बैठो। शायद ग्रापको पता न हो, लेकिन मुझे ग्रापसे भयानक डर लगता है।"

"सो क्यों, मैं पूछ सकता हूं?"

"ग्राप एक खतरनाक सज्जन हैं ग्रालोचना की साकार प्रतिमा! हे भगवान! मैं भी क्या दूर गांव की पिछड़ी हुई देहातिन की भांति बातें करने लगी। लेकिन सच पूछो तो मैं एक जागीरदारिन महिला हूं। ग्रपनी जागीर की मैं खुद देख-भाल करती हूं ग्रौर शायद तुम विश्वास न करो, मेरा कारिन्दा येरोफेई भी एक शानदार चरित्र है—ठीक कूपर के 'राहखोजी' की भांति। एक तरह की सहज सादगी—भोलापन—उसमें गोम राम में बसी है। ग्रब मैं हमेशा के लिए यहां बस गई हूं। बड़ा मनहूस नगर है यह, क्यों है न? लेकिन, किया भी क्या जाए!"

"जैसे दूसरे नगर वैसा ही यह भी," बजारोव ने शान्त भाव से कहा।

"तुच्छ स्वार्थों में फंसा हुग्रा। यही यहां सबसे बुरा है। जाड़े मैं मास्को में बिताया करती थी लेकिन मेरे पति, मौसिये कूक्शिन ने ग्रब वहां ग्रपना डेरा जमा लिया है। इसके ग्रलावा मास्को ग्रब जाने क्यों, पहले जैसा नहीं रहा। मुझे ग्रब कुछ विदेश जाने की धुन सवार है, ग्रौर पारसाल तो बस जाते जाते ही रह गई!"

"निश्चय ही पेरिस के लिए, क्यों?" बजारोव ने पूछा।

"पेरिस और हीडेलबर्ग के लिए।"

"हीडेलबर्ग के लिए क्यों?"

"ओह, वहां बुनसन जो है!"

बज़ारोव खोया हुआ सा उसका मुंह ताकने लगा।

"Pierre सापोजनिकोव... जानते हो न उन्हें?"

"नही।"

"ओह, मैंने कहा, Pierre सापोजनिकोव–जो चौबीसों घंटे लीदिया खोस्तातोवा के यहां जमा रहते है।"

"मैं इस महिला को भी नहीं जानता।"

"हा तो वह भी मेरे साथ चलने को तैयार हो गए। शुक्र है ख़ुदा का, मैं स्वतंत्र हूं, बाल-बच्चों की बला से मुक्त हूं... भला, क्या कहा था मैंने?–शुक्र है ख़ुदा का! लेकिन जरा सोचकर देखो तो शुक्र कुछ नहीं।"

तम्बाकू के धुवे से पीली पड़ी अपनी उंगलियों से येवदोक्सीया ने ताजी सिगरेट तैयार की, जीभ फेरकर उसे नम किया, कश लेकर उसे जांचा और सुलगाकर पीने लगी। तभी दासी एक ट्रे लिए हुए आ गई।

"यह लीजिए, खाना आ गया। लेकिन पहले कुछ डाल ली जाए। विक्टर, बोतल का काग खोलो–इसमें तुम माहिर हो।"

"हां, सो तो है ही," सितनिकोव बुदबुदाया और फिर चिचियाता-सा हंस पड़ा।

"आस-पास में क्या सुन्दर लड़कियों का अकाल है?" तीसरा गिलास खाली करते हुए बज़ारोव ने पूछा।

"अकाल क्यों है?" येवदोक्सीया ने जवाब दिया। "लेकिन

सब की सब कोरी दिमाग हैं। मिसाल के लिए mon amie*
श्रोदिनत्सोवा को ही लो—देखने में बुरी नहीं। गड़बड़ यही है कि
उसकी शोहरत जरा कुछ ... लेकिन सो कुछ नहीं। असल बात यह
है कि उसकी नजर व्यापक नहीं, उसके अपने कुछ स्वतंत्र विचार नहीं,
बस, एकदम कोरी है। अपनी समूची शिक्षा-प्रणाली को बदलने
की जरूरत है। मैं इस बारे में सोच रही हूं। हमारी स्त्रियों को शिक्षा
दीक्षा के बहुत ही बेढंगे साचे में ढाला गया है।"

"एकदम लाइलाज," सितनिकोव बोल उठा, "हिकारत के
सिवा वे और किसी योग्य नहीं, और यही मैं उनके प्रति अनुभव करता
हूं—अखण्ड और अटूट हिकारत!" (हिकारत के भाव का अनुभव
करने और इस भाव को व्यक्त करने में सितनिकोव खूब रस लेता
था। खासतौर से स्त्रियों पर चोट करने में वह और भी आनन्द लेता
था, और उस समय एक क्षण के लिए भी वह यह अनुभव नहीं करता
था कि कुछ ही महीने बाद वह खुद अपनी पत्नी के सामने नाक
रगड़ता नजर आएगा, सो भी सिर्फ इसलिए कि वह राजकुमारी
दुरदोलेओसोवा के घर की कन्या है।) वह कहता गया "एक भी उनमें
ऐसी नहीं मिलेगी जो हमारी बातचीत तक समझ सके, जिसके लिए
हम संजीदा पुरुषों का सिर खपाना व्यर्थ न कहा जा सके।"

"लेकिन यह कतई जरूरी नहीं कि वे हमारी बातचीत समझें
ही," बजारोव ने कहा।

"यह किस चीज के बारे में बात हो रही है?" येवदोक्सीया
ने पूछा।

---

*मेरी सखी। (फ्रेंच)—स०

"सुन्दर स्त्रियों के वारे में।"

"क्या-आ? तो आप भी प्रूडोन के मत के है?"

वज़ारोव का वदन एकदम सीधा सतर हो गया।

"मैं किसी के मत का नही हूं। मैं खुद अपना मत रखता हूं।"

उस आदमी की उपस्थिति मे, जिसका कि वह भोंपू वना हुआ था, साहसपूर्ण वात कहने का अवसर गले से लगा सितनिकोव चिल्ला उठा:

"अधिकारियों का नाश हो!"

"लेकिन मैकॉले भी..." कूक्शिना ने कहना शुरू किया।

"मैकॉले मुर्दाबाद!" सितनिकोव ने गला फाड़ा, "तुम भी किन लहंगाधारियों की हिमायत करने लगी!"

"लहंगाधारियों की नहीं, स्त्रियों के अधिकारों की। वदन में आखिरी बूंद तक जिनकी रक्षा करने का मैंने प्रण किया है।"

"मुर्दा..." कहते कहते सितनिकोव रुक गया और बुदबुदाते हुए वोला: "मेरा इनसे विरोध नही!"

"नहीं, मैं साफ़ देख रही हूं कि तुम पान-स्लाविस्ट हो!"

"नही, मैं पान-स्लाविस्ट नही हूं, हालांकि इसमें शक नही कि..."

"नहीं, नहीं, नहीं! तुम पान-स्लाविस्ट हो। तुम दोमोस्त्रोई* के हिमायती हो। वस, तुम्हारे हाथ में घोड़े का चावुक देने की और जरूरत है!"

---

*दोमोस्त्रोई—सोलहवी शताब्दी में लिखी गई पुस्तक का नाम, जिसमें उस काल के रूसी परिवारों के लिए सही ढंग के जीवन का आदर्श उपस्थित किया गया था। अव इस शब्द का अर्थ हो गया है: "पारिवारिक ज़ुल्म और तानाशाही"।—सं०

घोड का चाबुक बुरी चीज़ नहीं, बज़ारोव ने कहा, 'लेकिन यहां तो आखिरी बूंद तक

आखिरी बूंद किस की? येवदोक्सीया ने पूछा।

शैम्पेन की मेरी प्रिय आवदोत्या निकितिच्ना, शैम्पेन की— तुम्हारे रक्त की नहीं!

स्त्रियों का जब कोई अपमान करता है तो मैं सह नहीं सकती' यवदोक्सीया कहती गई यह भयानक है, भयानक! उनपर धावा बोलने के बजाय अच्छा हो कि तुम मिशले की लिखी पुस्तक De l amour* पढ़ जाओ। अद्भुत पुस्तक है यह! हां तो सज्जनो, अच्छा हो कि हम प्रेम के बारे में बातें करें। कहते कहते यवदोक्सीया ने अपनी बांह अलस भाव से सोफे की सिलवट भरी गद्दी पर रख दी।

सहसा कमरे में नीरवता छा गई।

नहीं प्रेम की बात छोड़ो बज़ारोव ने कहा। 'आपने अभी अभी ओदिन्त्सोवा का जिक्र किया था अगर मैं भूलता नहीं तो यह नाम लिया था न आपने? हां तो वह कौन है?'

ओह वह बड़ी लुभावनी है देखते ही प्यार करने को जी चाहे! सितनिकोव चिचियाया। तुमसे परिचय कराऊंगा। बहुत ही चतुर लड़की है, काफी मालदार और विधवा। बदकिस्मती से अभी बुद्धि का कुछ विकास नहीं हुआ। उसे हमारी यवदोक्सीया से घना सम्पर्क बढ़ाना चाहिए। हां तो, Eudoxie यह जाम तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए। आओ, गिलास खनकाएं! "Et toc et toc et tin tin tint Et toc et toc et tin tin t n!!"

Victor आखिर तुम अपनी ठठोलियों से कभी बाज़ नहीं आते!

भोजन बड़ी देर तक चला। शैम्पेन की पहली बोतल के बाद

---

*प्रेम के बारे में। (फ्रेंच)—स०

दूसरी आई, दूसरी के बाद तीसरी, और फिर चौथी भी... येवदोक्सीया बराबर चहकती रही और सितनिकोव बराबर उसका भोंपू बना रहा। शादी के बारे में उन्होंने दुनिया-भर की बाते कीं—यह कि शादी कोई पूर्वाग्रह है या अपराध, यह कि लोग मां के पेट से ही एक-से होकर पैदा होते हैं या नहीं, और यह कि व्यक्तित्व क्या चीज़ है। आखिर नौबत यहां तक पहुंची कि येवदोक्सीया, नशे से अंगारा बनी और चपटे नाखूनवाली अपनी उंगलियों से बेसुरे पियानो के पर्दों को ठकठकाती फटी हुई सी आवाज में गाने लगी। पहले उसने खानाबदोशों के कुछ गीत गाए और फिर सीमूर-शिफ़ कृत रोमांजा 'ग्रनादा निद्रा निमग्न है' सुनाया। सितनिकोव अपने सिर के चारों ओर एक रूमाल लपेटकर विरह-पीड़ित प्रेमी का अभिनय करने लगा। जब गानेवाली ने यह पंक्ति गाई:

"प्रिय कर दो अपने होंठों से
मेरे होंठों पर एक अग्निमय—
चुम्बन अंकित!"

तो आरकादी से यह सहन नहीं हुआ। ज़ोरों से बोला:

"सज्जनो, अब यह कमरा बेडलाम* बनता जा रहा है!"

बजारोव जो भूले-भटके एकाध व्यंग-बाण छोड़ देता था, अन्य सब कुछ भूल अपनी शैम्पेन में ही मस्त था। उसने अब सीधे जमुहाई ली, खड़ा हुआ और मेज़बान से विदा तक लिए बिना कमरे से बाहर हो गया। आरकादी ने भी उसका अनुसरण किया। सितनिकोव उन दोनों के पीछे लपका।

---

*लंदन में एक पागलखाना।—अनु०

"हां तो बाला, क्या कहते हो, कैसी लगी वह तुम्हें ?" कभी इधर और कभी उधर फुदकते-उचकते हुए वह कह रहा था। "मैंने पहले ही कहा था न ? कितनी शानदार औरत है! काश कि ऐसी ही कुछ और भी होती! ओह, कितना नैतिक बल है! एक तरह से अनुकरणीय!"

"और तेरे बाप का वह व्यापार भी नैतिक बल का एक नमूना है न ?" एक दारूघर की ओर इशारा करते हुए—जिसके पास से वे उस समय गुज़र रहे थे—बज़ारोव ने पूछा।

सितनिकोव फिर अपनी उस चिचियानी-सी हंसी में फूट पड़ा। अपनी वंश-बेल से वह परिचित था और उसकी याद कर मन ही मन लज्जा से गड़ जाता था। लेकिन इस समय वह निश्चय नहीं कर सका कि बज़ारोव के इस आकस्मिक घनिष्ठता प्रदर्शन को बड़ाई मानकर उसे खुश होना चाहिए अथवा बुराई मानकर नाराज़।

१४

कई दिन बाद गवर्नर के घर नाच हुआ। कोल्याज़िन उस दिन के 'दूल्हा' थे। कुलीना के मार्शल ने यह जताने में किसी को नहीं छोड़ा कि वह, सच पूछो तो, केवल उनके सम्मान की खातिर नाच में शामिल हुए हैं। उधर गवर्नर थे कि वह, नाच के दौरान में भी और उस समय भी जबकि वह, सांस लेने के लिए एक ओर स्थिर खड़े होते थे, अपनी कार्यव्यस्तता का प्रदर्शन करने से—यह या वह फरमान जारी करने से—नहीं चूकते थे। कोल्याज़िन का शाहाना अन्दाज़ और उनकी मिलनसारी दोनों एक-दूसरे से होड़ लेते मालूम होते थे। वह सभी पर अपनी मुसकानों की वर्षा कर रहे थे—किसी पर

थोड़े अनमनेपन के साथ, और किसी पर आदर की हल्की-सी चाशनी चढ़ाकर। महिलाओं के साथ तो वह en vrai chevalier français * बने हुए थे। और, जैसा कि राजपुरुष को शोभा देता है, उनके अन्तर से अपरिवर्तनशील वेगवती हंसी का अनवरत झरना फूट रहा था। उन्होंने आरकादी की पीठ थपथपाई और उसे इतनी ऊंची आवाज में 'प्रिय भतीजे' कहकर सम्वोधित किया कि सभी सुन लें। वजारोव की ओर जो अपेक्षाकृत पुराना ड्रैस-सूट डाटे था, उन्होंने एक उड़ती हुई, सूनी किन्तु कृपा-भरी नजर डाली और एक अस्पष्ट किन्तु भली-सी आवाज में कुछ कांखा जिसमें से, 'मै' और 'सदा की भांति' के सिवा और कोई शब्द पल्ले नहीं पड़ा। सितनिकोव की ओर उन्होंने अपनी उंगली बढ़ाई, एक मुसकान भी उसपर न्योछावर की, लेकिन अपने सिर को इस बार दूसरी ओर मोड़े हुए। और कूक्शिना को जो पिचका हुआ सा घाघरा और मैले-से दस्ताने पहने थी–अलवत्ता वालों में उसने 'स्वर्ग के पक्षी' के पर जरूर खोंस रखे थे–वुदवुदाकर उन्होंने enchanté ** तक कहा। हॉल में तिल रखने की जगह नहीं थी। युगल-नृत्य में शामिल होने के लिए पुरुषों की कमी नहीं थी। ग़ैर-फ़ौजी लोग, ज्यादातर, अलग खड़े 'दीवार की शोभा' बढ़ा रहे थे, जबकि फ़ौजी लोग पूरे जोश से नाच में हिस्सा ले रहे थे, खासतौर से उनमें से एक के जोश का तो ठिकाना ही नहीं था जो पेरिस में छै सप्ताह बिता आया था और वहां से "zut", Ah fichtrrre", "pst, pst, mon bibi" आदि फ़्रेंच भाषा के कुछ चटुल उद्गार वटोर लाया था। वह बड़ी नफ़ासत से, एकदम पेरिस के ढंग से, उनका उच्चारण करता था। लेकिन फिर भी

---

*एक सच्चे फ़्रांसीसी भद्रजन की तरह। (फ़्रेंच)–सं०

** फ़िदा हूं। (फ़्रेंच)–सं०

"si j'avais" की जगह "si j'aurais" का और निश्चय ही की जगह "absolument"* का प्रयोग कर जाता। तात्पर्य यह कि वह फ्रेंच भाषा का बिगड़ा हुआ रूसी रूप बोलता जिसे सुनकर फ्रेंच लोगों के पेट में बल पड़ जाते हैं आमतौर से उस हालत में जबकि उन्हें हमारे रूस देश वासियों का गुण करने के लिए यह विश्वास दिलाने के लिए बाध्य नहीं होना पड़ता कि हम उनकी भाषा को फरिश्तों की भांति — "comme des anges" — बोलते हैं

आरकादी जैसा कि हम जानते हैं कुछ अच्छा नहीं नाचता था। और बजारोव का तो नाच से कोई वास्ता ही नहीं था। वे दोनों एक कोने में बैठ गए और सितनिकोव भी उनके साथ आ मिला। चेहरे पर उपहास का भाव लिए और व्यंग्यपूर्ण छींटे कसते हुए रंग में नाची उसकी नज़र कमरे का चक्कर लगा रही थी और वह अपने आपमें अत्यन्त मगन मालूम होता था। सहसा उसके चेहरे का रंग बदल गया और आरकादी की ओर मुड़ते हुए सकपकाती-सी मुद्रा में बुदबुदाया

ओदिन्त्सोवा आ रही है।

आरकादी मुड़ा। काला गाउन पहने एक लम्बे कद की स्त्री पर उसकी नज़र पड़ी। वह हाल की चौखट पर पाँव रख रही थी। उसका राजसी ठाठ देखते ही बनता था। उसकी उघड़ी हुई बाँहें बहुत ही कमनीय अन्दाज़ में लता सदृश उसके बदन के दोनों ओर झूल रही थीं। उसके चमकदार बालों में सूखी फूशिया की एक टहनी बहुत ही प्यारे अन्दाज़ में उसके ढलुवाँ कंधों पर झुक आई थी। निखरी हुई और थोड़ा बाहर को झुक आई भौंहों के नीचे उसकी पारदर्शी आँख

---

* बिल्कुल। (फ्रेंच) — सं०

झांक रही थी। उनमें प्रतिभा और स्थिरता की—हां स्थिरता की, उदासी की नहीं—झलक थी। होंठों पर मुसकराहट का स्पर्श था, लेकिन बहुत ही नामालूम-सा। चेहरे से बहुत ही मृदु और कोमल ओज की किरनें फूट रही थी।

"क्या तुम इसे जानते हो ?" आरकादी ने सितनिकोव से पूछा।

"भली-भांति। तुम परिचय करना चाहोगे ?"

"क्यों नही... इस नाच के बाद।"

बजारोव का ध्यान भी ओदिनत्सोवा की ओर खिंचा।

"यह चिड़िया कौन है ?" उसने पूछा। "औरों से कुछ निराली मालूम होती है।"

नाच के बाद सितनिकोव आरकादी को ओदिनत्सोवा के पास ले गया। लेकिन उसके साथ उसका परिचय उस जोश-खरोश के अनुकूल सिद्ध नही हुआ जिससे कि उसने आरकादी को आश्वासन दिया था। उसका बोल उलझ गया और ओदिनत्सोवा ने अचरज-भरी नजर से उसे देखा। लेकिन आरकादी का नाम सुनते ही उसके चेहरे पर आन्तरिक दिलचस्पी के भाव उभर आए। पूछा:

"क्या आप निकोलाई पेत्रोविच के पुत्र तो नहीं ?"

"जी, हूं तो।"

"आपके पिता से मैं दो बार मिली हूं और बहुत कुछ उनके बारे में सुना है," वह कहती गई, "आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई।"

तभी कोई सहायक फौजी अफ़सर लपककर उसके पास आया और साथ में नाचने के लिए उससे आग्रह करने लगा। उसने स्वीकार कर लिया।

"तो तुम नाचती हो ?" आरकादी ने अदब से पूछा।

"हां। लेकिन यह आपने कैसे सोचा कि मैं नाचती नहीं? क्या मैं इतनी बूढ़ी लगती हूं?"

"आह नहीं, सच, ऐसी कोई बात नहीं लेकिन तब तो मैं भी माजुर्का नृत्य की आशा कर सकता हूं।"

ओदिनत्सोवा कृपापूर्वक मुसकराई।

"बहुत अच्छा," उसने कहा और आरकादी की ओर ठीक अभिभावक की नजर से तो नहीं, लेकिन ऐसी नज़र से देखा जैसे कि ब्याही हुई बहनें अपने अति छोटे भाइयों को देखती हैं।

ओदिनत्सोवा आरकादी से उम्र में अधिक बड़ी नहीं थी—वह उनतीस की थी—लेकिन उसकी उपस्थिति में उसे ऐसा लगा जैसे वह निरा स्कूली लड़का, एक अनुभवहीन छात्र हो, जैसे उन दोनों की आयु में काफी अन्तर हो। राजसी ठाठ के साथ मातवेई इलिच उसके—ओदिनत्सोवा के—पास आए और बातों की मिसरी-सी घोलने लगे। आरकादी पीछे की ओर हट गया, मगर उसकी आंखें बराबर उसी पर जमी रहीं और उसे नाच में शामिल होते देखती रहीं। नृत्य के अपने जोड़ीदार से भी वह उसी सहज भाव से बतिया रही थी जिस सहज भाव से उसने राजपुरुष से बातें की थीं। बड़ी कोमलता से उसने सिर हिलाया और अपनी आंखों को फेर लिया। एक या दो बार वह मृदुलता से हंसी भी। नाक उसकी कुछ मांसल थी, जैसी कि अक्सर रूसी नाकें हुआ करती हैं। और रंग भी उसका एकदम निखरा हुआ नहीं था। फिर भी आरकादी को यह निश्चित मालूम हुआ कि उसने इससे अधिक लुभावनी स्त्री पहले कभी नहीं देखी। उसकी आवाज़ संगीत बनकर बराबर उसके कानों में गूंजती रही। उसके गाउन की हर लहर में उसे एक जादू मालूम होता था, ऐसा जो अन्य किसी स्त्री में नहीं था। उसे लगा जैसे उसमें अधिक कमनीयता

और प्रवाह है। उसकी हर हरकत उसे बहुत ही स्वच्छंद और बनावट से अछूती मालूम हुई।

और उस समय जब माजुर्का की धुन बजनी शुरू हुई, आरकादी के रोम रोम में एक संकोच-सा समा गया। वह उस स्त्री के पास, उसके बराबर में, बैठ गया। उसने चाहा कि बातचीत शुरू करे, लेकिन उसके मुंह से बोल न निकला और उलझन में अपने बालों पर थपकियां देता रह गया। लेकिन उसका यह संकोच और परेशानी अधिक देर तक नही टिक सकी। ओदिनत्सोवा की स्थिरता ने उसे सहारा दिया और पन्द्रह मिनट बीतते न बीतते सहज भाव के साथ वह उससे बातें करता नजर आने लगा—अपने पिता के बारे में, ताऊ-जी के बारे में, सन्त पीतर्सबर्ग और देहात में अपने जीवन के बारे में। ओदिनत्सोवा विनम्र सहानुभूति के साथ उसकी बातें सुनती और अपनी पंखी की पंखुड़ियों को थोड़ा खोलती और बन्द करती रही। रह रहकर ओदिनत्सोवा को नाच का बुलावा मिलता और तब आरकादी की बातों का सिलसिला टूट जाता। औरों की बात छोड़िए, खुद सितनिकोव ने ही उसे दो बार नाच का निमंत्रण दिया। नाच के बाद वह फिर उसी जगह पर आ बैठती, अपनी पंखी को उठाती, नाच की उत्तेजना का जरा भी चिन्ह उसकी सांसों में नज़र न आता और आरकादी, उसके निकट बैठने के आल्हाद से भरा, अपनी बातचीत का सिलसिला फिर शुरू कर देता। वह उससे बातें करता, उसकी आंखों में झांकता, उसकी नफ़ीस भौहों को निहारता, उसके गम्भीर और प्रतिभावान् चेहरे की समूची मधुरता में एक अजीब उल्लास का अनुभव करता। वह खुद बहुत ही कम बोलती थी, लेकिन जब भी बोलती तो उसके शब्दों में दुनिया की जानकारी झलकती। उसकी कुछेक बातें तो ऐसी थीं जिनसे आरकादी को लगा

है। मुझसे अनुरोध किया है कि तुम्हें लेकर उसके यहां किसी दिन पहुंचूं।

मैं सहज ही कल्पना कर सकता हूं कि कितना रंगीन बनाकर तुमने मुझे उसके सामने उछाला होगा। जो हो, तुमने अच्छा ही किया। चला चलूंगा। वह चाहे जो भी हो—वन की रानी अथवा बूकिना की तरह उन्मुक्त—इसमें शक नहीं कि उसके कंधों का ढाल बेजोड़ है ऐसा जो एक मुद्दत से मैंने नहीं देखा था।

वजारोव का यह भोंडापन आरकादी को बहुत बुरा मालूम हुआ लेकिन—जैसा कि अक्सर होता है—उसने अपने मित्र को एक ऐसी चीज के लिए भला बुरा कहना शुरू किया जो उस बात से सर्वथा भिन्न थी जिसे कि उसने वस्तुतः उसमें नापसंद किया था। दबे स्वर में बोला

तुम क्यों यह मानना नहीं चाहते कि स्त्रियां भी अपने स्वतंत्र विचार रख सकती हैं?

इसलिए मेरे मुन्ना कि केवल उन्हीं स्त्रियों को अब मैंने स्वतंत्रता की ध्वजा फहराते देखा है जो सूखकर एकदम अमचुर हो गई हैं।

इसके बाद बातचीत आगे नहीं बढ़ी। भोजन के बाद दोनों युवक तुरंत वहां से चल दिए। उनके मुड़ते ही बूकिना विचलित और कुल्लाभरा—लेकिन असल में अपने भीतर एक खटक छिपाए—हंसी में फूट पड़ी। इस बात ने उसके अहम को बुरी तरह घायल कर दिया था कि उन दोनों में से एक का भी उसकी ओर ध्यान नहीं गया। नाच में वह सबके बाद तक जमी रही। रात के तीसरे पहर, तीन बजे के बाद, टठ पेरिस के स्टाइल में सितनिकोव के साथ उसने पोल्का मार्जुर्का नृत्य किया और इस नृत्य के साथ चरम उत्कर्ष पर पहुंचकर गवर्नर का शानदार आयोजन सम्पूर्ण हुआ।

"चलो, इसे भी देख ले कि स्तनपायी प्राणियों में यह किस कोटि की जीव है," ओदिनत्सोवा से मिलने के लिए उसके होटल के ज़ीने पर चढ़ते हुए बज़ारोव ने अगले दिन आरकादी से कहा। "बहुत कुछ है जो वह अपने बाहरी आवरण के भीतर छिपाए है।"

"तुम भी अजीब आदमी मालूम होते हो," आरकादी ने भन्नाकर कहा। "क्या इसका यह मतलब है कि तुम्हारी, यानी बज़ारोव की, बुद्धि संकीर्ण है–इतनी कि तुम समझ बैठे हो ..."

"बस बस, ज्यादा भोंदूपन न दिखाओ!" बज़ारोव ने बीच में ही लापर्वाही से कहा। "तुम्हें अभी तक इतना भी मालूम नही कि हमारे बात करने का यह एक ढंग है जिसका मतलब होता है–मामला चौकस है। यह सब हमारी चक्की का दाना है। खुद तुम्ही उसके विवाह की अजीब परिस्थितियों का आज मुझसे ज़िक्र कर रहे थे, हालांकि किसी मालदार बूढ़े से शादी करना–अगर सच पूछो तो–ऐसी कोई अजीब बात भी नहीं, बल्कि समझदारी की निशानी है। शहर की कानाफूसी का मैं विश्वास नहीं करता, बल्कि मुझे तो, अपने रोशन दिमाग़ गवर्नर के शब्दों में, यह सोचना अच्छा लगता है कि इसमें कुछ है जरूर!"

आरकादी ने कुछ नहीं कहा और दरवाजे को खटखटाया। वर्दी से लैस युवा नौकर दोनों मित्रों को एक बड़े कमरे में लिवा ले गया। कमरे की साज-सज्जा में, रूसी होटलों के अन्य सभी कमरों की भांति, यहां भी सुरुचि पर पानी फिरा था, लेकिन फूलों की भरमार जरूर थी। खुद ओदिनत्सोवा जल्दी ही आ गई। वह प्रातःकाल की सीधी-सादी पोशाक पहने थी। वसन्त के सूरज की रोशनी

में वह और भी युवा मालूम हो रही थी। आरकादी ने बजारोव का परिचय कराया और यह देखकर मन ही मन उसे अचरज हुआ कि जहां बजारोव कुछ अचकचा-सा गया, वहां ओदिन्त्सोवा पूर्णतया शान्त और स्थिर रही, ठीक वैसी ही जैसे कि वह पिछली रात थी। अपनी इस अचकचाहट का अनुभव कर बजारोव मन ही मन झुंझला उठा।

यह क्या हिमाकत है उसने अपने आपसे कहा एक पटीकोट तुम्हें इतना पस्त कर दे! और फिर, एकदम सितनिकोव की भांति बहाल, आरामकुर्सी में समाते हुए अतिरंजित बेपरवाही के साथ बात करने लगा। उधर आन्निन्त्सोवा एकटक, अपनी पारदर्शी आंखों से उसे निहारती रही।

अन्ना सेर्गेयेवना ओदिन्त्सोवा के पिता सेर्गेई निकोलायेविच लोक्तेव थे। वह सुन्दर रसिक दुस्साहसी और जुआरी थे। पन्द्रह साल तक वह सन्त पीतर्सबर्ग और मास्को में जमे और धूम मचाते रहे। अन्त में राजधानी में अपना धन स्वाहा करने के बाद, मजबूरन उन्हें देहात की शरण लेनी पड़ी। इसके कुछ ही दिन बाद उनका देहान्त हो गया अपनी दोनों कन्याओं के नाम—अन्ना बीस साल की और कातेरीना बारह की—जायदाद नहीं के बराबर छोड़कर इस दुनिया से चल बसे। लड़कियों की मां जो एक निर्धन ड्यूक परिवार की बेटी थी बहुत पहले ही उस समय जबकि पति का जीवन पूरे उभार पर था सन्त पीतर्सबर्ग में मर चुकी थी। पिता की मृत्यु हो जाने पर अन्ना को भारी मुसीबत का सामना करना पड़ा। सन्त पीतर्सबर्ग में उसने बहुत ही बढ़िया शिक्षा प्राप्त की थी लेकिन घर को संभालने जायदाद का काम-काज देखने और सबसे अलग-थलग निपट देहाती जीवन की अन्य ढेर सारी चिन्ताओं का बोझ ढोने में इस शिक्षा ने सहारा नहीं दिया। पूरे जवार में एक भी जीव ऐसा नहीं था जिसे वह जानती

हो, जिससे वह कुछ पूछ-ताछ कर सके। उसके पिता अपने पास-पड़ौसियों से दूर रहते थे। वह अपने पड़ौसियों से और पड़ौसी उनसे, अपने अपने तरीक़े से, नफ़रत करते थे। लेकिन उसने, फिर भी, जी नही छोड़ा और अपनी मां की वहिन राजकुमारी अवदोत्या स्तेपानोवना को तुरंत अपने पास वुला लिया। वह वुरे कैण्डे में ढली, नक-चढ़ी, वृद्ध महिला थी। अपनी भतीजी के घर में पाव रखने के वाद उन्होंने सवसे अच्छे सभी कमरों पर अपना क़ब्जा जमा लिया। सुवह से लेकर रात तक कोड़े-से फटकारतीं और झीकती-झल्लाती, और अपने एकमात्र मुह झुलसे चाटुकार दास को हाजिरी में लिए विना कभी वाग़ में टहलने न जातीं। वह हरे रंग की तार तार हुई वर्दी और उसके ऊपर नीले-आसमानी रंग का पट्टा कसे रहता, सिर पर तिर्छी टोपी लगाता। अन्ना ने वड़े धीरज से अपनी मौसी की मनमानी झक्कों को सहा और फ़ुरसत से अपनी वहिन की शिक्षा-दीक्षा में लगी रही। ऐसा मालूम होता था जैसे इस सूने में अपना यौवन खोने की सम्भावना के आगे उसने आत्मसमर्पण कर दिया हो... लेकिन विधाता कुछ और ही सोच रहे थे। ओदिनत्सोव नाम के एक व्यक्ति की नजर उसपर पड़ी, और वहीं उलझकर रह गई। वह वहुत ही मालदार आदमी था, और आयु साठ ऊपर चार। झक्की, तुनकमिजाज, तगड़ा, वजन का भारी, चिड़चिड़ा। लेकिन यों स्वभाव का वुरा नहीं था, न ही वेवक़ूफ़ था। अन्ना के प्रेम में फंसकर उसने विवाह का प्रस्ताव किया। वह उसकी पत्नी वनने को राजी हो गई। क़रीव छे साल तक वह उसके साथ रहा और मरते समय अपनी समूची सम्पत्ति उसे दे गया। उसके मरने के वाद एक साल तक अन्ना देहात में ही वनी रही, इसके वाद अपनी वहिन को लेकर वह विदेश यात्रा के लिए चल पड़ी, लेकिन जर्मनी के अलावा और कही न जा

सकी। घर की याद न सताया और वह अपने प्यारे निकोलस्कोय गांव में वापिस लौट आई। गांव 'एन' नगर से पच्चीस मील दूर था। यहां उसका एक ठाटदार और रईसाना मकान था बहुत ही बढ़िया बगीचे और लताकुंजों से लैस। स्वर्गीय ओदिन्त्सोव ने अपने ऐश व आराम के मामले में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। अन्ना सेर्गेयेवना विरले ही शहर का चक्कर लगाती थी। आमतौर से जब काम होता तभी वह जाती सो भी थोड़े समय के लिए ही। ज़िले में उसका मान नहीं था। ओदिन्त्सोव के साथ उसके विवाह ने एक अच्छी-खासी हलचल पैदा कर दी थी और उसे लेकर अनेक मनगढ़न्त कहानियों का जाल बन गया था। लोगों ने कहा कि अपने पिता के पेशे में वह हाथ बटाती थी और एक पाप का मुंह बन्द करने के लिए ही उसे विदेश जाना पड़ा... भेद भरे अन्दाज़ में वे इशारा करते... बस, अब अपने-आप समझ लो... इधर की उधर लगानेवाले, हृदय में जलन लिए अपनी बात को समेटते हुए कहते। वह आग और पानी में से गुज़र चुकी है... उसके बारे में कहा जाता और देहात का कोई लाल बुझक्कड़ इसपर चाशनी चढ़ाता... और सीटी बजाते हुए तेल में से भी। ये सारी खुराफात उसके कानों तक पहुंचती लेकिन वह उन्हें अनसुना कर देती। वह स्वतन्त्र और अपेक्षाकृत दृढ़ प्रकृति की महिला थी।

ओदिन्त्सोवा अपनी कुर्सी से पीठ टिकाए और दोनों हाथों को एक-दूसरे से सटाए बज़ारोव की बात सुन रही थी। अपनी आदत के खिलाफ बज़ारोव आज ज़रूरत से ज्यादा बातूनी बना था। ऐसा मालूम होता था जैसे वह मज़ेदार बातों से अन्ना का जी बहलाने पर तुला हो। आरकादी को इससे और भी हैरत हो रही थी। वह कुछ समझ नहीं सका कि बज़ारोव अपने इस लक्ष्य में पूरा हो रहा है या नहीं। अन्ना के चेहरे से कुछ पता नहीं चलता था कि उसके मस्तिष्क में क्या गुज़र

रहा है। उसकी अडिग नफ़ासत में जरा भी वल नही पड़ा था – वह एकदम भली और सूक्ष्म वनी वैठी थी। उसकी खूबसूरत आंखों में एकाग्रता की चमक थी, लेकिन यह एकाग्रता भी एकदम स्थिर थी। वजारोव की वातों ने, शुरू के कुछ क्षणों में अच्छा असर नही डाला था। उसकी तवीयत कुछ भिनक गई थी – जैसे कोई वदवू का झोंका या किरकिरी आवाज आ टकराई हो। लेकिन उसने तुरत ही यह भांप लिया कि वह कुछ सकपका गया है, और इससे वह मन ही मन खुश भी हुई। उसे केवल वाजारू वातों से चिढ़ थी, और वजारोव वाजारू वातो से अछूता था। आरकादी की हैरत का कोई अन्त नही था। उस दिन, एक के वाद एक, अनेक अचरज की वातें उसने देखीं। वह उम्मीद करता था कि ओदिनत्सोवा जैसी चतुर स्त्री से वजारोव अपने विश्वासों और धारणाओं की वात करेगा। सच पूछो तो खुद ओदिनत्सोवा भी इसी लिए उसकी ओर खिंची थी – ऐसे आदमी को देखने की उसने उत्सुकता प्रकट की थी जो "इतना साहसी है कि किसी चीज में विश्वास नही करता"। लेकिन वजारोव था कि उस सवके वदले डाक्टरी दवाइयों, होमियोपैथी और वनस्पति विज्ञान के वारे में वातें कर रहा था। और ओदिनत्सोवा ने भी, मालूम हुआ, देहात के निरालेपन में अपना समय यों ही नही गंवाया था। उसने कुछ अच्छी पुस्तकें पढ़ी थीं और रूसी भापा पर उसका अधिकार देखते ही वनता था। वातचीत का सिलसिला उसने संगीत की ओर मोड़ दिया। लेकिन यह देखकर कि वजारोव कला को रद्द करता है, वह वड़ी नफ़ासत के साथ फिर वनस्पति विज्ञान की ओर लौट आई – हालांकि इस वीच आरकादी ने लोक-संगीत के गुणों का वखान शुरू भी कर दिया था। ओदिनत्सोवा का उसके प्रति व्यवहार अभी भी छोटे भाई जैसा ही था। ऐसा मालूम होता था जैसे वह निरी सहृदयता और किशोर-सुलभ अल्हड़पन के सिवा किसी और चीज का अस्तित्व उसमें न देखती हो। विना किसी उतावली

के तरह तरह के विषयों पर और सरगर्मी के साथ, तीन घंटे से भी अधिक देर तक बातों का सिलसिला चलता रहा।

आखिर हमारे मित्र विदा लेने के लिए उठे। अन्ना सेर्गेयेव्ना ने स्निग्ध नज़र से उनकी ओर देखा, दोनों की ओर अपना गोरा चिट्टा सुन्दर हाथ बढ़ाया और क्षण भर तक कुछ सोचते हुए, ढुलमुल लेकिन मधुर मुस्कान के साथ कहा

हां तो सज्जनो अगर ऊबन का डर न हो तो कभी निकोलस्कोये आकर दर्शन दीजिए।

ओह सच कहता हूं अन्ना सर्गेयेव्ना, आरकादी ने चहकते हुए कहा इससे बढ़कर खुशी मेरे लिए और कोई नहीं हो सकती "

और आप मौसियो बज़ारोव?

बज़ारोव केवल सिर झुकाकर रह गया और विदाई के समय एक नये आश्चर्य के रूप में आरकादी ने देखा कि उसके मित्र के गाल लाल होते जा रहे हैं।

अब बोलो गली में निकल आने पर उसने पूछा। ' क्या तुम अब भी यही समझते हो कि वह बनी ओह्-हो-हो है?"

कुछ पल्ले नहीं पड़ा कि वह क्या है और क्या नहीं। एकदम बर्फ की सिल्ली है कम्बख्त! बज़ारोव ने पलटकर जवाब दिया, और फिर कुछ रुककर बोला मलिका महारानी, पूरी बेगम साहिबा! बस सिर पर ताज और पीछे दामन-बरदारों की फौज और होती तो कोई कसर न रह जाती।'

"लेकिन हमारी मलिका-महारानियां इतनी बढ़िया रूसी नहीं बोलतीं,' आरकादी ने टीका की।

' वह चक्की में पिस चुकी है, मेरे मुनुआ, उसे हमारी रोटियों का स्वाद मालूम है।

"तुम कुछ भी कहो, लेकिन है वह बड़ी मीठी!"

"कितना हरा-भरा वदन है," वजारोव कहता गया, "शरीर-रचना-शास्त्रियों के अध्ययन के लिए बहुत ही बढ़िया सामग्री!"

"बस बस, ख़ुदा के लिए यह बंद करो, येवगेनी! जानते हो, हर चीज की एक हद होती है।"

"अच्छी बात है, इतना नाराज होने की जरूरत नही, मेरे भोले मित्र! मानता हूं, वह एक नम्बर है। जरूर उसके गांव चलेंगे।"

"कब?"

"कल का दिन छोड़कर परसों। क्यों, कैसा रहेगा? यहां पड़े रहने से क्या फ़ायदा? कूक्शिना के साथ शैम्पेन पीना? या तुम्हारे उस उदारपंथी सम्मानित रिश्तेदार के सामने कान फटफटाना? तो परसों का तय समझो। और सुनो, मेरे पिता की जागीर भी वहां से कुछ ज़्यादा दूर नहीं है। यह वही निकोलस्कोये है न जो 'एन' सड़क पर पड़ता है?"

"हां।"

"Optime*, अलसाने से काम नही चलेगा। केवल मूर्ख अलसाते है, और बुद्धिमान पंछी। भई ख़ूब, क्या हरियल वदन पाया है उसने!"

तीन दिन बाद दोनों मित्रों ने निकोलस्कोये गाव की राह पकड़ी। दिन उजला था। गर्मी कोई ख़ास नहीं थी। सराय-गाड़ी के नाटे चिकने घोड़े तेज़ चाल से दौड़ रहे थे। उनकी पूंछें लटदार और गुथी हुई थीं। आरकादी ने दूर तक सड़क पर नजर डाली और जाने क्यों उसके होंठों पर मुसकराहट खेल गई।

---

* अति उत्तम। (लैटिन) —सं०

"अरे, मुझे बधाई दो!" सहसा बजारोव छलछला उठा। "आज बाईस जून है, मेरे इष्ट-मन्त्र का दिन। देखना है, उनका वरदान क्या फल देता है। घर पर मेरा इंतजार हो रहा होगा," बजारोव ने कहा और फिर अपनी आवाज़ को धीमी करता हुआ बोला "लेकिन कोई बात नहीं। करने दो उन्हें इंतज़ार!"

१६

अन्ना सेर्गेयेवना की गढ़ी, जिसमें वह रहती थी, खुले पहाड़ी ढालू पर स्थित थी। यहां से पास ही ईंटों का एक पक्का गिरजा था। गिरजा पीला पुता हुआ था और उसपर हरी छत छाई थी। उसके खंभे सफेद थे और सदर दरवाज़े पर भित्ति चित्र अंकित थे जिनमें, इतालवी ढंग से, महात्मा ईसा के कब्र से जी उठने के दृश्य दिखाए गए थे। अग्र भाग में लोहे की टोपी पहने सांवले योद्धा की एक विनत आकृति थी। उसके बदन की रेखाओं की गोलाई देखने ही बनती थी। गिरजे से परे दो पांतों में गांव फैला था। कहीं कहीं, छतों के ऊपर उठी धुंआ निकलने की चिमनियों की छतरियां दिखाई दे रही थीं। गढ़ी और गिरजा एक ही शैली के बने थे—उस शैली के जिसे आमतौर से अलेक्सान्द्रियन शैली कहा जाता है। गिरजे की भांति गढ़ी भी पीली पुती थी और उसके ऊपर हरी छत छाई थी। उसके खंभे भी सफेद थे और अग्र भाग खिरद्वस्तरी चिन्ह से सजा था। प्रदेश के इमारत-साज़ ने, स्वर्गीय ओदिन्त्सोव की मर्ज़ी से, इन दोनों का ढिज़ाइन तैयार किया था। गड़बड़झाले और कल्पना की कलाबाज़ियों को—जैसा कि नयी चाल के विचारों को ओदिन्त्सोव कहता था—वह कतई बरदाश्त नहीं करता था। मकान के अगल-बगल, दोनों ओर, एक पुराने बाग के घने पेड़ छाए थे।

सामने फाटक तक जानेवाला रास्ता दोनों ओर छंटे-संवरे फर के वृक्षो से सजा था।

हमारे मित्र वहां पहुंचे। घर के बड़े हॉल में दो प्यादों ने उनका स्वागत किया था। प्यादे तगड़े और वर्दी से लैस थे। उनमें से एक उसी क्षण भंडारी को खोजने चला गया। भंडारी एक स्थूलकाय आदमी था, काला फ़ाक-कोट पहने हुए। वह तुरत आ गया और मेहमानों को कालीन-बिछे ज़ीने से उस कमरे में ले गया जहा उन्हें ठहराना था। कमरे में दो पलंग बिछे थे, साज-सिंगार का अन्य सारा सामान मौजूद था। देखते ही हृदय पर क़ायदे और क़रीने की छाप पड़ती थी। हर चीज चुस्त और दुरुस्त थी; हर चीज़ – बड़ी होशियारी से – एक भीनी सुगंध में पगी हुई। लगता था जैसे किसी मंत्रालय का बैठक-घर हो।

"अन्ना सेर्गेयेवना ने प्रार्थना की है कि आप आधे घंटे ठहरने की कृपा करें," भंडारी ने आकर सूचना दी, "तब मै आपको उनके पास ले चलूंगा। इस बीच अगर आपको किसी चीज की जरूरत हो तो मैं सेवा में हाज़िर हूं।"

"नही, भाई, कुछ नहीं चाहिए," बजारोव ने जवाब दिया। "हां! तुम्हारा भला होगा, अगर गला तर करने के लिए जरा एक गिलास वोदका ले आओ।"

"अच्छा, श्रीमान!" भंडारी ने कुछ सकपकाकर कहा और वापिस लौट गया। जाते समय उसके जूते मचमचा रहे थे।

"क्या रईसी शान है!" बजारोव ने आवाज कसी। "क्यों तुम्हारी रईसी जमात में यही कहा जाता है न? आख़िर राजरानी जो ठहरी!"

"और राजरानी भी कितनी बेजोड़," आरकादी ने चुटकी ली, "जो एक झोंक में तुम और मुझ जैसे बेशकीमती कुलीनों की जोड़ी को निमंत्रण दे डालती है!"

खामतौर से गुप्त—जिसके बाप हड्डीसाज थे बेटा भी हड्डीसाज बनने जा रहा है और जिसके दादा गिरजे में छोटे पादरी थे क्या तुम्हें मालूम है न कि मैं छोटे पादरी का पोता हूँ? और फिर थोड़ा रुककर अपने हाथों में बल डालते हुए बोला सेरास्की का भांति। लेकिन यह मानना पड़ेगा कि है वह सिर-चढ़ी तुम्हारी वह राजरानी सच! हमें भी अब अपने ड्रेसिंग सूट में लैस हो जाना चाहिए क्यों?

आरकादी ने केवल अपने कंधे बिचकाए लेकिन वह भी भटपटा सा अनुभव कर रहा था।

आध घंटे बाद आरकादी और बजारोव नीचे ड्राइंगरूम में पहुँचे। यह एक खुला-सा हवादार रईसी ठाठ से सजा कमरा था। लेकिन सजावट कोई खास सुरुचिपूर्ण नहीं थी। बेलबूटेदार किरमिची कागज से मढ़ी दीवारों के सहारे ठेठ रस्मी तरीके से बजनी तथा बनावटी मेती फ़र्नीचर—मेज़ कुर्सियाँ सोफ़ा आदि—सजा था। अपने एक मित्र और एजेण्ट की मारफत जो शराब का व्यापारी था स्वर्गीय ओदिनसोव ने मास्को से यह फर्नीचर मंगवाया था। मुख्य तख्तपोश के ऊपर किन्हीं हृष्ट-पुष्ट सुनहरे बालोंवाले श्रीमान का चित्र लगा था। ऐसा मालूम होता था जैसे उन्हें आगन्तुक न रुचे हों और चढ़ी हुई नजरों से उन्हें घूर रहे हों।

यह सब बुढ़ऊ ही मालूम होते हैं बजारोव ने आरकादी के कान में फुसफुसाकर कहा और अपनी नाक में सलवटें डालता हुआ बोला अच्छा हो कि यहाँ से उलटे-पाँव खिसक चलें।

इसी समय मादाम ने कमरे में पाँव रखा। वह हल्की आबरवां की पोशाक पहने थी। बाल बहुत ही सुघराई के साथ सँवार

कर कानों के पीछे कर लिए गए थे जिससे उसके चेहरे की ताजगी और निश्चलता में एक वाल-सुलभ निखार आ गया था।

"मेरी मेहमानी मंजूर करने का वायदा आपने पूरा किया, इसके लिए धन्यवाद," उसने कहना शुरू किया। "यों यह बुरी जगह नहीं है, सच। अपनी वहिन से मैं तुम्हारा परिचय कराऊंगी। वह बहुत वढ़िया पियानो बजाती है। आपको तो, मौसिये बजारोव, इसमें कोई दिलचस्पी नहीं, लेकिन मौसिये किरसानोव – मैं समझती हूं – संगीत पसंद करते हैं। वहिन के अलावा मेरी एक बूढ़ी मौसी भी यहीं रहती है, और कभी कभी ताश खेलने के लिए हमारा एक पड़ौसी भी आ जाता है। कुल मिलाकर यही हमारी मंडली है। अच्छा तो अब बैठ जाएं हम लोग।"

ओदिनत्सोवा ने अपना यह छोटा-सा सम्भाषण एक निराली सफ़ाई के साथ दिया, जैसे उसने इसे रट रखा हो। फिर वह आरकादी की ओर मुड़ी। पता चला कि उसकी मां आरकादी की मां को जानती थी और निकोलाई पेत्रोविच के प्रेमाभिसार के काल में उसने 'मन की मीत' का काम किया था। आरकादी बड़े चाव के साथ अपनी मां के बारे में बातें करने लगा और बजारोव ने चित्रों के अलबमों को देखना शुरू किया। "मैं भी क्या मेमना बन गया हूं," वह मन ही मन सोच रहा था।

एक खूबसूरत बोरज़ोई कुत्ता, गले में नीला पट्टा डाले, ड्राइंगरूम में लपक आया और अपने पंजों को फ़र्श पर थपथपाकर आवाज़ करने लगा। उसके पीछे पीछे अठारह वर्ष की एक लड़की ने प्रवेश किया जिसके वाल काले और रंग बादामी था; कुछ गोलाई लिए, मगर आकर्षक, चेहरा और छोटी छोटी काली आंखें। वह फूलों से भरी एक डलिया लिए थी।

"यह है कात्या, मेरी वहिन," गरदन हिलाकर उसकी ओर इशारा करते हुए ओदिनत्सोवा ने कहा।

सलीके से उसने घुटने झुकाए और अपनी बहिन की बगल में बैठ कर फूना को छाटने लगी। बोरज़ोई कुत्ता, जिसका नाम फिफी था, बारी बारी से दोनों अतिथियों के पास गया और पूछ हिलाते हुए अपनी ठडी थूथनी से उनके हाथों को दुलराया।

"क्या ये सब फूल तुम्हीं ने चुने हैं?" ओदिनत्सोवा ने पूछा।

'हा," कात्या ने जवाब दिया।

'मौसी चाय पीने आ रही हैं न?"

"हा, आ रही हैं।"

बोलते समय कात्या बहुत ही मुग्ध, सलज्ज और सरल भाव से मुसकराती थी। आखो में एक रोचक ताडना लिए वह अपनी भौंहो के नीचे से देखती थी। उसकी हर चीज़ में— उसकी आवाज़ में, उसके चेहरे के कोमल ढलाव, उसके गुलाबी हाथो की पीली भवरियो और कुछ सकुचे से उसके कधो में एक ताज़गी और अकृत्रिमता थी वह सास खीचे थी और उसके चेहरे पर रगो की लहरिया निरतर बदल रही थी।

ओदिनत्सोवा बज़ारोव की ओर मुडी।

"केवल शाइस्तगी के नाते आप उन चित्रो में सिर खपा रहे हैं, येवगेनी वसीलियेविच," उसने कहा, "उनमें भला आपका क्या मन लगेगा? छोडिए उन्हें, और इधर हमारे पास खिसक आइए, कुछ बातचीत कीजिए।'

बज़ारोव ने अपनी कुर्सी निकट खिसका ली।

"कहिए, क्या बातचीत करना चाहती हैं?"

"जो भी आप चाहे। और यह पहले से जान रखिए कि बहस के मामले में मैं भी काफी शहज़ोर हू।"

"आप?"

"हां मैं। क्यों, अचरज होता है क्या? आखिर किस लिए?"

"इसलिए कि जहां तक मैं समझ सका हूं, आप ठंडे और शान्त स्वभाव की हैं, और बहस के लिए कुछ गर्मी की–भावावेश की–जरूरत होती है।"

"लगता है, आपने मुझे बहुत जल्दी पहचान लिया। पहली बात तो यह कि मैं अधीर और हठीली हूं, न हो, कात्या से पूछ देखिए। दूसरे, मैं बड़ी आसानी से आवेश में बहना जानती हूं।"

बजारोव ने अन्ना सेर्गेयेवना की ओर देखा।

"शायद, आप ही जानें। तो आप बहस करना चाहती हैं–अच्छी बात है। आपकी अलबम में मैं सैक्सोनियन स्विज़रलैण्ड के दृश्य देख रहा था। आपने रिमार्क कसा कि उनमें मेरा क्या मन लग सकता है। यह आपने इसलिए कहा कि आप मुझे कलात्मक रुचि से शून्य समझती हैं। यह सच भी है, मुझमें कलात्मक रुचि नहीं है। लेकिन उन दृश्यों में मेरी दिलचस्पी हो सकती है–भूतत्व की दृष्टि से। मिसाल के लिए जैसे पहाड़ों की चट्टानी बनावट के अध्ययन के रूप में।"

"माफ़ कीजिए। भूतत्व के लिए आपको किसी पुस्तक की ओर, या इस विषय के किसी अन्य ग्रंथ की ओर, लपकना चाहिए, न कि चित्रों की ओर।"

"जिस चीज को पुस्तक के दस पन्ने भी मूर्त नहीं कर पाते, उसे चित्र एक ही झलक में मूर्त कर देते हैं।"

कुछ देर तक अन्ना सेर्गेयेवना चुप रही। फिर मेज पर कोहनियों के बल झुकते और अपने चेहरे को बजारोव के और अधिक निकट लाते हुए बोली:

"क्या सचमुच आपमें कोई कलात्मक रुचि नहीं है? उसके बिना भला कैसे चल सकता है?"

पहन यह बनाइए आखिर किस मसरफ की चीज है यह?

तो सुनिए। और भी कुछ नही तो उनसे लोगो को जाना जा सकता है उनका अध्ययन किया जा सकता है।

बजारोव व्यग से मुसकराया।

पहली बात तो यह कि इसकी पूर्ति अनुभव कर देता है। दूसरी यह कि आप समझ रखिए व्यक्तियो का अध्ययन करना अपना समय बरबाद करना है। सभी लोग एक से होते है। शरीर से भी और आत्मा से भी। हममें से प्रत्येक के पास उसका एक मस्तिष्क होता है जिगर होता है हृदय होता है और फफड होते है। ये सब समान क्रम से काम करते हैं। और जिन्हे नैतिक गुण कहा जाता है वे सब भी हममें समान रूप म होते ह या थोड हेर फेर से कोई फक नही पडता। मानव जाति का एक नमूना जाच के लिए काफी है। जैसा यह वैसे सब और। लोग जगल क पेडो की भाति हे। कोई भी वनस्पति-शास्त्री प्रत्यक वक्ष-वृक्ष की जाच करन का पागलपन नही करेगा।

काया न जो अब तक कत्या के साथ गुलदस्ते के लिए फूल चुनन म व्यस्त थी चकित मुद्रा में बजारोव की ओर देखा और उसकी तेज बपर्वाह नजर का सामना होन पर उसके गाल कानो तक लाल रग गए। अन्ना सेगयवना ने अपना सिर हिलाया।

जगल के पडो की भाति? उसन दोहराया। तो आपकी राय में मूख और चतुर भले और बुरे व्यक्ति के बीच कोई अन्तर नही है?

नहीं अन्तर है। वैसा ही जसा कि एक रोगी और स्वस्थ व्यक्ति के बीच होता है। क्षयग्रस्त फफडो की हालत वही नही होती जो कि आपके या मेरे फफडो की हालाकि बनावट उनकी भी वैसी ही होती है जैसी कि सबकी। शरीर में रोग पैदा करनेवाले कारणो को हम करीब करीब जानते है। नतिक रोग बुरी शिक्षा और उन तमाम

ख़ुराफ़ातों के नतीजे होते हैं जो बचपन से ही लोगों के दिमाग़ों में ठूसी जाती हैं। संक्षेप में यह कि समाज की अधन्य स्थिति ही इन सब की जड़ है। समाज को बेहतर बनाओ, बीमारियां गायब हो जाएंगी।"

यह सब बज़ारोव ने कुछ ऐसे अन्दाज में कहा जैसे उसने अपने मन मे सोच लिया हो: "मानो या न मानो, इसकी मुझे रत्ती-भर पर्वाह नहीं।" अपनी लम्बी उंगलियों की धीमी हरकत से वह अपने गलमुच्छो को संवार रहा था, और उसकी आंखें बेचैनी से सारे कमरे में तैर रही थीं।

"तो आपका विश्वास है कि," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा, "समाज की सुधरी हुई अवस्था में न कोई मूर्ख रहेगा, न बद?"

"जो हो, यह तय है कि समाज की सुसंगत व्यवस्था हो जाने पर किसी व्यक्ति के मूर्ख या चतुर, भले या बुरे होने से कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ेगा।"

"जी, मैं समझी। तब हम सबका गुर्दा एक-सा होगा।"

"बिल्कुल ठीक, मदाम!"

ओदिनत्सोवा आरकादी की ओर मुड़ी।

"और आपकी राय क्या है, आरकादी निकोलायेविच?"

"वही जो येवगेनी की," उसने जवाब दिया।

कात्या ने भौहों में बल डाले उसकी ओर देखा।

"सज्जनो, अजीब मालूम होते हैं आप लोग," ओदिनत्सोवा ने कहा। "लेकिन छोड़िए, इसपर फिर कभी बात करेंगे। आहट से मालूम होता है, मौसी चाय के लिए आ रही है। उनके कानों को हमे रिहाई देनी चाहिए।"

अन्ना सेर्गेयेवना की मौसी, राजकुमारी 'ऐक्स', कमरे मे दाख़िल हुई। एक मुख़्तसिर-सी, दुबली-पतली महिला, झुर्रियों से चुरमुर छोटा-सा

चेहरा, घूरती हुई कुत्सापूर्ण आँखें, सिर पर नाचो-उछलती-सी भूरे बालों की टोपी। नामालूम-से अन्दाज़ में अतिथियों के प्रति सिर झुकाकर वह एक चौड़ी मखमली आरामकुर्सी पर बैठ गई। इस कुर्सी पर सिवा उनके और कोई बैठने का साहस नहीं कर सकता था। कात्या ने उनके पाँव के नीचे एक स्टूल डाल दिया। वृद्धा ने उसे धन्यवाद नहीं दिया, आँखें उठाकर देखा तक नहीं, केवल उनके हाथों ने पीले शाल के भीतर थोड़ी-सी हरकत की जिसमें उनका मुरझाया-सा शरीर करीब-करीब पूर्णतया निमग्न था। पीला रंग राजकुमारी 'एक्स' को प्रिय था। उनकी टोपी के फीते तक उनके पीले रंग के थे।

'नींद कैसी आई मौसी?' ओदिनत्सोवा ने अपनी आवाज़ को ऊँची करते हुए पूछा।

'आह, यह कुत्ता फिर यहाँ आ पहुँचा,' वृद्धा गुर्राई और यह देखकर कि फिफी झिझकता-सा कई डग उनकी ओर बढ़ आया है, वह चिल्लाईं, 'दूर... दूर!'

कात्या ने किसी को बुलाकर दरवाज़ा खोल दिया।

फिफी प्रसन्नता से छलाँग मारकर बाहर हो गया, इस उमंग से कि खूब घूमे-खेलेगा, लेकिन बाहर अपने आपको अकेला पाकर वह दरवाज़े को खरोंचने और कीं-कीं करने लगा। राजकुमारी के तेवर चढ़ गए और कात्या अनमनी होकर सोच रही थी कि बाहर लपक जाऊँ...

'मेरे ख़याल से चाय तैयार है,' ओदिनत्सोवा ने कहा, 'चलिए, सज्जनो, चलें। आओ मौसी, चाय पी लें।'

राजकुमारी 'एक्स' चुपचाप अपनी कुर्सी से उठीं और सबसे पहले कमरे से बाहर निकलीं। अन्य सब भी उनके पीछे-पीछे भोजन-घर में पहुँचे। वर्दी से चुस्त-दुरुस्त एक लड़के—नौकर—ने वैसी ही आरामदेह तथा गद्दीदार आरामकुर्सी खींचकर बाहर निकाली और राजकुमारी ने उसपर आसन

जमा लिया। कात्या ने – चांय डालने का काम उसी के जिम्मे था – सबसे पहले मौसी के प्याले में चाय उंडेली। प्याले पर सामन्ती शौर्य की सजावट थी। वृद्धा ने अपनी चाय में थोड़ा शहद मिलाया (चाय के साथ चीनी लेना उन्हें गुनाह और फिजूलखर्ची मालूम होती थी, हालांकि अपनी गांठ से किसी चीज के लिए भी वह एक फूटी कौड़ी तक खर्च नहीं करती थीं) और अचानक बैठी हुई सी आवाज में पूछा :

"और राजकुमार इवान ने क्या लिखा है?"

जवाब में किसी ने कुछ नहीं कहा। बजारोव और आरकादी से यह छिपा नहीं रहा कि वृद्धा की बातों पर कोई ध्यान नही देता, हालांकि उसके साथ सब सम्मान से पेश आते हैं। "राजघराने की इस तलछट को," बजारोव ने सोचा, "इन्होंने खाली नुमाइश के लिए रख छोड़ा है!"

चाय के बाद अन्ना सेर्गेयेवना ने बग़ीचे में टहलने का सुझाव रखा। लेकिन तभी फुहारें पड़ने लगीं और मण्डली, सिवा राजकुमारी के, ड्राइंगरूम में लौट आई। इस बीच ताश खेलने का शौक़ीन पड़ौसी भी आ गया। वह मोटा-सा आदमी था। नाम पोरफ़िरी प्लातोनिच। स्थूलकाय, सफ़ेद बाल, छोटी छोटी टांगें जो ऐसी मालूम होती थीं जैसे उसकी नाप के अनुसार तराशी गई हों; बहुत ही सलीकेदार और आसानी से खुश हो जानेवाला। अन्ना सेर्गेयेवना ने, जो इस बीच अधिकांशत: बजारोव से ही बातें करने में जुटी थी, उससे पूछा कि क्या वह पुरानी चाल का 'तरजीह' खेल खेलना पसंद करेंगे। बज़ारोव तैयार हो गया। कहा, देहात में जब डाक्टरी करनी है तो इसके लिए अपने को तैयार करना भी जरूरी है।

"लेकिन जरा सचेत रहना," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा, "पोरफ़िरी प्लातोनिच और मैं – हम दोनों तुम्हें मात देने जा रहे हैं।

चेहरा, घूरती हुई कुत्सापूर्ण आँखें, सिर पर नाचो-मरोचो-सी भूरे बालों की टोपी। नामालूम-से अन्दाज़ में अतिथियों के प्रति सिर झुकाकर वह एक चौड़ी मखमली आरामकुर्सी पर बैठ गई। इस कुर्सी पर सिवा उनके और कोई बैठने का साहस नहीं कर सकता था। कात्या ने उनके पाँव के नीचे एक स्टूल डाल दिया। वृद्धा ने उसे धन्यवाद नहीं दिया, आँखें उठाकर देखा तक नहीं, केवल उनके हाथों ने पीले शाल के भीतर थोड़ी-सी हरकत की जिसमें उनका सुम्बगिर-सा शरीर करीब करीब पूर्णतया लिपटा था। पीला रंग राजकुमारी 'ऐक्स' को प्रिय था। उनकी टोपी के फीते तक उजले पीले रंग के थे।

"नींद कैसी आई, मौसी?" ओदिनत्सोवा ने अपनी आवाज़ को ऊँची करते हुए पूछा।

"ओह, यह कुत्ता, फिर यहाँ आ पहुँचा," वृद्धा गुर्राई और यह देखकर कि फिफी झिझकता-सा कई डग उनकी ओर बढ़ आया है, वह चिल्लाई "इशू... इशू!"

कात्या ने फिफी को बुलाकर दरवाज़ा खोल दिया।

फिफी प्रसन्नता से छलांग मारकर बाहर हो गया, इस उमंग से कि खूब घूम-खेलेगा, लेकिन बाहर अपने आपको अकेला पाकर वह दरवाज़े को खरोंचने और कीं कीं करने लगा। राजकुमारी के तेवर चढ़ गए और कात्या असमंजस होकर सोच रही थी कि बाहर लपक जाऊँ...

"मेरे खयाल से चाय तैयार है," ओदिनत्सोवा ने कहा, "चलिए, सज्जनो, चलें। आओ मौसी, चाय पी लें।"

राजकुमारी 'ऐक्स' चुपचाप अपनी कुर्सी से उठीं और सबसे पहले कमरे से बाहर निकलीं। अन्य सब भी उनके पीछे पीछे भोजन-घर में पहुँचे। वर्दी से चुस्त-दुरुस्त एक लड़के—नौकर—ने वैसी ही असपस्य तथा गद्दीदार आरामकुर्सी खींचकर बाहर निकाली और राजकुमारी ने उसपर आसन

जमा लिया। कात्या ने—चाय डालने का काम उसी के ज़िम्मे था—सबसे पहले मौसी के प्याले में चाय उंडेली। प्याले पर सामन्ती शौर्य की सजावट थी। वृद्धा ने अपनी चाय में थोड़ा शहद मिलाया (चाय के साथ चीनी लेना उन्हें गुनाह और फिज़ूलखर्ची मालूम होती थी, हालांकि अपनी गांठ से किसी चीज़ के लिए भी वह एक फूटी कौड़ी तक खर्च नहीं करती थी) और अचानक बैठी हुई सी आवाज़ मे पूछा:

"और राजकुमार इवान ने क्या लिखा है?"

जवाब में किसी ने कुछ नहीं कहा। बजारोव और आरकादी से यह छिपा नहीं रहा कि वृद्धा की बातों पर कोई ध्यान नही देता, हालाकि उसके साथ सब सम्मान से पेश आते हैं। "राजघराने की इस तलछट को," बजारोव ने सोचा, "इन्होंने खाली नुमाइश के लिए रख छोड़ा है!"

चाय के बाद अन्ना सेर्गेयेवना ने बग़ीचे मे टहलने का सुझाव रखा। लेकिन तभी फुहारें पड़ने लगी और मण्डली, सिवा राजकुमारी के, ड्राइंगरूम में लौट आई। इस बीच ताश खेलने का शौक़ीन पड़ौसी भी आ गया। वह मोटा-सा आदमी था। नाम पोरफिरी प्लातोनिच। स्थूलकाय, सफ़ेद बाल, छोटी छोटी टांगे जो ऐसी मालूम होती थीं जैसे उसकी नाप के अनुसार तराशी गई हों; बहुत ही सलीकेदार और आसानी से खुश हो जानेवाला। अन्ना सेर्गेयेवना ने, जो इस बीच अधिकांशत: बजारोव से ही बातें करने में जुटी थी, उससे पूछा कि क्या वह पुरानी चाल का 'तरजीह' खेल खेलना पसंद करेंगे। बजारोव तैयार हो गया। कहा, देहात में जब डाक्टरी करनी है तो इसके लिए अपने को तैयार करना भी ज़रूरी है।

"लेकिन जरा सचेत रहना," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा, "पोरफ़िरी प्लातोनिच और मैं—हम दोनों तुम्हें मात देने जा रहे हैं।

और तुम कात्या ' उसने कहा, "आरकादी के लिए कुछ बजाकर सुनाओ। वह संगीत के शौक़ीन हैं। लगे हाथ हम भी सुन लेंगे।"

कात्या अनमनी-सी पियानो पर पहुंच गई। और आरकादी, बावजूद इसके कि वह संगीत का शौक़ीन था, बेमन से उसके साथ हो लिया। उसके मन में सन्देह था कि आदिनत्सोवा उसे टाल रही है। फिर भी उसका हृदय—जैसा कि उसकी आयु के हर युवक के साथ होता है—प्रेम व दुलार की भांति किसी धुंधली और मनमा देनेवाली भावना में कुड़मुड़ा रहा था।

कात्या ने पियानो का ढक्कन उठाया और बिना आरकादी की ओर देखे धीमी आवाज़ में पूछा

"आप क्या सुनना पसन्द करेंगे?

"वही जो आप चाहें," आरकादी ने अनमनेपन से जवाब दिया।

"आप कैसा संगीत पसन्द करते हैं?" कात्या ने अपनी उसी मुद्रा में फिर पूछा।

"शास्त्रीय संगीत," आरकादी ने उसी लहजे में जवाब दिया।

'क्या आप मोज़ार्ट पसन्द करते हैं?"

"हां।'

कात्या ने मोज़ार्ट की सोनाटा की एक गत की स्वरलिपि निकाली। वह बहुत अच्छा बजाती थी। हां, उसके बजाने में नफ़ासत तो खूब थी, पर भावप्रवीणता नहीं। आंखें उसकी स्वरलिपि पर जमी थीं और होंठ कसकर भिंचे थे। बदन को लकड़ी की भांति कड़ा किए वह सीधी बैठी थी। केवल अन्त में, उस समय जबकि वह सोनाटा की अन्तिम कड़ी बजा रही थी, उसके चेहरे पर कुछ चमक दिखाई दी और उसकी एक लट, घुंघराले बालों से छिटककर, उसकी भौंहों के ऊपर लहरा गई।

सोनाटा के अन्तिम अंश ने आरकादी को खासतौर से मुग्ध किया जहां मदिर-मस्त संगीत की आल्हादपूर्ण प्रफुल्लता अचानक खण्ड खण्ड होकर वहुत ही तीखे—एकदम दु:खद—शोक मे फूट पड़ती है... लेकिन मोज़ार्त के संगीत की स्वर-लहरियों ने जिन भावो से उसे अभिभूत किया, कात्या से उनका कोई वास्ता नही था। उसकी ओर देखकर उसने महज यही सोचा: "कुलीन घराने की यह युवती कतई वुरा नही बजाती, और देखने में भी यह ऐसी वुरी नही है।"

सोनाटा को वजाने के वाद कात्या ने—उसकी उंगलिया अभी भी पियानो की पटरियों पर रखी थी—आरकादी मे पूछा:

"वस, या और कुछ?"

आरकादी ने कहा कि आपको और अधिक कष्ट देना मेरे बूते से वाहर है, और उसने मोजार्त के वारे में उससे वातचीत शुरू कर दी। उसने पूछा: "यह सोनाटा खुद आपने अपनी पसंद से चुनी है या किसी के सिफारिश करने से?" अस्फुट से शव्दो मे कात्या ने इसका कुछ जवाव दिया और अपने में सिमटकर मूक-सी हो गई। और एक वार अपने घोघे में सिमट जाने के वाद, आमतौर से, वह वडी मुश्किल से काफ़ी देर मे वाहर निकलती थी। ऐसे मौकों पर उमके चेहरे पर एक हठ का—करीव करीव पथराया हुआ सा—भाव छा जाता था। उसे एकदम शरमीली नही कहा जा सकता। उसमे एक अविश्वास-सा भरा था और वहिन की सरपरस्ती ने उसे कुछ दव्बू-सा वना दिया था, हालांकि वहिन को इसका, कहने की आवश्यकता नही, कभी सपने में भी आभास नही होता था। इस अटपटे मौन को भरने के लिए आरकादी ने फ़िफ़ी को पुचकारा जो अव फिर कमरे मे आ गया था, और भलमनसाहत से मुसकराते हुए उसका सिर थपथपाने लगा। कात्या फिर अपने फूलों में खो गई।

उधर बज़ारोव मात पर मात खा रहा था—हार का दण्ड भर रहा था। अन्ना सेर्गेयेवना चतुर खिलाड़ी थी, और पोरफ़िरी प्लातोनिच भी ताश के मैदान में मोर्चे से डिगनेवाला जीव नहीं था। बज़ारोव की हार, नगण्य होते हुए भी, सुखद नहीं थी। ब्यालू के समय अन्ना सेर्गेयेवना ने वनस्पति-विज्ञान की चर्चा फिर छेड़ दी।

"चलिए, कल सुबह हम टहलने निकलें," उसने कहा, "मैं चाहती हूं कि जंगली पौधों के लैटिन नाम और उनके गुणों के बारे में आप मुझे बताएं।"

"लैटिन नाम जानकर आप क्या करेंगी?" बज़ारोव ने पूछा।

"इसलिए कि कायदे से हर चीज मालूम होनी चाहिए।"

"कितनी अद्भुत स्त्री है यह अन्ना सेर्गेयेवना!" अपने कमरे के एकान्त में आरकादी ने अपने मित्र से छलछलाकर कहा।

"हां," बज़ारोव ने जवाब दिया, "कम्बख्त का दिमाग़ बड़ा काइयां है। और मेरी यह बात भी तुम गांठ बांध रखो, वह निपट कोरी नहीं, बल्कि दुनिया-देखी मालूम होती है।"

"यह तुम किस अर्थ में कह रहे हो, येवगेनी वसीलियेविच?"

"अच्छे अर्थ में, मेरे प्यारे साथी, अच्छे अर्थ में। यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि वह अपनी जागीर का काम-काज भी ठाठ से संभालती होगी। लेकिन अद्भुत वह नहीं, बल्कि उसकी बहिन है।"

"क्या-आ? वह सांवली गुड़िया-सी लड़की?"

"हां, वह सांवली गुड़िया-सी लड़की। समूची ताज़गी, समूची निश्छलता, संकोच तथा सहम, और अन्य सभी कुछ जैसे एक उसी में सिमटकर समा गया है। ध्यान देने लायक चीज़ है। अभी भी

ऐसी है कि चाहे जिस सांचे में उसे ढाल लो। लेकिन दूसरी सारे दांव-पेंच से वाक़िफ़ है।"

आरकादी ने कुछ नहीं कहा और दोनों, अपने अपने विचारो मे डूबे, बिस्तरों पर पड़ रहे।

अन्ना सेर्गेयेवना भी, उस रात, अपने मेहमानों के बारे में सोचती रही। बज़ारोव उसे अच्छा लगा, इसलिए कि बनावट का उसमें अभाव था और बेलाग ढंग से बातें करता था। उसमें उसे एक नयापन, कुछ ऐसा जो उसने पहले नही देखा था, मालूम हुआ। और उत्सुकता तो उसकी आदत में शामिल थी ही।

अन्ना सेर्गेयेवना अपेक्षाकृत एक निराली जीव थी। दुराग्रहो से वह मुक्त थी, यहां तक कि उसमें ऐसा कोई विश्वास नही था जिसे दृढ़ कहा जा सके। इसलिए न तो वह कभी कुछ हारती थी, और न कभी कुछ जीतती थी। कितनी ही चीजों को वह साफ देखती थी, कितनी ही चीजों में उसे दिलचस्पी मालूम होती थी, लेकिन पूर्णतया वह किसी चीज से सन्तुष्ट नहीं होती थी। न ही पूर्णतया सन्तुष्ट होने की वह कभी आशा करती थी। उसका मस्तिष्क एक साथ उत्सुक भी था, और उदासीन भी। उसके सन्देह कभी इस हद तक शान्त नही होते थे कि वह उन्हें भूल जाए, और न ही कभी इस हद तक बढ़ते थे कि चिन्ता बनकर उसके दिमाग़ पर सवार हो जाएं। अगर वह सम्पन्न और स्वतंत्र न होती तो शायद वह भी भंवर में कूद पड़ी होती और उसे भी पता चल गया होता कि हृदय का कुड़मुड़ाना-कसमसाना क्या होता है... लेकिन वह इन सब झंझटों से मुक्त, निश्चिंत जीवन बिताती थी, हालांकि कभी कभी वह ऊब जरूर जाती थी। उसके दिन, इस प्रकार, समतल प्रवाह से बीत रहे थे और कभी कभी ही उनमें विह्वलता की लहरियां उठती थीं। कभी कभी

उसकी कल्पना गुलाबी बाना धारण कर उसकी आंखों के सामने अपना रंग बिरंगा सपनों का जाल बुनती, लेकिन उसके धुंधला पड़ते ही वह फिर मचलती और उनके विलीन हो जाने का उसे कोई मलाल न होता। कभी कभी, अपनी कल्पना के बहाव में, वह उन सीमाओं को भी लांघ जाती जिन्हें परम्परागत नैतिकता ने खड़ा किया है। लेकिन ऐसा होने पर भी उसका रक्त उसके लोचदार स्थिर शरीर की शिराओं में उसी अलस गति से—बिना किसी तेज़ी के—प्रवाहित होता रहता। कभी कभी सुगंधित स्नान से बाहर निकलने के बाद, हृदय में गरमाहट और अंग-अंग में मृदुता लिए, वह जीवन की तुच्छता, उसके शोक और सन्ताप, उसके कष्टों और बुराइयों के बारे में सोचने लगती उसके हृदय में अचानक साहसिक कार्य करने की एक हूक-सी उठती, शुभ्र आकांक्षाओं की आभा से वह दमकने लगती, लेकिन अध-खुली खिड़की में से हवा का एक झोंका आता और अन्ना सेर्गेयेवना सिहरकर सिकुड़ती तथा कोसती और गुस्से के मारे करीब करीब आपे से बाहर हो जाती। उस समय सिवा इसके वह और कुछ न चाहती कि हवा के उस कुत्सित झोंके को उसके बदन का स्पर्श करने से रोक दिया जाए।

प्रेम से अनजान सभी स्त्रियों की भांति उसके हृदय में भी किसी चीज़ के लिए एक हूक-सी उठती, लेकिन यह वह खुद भी न जानती कि जिस चीज़ की उसे चाह है, वह क्या है। सच तो यह है कि वह कुछ नहीं थी, हालांकि उसे लगता यह था कि वह हर चीज़ चाहती है। स्वर्गीय आदिनत्सोव के घर में अभी उसने रहना शुरू ही किया था (उसके लिए यह एक सहूलियत की शादी थी, हालांकि उसने, शायद, तब तक उसकी पत्नी बनना मंजूर नहीं किया जब तक कि उसे उसके नेक आदमी होने का विश्वास नहीं हो गया)

ओदिनत्सोवा लौटकर आई और आरकादी की उसपर नज़र पड़ी तो उसने क्षण-भर के लिए एक चमक का अनुभव किया। थके हुए से डगों से वह बाग की ओर से लौट रही थी, उसके गाल दमक रहे थे और सीका के गोल हैट के नीचे उसकी आँखें अन्य दिनों से अधिक उजली आभा से चमक रही थीं। किसी जंगली फूल की कोमल टहनी लिए वह उससे खेल रही थी। सिर की जाली खिसककर उसकी कोहनियों पर आ गई थी, और उसकी टोपी के चौड़े सुरमई फीते उसके वक्ष पर फरफरा रहे थे। बज़ारोव उसके पीछे-पीछे आ रहा था—वैसा ही अपने आपमें पूर्ण और मस्त। लेकिन आरकादी को उसके चेहरे का भाव अच्छा नहीं लगा, हालाँकि उसमें प्रफुल्लता और यहाँ तक कि मृदुता भी थी। दाँतों के बीच से गुडमोर्निंग बुदबुदाकर बज़ारोव अपने कमरे में चला गया। ओदिनत्सोवा ने खोए-से अन्दाज़ से आरकादी से हाथ मिलाया और वह भी अपनी राह आगे बढ़ गई।

"गुडमोर्निंग," आरकादी ने सोचा, "मानो आज सुबह से मुलाकात ही न हुई हो!"

१७

हम सभी जानते हैं कि समय कभी हवा की गति से गुज़र जाता है और कभी उसके पाँव में ढाई ढाई मन के पत्थर बंध जाते हैं, लेकिन मानव के सुखदतम क्षण वही होते हैं जिनमें समय की गति का कोई भान नहीं रहता। ठीक इसी अवस्था में आरकादी और बज़ारोव ने ओदिनत्सोवा के यहाँ पन्द्रह दिन बिताए। अंशत यह जीवन के उस सुव्यवस्थित क्रम का नतीजा था जो ओदिनत्सोवा ने घर में चालू कर रखा था। जीवन के इस नियमित ढंग का वह सख्ती से पालन करती थी और दूसरों से भी करवाती थी। दिन के क्रम में हर चीज़ के लिए

उसका एक अपना समय नियत था। सुबह, ठीक आठ बजे, पूरी संगत चाय के लिए जमा होती। चाय और नाश्ते के बीच जिसे जो करना होता करता, और मालकिन अपने कारिन्दे (जागीर का संचालन वह ठेके पर करती थी), भंडारी तथा प्रधान गृह-संचालिका से काम-काज की बातें निबटाती। दोपहर के भोजन से पहले बतियाने या कुछ पढ़ने के लिए मण्डली एक बार फिर जमा होती। संध्या सैर करने, ताश खेलने या गाने-बजाने में बीतती। साढ़े दस बजे अन्ना सेर्गेयेवना अपने कमरे में चली जाती, अगली सुबह के लिए आदेश देती और बिस्तरे की शरण लेती। दैनिक जीवन की यह एकरसता और अनुष्ठानी नियमितता बजारोव को न सुहाती। "लगता है जैसे हम लीकों से बंधे हों," वह कहता। वरदीधारी दरबान-प्यादे और गम्भीरता का चोला डाटे भंडारी उसकी जनवादी रुचि पर चोट-सी करते। उसका ख़याल था कि अगर अंग्रेज़ियत दिखानी है तो सोलहों आना अंग्रेज क्यों न बना जाए— उन्हीं की भांति भोजन किया जाए, एड़ी से चोटी तक रस्मी लिबास पहनकर और गले में सफ़ेद गुलूबन्द कसकर। और एक दिन अन्ना सेर्गेयेवना से उसने इसकी चर्चा शुरू की। अन्ना सेर्गेयेवना का कुछ ऐसा स्वभाव था कि उसके सामने अपने मन की बात खुलकर कहने में किसी को हिचक नहीं होती थी। बज़ारोव की बात पूरी तरह सुनने के बाद बोली: "जिस नजर से आप देखते हैं उसके अनुसार शायद आपकी बात ठीक हो सकती है, और मुझे आप मलिका-महारानी कह सकते है। लेकिन देहात मे अगर आपने बेक़ायदा और अनियमित जीवन बिताने का दुस्साहस किया तो ऊब के मारे नाक में दम आ जाएगा।" और जीवन अपने उसी लगे-बंधे ढर्रे पर चलता रहा। बजारोव भुनभुनाया, लेकिन उसे और आरकादी दोनों को, जो ओदिनत्सोवा के यहां जीवन इतना सहज-सुखद मालूम हुआ उसका

कारण ठीक यही था कि वह कभी सीधा घर चलता था। सच तो यह है कि निकोलाइ के मन उनके आगमन के पहले दिन से ही उनमें एक परिवर्तन दिखाई देने लगा था। वास्तव में, जिस सन्ना सेर्गेयेवना बावजूद इसके कि वह विरक्त हो उससे सहमत होती थी, अपेक्षाकृत अधिक पसन्द करता था एक ऐसी बचनी घर करती आ रही थी जो उसके लिए सर्वथा नयी चाज थी। वह चिड़चिड़ा-सा हो गया था, कम करता था ना अनमनस्क सा। यह उसका चरा रहता था और एक अजीब झुंझलाहट तथा अधीरता उसे घेरे रहती। उधर आरकादी जिसके मन में यह निश्चय रूप से समा गया था कि वह ओदिन्तसोवा से प्रेम करता है निश्चल उदासी में डूबता-उतराता। लेकिन इस उदासी के बावजूद कात्या से उसके मनजोर करने में कोई बाधा नहीं आई। बल्कि इस उदासी ने कात्या के साथ बहुत ही घनिष्ठ तथा मित्रतापूर्ण सम्बन्ध कायम करने के लिए उसे और भी उकसाया।

वह मेरी कद्र नहीं करता नहीं करती है न? अच्छी बात है न करे लेकिन यहां एक और भी नाजुक जीव है जो मुझे नहीं ठुकराता आरकादी सोचता और उसका हृदय एक बार फिर सादी निश्छल मृदु उदार भावनाओं की मधुरता से भर जाता। कात्या को बहुत ही धुंधला धुंधला-सा आभास था कि आरकादी उसकी सगत में राहत खोजता है और वह न तो अपने आपको और न ही उसे इस अर्द्ध लजाली और अर्द्ध विश्वासी मित्रता के निश्छल आनन्द से वंचित रखने का प्रयत्न करती। अन्ना सेर्गेयेवना की मौजूदगी में वे परस्पर बतियाने से कतराते। अपनी बहिन की पैनी नज़र के आगे कात्या हमेशा सिकुड़ सिमटी-सी जाती जबकि आरकादी, ठीक प्रेमासक्त व्यक्ति की भांति प्रेमिका जब सामने हो तो सिवा उसके अन्य सभी कुछ बिसरा देता। लेकिन सच यही है कि राहत उसे केवल कात्या की सगत में ही

मिलती। वह यह जान चुका था कि ओदिनत्सोवा को खुश करना उसके बूते की बात नही है। अकेले में वह सकुचा जाता और उसके मुंह से बोल तक न निकलता, और खुद अन्ना भी न समझ पाती कि वह उससे क्या कहे। वह उससे बहुत छोटा था। इसके प्रतिकूल कात्या की संगत में वह पूर्ण अपनत्व का अनुभव करता था। वह ढील से काम लेता और संगीत से, किसी पुस्तक को पढ़ने या कविता के पाठ अथवा ऐसी ही अन्य छोटी-मोटी बातो से, अनुप्राणित अपने भावो को व्यक्त करने की काप्या को पूरी छूट देता, और उसे भान तक न रहता कि इन छोटी-मोटी बातों में वह खुद भी रस लेता है। कात्या भी, अपनी ओर से, जब वह खोया-सा किसी सोच में डूबा होता तो कभी उसे न छेड़ती। आरकादी को कात्या का संग अच्छा लगता, और ओदिनत्सोवा को बजारोव का। और अक्सर ऐसा होता कि दोनों जोड़े एक साथ बाहर निकलते और इसके बाद अपना अलग अलग रास्ता पकड़ते, खासतौर से उस समय जब वे टहलने जाते। कात्या प्रकृति को जी-जान से चाहती थी, आरकादी को भी प्रकृति से प्रेम था, हालांकि यह स्वीकार करने का उसे कभी साहस नहीं होता था। ओदिनत्सोवा प्रकृति की ओर से उदासीन थी, और यही हाल बजारोव का भी था। और हमारे मित्रों के इस तरह अलग रहने का कुछ नतीजा न हो, यह भला कैसे हो सकता था। उनके सम्बन्धों में एक क्रमिक परिवर्तन हो चला। बजारोव अब आरकादी से ओदिनत्सोवा के बारे में कोई बात न करता और उसके 'रईसाना अन्दाजों' की आलोचना करना उसने छोड़ दिया। कात्या की वह अब भी खूब तारीफ़ करता और अपने मित्र को सलाह देता कि वह उसकी भावुकता पर थोड़ा अंकुश रखे। लेकिन उसकी तारीफ़ में एक उतावलापन और सलाह मे एक रूखापन होता—कुल मिलाकर यह कि पहले की निस्बत

वह आरकादी से कम बोलता-चालता ऐसा लगता जैसे वह उससे कतरा रहा हो जैसे किसी गम का अनुभव कर रहा हो

आरकादी यह सब देखता, और अपनी राय को अपने तक ही सीमित रखता। किसी से कहता कुछ नहीं।

इस नये रुख का असल कारण वह भावना थी जिसको ओदिन्त्सोवा ने बजारोव के हृदय में सवार कर दिया था। यह भावना उसके हृदय को मथती और उसे पागल-सा बनाए रहती लेकिन इसके अस्तित्व से इन्कार करने के लिए जैसे वह तुला बैठा रहता। अगर कोई धुंधला-सा भी इस ओर इशारा करता कि उसके हृदय में क्या उमड़ घुमड़ रहा है तो वह उसकी खिल्ली उड़ाता और खीझ भरे व्यंग-वाणों से उसकी चिन्दियां बिखरने के लिए तैयार हो जाता। यों बजारोव स्त्री-जाति का उपासक था लेकिन भावना मूलक प्रेम की—या जैसा कि वह कहा करता था रोमाण्टिक प्रेम की—वह खिल्ली उड़ाता था उसे बेकार की चीज़ और अक्षम्य हिमाकत समझता था। शौर्य को वह एक तरह की वीभत्सता या बीमारी मानता था और इस बात पर एक से अधिक बार आश्चर्य प्रकट कर चुका था कि प्रेम का राग अलापनेवाले इन चारणों और भाटों को पागलखाने में क्यों न बन्द कर दिया गया—उनकी वंश-बेल क्यों बढ़ने दी गई। अगर तुम किसी स्त्री को पसन्द करते हो वह अक्सर कहता तो बेलाग अपना मतलब साधो। सफलता न मिले तो उंगलियां चटखाकर उसे धता बताओ। आखिर यह जिन्स ऐसी नहीं जिसका इस दुनिया में अकाल हो। ओदिन्त्सोवा उसके मन में रमी थी। उसके बारे में फैली हुई तरह तरह की अफवाहों, उसके उन्मुक्त तथा आला विचारों और बजारोव के प्रति उसके प्रत्यक्ष

पक्षपात, इन सब चीजों को देख-सुनकर यह खयाल हो सकता है कि वजारोव के लिए इससे अच्छा मौका और क्या होगा। लेकिन शीघ्र ही उसे इस तथ्य का चेत हो गया कि उसके साथ 'वेलाग मतलब नहीं साधा' जा सकता, और जहां तक उंगलियां चटखाकर उसे धता वताने का सवाल है, उसने निराशा से देखा कि यह भी वह नही कर सकता। उसके खयाल मात्र से ही उसकी नाड़ी की गति तेज हो जाती। अपनी नाड़ी को तो खैर वह आसानी से संभाल भी लेता, लेकिन उसके साथ कुछ और भी हो गया था, कुछ ऐसा जिसे उसने कभी स्वीकार नहीं किया, जिसका हमेशा उसने मजाक़ उड़ाया और जिसके खिलाफ़ उसका समूचा अभिमान विद्रोह कर उठता था। अन्ना सेर्गेयेवना के सामने, उससे बातें करते समय, हर रोमाण्टिक चीज के प्रति वह पहले से भी ज़्यादा वेपर्वाही के साथ उपेक्षा का प्रदर्शन करता, लेकिन अकेले में खुद अपने ही हृदय में मौजूद रोमांस के स्पर्श से झनझना उठता। ऐसा होने पर वह जंगल की ओर निकल जाता, निरुद्देश्य भटकता, चलते-चलते पेड़ों की टहनियां तोड़ डालता, सांसों ही सांसों में अपने आपको और उसे — दोनों को — कोसता; या फिर पुआल की गंजी में रेंग जाता, हठपूर्वक आंखें वंद किए जवर्दस्ती नीद को गले लगाने का प्रयत्न करता और भूले-भटके ही इसमें सफल हो पाता। सहसा उसकी कल्पना उजागर हो उठती, वह देखता कि उसकी अछूती वांहें उसके गले से लिपटी हैं, उसके गर्वीले होंठ उसके चुम्बनों के लिए फरफरा रहे हैं, उसकी धीर-गम्भीर आंखें मृदुता से — हां, मृदुता से ही — उसकी आंखों में उतर रही हैं। और उसका सिर चकराने लगता, क्षण-भर के लिए वह वेसुध हो जाता और फिर विक्षोभ उसे अपने चंगुल में जकड़ लेता। दुनिया-भर के 'मनहूस' विचार उसे घेर लेते, लगता जैसे शैतान उसका मुंह चिढ़ा रहा हो।

वह ग्रारकादी से कम बोलता चालता। ऐसा लगता जैसे वह उससे कतरा रहा हो, जैसे किसी शर्म का अनुभव कर रहा हो।

ग्रारकादी यह सब देखता, और अपनी राय को अपने तक ही सीमित रखता। किसी से कहता कुछ नहीं।

इस नये रुख का असल कारण वह भावना थी जिसका ग्रोदिनत्सोवा ने बज़ारोव के हृदय में संचार कर दिया था। यह भावना उसके हृदय को मथती और उसे पागल-सा बनाए रहती, लेकिन इसके ग्रस्तित्व से इन्कार करने के लिए जैसे वह तुला बैठा रहता। ग्रगर कोई धुंधला-सा भी इस ग्रोर इशारा करता कि उसके हृदय में क्या उमड घुमड रहा है तो वह उसकी खिल्ली उडाता और खीझ भरे व्यंग-वाणों से उसकी चिन्दियां बिखरने के लिए तैयार हो जाता। यों बज़ारोव स्त्री जाति का उपासक था, लेकिन भावना मूलक प्रेम की—या जैसा कि वह कहा करता था रोमाण्टिक प्रेम की—वह खिल्ली उडाता था, उसे बेकार की चीज़ और ग्रक्षम्य हिमाकत समझता था। शौर्य को वह एक तरह की वीभत्सता या बीमारी मानता था और इस बात पर एक से ग्रधिक बार ग्राश्चर्य प्रकट कर चुका था कि प्रेम का राग ग्रलापनेवाले इन चारणों और भाटों को पागलखाने में क्यों न बन्द कर दिया गया—उनकी वंश-बेल क्यों बढने दी गई। 'ग्रगर तुम किसी स्त्री को पसन्द करते हो,' वह ग्रक्सर कहता, 'तो बलात् ग्रपना मतलब साधो। सफलता न मिले तो उंगलियां चटखाकर उसे धता बताग्रो। ग्राखिर यह चिन्ता ऐसी नहीं जिसका इस दुनिया में ग्रकाल हो।' ग्रोदिनत्सोवा उसके मन में रमी थी। उसके बारे में फैली हुई तरह तरह की ग्रफवाहों, उसके उन्मुक्त तथा ग्राज़ाद विचारों और बज़ारोव के प्रति उसके प्रत्यक्ष

पक्षपात, इन सब चीजों को देख-सुनकर यह खयाल हो सकता है कि बजारोव के लिए इससे अच्छा मौक़ा और क्या होगा। लेकिन शीघ्र ही उसे इस तथ्य का चेत हो गया कि उसके साथ 'बेलाग मतलब नहीं साधा' जा सकता, और जहां तक उंगलियां चटखाकर उसे धता बताने का सवाल है, उसने निराशा से देखा कि यह भी वह नहीं कर सकता। उसके खयाल मात्र से ही उसकी नाड़ी की गति तेज हो जाती। अपनी नाड़ी को तो खैर वह आसानी से संभाल भी लेता, लेकिन उसके साथ कुछ और भी हो गया था, कुछ ऐसा जिसे उसने कभी स्वीकार नहीं किया, जिसका हमेशा उसने मजाक़ उड़ाया और जिसके खिलाफ़ उसका समूचा अभिमान विद्रोह कर उठता था। अन्ना सेर्गेयेवना के सामने, उससे बातें करते समय, हर रोमाण्टिक चीज के प्रति वह पहले से भी ज्यादा बेपर्वाही के साथ उपेक्षा का प्रदर्शन करता, लेकिन अकेले में खुद अपने ही हृदय में मौजूद रोमांस के स्पर्श से झनझना उठता। ऐसा होने पर वह जंगल की ओर निकल जाता, निरुद्देश्य भटकता, चलते-चलते पेड़ों की टहनियां तोड़ डालता, सांसों ही सांसों में अपने आपको और उसे – दोनों को – कोसता; या फिर पुआल की गंजी में रेंग जाता, हठपूर्वक आंखें बंद किए जबर्दस्ती नींद को गले लगाने का प्रयत्न करता और भूले-भटके ही इसमें सफल हो पाता। सहसा उसकी कल्पना उजागर हो उठती, वह देखता कि उसकी अछूती बांहें उसके गले से लिपटी हैं, उसके गर्वीले होंठ उसके चुम्बनों के लिए फरफरा रहे हैं, उसकी धीर-गम्भीर आंखें मृदुता से – हां, मृदुता से ही – उसकी आंखों में उतर रही हैं। और उसका सिर चकराने लगता, क्षण-भर के लिए वह बेसुध हो जाता और फिर विक्षोभ उसे अपने चंगुल में जकड़ लेता। दुनिया-भर के 'मनहूस' विचार उसे घेर लेते, लगता जैसे शैतान उसका मुंह चिढ़ा रहा हो।

कभी कभी तो यहां तक होता कि ओदिनत्सोवा में भी उसे एक परिवर्तन का आभास-सा मालूम होता, लगता जैसे उसके चेहरे में कुछ है जो पहले नहीं था, जैसे वह लेकिन बहुधा इससे आगे वह न सोच पाता धरती पर अपना पांव पटकता या दांत पीसता और खुद अपने चेहरे के आगे ही अपना घूसा तानता।

और सचमुच बज़ारोव एकदम गलत भी नहीं था। उसने ओदिनत्सोवा की कल्पना को जगमगा दिया था। उसकी दिलचस्पी को उसने उकसा दिया था और वह बहुत कुछ उसके बारे में सोचती थी। उसकी गैरहाज़िरी में वह ऊबती नहीं थी, न ही उसे वह खलता था, लेकिन उसके सामने आते ही वह चेतन हो उठती थी, खुशी से वह उसके साथ अकेली रहती और खुशी के साथ वह उससे बातें करती, और उस समय भी इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता जब वह उसे नाराज़ कर देता या उसकी परिष्कृत रुचि तथा नफीस सलीकेदारी को ठेस पहुचाता। ऐसा मालूम होता जैसे वह परखकर, और साथ ही खुद अपने को भी जाचकर, देख लेना चाहती हो।

एक दिन, उस समय जबकि वह उसके साथ बाग में टहल रहा था, सहसा उदास आवाज़ में बज़ारोव ने ऐलान किया कि उसे जल्दी ही गाव में अपने पिता के पास जाना है ओदिनत्सोवा का चेहरा फक पड़ गया, जैसे किसी टीस ने उसके हृदय को बींध दिया हो। चमक इतनी तेज थी कि खुद उसे अचम्भा हुआ और इसके बाद भी काफी देर तक वह अचरज करती रही कि आखिर इसका क्या मतलब हो सकता है। अपनी विदा का ऐलान बज़ारोव ने उसकी परीक्षा लेने के लिए, यह देखने के लिए कि इसका क्या नतीजा निकलता है, नहीं किया था। इस तरह के छल-छन्दों का वह कभी सहारा नहीं लेता था। उस दिन, सवेरे ही, अपने पिता के कारिन्दे

तिमोफ़ेइच से उसकी भेंट हो चुकी थी। यह तिमोफ़ेइच – छुटपन में बज़ारोव जिसकी देख-भाल में रहता था – बदहवास-सा एक जानदार बूढ़ा था। मुख़्तसिर-सा बदन, बालों का रंग उड़कर पीला पड़ गया था, धूप-पानी से तपा-निखरा चेहरा, चुरमुर-सी आंखों में नमी की बूंदें तैरती हुई। मोटे और मजबूत कपड़े तथा पक्के सलेटी-नीले रंग का मुख़्तसिर-सा देहाती कोट पहने, उसके ऊपर चिथड़ा-सी पुरानी पेटी कसे और पांवों में स्याही पुते बूट डाटे, वह अचानक आ मौजूद हुआ।

"कहो, बुढ़ऊ, क्या हाल है?" बजारोव ने उसे देखते ही कहा।

"गुडमोनिंग, मालिक येवगेनी वसीलियेविच," बूढ़े ने जवाब दिया और उसका चेहरा झुर्रियों की वन्दनवार तथा प्रसन्न मुसकराहट से एक बारगी खिल उठा।

"कहो, कैसे आए? क्या मुझे लिवाने आए हो, क्यों?"

"ओह नहीं, मालिक, ऐसा नहीं," तिमोफ़ेइच ने बुदबुदाकर कहा, (चलते समय मालिक ने जो सख़्त ताक़ीद कर दी थी, उसका उसे ध्यान था) "मालिक के काम से मैं शहर जा रहा था। सुना कि सरकार यहां हैं। सोचा, सरकार को देखता चलूं। सो इधर मुड़ पड़ा। लेकिन आपको तक़लीफ़ देना... नही, वह तो मैं सपने में भी नहीं सोच सकता, मालिक!"

"क्या सचमुच?" बजारोव ने टोका। "लेकिन यह तो बताओ, क्या यह जगह शहर के रास्ते मे पड़ती है?"

तिमोफ़ेइच ने शरीर का भार इस पांव से उस पांव पर बदला, और चुप साधे रहा।

"पिता तो बिल्कुल ठीक हैं न?"

"हां, मालिक, खुदा का शुक्र है।"

श्रौर मा ?

श्रगीना ब्लामियदना भी, खुदा का शुक्र है।'

वे मेरी राह देख रहे होग, क्यों ?"

उसने अपने छोटे-से सिर को खास अन्दाज में झटका।

आह, यवगनी वसीलियविच, राह तो देखना ही था। खुदा गवाह है तुम्हारे माता पिता को देखकर कलेजा मुह को आ जाता है।

बस बस, अब ज्यादा लेप न चढाओ। उनसे कहना, मैं जल्दी ही आ रहा हू।

बहुत अच्छा मालिक तिमोफेइच ने उसास छोडते हुए जवाब दिया।

वहा से विदा होते समय उसने अपने दोनो हाथो की मदद से सिर पर अपनी टोपी जमाई। दरवाजे पर वह अपनी फटीचर दोपहिया घोडा-गाडी छोड आया था, उसपर जैसे-तैसे सवार हुआ और चल पडा—लेकिन शहर की दिशा में नही।

उसी रात ओदिन्तसोवा अपने कमरे में बजारोव के साथ बैठी थी और आरकादी ड्राइगरूम में इधर से उधर टहलता कात्या का पियानो बजाना सुन रहा था। मौसी ऊपर अपने कक्ष में चली गई। उन्हे सभी मेहमानो से आन्तरिक चिढ थी और इन 'छुट्टा रगरूटो' से—जैसा कि वह उन्हे कहा करती थी—तो वह खासतौर से चिढती थी। बैठक के कमरे में तो वह केवल मुह चढाए रहती, लेकिन अपने निजी कक्ष के एकान्त में, अपनी दासी के सामने, कभी कभी अपने गुस्से का सारा जहर इतने प्रचड वेग से उगलती कि नकली जुल्फो के साथ साथ उनकी टोपी भी नाचने लगती। ओदिन्तसोवा से यह छिपा नही था।

"यह आपको जाने की क्या सूझी ?" ओदिनत्सोवा ने कहना शुरू किया, "और आपके वायदे का क्या हुआ ?"

बजारोव चौंका।

"कैसा वायदा ?"

"क्या भूल गए ? आप मुझे रसायन-विज्ञान में दीक्षित करना चाहते थे न ?"

"उसके लिए मुझे दुःख है। मेरे पिता बाट जोह रहे हैं। अब और देर नहीं कर सकता। लेकिन आप पेलूज तथा फ़्रेमी की पुस्तक 'रसायन-विज्ञान के आम सिद्धान्त' पढ़ सकती हैं। यह अच्छी किताब है, और सीधी-सादी भाषा में लिखी है। जानने लायक़ हर चीज़ उसमें मिल जाएगी।"

"लेकिन क्या आपको याद है, आपने ही तो मुझसे कहा था कि कोई भी पुस्तक उतना काम नही दे सकती जितना कि... ओह, मुझे याद नहीं पड़ता कि आपने किन शब्दों में उसे व्यक्त किया था... आप जानते हैं कि मैं क्या कहना चाहती हूं... आपको याद है न ?"

"मुझे इसके लिए दुःख है," बजारोव ने दोहराया।

"तो आप जाएंगे ही ?" अपनी आवाज को धीमा करते हुए ओदिनत्सोवा ने पूछा।

बजारोव ने उसकी ओर देखा। उसने अपना सिर आरामकुर्सी की पीठ से टिका लिया था और उसकी बांहें, कोहनी तक उघरी, उसके वक्ष पर गुंथी थीं। जालीदार काग़ज़ के शेड में से छनकर आती एकाकी बत्ती की रोशनी में वह और भी पीली नजर आ रही थी। ढीले-ढाले सफ़ेद गाउन की तहें उसके समूचे आकार को ढंके थीं। हाथों की भांति उसके पांव भी जर्ब का चिन्ह बनाए थे और उंगलियों के छोर तक मुश्किल से दिखाई देते थे।

और मा?

अरीना व्लासियवना भी, गुन्ना मा शुरू है।'

वे मरी राह देख रहे होग क्या?

उसन अपन छोटे-से सिर को बाक अन्दाज में झटका।

आह यवगनी वसीलियविच, राह तो देखना ही था। खुदा गवाह है तुम्हारे माता पिता का दखकर कलेजा मुह को आ जाता है।

बस बस अब ज्यादा लेप न चढाओ। उनसे कहना, म जल्दी ही आ रहा हू।

बहुत अच्छा मालिक निमोफइच न उसास छोडते हुए जवाब दिया।

वहा से विदा होते समय उसन अपन दोना हाथा की मदद से सिर पर अपनी टोपी जमाई। दरवाज पर वह अपनी फटीचर दोपहिया घोडा-गाडी छोड आया था उसपर जैसे-तैसे सवार हुआ और चल पडा—लेकिन शहर की दिशा में नही।

उसी रात ओदिनत्सोवा अपने कमरे में बजारोव के साथ बैठी थी और आरकादी डाइगरूम में इधर स उधर टहलता कात्या का पियानो बजाना सुन रहा था। मौसी ऊपर अपन कक्ष में चली गई। उन्हें सभी मेहमाना से आन्तरिक चिढ थी और इन छुट्टा रगरूटो से—जैसा कि वह उन्हे कहा करती थी—तो वह खासतौर से चिढती थी। बैठक के कमरा में तो वह केवल मुह चढाए रहती लेकिन अपने निजी कक्ष के एकान्त म अपनी दासी के सामन, कभी कभी अपन गुस्से का सारा जहर इतन प्रचड वेग स उगलती कि नकली जुल्फो के साथ साथ उनकी टोपी भी नाचन लगती। ओदिनत्सोवा से यह छिपा नहा था।

"यह आपको जाने की क्या सूझी?" ओदिनत्सोवा ने कहना शुरू किया, "और आपके वायदे का क्या हुआ?"

बजारोव चौंका।

"कैसा वायदा?"

"क्या भूल गए? आप मुझे रसायन-विज्ञान में दीक्षित करना चाहते थे न?"

"उसके लिए मुझे दुःख है। मेरे पिता बाट जोह रहे हैं। अब और देर नही कर सकता। लेकिन आप पेलूज़ तथा फ़्रेमी की पुस्तक 'रसायन-विज्ञान के आम सिद्धान्त' पढ़ सकती है। यह अच्छी किताब है, और सीधी-सादी भाषा में लिखी है। जानने लायक़ हर चीज उसमें मिल जाएगी।"

"लेकिन क्या आपको याद है, आपने ही तो मुझसे कहा था कि कोई भी पुस्तक उतना काम नहीं दे सकती जितना कि... ओह, मुझे याद नही पड़ता कि आपने किन शब्दों में उसे व्यक्त किया था... आप जानते है कि मै क्या कहना चाहती हूं... आपको याद है न?"

"मुझे इसके लिए दुःख है," बजारोव ने दोहराया।

"तो आप जाएंगे ही?" अपनी आवाज को धीमा करते हुए ओदिनत्सोवा ने पूछा।

बजारोव ने उसकी ओर देखा। उसने अपना सिर आरामकुर्सी की पीठ से टिका लिया था और उसकी बांहें, कोहनी तक उघरी, उसके वक्ष पर गुंथी थीं। जालीदार काग़ज़ के शेड में से छनकर आती एकाकी बत्ती की रोशनी में वह और भी पीली नजर आ रही थी। ढीले-ढाले सफ़ेद गाउन की तहें उसके समूचे आकार को ढंके थी। हाथों की भांति उसके पांव भी जर्व का चिन्ह बनाए थे और उंगलियों के छोर तक मुश्किल से दिखाई देते थे।

रुकू भी तो किस लिए?

यह किस लिए क्यो? क्या मतलब है आपका? क्या आपको यहा अच्छा नही लग रहा? या आप समझते है कि आपका जाना किसी को खलेगा नही?

बिल्कुल, इसमें जरा भी शक नही।

कुछ क्षण तो ओदिनसोवा चुप रही।

आप गलत सोचते है। जो हा, मैं आपकी इस बात का विश्वास नही करती। सजीदगी म आप ऐसा बात नहा कह सकते।

बजारोव में एक बल तक नही पडा।

यवगनी वसीलियविच, आप कुछ कहते क्यो नही?

लेकिन कहने की बात भी तो हो। मै नही समझता कि लोगो की अनुपस्थिति किसी को खल सकती है फिर मेरे जैसे आदमी की तो और भी नहा!

सो क्यो?

म जरूरत मे ज्यादा गम्भीर दिमाग और वरस हू। सलीके स बातचीत तक नही कर सकता।

मतलब यह है कि आप अपना तारीफ कराना चाहते हैं, यवगनी वसीलियविच!

यह मेरी आदत नही। आपको मालूम होना चाहिए कि जीवन की जिन नफासतो को आप जी-जान से चाहती हैं वे मेरी पहुच से बहुत बाहर हैं।

ओदिन्त्सोवा न रूमाल का कोना अपन दातो से काटा।

आप कुछ भी सोच लेकिन आपके चले जाने पर मुझ तो बडा सूना लगगा।

आरकादी तो यहा रहेगा बजारोव न दलील दी।

ओदिनत्सोवा ने हल्के से अपने कंधे बिचकाए।

"मुझे सूना लगेगा," उसने दोहराया।

"अरे नहीं। जो हो, यह सूनापन कुछ अधिक नही टिक सकेगा।"

"यह तुमने कैसे जाना?"

"खुद तुम्ही ने तो मुझे बताया था कि तुम केवल तभी ऊबती हो जब तुम्हारा बंधा-बंधाया कार्यक्रम गड़बड़ा जाता है। तुमने अपने जीवन को कुछ इतनी कड़ी नियमितता में ढाला है कि उसमें ऊब या कसक के लिए कोई जगह नहीं है... किसी भी प्रकार के दुःखद भावो की वहां दाल नही गल सकती।"

"सो तुम समझते हो कि मै कडी हूं... मतलब यह कि मेरा जीवन इस हद तक सुव्यवस्थित है।"

"एक हद तक—बेशक। मिसाल के लिए, देखिए कि अभी कुछ ही मिनटों में दस बज जाएंगे, और मै पहले से ही यह जानता हूं कि आप मुझे चलता कर देंगी।"

"यह नहीं, येवगेनी वसीलियेविच, मै आपको चलता नही करूंगी। आप रुक सकते हैं। लेकिन... जरा वह खिड़की खोल दीजिए, बड़ी गर्मी है।"

बजारोव उठा और खिड़की में एक धक्का दिया। खिड़की के पट आवाज के साथ तुरत खुल गए... उसे उम्मीद नहीं थी कि पट यों अनायास ही खुल जाएंगे। इसके अलावा उसके हाथ कांप भी रहे थे। कोमल अंधियारी रात, स्याही पुता-सा आसमान, पेड़ों की धुंधली सरसराहट और ठंडी मीठी हवा की महक कमरे में तिर आई।

"पर्दा खींच दीजिए और इधर आकर बैठिए," ओदिनत्सोवा ने कहा। "मैं चाहती हूं कि जाने से पहले आपसे कुछ बातें कर ली

रूक् भी तो किस लिए?

यह किस लिए क्यो? क्या मतलब है आपका? क्या आपको यहा अच्छा नही लग रहा? या आप समझते है कि आपका जाना किसी को खलेगा नही?

बिल्कुल इसम जरा भी शक नही।

कुछ क्षण तो ओदिनत्सोवा चुप रही।

आप गलत सोचते हैं। जो हो म आपकी इस बात का विश्वास नही करती। सजीदगी मे आप एसी बात नही कह सकते।

बजारोव म एक बल तक नही पडा।

यवगनी वसीलियविच, आप कुछ कहते क्यो नही?

लेकिन कहने की बात भी तो हो। मैं नही समझता कि लोगो की अनुपस्थिति किसी को खल सकती है फिर मेरे जसे आदमी की तो और भी नही।

सो क्यो?

म जरूरत से ज्यादा गम्भीर दिमाग और नीरस हू। सलीके से बातचीत तक नही कर सकता।

मतलब यह है कि आप अपनी तारीफ कराना चाहते है यवगनी वसीलियविच।

यह मेरी आदत नही। आपको मालूम होना चाहिए कि जीवन की जिन नफासतो को आप जी-जान से चाहती ह वे मेरी पहुच से बहुत बाहर हैं।

ओदिन्त्सोवा न रूमाल का कोना अपने दातो से काटा।

आप कुछ भी सोच लेकिन आपके चले जाने पर मुझ तो बडा सूना लगेगा।

आरकादी तो यहा रहेगा बजारोव न दलील दी।

ओदिनत्सोवा ने हल्के से अपने कंधे बिचकाए।

"मुझे सूना लगेगा," उसने दोहराया।

"अरे नहीं। जो हो, यह सूनापन कुछ अधिक नहीं टिक सकेगा।"

"यह तुमने कैसे जाना?"

"खुद तुम्हीं ने तो मुझे बताया था कि तुम केवल तभी ऊबती हो जब तुम्हारा बंधा-बंधाया कार्यक्रम गड़बड़ा जाता है। तुमने अपने जीवन को कुछ इतनी कड़ी नियमितता में ढाला है कि उसमे ऊब या कसक के लिए कोई जगह नहीं है... किसी भी प्रकार के दुःखद भावो की वहां दाल नही गल सकती।"

"सो तुम समझते हो कि मै कड़ी हूं... मतलब यह कि मेरा जीवन इस हद तक सुव्यवस्थित है।"

"एक हद तक–बेशक। मिसाल के लिए, देखिए कि अभी कुछ ही मिनटों में दस बज जाएंगे, और मै पहले से ही यह जानता हूं कि आप मुझे चलता कर देंगी।"

"यह नहीं, येवगेनी वसीलियेविच, मैं आपको चलता नहीं करूंगी। आप रुक सकते हैं। लेकिन... जरा वह खिड़की खोल दीजिए, बड़ी गर्मी है।"

बजारोव उठा और खिड़की में एक धक्का दिया। खिड़की के पट आवाज के साथ तुरत खुल गए... उसे उम्मीद नहीं थी कि पट यों अनायास ही खुल जाएंगे। इसके अलावा उसके हाथ कांप भी रहे थे। कोमल अंधियारी रात, स्याही पुता-सा आसमान, पेड़ों की धुधली सरसराहट और ठंडी मीठी हवा की महक कमरे में तिर आई।

"पर्दा खींच दीजिए और इधर आकर बैठिए," ओदिनत्सोवा ने कहा। "मैं चाहती हूं कि जाने से पहले आपसे कुछ बातें कर ली

जाए। अपने बारे में कुछ बताइए। इस बारे में आप कभी मुंह नहीं खोलते।"

"मैं आपसे, अन्ना सेर्गेयेवना, उपयोगी विषयों के बारे में ही बातें करने का प्रयत्न करता हूं।"

"आप भी बड़े संकोची हैं लेकिन मैं आपके और आपके परिवार के, और आपके पिताजी के बारे में कुछ जानना चाहती हूं जिनकी खातिर आप हमें छोड़कर जा रहे हैं।

"आखिर किस लिए यह सब पूछा जा रहा है?" बजारोव ने मन में सोचा। फिर प्रत्यक्ष रूप में बोला

"वह सब जरा भी दिलचस्प नहीं है, खासकर आपके लिए। हम निम्न स्तर लोग "

"तो मुझे क्या आप कुलीन समझते हैं?"

बजारोव ने पलकें उठाकर ओदिन्त्सोवा की ओर देखा। फिर अक्खड़पन जताते हुए बोला

"हां।"

ओदिन्त्सोवा के होठों में मुसकराहट रेंग गई।

"देखती हूं कि आप मुझे बहुत ही कम जानते हैं, हालांकि दावा आपका यह है कि सब लोग एक से हैं, उनका अध्ययन करने की जरूरत नहीं। किसी दिन अपने बारे में आपको बताऊंगी लेकिन अभी तो पहले अपने बारे में बताइए।"

"मैं आपको बहुत ही कम जानता हूं," बजारोव ने दोहराया, "हो सकता है कि आपका कहना ठीक हो, और हर व्यक्ति सचमुच में एक पहेली हो। मिसाल के लिए खुद अपने को ही लीजिए। आप समाज से—सोसायटी से—कतराती हैं, उसे पसन्द नहीं करतीं, फिर भी अपना मेहमान बनाने के लिए दो छात्रों को निमन्त्रण देती हैं। इतनी

वृद्धि, और इतना रूप लेकर आप यहां—इस देहात में—क्यों पड़ी है?"

"क्या-आ? क्या कहा आपने?" ओदिनत्सोवा तुरत बोल पड़ी। "इतना... इतना रूप लेकर?"

बज़ारोव की भौहों में बल पड़ गए।

"गोली मारिए उसे," बज़ारोव बुदबुदाया, "कहने का मतलब यह, मेरी समझ में नही आता कि आप देहात में क्यों रहती है?"

"समझ में नहीं आता... यही आपने कहा न... तब तो आपने इसका कुछ अनुमान लगाने की भी कोशिश की होगी। क्यों, ठीक है न?"

"हां ... मेरा अनुमान है कि स्थायी रूप से एक ही जगह आप इसलिए रहती है कि अपने को दुलराना आपको अच्छा लगता है, आराम और आसाइश की आप बेहद शौक़ीन हैं और बाक़ी सब चीजों से कोई वास्ता नही रखना चाहती।"

ओदिनत्सोवा के होंठों पर फिर मुसकराहट रेंग गई।

"आप तो यह मानने से एकदम इन्कार करते हैं कि मैं भी आवेगों-उद्वेगों में बह सकती हूं। क्यों, यही बात है न?"

बजारोव ने भौहों के नीचे से उसपर एक नजर डाली।

"शायद केवल कौतुकवश, अन्य किसी वजह से नही।"

"बेशक! हां तो अब मेरी समझ मे आया कि हम दोनों के मित्र बनने का क्या रहस्य है। आप भी मेरी ही भांति हैं।"

"आप और मै मित्र..." बजारोव फुसफुसाया।

"हां... लेकिन यह तो भूल हो गई कि आप जाना चाहते थे।"

बजारोव उठ खड़ा हुआ। अंधेरा-घिरे, महकते और बाहरी

विशाद से युक्त कमरे के बीच लैम्प की धीमी लौ टिमटिमा रही थी। फरफराते पर्दे में से हृदय को कुरेदनेवाली रात की ताजगी और रहस्यमय फुसफुसाहटें कमरे में सरसरा रही थी। ओदिनत्सोवा एकदम स्थिर – निश्चल – बैठी थी, लेकिन एक अजान विह्वलता, अडिग गति से, उसके रोम रोम में छाती जा रही थी बजारोव भी उसके स्पर्श से अछूता नही रह सका। सहसा उसे चेत हुआ कि यह एकान्त, यह सुन्दर युवती और वह

किधर चल दिए? ओदिनत्सोवा ने धीमे से पूछा।

उसने जवाब में कुछ नही कहा। चुपचाप फिर अपनी उसी कुर्सी में धस गया।

सो तुम मुझे भावशून्य दुतराई हुई और लाड से मुह-चढी चीज समझते हो उसी एक स्वर में, खिडकी की ओर आखें जमाए, वह कहती गई। लेकिन मै कितनी दुखी हू यह मै ही जानती हू।'

तुम और दुखी? क्यो? क्या तुम्हारा मतलब यह है कि उन गदी अफवाहो को तुम कुछ महत्व देती हो?'

ओदिनत्सोवा की भौहो में बल पड गए। उसे यह अखरा कि उसके शब्दो का उसने यह अर्थ लगाया।

नही यवगनी वसीलियविच, उन अफवाहो पर तो मेरा हसने को भी जी नही चाहता और मै इतनी गर्वीली हू कि अपने कान पर जू तक नही रेगने देती। मै दुखी हू इसलिए कि मुझमें कोई आकाक्षा नही है जीने की कोई चाह नही है। तुम मुझे शका की नजर से देख रहे हो। शायद तुम सोच रहे हो कि ठाट ठप्पे से सजा और मखमली आरामकुर्सी पर बैठा यह मेरा 'आभिजात्य' बोल रहा है। मै उस चीज से इन्कार नही करती जिसे तुम ऐशो-आराम कहते हो। मै उसे पसन्द करती हू, फिर भी जीने की चाह मुझमें नही के बराबर है। अगर

शक्ति हो तो इन असंगतियों में पटरी बैठाने की तुम भी कोशिश कर देखो। जो हो, तुम्हारे लेखे तो यह रोमाण्टिकता है!"

बजारोव ने अपना सिर हिलाया।

"अच्छा स्वास्थ्य, आजादी, धन—सभी का तो तुम उपभोग करती हो। तुम्हे और किस चीज की जरूरत है? तुम और क्या चाहती हो?"

"मै क्या चाहती हूं?" ओदिनत्सोवा ने दोहराया और उसास लेती हुई बोली, "मै थक गई हूं, मै बूढी हो चली हूं, ऐसा मालूम होता है जाने कब से—कितने लम्बे अर्से से—मैं जी रही हूं। हां, मै बूढ़ी हो चली हूं," अपनी उघरी हुई बांहों पर जाली के छोरों को मृदु भाव से खींचते और बजारोव से आंखें मिलने पर थोड़ा लजाते हुए उसने कहा, "जाने कितनी स्मृतियों को मै छोड़ आई हूं—सन्त पीतर्सबर्ग में जीवन, धन-दौलत, फिर ग़रीबी, इसके बाद पिता की मृत्यु, मेरा विवाह, फिर विदेश की यात्रा, जैसा कि होना चाहिए ... अनेकानेक स्मृतियां है, लेकिन ऐसी एक भी नही जिसे याद किया जा सके, और सामने लम्बी—बहुत लम्बी—राह फैली हुई, लेकिन मंजिल कोई नही ... डग आगे बढ़ने से इन्कार करते हैं।"

"तो क्या तुम इस हद तक अपने सारे भरम गंवा चुकी हो?" बजारोव ने पूछा।

"नहीं," ओदिनत्सोवा ने धीमे से कहा, "लेकिन मै सन्तुष्ट नही हूं। मुझे लगता है कि किसी चीज के प्रति—चाहे वह कुछ भी हो—अगर मै गहरा लगाव पैदा कर सकती ..."

"तुम प्रेम में पगना चाहती हो," बजारोव ने बीच में ही कहा। "लेकिन प्रेम तुम कर नही सकती ... और इसी लिए तुम इतनी सन्तप्त हो।"

ओल्गिन्स्कोवा अपनी जाकेट की आस्तीनों को देखने में उलझी थी।

तुम समझते हो कि मैं प्रेम करने में असमर्थ हूँ वह बुदबुदाई।

मैंने यही समझा। केवल एक बात है मुझे इससे सन्ताप नहीं होना चाहिए था। इसके प्रतिकूल जिस व्यक्ति के सिर पर यह बला सवार होती है उसे दया का पात्र मानना चाहिए।

कौन-सी बला?

यही प्रेम में पड़ने की।

तुमने यह कैसे जाना?

लोगों से सुनकर बजारोव ने अलसाकर जवाब दिया।

खिलवाड़ कर रही है बजारोव ने सोचा। ऊब के मारे जब और कुछ नहीं सूझा तो सोचा चलो इसे ही कुरेदा जाए लेकिन इधर यह हाल है कि सचमुच बजारोव का हृदय छितरा रहा था।

और फिर अपने समूचे शरीर को आगे की ओर झुकाते तथा अपनी आरामकुर्सी के छोर से खेल करते हुए बोला

मेरी समझ में तुम्हारी कसौटी पर खरा उतरना भी टेढ़ी खीर है।

हो सकता है। या तो मैं हर चीज़ में विश्वास करती हूँ या फिर किसी चीज़ में नहीं करती। जीवन के बदले जीवन। जो मैं हूँ वह तुम लो जो तुम हो वह मुझे दो। फिर न खेद की गुंजाइश हो न उसे वापिस लौटाने की। नहीं तो दूर रहना ही अच्छा।

शर्तें तो तुम्हारी मुनासिब हैं बजारोव ने कहा अचरज की बात यही है कि अब तक तुम्हें वह चीज़ नहीं मिली जो तुम चाहती हो।

तो क्या तुम्हारी नजर में अपने आपको पूरी तरह से समर्पित कर देना इतना आसान है?

नहीं आसान नहीं है अगर तुम्हारे पांव ठिठककर असमंजस

में पड़ जाएं, अगर तुम समय गंवाने और अपने बारे में जरूरत से ज्यादा सोचने – मेरा मतलब यह कि अपने को अनमोल समझने लगो। लेकिन यह एकदम आसान है, अगर तुम बिना सोचे-झिझके डुबकी लगाने के लिए तैयार हो जाओ।"

"यह कैसे हो सकता है कि आदमी अपनी कोई कद्र न समझे? अगर मैं किसी काम की नहीं हूं तो किसी के भी प्रति मेरे समर्पण का फिर क्या मूल्य रह जाता है!"

"यह सब सोचना मेरा काम नहीं। मैं किसी काम का हूं या नहीं, इसका निर्णय करना हो तो दूसरा पक्ष करे। मुख्य चीज है समर्पण करने की सामर्थ्य।"

ओदिनत्सोवा अपनी कुर्सी पर आगे की ओर खिसक आई।

"तुम तो इस तरह बातें करते हो," उसने कहना शुरू किया, "जैसे तुम खुद इन सबमें से गुजर चुके हो।"

"मैंने तो अपनी एक राय भर दी है, अन्ना सेर्गेयेवना। यह सब, तुम जानती ही हो, मेरा धंधा नहीं है।"

"लेकिन क्या तुममें अपने को समर्पित करने की सामर्थ्य है?"

"मैं नहीं जानता, और डींग मारना मैं चाहता नहीं।"

ओदिनत्सोवा ने कोई जवाब नहीं दिया। बजारोव भी चुप हो गया। संगीत के स्वर ड्राइंगरूम से तिरते उनके कमरे में आ रहे थे।

"अरे, इतनी देर हो गई, कात्या अभी तक पियानो बजाने में मगन है," ओदिनत्सोवा ने कहा।

बजारोव खड़ा हो गया।

"हां, देर काफ़ी हो गई। तुम्हें अब आराम करना चाहिए।"

"जरा ठहरो। ऐसी जल्दी क्या है? तुमसे कुछ कहना है मुझे।"

"सो क्या?"

एक मिनट ठहरा   ग्रोदिनमोवा फुसफुसाई।

उसकी आँखें बज़ारोव पर जाकर टिक गईं। लगता था जैसे वह उसे बारीकी से परख रही हो।

वह कमरे में घूम गया। फिर, अचानक, उसकी ओर मुड़ा, उतावली से फिर मिनट कहा उसके हाथ को अपने हाथ में लेकर इतना दबोचा कि वह चीख ही उठती और तेज डगों से बाहर चला गया। कुचली हुई सी अपनी उंगलियों को उठाकर वह होठों तक ले गई फूंक मारकर उन्हें सहलाया सहसा किसी आवेग में आकर कुर्सी से उछल खड़ी हुई और तेजी से दरवाज़े की ओर लपकी, मानो बज़ारोव को पुकारकर लौटा लेना चाहती हो तभी चांदी की तश्तरी पर बिल्लौरी सुराही रख दासी ने प्रवेश किया। ग्रादिनत्सोवा वहीं ठिठक गई दासी को विदा किया फिर अपनी कुर्सी में बैठ गई और अपने खयालों में खो गई। उसकी गुथी हुई लटें खुल गई थी और नागिन की भांति उसके कंधों पर लहरा रही थीं। कमरे का लैम्प बड़ी देर तक जलता रहा और अन्ना सेर्गेयेवना वैसे ही निश्चल बड़ी देर तक रात की गहराइयों में उतरती रही। जब रात की ठंडी हवा कचोटी-सी काटती तो जब-तब अपनी बांहों को सहला भर लेती, और बस।

दो घंटे बाद बज़ारोव ने अपने शयन-कक्ष में पांव रखा—अस्त-व्यस्त और उदास जूते ओस में भीगे हुए। आरकादी लिखने की मेज़ के पास हाथ में कोई किताब खोले बैठा था। कोट के बटन एकदम ऊपर तक बंद थे।

अभी तक सोए नहीं? बज़ारोव ने पूछा। उसकी आवाज़ में खीज का एक हल्का-सा पुट था।

अन्ना सेर्गेयेवना के साथ आज तुमने बड़ी देर लगा दी,' उसके सवाल को अनसुना करते हुए आरकादी ने कहा।

"हां, कात्या के साथ जब तक तुम पियानो बजाते रहे, मैं बराबर वहीं था।"

"मैं नहीं बजा रहा था," आरकादी ने कहना शुरू किया, लेकिन फिर चुप हो गया। उसे लगा जैसे उसकी आंखों में आंसू उमड़े आ रहे हों, और व्यंग और कटाक्षों से भरे अपने मित्र के सामने वह रोना नहीं चाहता था।

१८

अगले दिन जब ओदिनत्सोवा चाय के समय नीचे आई तो बजारोव, काफी देर तक, अपने प्याले को निरखने-परखने में उलझा रहा और फिर, एकाएक नजर उठाकर, उसने ओदिनत्सोवा की ओर देखा ... वह भी उसकी ओर ऐसे मुड़ी जैसे उसने उसे कोहनिया दिया हो। और उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे उसका—ओदिनत्सोवा का—चेहरा और भी पीला पड़ गया हो। कुछ ही देर बाद वह उठी और अपने कमरे में चली गई। इसके बाद, नाश्ते के समय तक, फिर नीचे नहीं उतरी। बारिश का सुबह से ही तांता बंधा था। टहलने के लिए बाहर निकलना असम्भव था। समूची मण्डली ड्राइंगरूम में जमा हुई। किसी पत्रिका का नया अंक आरकादी के हाथ पड़ा और वह उसे जोर से पढ़कर सुनाने लगा। मौसी ने, अपनी आदत के अनुसार, पहले तो अचरज का भाव प्रकट किया—जैसे उसने सलीक़े के खिलाफ कोई हरकत की हो—फिर कुछ ऐसी नजर से उसे देखा जैसे कच्चा ही चबा जाएगी। लेकिन उसने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

"येवगेनी वसीलियेविच," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा, "जरा मेरे कमरे में चलिए ... मैं पूछना चाहती थी ... कल आपने एक पोथी का ज़िक्र किया था..."

वह उठी और दरवाज़े की ओर चल दी। मौसी ने घूमकर उसकी ओर देखा, कुछ ऐसी मुद्रा में जो कहती प्रतीत होती थी, "देखा न, तुमने मुझे कितना चकित कर दिया है!" इसके बाद उसकी नज़र एक बार फिर आरकादी से जा चिपकी। लेकिन उसने केवल अपनी आवाज़ को और भी ऊंचा उठा लिया और पास बैठी कात्या से नज़रों का विनिमय करते हुए अपना पढ़ना जारी रखा।

आदिन्त्सोवा तेज़ी से डग उठाती अपने अध्ययनकक्ष में पहुंची। बज़ारोव भी उसके पीछे ही बढ़ चला, अपनी आंखों को बराबर धरती में गड़ाए। केवल उसके कान तेज़ी से आगे की ओर तिरते उसके रेशमी गाउन के सरसराने तथा फरफराने की धीमी आवाज़ सुन रहे थे। अध्ययनकक्ष में पहुंच आदिन्त्सोवा फिर उसी कुर्सी में समा गई जिसमें कि वह रात बैठी थी। बज़ारोव ने भी अपनी पहलेवाली जगह पर आसन जमाया।

"उस किताब का क्या नाम था?" कुछ क्षणों के अवकाश के बाद उसने पूछा।

"Pelouse et Fremy Notions générales*" बज़ारोव ने जवाब दिया। "साथ ही एक और पुस्तक की मैं सिफ़ारिश करूंगा— Ganot Traité élémentaire de physique expérimentale**। इस पुस्तक के चित्र कहीं अधिक साफ़ हैं और एक पाठ्य-पुस्तक की हैसियत से..."

---

*पेलूज़ तथा फ्रेमी कृत "रसायन विज्ञान के सामान्य सिद्धान्त"। (फ्रेंच) —सं०

**गनोत कृत "प्रारम्भिक प्रयोगात्मक भौतिक विज्ञान"। (फ्रेंच)—सं०

ओदिनत्सोवा ने अपना हाथ बाहर निकाल लिया।

"माफ़ कीजिए, येवगेनी वसीलियेविच, पाठ्य-पुस्तकों की चर्चा करने के लिए मैंने आपको यह कष्ट दिया हो, सो नहीं। मैं कलवाली बातों को फिर शुरू करना चाहती थी। आप एकदम ही तो चले गए... आप ऊब तो नहीं जाएंगे, क्यों?"

"मैं आपकी सेवा में हाजिर हूं, अन्ना सेर्गेयेवना। लेकिन कल हम भला किस चीज़ की चर्चा कर रहे थे?"

ओदिनत्सोवा ने कनखियों से उसपर एक नजर डाली।

"हम लोग, अगर मैं भूलती नहीं तो, सुख के बारे में बात कर रहे थे। मैं तुम्हें अपने बारे में बतला रही थी। और जब सुख का जिक्र आ ही गया तो ... हां तो यह बताइए कि उस समय भी जब हम, मिसाल के लिए, किसी अच्छे संगीत, या सुन्दर सांझ, या किसी मनचीते व्यक्ति से बातचीत के आनन्द में मगन होते हैं, तब हमें ऐसा क्यों मालूम होता है जैसे यह सब, वास्तविक सुख न होकर, उस व्यापक सुख का एक संकेत मात्र है जो कहीं अन्य हिलोरें ले रहा है, और यह कि जो सुख हमें उपलब्ध है, वह वास्तव में सुख नहीं है? क्यों, ऐसा क्यों होता है? या हो सकता है कि आपने ऐसी किसी चीज का कभी अनुभव न किया हो?"

"आपने यह कहावत सुनी होगी—पड़ोसी की फसल अपनी से ज्यादा सुहानी लगती है," बजारोव ने जवाब दिया। "कल खुद आपने भी यह माना था कि आप सन्तुष्ट नहीं हैं। ऐसी बातें, सचमुच, मेरे दिमाग़ में नहीं धंसती।"

"शायद आप उन्हें बेहूदा समझते हैं।"

"नहीं। बस इतना ही है कि वे मेरे मन को नहीं छूती।"

"सच? क्या आपको मालूम है, यह जानने के लिए कि आप क्या सोचते हैं, मैं कितनी उत्कंठित हूं!"

क्या कहा आपने? मैं कुछ समझ नहीं सका।

तो सुनो। बहुत दिनों से इच्छा थी कि आपसे जरा खुलकर बात करूं। आपको यह बताने की जरूरत नहीं—और यह आप खुद भी जानते हैं—कि आप आम लोगों में से नहीं हैं। आप अभी युवा हैं—समूचा जीवन आपके आगे खुला है। आप क्या करना चाहते हैं? भविष्य आपके लिए अपने गर्भ में क्या छिपाए है? मेरा मतलब यह कि आपका लक्ष्य क्या है किस मंजिल पर आप पहुंचना चाहते हैं? आपके इरादे क्या हैं? संक्षेप में यह कि आप कौन हैं और क्या हैं?

आप भी अजब बात करती हैं अन्ना सेर्गेयेवना। आप जानती हैं कि मैं पदार्थ विज्ञान का अध्ययन कर रहा हूं, और जहां तक यह कि मैं क्या हूं

हां आप क्या हैं?

यह मैं पहले ही बता चुका हूं कि मैं देहात का डाक्टर बनने जा रहा हूं।

अन्ना सेर्गेयेवना अधीरता से कसमसाई।

यह आप कैसे कहते हैं? खुद आप यह विश्वास नहीं करते। आरकादी के मुंह से यह बात शायद ठीक जंचती भी लेकिन आपके मुंह से नहीं।

क्या आरकादी किस मानी में

बस रहने दीजिए। क्या यह सम्भव है कि आप ऐसे बेनाम धंधे से सन्तुष्ट होकर बैठ जाएं और क्या खुद आप बराबर यह कहते नहीं रहे हैं कि औषधि विज्ञान में आपका विश्वास नहीं है? आप आपका स्वाभिमान—और डाक्टरी सो भी देहात की! ऐसी बात करके आप मुझे केवल बहकाना चाहते हैं। कारण आप मुझपर विश्वास नहीं करते। क्या आपको मालूम है यवगेनी वसीलियविच, कि आपकी बात समझने की सामर्थ्य मुझमें भी हो सकती है। कभी मैं

भी ग़रीब और स्वाभिमानिनी रह चुकी हूं–ठीक आपकी ही भांति, और शायद मैं भी उन्हीं परीक्षाओं में से गुजरी हूं जिनमें से कि आप।"

"यह सब ठीक है, अन्ना सेर्गेयेवना, बहुत ठीक। लेकिन मुझे क्षमा करें ... मैं अपना हृदय उंडेलकर रख देने का आदी नहीं हूं, और फिर हम दोनों–आप और मैं–एक-दूसरे से उतने ही दूर हैं जितने..."

"क्यों, दूर कैसे हैं? शायद तुम फिर वही राग अलापना शुरू कर दोगे कि मुझमें 'आभिजात्य' घुसा बैठा है? यह बेहद ज़्यादती है, येवगेनी वसीलियेविच। मेरा विश्वास है कि मैं यह सिद्ध..."

"और इसके अलावा," बज़ारोव ने बीच में ही कहा, "भविष्य के बारे में–एक ऐसी चीज के बारे में जो अधिकांशतः हमपर निर्भर नहीं करती–बातें करना और सोचने से क्या फ़ायदा? अगर कुछ करने का मौका मिलता है तो अच्छा और बहुत अच्छा, लेकिन अगर नहीं मिलता, तब कम से कम यह सन्तोष तो रहेगा कि पहले से ही उसे लेकर हमने चिचियाना शुरू नहीं कर दिया था!"

"मित्रतापूर्ण बातचीत को आप चिचियाना कहते हैं ... या शायद आप मुझे, एक स्त्री को, अपने विश्वास के उपयुक्त पात्र नहीं समझते? आप हम सबको, एक सिरे से हिक़ारत की नजर से देखते हैं। क्यों, ठीक है न?"

"आपको, अन्ना सेर्गेयेवना, मैं हिकारत की नज़र से नहीं देखता, और यह आप जानती हैं।"

"क्या खाक जानती हू ... लेकिन छोड़ो। भविष्य के बारे मे बातें करने से आपका हिचकना ऐसी चीज नहीं जो समझ में न आए। लेकिन अब, इस समय, आपके भीतर क्या-कुछ हो रहा है..."

"क्या-कुछ हो रहा है!" बज़ारोव ने दोहराया। "गोया मैं कोई राज्य या समाज हूं! जो हो, वह कुछ कहने भर के लिए भी दिलचस्प

नहीं है। इसके अलावा भीतर क्या-कुछ हो रहा है क्या यह किसी के लिए हमेशा शब्दों में व्यक्त करना सम्भव हो सकता है?

मेरी समझ में नहीं आता कि अपनी बात व्यक्त करने में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है?

क्या आप कर सकती हैं? बज़ारोव ने पूछा।

हां कर सकती हूं अन्ना सेर्गेयेवना ने हल्की-सी हिचकिचाहट के साथ कहा।

बज़ारोव ने अपना सिर झुकाया।

तब आप मुझसे ज़्यादा खुशनसीब हैं।

अन्ना सेर्गेयेवना ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखा।

जैसा आप समझें अन्ना सेर्गेयेवना ने कहना शुरू किया लेकिन मुझे लगता है कि हमारा मिलना निरा आकस्मिक संयोग ही नहीं है। वह इससे अधिक हमारी घनिष्ठ मित्रता का सूचक है। मेरा विश्वास है कि तुम्हारा यह भला क्या कहते हैं उसे तुम्हारा यह तनाव यह अनबोलपन अन्ततः गायब हो जाएगा।

तो आपको यह पता चल गया कि मुझमें अनबोलपन है और भला यही कहा था न आपने कि तनाव है?

हां।

बज़ारोव उठा और खिड़की के पास चला गया।

और क्या तुम इस अनबोलपन का कारण जानना चाहोगी क्या तुम जानना चाहोगी कि मेरे भीतर क्या हो रहा है?

हां एक अनबूझे-से भय का अनुभव करते हुए ओदिन्त्सोवा ने दोहराया।

नाराज़ तो नहीं होगी?

नहीं।

"नही ?" बजारोव उसकी ओर पीठ किए खड़ा था। "तब मैं तुम्हें जताना चाहता हूं कि मैं तुमसे प्यार करता हूं ... बेहवास और पागल की भांति प्यार करता हूं ... यह लीजिए, आपकी इच्छा पूरी हो गई।"

ओदिनत्सोवा ने अपने दोनों हाथ फैला लिए और बजारोव खिड़की के शीशे से अपना सिर सटाकर खड़ा हो गया। उसकी सास भारी हो गई थी, उसका रोम रोम प्रकट रूप मे थरथरा रहा था। लेकिन यह यौवन की सहज व्रीड़ा का कम्पन नही था, यह उस मधुर अस्तव्यस्तता का सूचक नहीं था जो प्रेम की प्रथम स्वीकृति के समय अभिभूत कर लेता है। यह वासना का उद्वेग था जो पूरी प्रचण्डता के साथ, उत्ताल तरंगों के रूप में, उमड़ पड़ा था; एक ऐसा उद्वेग जो क्षुब्ध रोष के समान था, शायद उसी का प्रतिरूप। ओदिनत्सोवा आतंक और उसके लिए दुःख, दोनों का अनुभव कर रही थी।

"येवगेनी वसीलियेविच," वह बुदबुदाई, और उसकी आवाज में कोमलता का पुट अनायास ही आ मिला।

बजारोव तेजी से घूम गया, लील जानेवाली नजर से ओदिनत्सोवा की ओर देखा और उसके दोनों हाथों को थामते हुए अचानक उसे अपनी बांहों मे खीच लिया।

उसने अपने आपको तुरत उसके बाहुपाश से मुक्त नही किया। लेकिन, कुछेक क्षण बाद ही, वह दूर कोने में खड़ी बजारोव को ताक रही थी। वह उसकी ओर बढ़ा ...

"आपने मुझे समझा नही," तेज आतंक से वह फुसफुसाई। बस, उसकी दिशा में एक भी डग वह और बढ़ता तो जैसे वह चीख पडती... बजारोव ने होठों में अपने दांत गड़ाए और कमरे से निकल गया।

आध घंटा बाद दासी अन्ना सेर्गेयेवना के पास बजारोव का एक

पुर्ज़ा लेकर आई। पुर्ज़े में एक ही पंक्ति थी मैं आज ही चला जाऊं या कल तक रुक सकता हूं?

क्या जाना ही है? न मैं आपको समझी न आप मुझे ओदिनत्सोवा ने जवाब दिया मगर मन में सोच रही थी मैं खुद भी तो अपने को नहीं समझी।

दोपहर के भोजन के समय तक वह बाहर नहीं निकली। बराबर अपने कमरे में ही इधर-से उधर पग नापती रही। हाथ कमर के पीछे बांधे हुए। बीच बीच में खिड़की या आईने के सामने वह ठिठककर खड़ा हो जाती धीमे से रूमाल को अपनी गरदन से छुवाती, जैसे वहां जलन का दाग पड़ गया हो और रह रहकर उसका ध्यान उसकी ओर चला जाता हो। मन ही मन वह अपने से सवाल करती किस चीज़ से प्रेरित होकर तूने उसे अपना हृदय उडेलने के लिए उकसाया? आखिर तेरे हृदय में यह उत्कण्ठा क्या मची? फिर अपने आप स्वगत ही कहती गई कसूर मेरा है। लेकिन यह मैं पहले से कैसे जान सकती थी कि ऐसा होगा। उसने अपने दिमाग़ में सारी चीज़ों को उलटा पलटा और बज़ारोव के उस समय के वहशियों जैसे चेहरे की याद कर लाज से लाल हो उठी जबकि वह उसकी ओर लपका था।

या फिर ? सहसा उसके मुंह से निकला। वह अब अपनी घघराली लटों को उछालकर कमरे में स्थिर खड़ी थी आईने में अपनी छवि पर उसकी नज़र गई। पीछे को झुका सिर अधमुंदी पलकों और अधखुले होठों की रहस्यमय मुसकान कुछ ऐसा भेद प्रकट कर रही थी कि वह सकपका-सी गई

नहीं आखिर वह निश्चय पर पहुंची खुदा जाने उसका अंजाम क्या हो जाता। यह खिलवाड़ करने की चीज़ नहीं। अन्ततः स्थिरता ही इस दुनिया में सबसे अच्छी चीज़ है।

उसकी स्थिरता अस्तव्यस्त नही हुई थी। फिर भी वह उदास हो उठी, यहां तक कि थोड़ा रोई भी, बिना यह जाने कि क्यों, लेकिन इसलिए नही कि वह किसी अपमान का अनुभव कर रही थी। वह ऐसा कुछ अनुभव नहीं कर रही थी कि उसकी व्यक्तिगत भावनाओ को ठेस पहुंची है, उलटे अपराध की एक भावना उसके हृदय को कुरेद रही थी। अनेक प्रकार की धुंधली भावनाओ, उम्र के यो ही ढलते जाने की चेतना और नयेपन की लालसा ने एक हद तक आगे बढ़ने और परिधि के बाहर क्या है, यह झांकने के लिए उसे उकसा दिया था। और उसने देखा कि वहां अतल गर्त तक नही है, केवल एक सूनापन ... या केवल घिनौनापन है।

१६

हृदय की समूची स्थिरता और मूढ़ाग्रहों से मुक्त होने के बावजूद दोपहर के भोजन के लिए कलेवा-घर में पांव रखते समय ओदिनत्सोवा ने एक परेशानी का अनुभव किया। भोजन तो, खैर, बहुत कुछ तसल्ली के साथ गुजर गया। पोरफिरी प्लातोनिच आ टपका और उसने, अन्य चीजों के अलावा, छुटपुट किस्सों का बाजार गर्म रखा। वह अभी शहर से लौटा था। उसने खबर सुनाई कि गवर्नर ने, विशेष कमीशन के अपने सदस्यों को, महमेज़ पहनने का आदेश दिया है। यह इसलिए कि उन्हें, किसी अत्यावश्यक काम से, कही घोड़े पर भेजना पड़ सकता है। आरकादी दबे स्वर में कात्या से बतियाता रहा और मौसी के प्रति कूटनीतिज्ञ की भांति व्यवहार करता रहा। बजारोव अड़ियल और उदास चुप्पी का नक़ाब चढ़ाए रहा। ओदिनत्सोवा ने एक या दो बार, चोरी-छिपे नहीं, बल्कि सीधे उसके गम्भीर, झुझलाहट भरे चेहरे की ओर देखा: उसकी आंखें झुकी थी और हर भाव-भंगिमा मे अवहेलनापूर्ण दृढ़ता झलक रही

थी और मन हा मन कहा नहा नहीं नहीं भोजन के बाद सब मेज के साथ वह बाग बाग में चली गई और यह अनुमान कर कि वजाराव उससे कुछ कहना चाहता है एक किनारे खिसककर वहीं ठिठक गई। वजीराव उसके निकट बढ़ आया। उसकी आँखें अभी भी वैसे ही झुकी थी। भरभराई-सी आवाज में वह बोला

मेरे लिए माफी मांगना जरूरी है अन्ना सर्गेयवना। आप निश्चय ही मुझसे सख्त नाराज होगी।

नहीं मैं तुमसे नाराज नहीं हूं येवगेनी वसीलियेविच आन्तिल्मावा न जवाब दिया। लेकिन मैं सन्तप्त जरूर हूं।

यह और भी बुरा है। जो हो सब या ही काफी सजा मिल चुकी है। मेरी स्थिति—यह आप भी मानेगी—हास्यास्पद बन गई है। आपने सब लिखा क्या जाना ही है? मैं नहीं रुक सकता और न रुकना चाहता ही हूं। मैं कल यहां नजर नहीं आऊंगा।

लेकिन येवगेनी वसीलियेविच क्यो

यह कि मैं क्यों जा रहा हूं?

नहीं मेरा यह मतलब नहीं।

अतीत को लौटाया नहीं जा सकता अन्ना सर्गेयवना और देर या सबेर यह होना ही था। सो मुझे जाना ही होगा। मेरे जानते केवल एक ही सूरत में मेरा रुकना सम्भव हो सकता था लेकिन वह सूरत कभी होगी नहीं। गुस्ताखी माफ—आप मुझे प्यार नहीं करती—नहीं करती हैं न और न ही कभी करेंगी?

घनी काली भौंहों के नीचे क्षण भर के लिए वजाराव की आंखों में बिजली-सी कौंध गई।

अन्ना सेर्गेयेवना ने कोई जवाब नहीं दिया। सहसा उसके मन में कुछ आभास-सा हुआ— मैं इस आदमी से डरती हूं।

"अच्छा तो विदा, मदाम!" जैसे उसके मन की बात भांपते हुए बजारोव ने कहा और घर की ओर मुड़ गया।

अन्ना सेर्गेयेवना ने भी, धीमे डगों से, उसका अनुसरण किया। उसने कात्या को बुलाया और सहारे के लिए उसकी बांह थामे रही। सांझ तक उसने कात्या को अपने पास ही मौजूद रखा। ताश खेलने से उसने इन्कार कर दिया और सारे समय हंसती रही, लेकिन यह हंसी उसके चेहरे की विवर्ण और अस्त-सी मुद्रा से कतई मेल नहीं खाती थी। आरकादी उसकी ओर देख रहा था और अचरज कर रहा था—जैसा कि युवा लोग करते हैं, यानी यह कि वह बार बार अपने से पूछ रहा था—"आखिर इस सबका मतलब क्या है?" बजारोव अपने कमरे के पट बंद किए था, चाय के लिए जैसे-तैसे उतर आया। अन्ना सेर्गेयेवना के मन में हुआ कि कोई भली-सी बात उससे कहे, लेकिन उसकी समझ में नही आया कि इस दृढ़ मौन को कैसे भंग करे...

एक अप्रत्याशित घटना ने उसे इस असमंजस से उबार लिया। भंडारी ने आकर सूचना दी कि सितनिकोव तशरीफ़ लाए हैं।

और जिस तावड़तोड़ ढंग से यह प्रगतिशील युवक कमरे में दाखिल हुआ, उसका वर्णन करना असम्भव है। आचार-विचार को ताक़ पर रखने की अपनी आदत के अनुसार उसने अपने ही मन से निश्चय कर लिया था कि देहात चलकर उस महिला के यहां धमका जाए जिसे वह जानता तक नहीं था और जिसने कभी उसे आमंत्रित नहीं किया था, लेकिन जो—इधर-उधर से उसने पता चला लिया था—उसके इतने चतुर परिचितों को अपना मेहमान बनाए थी। यह सब होने पर भी वह संकोच के मारे कुछ इस बुरी तरह कटा जा रहा था कि क्षमा-याचना और अभिवादन के उन फ़िकरों को, जिन्हें उसने बाक़ायदा रटा था एकदम भूल गया और अचकचाते हुए जैसे-तैसे वह

इतना ही उसने कहा कि सेवदानगाया ने—यानी कुविनता ने—मन्ना सर्गेयेवना की गजा-खुशी का हाल जानने के लिए उसे भेजा है, और यह कि आरकादी निकोलायविच ने भी बहुत बहुत तारीफ यहां तक पहुंचकर वह लड़खड़ा गया और कुछ इस हद तक सकपका गया कि घबराहट में अपनी ही टोपी पर बैठ गया। लेकिन जब किसी ने उसे बाहर निकल जाने के लिए नहीं कहा और अन्ना सर्गेयेवना ने अपनी मौसी तथा बहिन से उसका परिचय तक कराया तो उसने जल्दी ही अपने को सम्भाल लिया और भरपूर उत्साह से—जितना भी उससे बन सकता था—बातों की पिटारी खोलनी शुरू कर दी। जीवन में अनपेक्षित का विक्षेप भी बहुधा अच्छा होता है। अति पर पहुंचा तनाव उससे ढीला पड़ जाता है और आत्मविश्वास फिर ठीक-ठिकाने पर आ जाता है या कहिए कि हवाई घोड़े पर सवार आत्मप्रवंचना को हमारी भावनाओं को—उनका असली रूप दिखाकर—ठंडा कर देता है। सितनिकोव के आते ही हर चीज़ जैसे अधिक ठस अधिक बेजान—और अधिक सरल हो गई। यहां तक कि हरेक ने जी लगाकर साथ का भोजन किया और पूरी मण्डली और दिनों से आध घंटा पहले ही सोने के लिए चली गई।

आरकादी अपने बिस्तरे पर पहुंच गया था और बज़ारोव भी कपड़े उतार चुका था। तभी आरकादी ने उससे कहा

एक दिन तुमने मुझसे जो कहा था वही आज मैं तुम्हारे सामने भी दोहरा सकता हूं इतने उदास क्यों हो? लगता है जैसे किसी पुनीत कर्तव्य को पूरा करके आ रहे हो।

दोनों युवा मित्रों के बीच इधर ताने-कटाक्षों में बात करने की आदत का उदय हो गया था जो हमेशा अपने भीतर गुप्त आक्रोश या अज्ञात सन्देह छिपाए होती है।

"कल मैं अपने पिता के पास जा रहा हूं," बजारोव ने ऐलान किया।

आरकादी कोहनियों के बल उचक गया। उसे अचरज हुआ और साथ ही, जाने क्यों खुशी भी।

"ओह!" उसने कहा। "तो क्या इसी लिए उदास हो?"

बजारोव ने जमुहाई ली।

"उत्सुकता ने बिल्ली को ही मार डाला!"

"और अन्ना सेर्गेयेवना का क्या हाल है?"

"क्यों, उसे क्या हुआ?"

"मतलब यह कि क्या वह तुम्हें जाने दे रही है?"

"गोया मैं उसका बन्धेज हूं, क्यों?"

आरकादी सोच में डूब गया। बजारोव बिस्तरे पर जा लेटा और करवट लेकर मुंह दीवार की ओर कर लिया।

कई मिनट तक खामोशी छाई रही।

"येवगेनी," सहसा आरकादी ने कहा।

"क्या है?"

"मैं भी कल चल रहा हूं।"

बजारोव ने कुछ नहीं कहा।

"मैं सीधे घर जाऊंगा," आरकादी ने कहा। "खोखलोव की बस्ती तक हम साथ साथ चलेंगे। वहां फ़ेदोत तुम्हारे लिए सवारी का प्रबंध कर देगा। तुम्हारे घरवालों से मिलने के लिए जी तो मेरा भी करता है, लेकिन डर यही है कि कहीं मैं उनके और तुम्हारे लिए बेकार परेशानी का कारण न बन जाऊं। लौटते समय हमारे यहां फिर आना, आओगे न?"

"मेरी चीजें वहीं तो पड़ी हैं," मुंह फेरे बिना ही बजारोव ने जवाब में कहा।

आरकादी न मन ही मन सोचा

यह पूछना क्या नहीं कि म क्यो जा रहा हू ? सो भी उतना ही अचानक जितना कि वह ? जरा सोचो तो सही म क्यो जा रहा हू और वह क्या जा रहा है ? आरकादी न अपन विचारो का पल्ला नहीं छोडा। उस अपन सवाल का कोई सन्तोषजनक जवाब नहीं मिला और उसका हृदय एक प्रकार के तीखपन से भर गया। उसन महसूस किया कि इस जीवन से जिसका वह इतना अभ्यस्त हो गया अपन को विच्छिन्न करना कितना दुखदायक होगा। लेकिन फलस्वरूप अकेले यहा टिके रहना भी बडा बतुका मालूम होगा। उनके बीच जरूर कुछ हुआ है उसन अपन आपसे कहा उसके जान के बाद म ही क्या यहा चिपका रहू ? मेरे रहन से वह केवल और भी चिढ जाएगी और रहा-सहा भी हाथ स जाता रहेगा। अन्ना सेर्गेयेवना का चित्र उसकी कल्पना म मस्त हो उठा और युवती विधवा की वह सुन्दर छवि धीरे धीरे एक दूसरी छवि म परिवर्तित हो गई।

कात्या भी मेरे हाथ से जाती रहेगी आरकादी अपन तकिय म फुसफुसाया और निशब्द आसू का एक बूद ढलककर तकिय पर आ गिरी सहसा उसन अपन बालो को झटका और जोर से कह उठा

आखिर वह गधा सितनिकोव यहा क्या आ टपका ?

बजारोव अपन बिस्तरे पर कसमसाया। फिर बोला

सुनो बचवा देखता हू कि तुम्हारे दूध के दात अभी तक नहीं टूटे। सितनिकोव न हो तो यह दुनिया ठप्प हो जाए। मुझे इस जसे काठ के उल्लुओ की जरूरत है। नहा तो क्या तुम सचमुच देवताओ स भट्ठा गम कराने की आशा करते हो ।

हु ! आरकादी न मन ही मन सोचा और जसे एक ही कौंध में बजारोव के दम्भ की अतल गहराई उसकी आखो के सामन

उजागर हो गई, "तो तुम और मैं देवता हैं? या यह कहो कि तुम देवता और मैं तुम्हारा काठ का उल्लू हूं!"

"हां," बजारोव ने कहा, "तुम अभी तक निरे दुध-मुहे बच्चे हो।"

अगले दिन आरकादी से यह जानकर कि वह भी बज़ारोव के साथ जा रहा है, ओदिनत्सोवा ने कोई खास अचरज प्रकट नहीं किया। वह कुछ अस्तव्यस्त और थकी-सी मालूम होती थी। कात्या ने चुपचाप और गम्भीर नजर से आरकादी की ओर देखा। मौसी ने—और आरकादी की आंखें बरबस उधर घूम गई—शाल के भीतर चुपके से क्रास का चिन्ह बनाया। और सितनिकोव—उसका तो जैसे ढेर हो गया। लकदक़ नया सूट डाटे भोजन के लिए वह अभी नीचे आया था और उसका यह सूट, इस बार, स्लाविस्ट ढंग का नही था। एक से एक बढ़िया कपड़ों का अम्बार वह अपने साथ लाया था, इतना अधिक कि पिछली रात उसकी हाजिरी के लिए नियुक्त नौकर यह सब देखकर मुह बाए रह गया था। लेकिन अब उसके साथी थे कि उसे मझधार में छोड़े जा रहे थे! पहले तो वह कुछ कुनमुनाया, और इसके बाद जंगल के किनारे तक खदेड़े गए खरहे की भांति इधर-से-उधर लपका-झपका और फिर अचानक, जैसे किसी ने उसे बींध डाला हो, करीब क़रीब चीख़-सी भरता कह उठा कि वह भी जा रहा है। ओदिनत्सोवा ने कोई आपत्ति नही की।

इसके बाद, आरकादी की ओर मुड़ते हुए, उस बदकिस्मत युवक ने कहा:

"मेरी गाड़ी खूब आरामदेह है। मैं तुम्हे बैठा ले चलूंगा, और येवगेनी वसीलियेविच तुम्हारी तरन्तास ले लेंगे। यह ठीक रहेगा।"

"लेकिन मुझे अपने रास्ते से एकदम भटक जाना पड़ेगा। और मेरा घर काफी दूर है।"

"कोई बात नहीं। समय की मेरे पास कोई कमी नहीं। इसके अलावा मुझे उधर कुछ काम-काज भी निबटाना है।"

"ठेके पर कमीशन, यही न?" अत्यन्त अप्रकट हिकारत के लहजे में आरकादी ने कुरेदा।

लेकिन सितनिकोव इतना मग्न था कि अपनी टकसाली हंसी होठों पर नहीं ला सका।

"सच मान, गाड़ी बेहद आरामदेह है," वह बुदबुदाया, "और सब कोई मजे से बैठ सकते हैं।"

"इन्कार करके मौसियै सितनिकोव को दुखी न करें," अन्ना सेर्गेयेवना ने सहारा दिया।

आरकादी ने उसकी ओर देखा और भेद-भरे अन्दाज़ में अपने सिर को तिरछा कर लिया।

भोजन के बाद अतिथि विदा हुए। बजारोव से विदा लेते समय ओदिनत्सोवा उसे अपना हाथ देती हुई बोली

"फिर मिलते तो रहेंगे, क्या ठीक है न?"

"जैसा आप चाहें," बजारोव ने जवाब दिया।

"तब तो भेंट होगी ही।"

सबसे पहले आरकादी पोर्च की सीढ़ियां पर उतर आया और सितनिकोव की गाड़ी में सवार हो गया। भंडारी ने अदब से उसे सहारा दिया। अच्छा होता अगर वह उसे घूंसा जड़ देता या फूट-फूट कर रोने लगता। बजारोव ने तरन्तास में आसन जमाया। खोखलोव की बस्ती पहुंचने पर आरकादी सरायदार फेदोत के घोड़े

जोतवाने तक रुका रहा। इसके बाद बजारोव के पास गया और अपनी पुरानी मुसकराहट के साथ बोला :

"येवगेनी, मुझे भी अपने साथ ही ले चलो। तुम्हारा घर देखने को जी चाहता है।"

"तो आ जाओ भीतर," बजारोव ने दांतों के भीतर से कहा।

सितनिकोव जो अपने आपमे मगन सीटी बजा रहा था और अपनी गाड़ी के इर्द-गिर्द अलस मुद्रा में टहल रहा था, यह सुनकर हक्का-बक्का-सा खड़ा रह गया। उधर आरकादी ने अविचलित भाव से अपना सामान उठाकर बजारोव की गाड़ी मे पहुंचाया और खुद भी उसके बराबर में बैठ गया। फिर अदब के साथ अपने साथी की ओर सिर झुकाते हुए चिल्लाकर बोला: "चलो, कोचवान!" तरन्तास उछलती हुई बढ़ चली और जल्दी ही आंखो से ओझल हो गई। सितनिकोव ने, जो पूर्णतया सिटपिटा गया था, छिपी नजर से अपने कोचवान की ओर देखा। कोचवान बेखबर-सा आगेवाली घोडी की दुम पर अपने चाबुक की डोरी सरसरा रहा था। इसपर सितनिकोव उछलकर गाड़ी में सवार हो गया, उधर से गुजरते दो किसानों को देख उनपर बरसा: "सिर पर टोपी क्यों नही रखते, अक़्ल के दुश्मनो!" और शहर के लिए रवाना हो गया जहां वह काफी दिन ढले पहुंचा। अगले दिन कूक्शिना को उसने बताया कि वह उन दोनों के—"उन उजड्ड हरामखोरो के"— बारे में क्या सोचता है।

तरन्तास में बजारोव की बगल मे बैठने के बाद आरकादी ने उसके हाथ को कसकर दबाया और काफी देर तक कुछ न बोला। लगता था जैसे आरकादी का इस तरह हाथ दबाना और मौन धारण कर लेना बजारोव को अच्छा लगा। पिछली रात एक क्षण के लिए भी उसकी पलक नही झपकी थी, न ही

'लेकिन तुम्हें अपने रास्ते में एकदम भटक जाना पड़ेगा। और मेरा घर काफ़ी दूर है।'

'कोई बात नहीं। समय की मेरे पास कोई कमी नहीं। इसके अलावा मुझे उधर कुछ काम-काज भी निबटाना है।'

'डब पर कमीशन, यही न?' अत्यन्त प्रकट हिकारत के लहजे में आरकादी ने कुरेदा।

लेकिन सितनिकोव इतना मस्त था कि अपनी टक्साली हंसी होठों पर नहीं ला सका।

'सच मानो, गाड़ी बहुत आरामदेह है,' वह बुदबुदाया, 'और सब कोई मजे से बैठ सकते हैं।'

'इन्कार करके मौसिये सितनिकोव को दुखी मत करो', अन्ना सेर्गेयेवना ने सहारा दिया।

आरकादी ने उसकी ओर देखा और भेद भरे अन्दाज में अपने सिर को तिरछा कर लिया।

भोजन के बाद अतिथि विदा हुए। बजारोव से विदा लेते समय ओदिन्तसोवा उसे अपना हाथ देती हुई बोली:

'फिर मिलेंगे तो रहेंगे, क्यों, ठीक है न?'

'जैसा आप चाहें,' बजारोव ने जवाब दिया।

'तब तो भेंट होगी ही।'

सबसे पहले आरकादी पोर्च की सीढ़ियों पर उतर आया और सितनिकोव की गाड़ी में सवार हो गया। भंडारी ने अदब से उसे सहारा दिया। अच्छा होता अगर वह उसे घूंसा जड़ देता या फूट-फूट कर रोने लगता। बजारोव ने तरन्तास में आसन जमाया। खोखलोव की बस्ती पहुंचने पर आरकादी सरायदार फ़ेदोत के घोड़े

जोतवाने तक रुका रहा। इसके वाद वजारोव के पास गया और अपनी पुरानी मुसकराहट के साथ वोला :

"येवगेनी, मुझे भी अपने साथ ही ले चलो। तुम्हारा घर देखने को जी चाहता है।"

"तो आ जाओ भीतर," वजारोव ने दांतों के भीतर से कहा।

सितनिकोव जो अपने आपमें मगन सीटी वजा रहा था और अपनी गाड़ी के इर्द-गिर्द अलस मुद्रा में टहल रहा था, यह सुनकर हक्का-वक्का-सा खड़ा रह गया। उधर आरकादी ने अविचलित भाव से अपना सामान उठाकर वजारोव की गाड़ी में पहुंचाया और खुद भी उसके वरावर में वैठ गया। फिर अदव के साथ अपने साथी की ओर सिर झुकाते हुए चिल्लाकर वोला : "चलो, कोचवान !" तरन्तास उछलती हुई वढ़ चली और जल्दी ही आखों से ओझल हो गई। सितनिकोव ने, जो पूर्णतया सिटपिटा गया था, छिपी नजर से अपने कोचवान की ओर देखा। कोचवान वेखवर-सा आगेवाली घोड़ी की दुम पर अपने चावुक की डोरी सरसरा रहा था। इसपर सितनिकोव उछल-कर गाड़ी में सवार हो गया, उधर से गुजरते दो किसानों को देख उनपर वरसा : "सिर पर टोपी क्यों नही रखते, अक़्ल के दुश्मनो !" और शहर के लिए रवाना हो गया जहां वह काफ़ी दिन ढले पहुंचा। अगले दिन कुक्शिना को उसने वताया कि वह उन दोनों के— "उन उजड्ड हरामखोरों के"— वारे में क्या सोचता है।

तरन्तास में वजारोव की वगल में वैठने के वाद आरकादी ने उसके हाथ को कसकर दवाया और काफी देर तक कुछ न वोला। लगता था जैसे आरकादी का इस तरह हाथ दवाना और मौन धारण कर लेना वजारोव को अच्छा लगा। पिछली रात एक क्षण के लिए भी उसकी पलक नही झपकी थी, न ही

उसने सिगरेट पी थी और कई दिन से लगभग पेट में भी कुछ नहीं डाला था। एकदम आया तब खिचो टोपा के नीचे उसके मुख की अद्ध-मुद्रा बदहवाम-सी और क्षीण दिख रहा था।

अच्छा तो मित्र आखिर उसने खामोशी भंग की जरा चुरुट तो निकालो और इधर देखो क्या मेरी जीभ पानी मालूम होती है?

हां है तो आरखोदी ने जवाब दिया।

तभी तो और तुम्हारा यह चुरुट भी बजायका मालूम होता है। गड़बड़ मशीन में ही है

पिछले कुछ दिनों तुम सचमुच कुछ ठीक नहीं दिख रहे थे आरखोदी ने कहा

कोई चिन्ता नहीं सब ठीक हो जाएगा। या है यह कुछ अस्तगनवानी बात। मेरी मां कुछ इतनी सवेदनशील जीव है कि जब तक तुम्हारी तोंद बड़ी न हो और दिन में दस बार तुम न खाओ तो वह बरी तरह परेशान हो उठती है। वसे पिता भी बुरे नहीं हैं। कितनी ही जगह घूमे हैं और दुनिया को थोड़ा-बहुत देख आए हैं। नहीं चुरुट को फेंकते हुए फिर उसने कहा मिट्ठा मालूम होता है इसे पीना।

तुम्हारी जागीर यहां से सोलह-सत्रह मील होगी क्या? आरखोदी ने पूछा।

हां। लेकिन उस शान बदबक्त से पूछे न? कहते हुए उसने बाक्स पर बैठे गाड़ीवान की ओर इशारा किया।

लेकिन उस लाल बजक्कड़ ने कहा

कौन जाने इस की जमीन कभी नापी गई गई और फुसफुसाती आवाज में अपनी आगवानी घाड़ी को निरखता रहा

क्योंकि वह "थूथनी नचा रही थी", मतलव यह कि अपने सिर को झटक रही थी।

"हां हां," बजारोव ने फिर कहना शुरू किया, "यह तुम्हारे लिए एक सवक़ है, सीख देनेवाला सवक़, मेरे युवक मित्र। जहन्नुम में जाए, यह क्या गड़वड़झाला है? हर आदमी कच्चे धागे से लटका है, नीचे अतल गहराई मुह वाकर किसी भी क्षण उसे उदरस्थ कर सकती है, लेकिन वह है कि दुनिया भर के वखेड़े मोल लेता फिरता है, ख़ुद अपने जीवन के साथ तवाही के खेल खेलता है।"

"यह तुम किसकी ओर लक्ष्य कर रहे हो?" आरकादी ने पूछा।

"लक्ष्य-वक्ष्य मै कुछ नही कर रहा हूं। मै सीधे तुमसे, पूरी गम्भीरता से, कह रहा हूं कि हम दोनों काठ के उल्लू वनते रहे है। वातें वघारने से कुछ आता-जाता नही। लेकिन अस्पताल में मैंने देखा है कि जिसे दर्द वुरी तरह बौखला देता है, वह निश्चय ही उसपर विजय भी पा लेता है।"

"मेरी कुछ समझ मे नहीं आता कि यह सब तुम क्यों कह रहे हो," आरकादी ने कहा। "शिकायत की ऐसी कोई वात तो तुममे नजर नहीं आती।"

"अच्छा, चूंकि तुम मुझे कुछ समझ नही पा रहे हो, इसलिए सुनो, मैं तुम्हें वताता हूं: मेरी राय में सड़क के किनारे पत्थर तोड़ना कहीं अच्छा है, बनिस्वत इसके कि किसी स्त्री के चक्कर में पड़कर तुम अपनी कानी उंगली पर भी कोई आंच आने दो। वस, सौ वात की यही एक वात है..." वजारोव का प्रिय शव्द 'रोमान्टिकता' वाहर निकलने के लिए उसकी जुवान की नोक पर मचल रहा था कि उसने अपने आपको रोक लिया और वोला: "निरी ख़ुराफ़ात! तुम

शायद अभी विश्राम न करो लेकिन मैं तुम्हे बताना चाहता हू तुम और मैं दोनो स्त्रियो की सगत में रहे हैं और उसमें आनन्द भी हमने लिया है। लेकिन ऐसी सगत से छुटकारा पाना वैसा ही है जैसे गर्मी मे तप्त दिन में ठडी फुहारो में स्नान करना। ऐसी फिजूल बातो में गवाने के लिए आदमी के पास समय कहा है? रूस की एक बहुत ही अच्छी पुरानी कहावत है आदमी वही है जो निवध हो। फिर कोचबाक्स पर बैठ देहकान की ओर मुडते हुए बोला ए, इधर देखो लाल दुलक्कड क्या तुम्हारे बीवी है?

देहाती सवार ने अपनी चिपचिपी आखोवाला चपटा चेहरा हमारे मित्रो की ओर घुमाया।

बीवी कहा न? बिगत मर के बाबा है।

उसे पीटते भी हो?

बीवी क पीटना। जस लोग तस लोग। पर बच्चोन कभी नही पीटता।

बहुत खब लेकिन यह बताओ क्या वह तुम्हे कभी पीटती है?

उसने अपनी रास को झटका।

जाण कैसा-क्या बोलना मालिक! मज्जाक करता माफ था कि उस बुरा लगा।

सुना तुमने आरकादी निकोलायेविच! और हम और मैं हैं कि चाबुको की मार खाकर आ रहे हैं यही शिक्षित होने का फायदा है।

आरकादी ने जबरदस्ती हसने का प्रयत्न किया। उधर बजारोव ने अपना मुह मोड लिया और फिर रास्ते भर मुह न खोला।

सोलह-सत्रह मील का रास्ता आरकादी को ऐसा मालूम हुआ

जैसे बढ़कर तीस-बत्तीस मील बन गया हो। आखिर, पहाड़ी ढलुवान पर, एक गांव दिखाई दिया। यहीं बजारोव के माता-पिता रहते थे। पास ही, नये बर्च वृक्षों के एक झुरमुट में, एक छोटा-सा घर था जिसपर फूस का छप्पर छाया था। पहली झोंपडी के आगे सिर पर टोपी डाटे दो किसान झड़प रहे थे। "सण्डमुस्टण्ड मुअर," एक दूसरे से कह रहा था, "जहां-तहां मुह मारते फिरते हो!" दूसरे ने नहला पर दहला रखते हुए जवाब दिया: "और तुम्हारी बीवी – वह डायन है, डायन!"

"देखा तुमने," बजारोव ने आरकादी को बताते हुए कहा, "इनके निर्बंध व्यवहार और चुटकियों-भरी बातों से पता चल जाता है कि मेरे पिता के किसान कुछ ऐसे रौंदे-कुचले और पस्त नहीं हैं। यह लो, वह खुद भी सामने मौजूद हैं। घर की पैडियों पर आ गए हैं। घंटियों की टुनटुन कानों में पड़ी होगी। वही हैं – हां, वही हैं, उनका ढांचा साफ कह रहा है कि वही हैं। टट टट! लेकिन देखो, बालों पर सफेदी आ चली है न उनके, ओह!"

२०

बजारोव तरन्तास से बाहर झुक आया, आरकादी ने भी अपनी गरदन उचकाकर मित्र के पीठ-पीछे से देखा। लम्बे कद के एक छरहरे-से आदमी पर उसकी नजर पडी। बाल उलझे हुए, बढ़िया तोते-जैसी नाक, बदन पर पुराना फ़ौजी कोट जिसके बटन खुले थे। टांगें चौड़ी किए, मुंह में लम्बी डंडी का पाइप लगाए और सामने से पड़ती सूरज की धूप के मारे आंखों को सिकोड़े वह पोर्च की सीढ़ियों पर खड़े थे।

घोड़े रुक गए।

आखिर तुम आ ही गए बज़ारोव के पिता ने कहा और वैसे ही तम्बाकू पीते रहे, हालांकि चिबुक–लम्बी डंडी का पाइप–उनकी उंगलियों में थिरक और अच्छा-खासा नाच-सा-नाच रहा था। अच्छा तो अब उतर आओ उतर आओ और ज़रा एक चुम्मा तो दो।

उन्होंने अपने बेटे को कलेजे से लगा लिया

यवगेनी मेरे मुन्ना यवगेनी किसी स्त्री की थरथराती हुई आवाज़ आई। दरवाज़ा फटाक से खुला और सफेद टोपी तथा चटख रंगों की छोटी जाकेट पहने एक गोल मटोल बहुत ही प्यारी वृद्ध महिला ड्योढ़ी में दिखाई दी। उसका हृदय चौंक उठा बदन ने एक धोखा खाया और अगर बज़ारोव ने उसे थाम न लिया होता तो शायद वह गिर पड़ती। देखते ही देखते उसकी गुदगुदी बाहें बज़ारोव के गले से लिपट गईं सिर उसकी छाती से जा चिपका और चारों ओर की हर चीज़ जैसे सांस रोककर निस्तब्ध हो गई। वृद्धा की टूटी हुई सुबकियों के सिवा और कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा था।

वृद्ध बज़ारोव भारी सांस ले रहे थे और पहले की भांति–बल्कि उससे भी अधिक–अपनी आंखों को सिकोड़ थे।

बस बस, अरीना अब बस करो उन्होंने कहा और उनकी आंखें आरकादी से जा मिलीं जो गाड़ी से सटा खड़ा था और कोचवान ने तो अपना मुंह तक फेर लिया। सच, यह एकदम बेकार है। कृपया बंद भी करो अब!

आह वसीली इवानिच वृद्धा हकलाती-सी बोली, 'कितनी मुद्दत के बाद मेरे कलेजे का टुकड़ा, मेरी आंखों का तारा आज दिखाई दिया है और अपनी बांहों के बंधन को ढीला किए बिना ही

उसने आंसुओं से भीगा और झुर्रियां-पड़ा दमकता हुआ चेहरा कुछ पीछे खींच लिया, अटपटे-से अन्दाज मे चाव-भरी नजर से उसे देखा और फिर उसके गले से लिपट गई।

"हां ठीक. . बेशक ठीक... ऐसा ही होता है," वसीली इवानिच ने कहा, "लेकिन अच्छा हो कि अब हम भीतर चले। देखता हूं, येवगेनी अपने साथ एक मेहमान को भी लाया है।" फिर पांव को थोड़ा फटफटाकर आरकादी की ओर मुड़ते हुए बोले: "माफ कीजिएगा, जानते ही है कि स्त्रियो का–तिस पर भी मा का–हृदय बिल्कुल मोम होता है.. "

लेकिन ख़ुद उनके होंठ और भौहे बल खा रही थी और ठोड़ी थरथरा रही थी... साफ मालूम होता था कि वह अपने भावों को बस में रखने का प्रयास कर रहे हैं, करीब करीब तटस्थता का अभिनय करने के हद तक।

आरकादी ने सिर झुकाकर नमस्कार किया।

"चलो मां चलो, तुम तो सचमुच," बजारोव ने कहा और भावों से अभिभूत वृद्धा को सहारा देकर घर मे लिवा ले गया। उसे आरामदेह कुर्सी में बैठाकर उतावली के साथ वह एक बार फिर अपने पिता के गले से लिपट गया और आरकादी का परिचय कराया।

"आपसे मिलकर आन्तरिक खुशी हुई," वसीली इवानिच ने कहा, "यहां जो कुछ भी रूखा-सूखा है, आपके लिए हाजिर है। सादा जीवन हम बिताते है, फ़ौजियों के ढर्रे पर। अरीना व्लासियेवना, अब तो शान्त हो जाओ, सच। इतना मुलायम होना भी ठीक नही। देखो न, ये सज्जन भी जाने क्या सोचेंगे तुम्हारे बारे में।"

"प्रिय महोदय," वृद्धा ने आंसुओं के बीच लड़खड़ाती आवाज मे कहा, "आपका नाम जानने की खुशी से मै अभी तक.. "

आत्मा निवासीपविच वसीली इवानिच न गम्भीर भाव म इन्तिरतन बनाया।

माफ कर म भी बस यही हू कहते हुए वृद्धा ने अपनी नाक साफ की और अपन सिर का पहले एक ओर और फिर दूसरी ओर झुकाते हुए सावधानी के साथ धारी वारी म अपनी आखो को पाछा। फिर बोली माफ करना। सच मुझे कुछ एसा लग रहा था कि अपन कलेज के टुकड़े को बिना देख ही मरे प्राण छूट जाएग।

लेकिन अब तो वह तुम्हारे सामने है सलाम वसीली इवानिच न कहा और फिर तेरह वर्ष की लग पाव और चटक लाल रंग का सूती फ्राक पहने एक लड़की की ओर जो सहमी-सी दरवाजे की ओट में स झाक रहा थी मुड़कर हुक्म दिया सालेविन के लिए एक गिलास पानी ला ट्र आओ। और देखो तश्तरी म रखकर लाना समझी। और आप महानुभावो पुराने ढंग की मेहमाननवाजी के साथ उसने फिर कहा आप लोग पैन्शन प्राप्त इस पुराने सैनिक के अध्ययनकक्ष का पवित्र करने की कृपा करें।

प्यारे यवगनी जरा इधर आओ तुम्हे एक बार और दुलार ल अरीना व्लासियेवना बुदबुदाई। बजारोव झुककर नीचे हो गया। सच कैसा फरिश्ते-सा जवान बन गया है तू।

चाहे फरिश्ते-सा हो या न हो वसीली इवानिच न टीप की लेकिन ओम्म* तो है ही—जैसी कि कहावत है। और अब अरीना व्लासियेवना आशा है कि तुम्हारा मा का हृदय तृप्त हो गया होगा सो हमारे प्यारे महमानो का पट भरने की भी कुछ जुगत करो। कारण तुम जानती ही हो कि मीठी बातो स पेट नहीं भरता।

---

* ओम्म (फ्रेंच homme fait)—मर्द-बच्चा।—स०

वृद्धा अपनी आरामकुर्सी से उठ खड़ी हुई।

"अभी, एक मिनट में, दस्तरखान बिछ जाता है, वसीली इवानिच। मैं खुद जाकर रसोई को संभालती हूं और समोवर गरम करवाती हूं। मैं खुद हर चीज की देख-भाल करूंगी। जरा सोचो तो, पूरे तीन साल बाद उसे अपनी आंखों से देखने और उसकी जरूरतों को पूरा करने का यह दिन आया है।"

"बस बस, जाकर सब ठीक कर दो, हमारी प्रिय मेजबान। लेकिन इसका ध्यान रखना, हमें लजाना न पड़े। और आप महानुभावो, कृपया मेरे साथ तशरीफ ले चलें। ओहो, यह देखो येवगेनी, तुम्हारा अभिनन्दन करने तिमोफेइच भी आ गया। मैं समझता हूं, खुशी के मारे यह भी फूला न समाता होगा। पुराना चाकर जो ठहरा। क्यों, तुम खुश हो न, वुढ़ऊ? हां इधर, कृपया इधर से आइए।"

और वसीली इवानिच, अपने घिसे-पिटे सलीपरों को फटफटाते तथा सटर-पटर करते तेजी से बढ़ चले।

समूचे घर में कुल जमा छै छोटे छोटे कमरे थे। इन्हीं में से एक, जिसमें वह मेहमानों को ले गए, अध्ययनकक्ष कहलाता था। दोनों खिड़कियों के बीच की समूची लम्बाई मे, दीवार से सटी, भारी पायों की एक मेज बिछी थी। मेज पर काग़ज बिखरे थे और धूल की न जाने कितनी पुरानी तह से वह काली – एकदम कारिखपुती-सी – हो गई थी। दीवार पर तुर्की अस्त्र-शस्त्र, घोड़सवारी के चाबुकों की मूठें, दो फौजी नक़्शे, अवयव सम्बन्धी कुछ चार्ट, गुफ़लैण्ड का एक छविचित्र, काले चौखटे में बालों से बुना मोनोग्राम, और काच से रक्षित एक प्रमाण-पत्र टंगे थे। करेलियन बर्च की लकड़ी के दो भीमाकार किताबों की आलमारियों के बीच चमड़े का एक सोफ़ा रखा था जिसमें जगह जगह गढ़े और दरारे पड़ी हुई थीं। खानों में किताबें,

छोटी मंदूकचियां भभा भरी चिड़िया मनवान और छोटी मोटी नागिया बनर्जीओं म प) थी। एक कान म बिजली की टगी हुई मशीन खड़ी थी।

मरे प्रिय मग्मान वमीनी इवानिच न कहना शुरू किया मन पहल आपका बता दिया था कि हम लोग यहां—जैसा कि कहत ह सनिका क पराव जसा जावन बिताते ह

बस रहने दीजिए बज़ारोव न बाच म ही कहा आखिर यह माफीनामा खोजन की क्या जरूरत है? किरसानोव अच्छी तरह जानत ह कि हम कोई कुबेर नहीं ह और यह कि हम महल म नहीं रहते। सवाल यह है कि इन्ह टिकाया कहा जाएगा?

यह कौन बड़ा बात है यवगनी। सच बाजू म एक छोटा-सा बहुत ही शानदार कमरा है। तुम्हारे मित्र क लिए काफी आरामदेह रहेगा।

तो यह कहा कि तक नया बाजू बनवा लिया है क्यों?

इसम भी क्या शक है मालिक! जहां गमखाना है न मालिक निमाफइच न कहा।

यानी गमखाने की बगल म वमीली इवानिच न उतावली में कहा आजकल गर्मियों के दिन ह म अभी जाकर सब ठीक कराए देता हू। और तुम निमाफेच इस बीच इन मजन का सामान उठा लाओ। और तुम यवगनी कहने की जरूरत नहीं कि मेरे अध्ययनकक्ष म ही अपना आसन जमाओगे। Suum cu que*।

वमीली इवानिच के कमरे स जाते ही बज़ारोव कह उठा

देखा तुमने कितना मज़ेदार है यह बूढ़ा और उतना ही

---

* जिसे जो भाये सो पावे। (लेटिन)—स०

स्नेह-भरा जितना कि कोई हो सकता है। तुम्हारे पिता की भांति यह भी कुछ सनकी हैं, लेकिन भिन्न प्रकार के। हालांकि बातूनी बेहद हैं।"

"और तुम्हारी मा—मुझे तो वह अद्भुत मालूम होती है," आरकादी ने राय दी।

"हां, एकदम निश्छल आत्मा। देखना, क्या क्या भोजन कराती है।"

"हम नही जानते थे, मालिक, कि आप आज आ रहे है," तिमोफ़ेइच ने जो अभी बजारोव का सूटकेस लेकर आया था कहा, "इसलिए बाजार से कोई खास मांस-वांस नही मंगा सके।"

"उसके बिना भी चल जाएगा। अगर नही है, तो न सही। कहते है न—गरीबी कोई पाप नही।"

"तुम्हारे पिता कितने भू-दासों के स्वामी हैं?" सहसा आरकादी ने पूछा।

"जागीर उनकी नहीं, मां की है। जहां तक याद पड़ता है, पन्द्रह होंगे।"

"ओह नही, कुल मिलाकर बाईस हैं," तिमोफेइच नाखुश-सा बीच मे ही बोल उठा।

तभी सलीपरों के फटफटाने की आवाज सुनाई दी और बसीली इवानिच आ मौजूद हुए।

"आपका कमरा अभी कुछ मिनटों में ही ठीक हो जाएगा," गम्भीरता से उन्होने ऐलान किया, "आरकादी ... निकोलायेविच? क्यों, ठीक है न?" फिर सिर के बाल छंटे और कोहनियों पर से फटा नीला झगला तथा किसी दूसरे के जूते पहने एक लड़के की ओर इशारा करते हुए बोले: "और यह आपकी खिदमत में रहेगा। इसका

नाम है धनिया। मेरे बेटे होते तो मेरी यह बात कभी गवारा न होती लेकिन मुझे कहना होगा कि कि इससे अच्छा हम और कुछ आपको पेश नहीं कर सकते। आपको पान तो यह भेंट ही सकता है। आप तम्बाकू तो पाते हैं न क्या?

अक्सर मैं खैर ही पाता हूँ आरकाश ने जवाब दिया।

और यह आप बड़ी बुद्धिमानी करते हैं। मैं खुद भी चुरट ही पसन्द करता हूँ लेकिन इस निराले इलाके में उनका मिलना मुश्किल है।

बस बस ज्यादा भिखारी का नाटक न करो बजारोव ने इस दफा फिर टोका की। अच्छा हो कि यहाँ सोफे पर आकर बैठो जिससे जी भरकर तुम्हें एक बार फिर देख तो सकूँ।

वसीली इवानिच मेहमानों के भीतर ही भीतर हंस और सोफे पर बैठ गए। उनकी शक्ल अपने बेटे से आश्चर्यजनक रूप से मिलती थी सिवा इसके कि उनका माथा उतना ऊंचा और प्रशस्त नहीं था और उनका मुंह अधिक चौड़ा था। वह निरन्तर कसमसाते और कंधों को सिकोड़ते रहते थे मानो उनके कपड़े बगलों के पास जरूरत से ज्यादा तंग हों। वह निरन्तर आँखों को मिचमिचाते गले को साफ करते और उंगलियों को मरोड़ते रहते थे। इसके प्रतिकूल उनका बेटा एक बेपरवाह किस्म की निश्चलता का दामन पकड़े मालूम होता था।

भिखारी का नाटक वसीली इवानिच ने दोहराया यह न समझो येवगेनी कि मैं अपने मेहमानों के दिलों को हिला डालकर जैसा कि कहते हैं उनमें एक तरह की दया उपजाना चाहता हूँ कुछ इस रूप में कि देखो कितनी मनहूस जगह है यह जहाँ हम रहते हैं। नहीं इसके प्रतिकूल मेरा मत यह है कि एक विचारशील मस्तिष्क के लिए मनहूस जगह जैसी कोई चीज नहीं होती। जो हो मैं इस बात

के लिए कठिन से कठिन प्रयत्न करता हूं कि मुझपर, जैसा कि कहते है, काई न जमने पाए, और जमाने की रफ़्तार में सबसे आगे रहूं।"

वसीली इवानिच ने अपनी जेब मे से नीबू के रंग का रूमाल निकाला जिसे उन्होंने आरकादी के कमरे में जाते समय अपने कमरे में से ले लिया था और उससे पंखा-सा झलते हुए कहने लगे:

"इस तथ्य का मै कुछ नही कहता कि मैने, मिसाल के लिए, खुद काफी घाटा उठाकर भी, अपने किसानो को काश्तकार किसान बना दिया है और आधी फसल मुझे देने की शर्त के साथ अपनी भूमि उनके नाम कर दी है। इसे मैं अपना कर्तव्य और बहुत ही न्यायसंगत चीज समझता हूं, हालाकि अन्य भूपति इसका सपना तक नहीं देख सकते। मेरा मतलब विज्ञान और शिक्षा के हितो से है।"

"सो तो है। देखता हूं, उधर १८५५ का 'स्वास्थ्य-मित्र' भी आपने रख छोडा है," बजारोव ने कहा।

"मेरे एक मित्र, पुराने दिनों की याद में, इसे भेज देते है," वसीली इवानिच ने उतावली से कहा, "लेकिन हम कुछ और भी दिलचस्पी रखते है, मिसाल के लिए जैसे मस्तिष्क-विज्ञान के बारे में," उन्होने इस तरह कहा जैसे आरकादी के लाभ के लिए बोल रहे हों, और शेल्फ पर रखे सिर के एक छोटे साचे की ओर इशारा किया जिसपर लकीरें खींचकर अनेक वर्ग बने हुए थे और इन वर्गो में नम्बर पड़े हुए थे। फिर बोले—"ऐसा नहीं है कि हम, मिसाल के लिए, शेनलीन या रादेमाखर से एकदम अपरिचित हो।"

"तो क्या इस गुबेर्निया मे रादेमाखर का नाम अब उछाला जाता है?" बजारोव ने पूछा।

वसीली इवानिच खांसने लगे।

"ऐ ... ऐ ... इस गुबेर्निया ... इसमे क्या शक कि आप

महानुभाव ज्यादा जानकार है। आप हममे कहीं आगे हैं। आखिर हमारे वालिस जो ठहरे। अपने ज़माने में हम भी हौफमैन जैसे विकारवादी या ब्राउन जैसे जीवनतत्ववादी का ज़िक्र तक बड़ा बेहूदा मालूम होता था हालांकि एक समय इन लोगों ने काफी तहलका मचा दिया था। अब आप लोगों ने हानेमान्न की वकालत करनेवाला किसी नया विभूति का दामन पकड़ा है और अब आप उसकी आरती उतारते हैं लेकिन लगभग बीस वर्ष में शायद वह बेहूदगी का पिटारा बनकर रह जाएगा।

आपको यह जानकर तसल्ली होगी बज़ारोव ने कहा कि हम चिकित्साशास्त्र मात्र को बेहूदगी का पिटारा मानते हैं और किसी भी चीज़ की आरती नहीं उतारते।

क्या मतलब? आप खुद भी तो डाक्टर बनने जा रहे हैं क्या ठीक है न?

हां बनने जा रहा हूं। लेकिन इससे कुछ सिद्ध नहीं होता।

वसीली इवानिच ने अपने पाइप की कटोरी में गर्म राख को बिचली उंगली से दबाया और कहना शुरू किया

हो सकता है यह भी हो सकता है बहस में मैं नहीं पडूंगा। आखिर मैं क्या हूं? एक अवकाशप्राप्त फौजी सर्जन—बस और कुछ नहीं और अब मैं किसानी में लगा हूं। मैं आपके दादा की ब्रिगेड में रह चुका हूं उन्होंने एक बार फिर आरकादी को सम्बोधित किया हां श्रीमान अपने ज़माने में मैंने भी थोड़ा-बहुत दुनिया देखी है। सभी तरह की सोसाइटियों में रहा हूं सभी तरह के लोगों से वास्ता पड़ा है। यह शख्स जो आपके सामने मौजूद है—यानी मैं—प्रिंस विट्गेन्श्टाइन और कवि जुकोवस्की जैसे लोगों की नाड़ी पर अपनी उंगली रख चुका है। और दक्खिनी फौज के लोगों का जहां तक सम्बन्ध है—

उनका जो चौदह दिसम्बर* की घटनाओं की जड़ थे," (यहां वसीली इवानिच ने अपने होंठ भेद-भरे अन्दाज मे विचकाए) "सच, उनमे से प्रत्येक को मैं जानता था। यों, कहने की जरूरत नहीं, उनसे मेरा कोई सरोकार नही था, मेरा काम तो बस नश्तर संभालना था, इससे अधिक और कुछ नहीं। लेकिन आपके दादा का बेहद मान था, और वह सच्चे सैनिक थे।"

"बस रहने दीजिए," बजारोव कुनमुनाया, "साफ साफ़ क्यो नहीं कहते कि वह कुन्द-दिमाग़ थे।"

"बाप रे! तुम भी अजीब फ़िकरे इस्तेमाल करते हो, येवगेनी! सच ... इसमें शक नही . जेनरल किरसानोव उन लोगों मे से नहीं थे जो .."

"छोड़िए उन्हें," बजारोव ने बीच में ही कहा, "यहा आते समय यह देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई कि बर्च वृक्षों का आपका कुज खूब पनपा है।"

वसीली इवानिच का चेहरा खिल उठा।

"और मेरे बगीचे को भी देखना, कितना बढ़िया है। हर पेड़ को खुद अपने हाथों से मैंने रोपा है। फल हैं, रसभरियां है और तरह तरह की जड़ी-बूटियां है। तुम नयी पीढ़ी के लोग चाहे जो कहो, लेकिन बाबा पारासेल्सस का यह कथन पुनीत सत्य को ही व्यक्त करता है – in heibis, verbis et lapidibus...** मैं अब डाक्टरी का धंधा नही करता –

---

* उसका संकेत दिसेम्ब्रिस्टो के गुप्त क्रान्तिकारी समाज ('दिसेम्ब्रिस्टों का दक्षिणी समाज') के सदस्यों से है। उक्त समाज का अध्यक्ष पेस्टेल था (१७९३–१८२६)। – सं०

** जड़ी-बूटियों, शब्दों और पत्थरों से। (लैटिन) –सं०

तुम जानते हो हा—लेकिन हफ्ते में एक या दो बार फिर भी डुबकी लगा ही लेता हूं। लोग सलाह के लिए आते हैं और उन्हें लौटा सकना एकदम सम्भव भी नहीं हो सकता। जब-तब कोई न कोई बंगाली आ टपकता है और इलाज के लिए सिर पड़ जाता है। और फिर आस-पास डाक्टर हैं भी नहीं। शायद तुम यकीन न करो, हमारे एक पड़ोसी हैं—अवकाशप्राप्त मेजर। वह भी डाक्टरी करते हैं। एक दिन मैंने किसी से पूछा—क्या उन्होंने कभी डाक्टरी पढ़ी है? नहीं—जवाब मिला—उन्होंने डाक्टरी नहीं पढ़ी। बंगाली डाक्टर हैं हां, हां सेवा की भावना से डाक्टर बने हैं! क्यों, है न अद्भुत! हा हा हा हा।

फदिया, मेरा पाइप तो भर ला! बजारोव ने कड़ी आवाज में कहा।

या इधर के एक और डाक्टर को लो, वसीली इवानिच ने एक तरह की निराशा भरे स्वर में कहना शुरू किया। वह मरीज को देखने आते हैं। मालूम होता है कि मरीज अपने पुरखों के पास पहुंच चुका है। नौकर उन्हें भीतर पांव तक नहीं रखने देते कि अब आपकी जरूरत नहीं। डाक्टर अचकचाकर रह जाते हैं। उन्हें इसकी उम्मीद नहीं थी। पूछते हैं, भला यह तो बताओ, मरने से पहले क्या मालिक को हिचकियां आई थीं? हां सरकार, आई थीं। क्या ज्यादा हिचकियां आई थीं? हां, बहुत। ओह, ठीक, यह अच्छा लक्षण है। और वह नौ दो ग्यारह हो गए। हा-हा हा!

वृद्ध अकेले ही हंस रहे थे। आरकादी मुसकराहट में बल खाकर रह गया। बजारोव केवल अपने पाइप से कश खींचता रहा। इस प्रकार करीब एक घंटे तक बातचीत चलती रही। आरकादी इस बीच अपने कमरे में चला गया जो कि असल में गुसलखाने का ही एक प्रकोष्ठ

था, लेकिन यों साफ़-सुथरा और आरामदेह था। आखिर तान्या ने आकर सूचित किया कि भोजन तैयार है।

वसीली इवानिच सबसे पहले उठे।

"चलिए, महानुभावो! इतनी देर तक आप लोगों को उबाने के लिए मै तहे दिल से माफी चाहता हूं। शायद हमारी मेजबान इसकी कसर पूरी कर दे।"

वावजूद उसके कि जल्दी में तैयार किया गया था, फिर भी भोजन वढ़िया था; वल्कि कहिए कि ठाठदार था, एक मदिरा को छोड़कर--जो कुछ जमी नही। अपनी जान-पहचान के किसी दलाल से तिमोफ़ेइच यह शेरी खरीद लाया था। रंग उसका क़रीव क़रीव काला पड़ गया था और इसके जायके मे ताम्बे ऐसा कसैलापन था, या कहिए कि विरोजे ऐसा। और मक्खिया भी वड़ी वेहूदा मालूम होती थी। साधारणतया एक भूदास छोकरा वड़ी-सी हरी टहनी से इन मक्खियो को उड़ाता रहता था। लेकिन वसीली इवानिच ने आज इस डर से उसे छुट्टी दे दी थी कि कहीं उन्हें नयी पीढ़ी की मलामत का निशाना न वनना पड़े। अरीना व्लासियेवना इस वीच खूव लकदक़ वन गई थी। सिर पर वह रेशमी डोरियां वंधी ऊंची घरेलू टोपी पहने थी, और कंधो पर आसमानी रंग का शाल डाले थी जो खूव वेल-वूटों से सजा था। अपने प्यारे येवगेनी को देखकर एक वार फिर उसकी आंखो मे आंसू तिर आए, लेकिन इससे पहले कि पति उसे झिड़कने का मौका पाता, उसने जल्दी से अपने आंसुओं को पोंछ लिया। इसलिए और भी कि कही उसका शाल गीला न हो जाए। दोनों युवको ने अकेले ही खाया, कारण कि मेजवान वहुत पहले ही भोजन कर चुके थे। फ़ेदिया ने परसने का काम किया। नाप मे वडे उसके जूते, प्रत्यक्षतः, उससे संभाले नहीं संभल रहे

थे। मदद के लिए अनरीमुना नाम की एक स्त्री उसका हाथ बटा रही थी। वह एक आँख की काना थी और चेहरा मोहरा मर्दों-जैसा था। घर का काम-काज, मुर्गियों की देख भाल और कपड़े धोना—एक साथ सभी काम वह करती थी। भोजन के समूचे दौरान में वसीली इवानिच कमरे में इधर से उधर और उधर से इधर टहलते रहे। उनके चेहरे पर असाधारण करीब करीब नैसर्गिक उल्लास झलक रहा था और वह नेपोलियन की नीति तथा इटालियनों के उत्थान को लेकर गहरी आशंकाएँ प्रकट कर रहे थे। अरीना व्लासियेवना आरकादी की ओर से बेखबर थी, और उसकी खातिर-तवाजो की ओर भी उसका ध्यान नहीं गया। वह तो बस अपने गोल मटोल चेहरे को अपने हाथों पर टेके अपने बेटे पर ही नज़र जमाए रही और रह रहकर ठंडी उसाँस छोड़ती रही। गदराए हुए लाल चेरी जैसे उसके होठों तथा गालों और भौंहों के ऊपर पड़े तिलों ने उसकी मुखमुद्रा को बहुत ही भला—सुहावना—बना दिया। उसकी जान यह जानने के लिए छटपटा रही थी कि वह कितने दिन टिकेगा लेकिन उससे पूछने डरती थी। अगर कह बैठा कि दो दिन तब क्या होगा? इसी सोच में उसका दिल बैठा जा रहा था।

भुने मांस के दौर के बाद वसीली इवानिच कुछ क्षणों के लिए वहाँ से ओझल हो गए और हाथों में शैम्पेन की खुली हुई आधी बोतल लेकर लौटे।

यह देखिए, उन्होंने इठलाकर कहा, भले ही हम निपट देहात में रहते हों, लेकिन खुशी के मौक़ों पर दिल को गरमाने का साज़-सामान यहाँ भी मौजूद है!

उन्होंने तीन बड़े गिलासों और एक छोटे गिलास में मदिरा उड़ेली, अपने अनमोल मेहमानों के स्वास्थ्य की कामना की और फौजी अन्दाज़ से एक ही घूँट में अपना गिलास खाली कर दिया। और अरीना

क्लासियेवना के गले मे भी, गिलास की आखिरी बूद तक, उंडेलकर ही उन्होंने दम लिया।

फिर मुरब्बों की बारी आई। आरकादी को मीठी चीज़ें नही भाती थीं, लेकिन लिहाज में आकर उसे चार तरह की ताजा तैयार की गई 'नफ़ासतों' को गले के नीचे उतारना पड़ा, खासतौर से इसलिए कि बजारोव ने उन्हे छूने से इन्कार कर दिया था और चुरुट सुलगाकर कश खींचना शुरू कर दिया था। इसके बाद क्रीम, मक्खन और केकों के साथ चाय का नम्बर आया। अन्त मे, संध्या का आनन्द लेने के लिए, वसीली इवानिच ने सबको बगीचे मे चलने का निमंत्रण दिया। एक बैंच के पास से गुजरते समय उन्होंने आरकादी से फुसफुसाकर कहा, "यही वह जगह है जहां बैठकर मैं छिपते हुए सूरज को देखा करता हू और थोड़ी-बहुत दार्शनिकता में डूबता-उतराता हूं। एकान्तवासी के लिए यह बहुत ही माक़ूल धंधा है। और वहा, थोड़ा आगे, मैंने कुछ पेड़ लगाए हैं जो होरेस के प्रिय माने जाते हैं।"

"किस किस्म के पेड़?" बजारोव ने पूछा। वह भी उनकी बात सुनता रहा था।

"अरे वही बबूल के पेड़।"

बजारोव जमुहाई लेने लगा।

"मैं समझता हूं," वसीली इवानिच ने कहा, "हमारे मुसाफिरों को अब मौरफ़्यूस की गोद में चलना चाहिए।"

"दूसरे शब्दों में यह कि सो जाना चाहिए," बजारोव ने तुरन्त बात को पकड़ा, "अच्छा सुझाव है। सचमुच समय हो गया।"

बजारोव ने, सोने के लिए विदा होने से पहले, अपनी मा का माथा चूमा। मां ने उसे अपने गले से लगाया और उसके पीठ फेरने पर चुपचाप तीन बार क्रास का चिन्ह बनाकर उसे आसीस दी।

वमीली इवानिच मास्कादी को छोड़ने उसके कमरे तक उसके साथ गए और कामना प्रकट की, तुम्हें भी वैसी ही मुबारिक नींद प्राप्त हो जिसका कि मैं—उन दिनों जब मैं तुम्हारी आयु का था—उपभोग करता था।"
और सचमुच स्नानघर के सामवार उस कमरे में आरकादी जैसे घोड़े बेचकर सोया। कमरा पीपरमिण्ट एसी भीनी गंध से भरा था और तन्दूर के पीछे दो झिंगिनियां उनींदी-सी आवाज में झनकार रही थीं।
वमीली इवानिच अपने अध्ययनकक्ष में लौट आए और वहां, अपने बेटे के पैताने सोफे पर जम गए। स्पष्ट ही उनके मन में बात करने की इच्छा थी। लेकिन बज़ारोव ने उन्हें तुरंत विदा कर दिया। कहा कि उसकी पलकें झपकी जा रही हैं हालांकि सच यह था कि वह सोया नहीं, पौ फटने तक जागता रहा। उसकी आंखें बरबड़ी-सी खुली थीं, और रोष के साथ वह अंधेरे में ताक रहा था। बचपन की स्मृतियों में उसके लिए कोई आकर्षण न था इसके अलावा हाल के दुःखद अनुभवों अनुभूतियों से वह अभी तक नहीं उबर सका था। अरीना व्लासियेवना जी भरकर दुआ प्रार्थना करने के बाद बहुत देर तक अनफ़ासुश्का से बात करती रही। अपनी मालकिन के आगे अनफीसुश्का ऐसे खड़ी थी जैसे उसे वहीं जाम कर दिया गया हो, और अपनी एकमात्र आंख की अवाभूत टकटकी द्वारा, रहस्यमय कम्पनों और फुसफुसाहटों के रूप में यवगनी वमीलियविच सम्बन्धी अपने तमाम विचारों और भावनाओं को व्यक्त कर रही थी। एक तो इतनी खुशी, तिस पर मदिरा और सिगार का धुआं—बुढ़िया मालकिन का सिर चक्कर खा रहा था। उसके पति ने उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन कोई नतीजा न निकलते देख हट गए।

अरीना व्लासियेवना पहले ज़माने के रूस के कुलीन वर्ग की महिलाओं की सच्ची यादगार थीं। उन्हें तो सौ साल पहले, प्राचीन मास्को के

दिनों मे, होना चाहिए था। वह वहुत ही धर्मभीरु और गुणवती थी। दुनिया भर के सगुन-असगुनों, भाग्य-रेखाओं, जन्तर-मन्तरो और सपनों में विश्वास करती थी। वह खब्ती कठमुल्लो, घरेलू देवी-देवताओ और भूत-प्रेतों, दिशाशूलों और राह के असगुनों, टोने-टोटकों, जड़ी-बूटियों, खैरात के लिए शुभ बृहस्पति के लिए मंत्र-पढ़े नमक और जल्दी ही दुनिया में प्रलय होने मे विश्वास करती थी। वह विश्वास करती थीं कि ईस्टर के इतवार के दिन संध्या-प्रार्थना के समय अगर वत्तियां गुल न हो तो समझ लो कि जई की भरपूर फसल होगी, और यह कि लोगों की नजर लगने पर कुकरमुत्ते का वढ़ना वंद हो जाता है। वह विश्वास करती थी कि शैतान पनीली जगहो मे रहता है और यह कि हर यहूदी की छाती पर खून का धब्बा होता है। चूहों, घास के सापों, मेंढकों, गौरैयों, जोंकों, बिजली, ठंडे पानी, हवा के झोकों, घोड़ो, वकरियों, लाल वालवाले लोगो, और काली विल्लियो से वह डरती थी और झिल्लियो-झीगुरों तथा कुत्तों को नापाक समझती थी। न वह वछड़े का मांस खाती थी, न कबूतर, न केकड़ा, न पनीर, न आर्टीचोक, न ऐस्पैरेजस, न खरगोश, न तरबूज। यह इसलिए कि कटा तरबूज देखकर उन्हे वैपतिस्ती जौन के सिर की याद हो आती थी। और घोंघों के नाम से तो उन्हें झुरझुरी-सी चढ़ जाती थी। यों अच्छा खाने की वह शौक़ीन थी–और लैण्ट के व्रत-उपवासों का सख्ती से पालन करती थीं। वह प्रतिदिन दस घंटे सोती थीं और अगर वसीली इवानिच के सिर में कभी दर्द होता था तो रात रात भर पलक नहीं झपकाती थी। 'अलैक्सिस या जंगल का झोंपड़ा' के सिवा उन्होंने और कुछ नही पढ़ा था और साल में एक, या वहुत हुआ तो दो, खत लिखती थी। घर-गिरस्ती संभालने, दवा-दारू करने और अचार-मुरब्बे डालने के सभी गुर उन्हें मालूम थे, हालांकि अपने हाथों से वह कभी कुछ नही करती थी और

आमतौर से अपनी काया को कष्ट देने के नाम से दूर रहती थी। हृदय की वह बहुत मुलायम थी, और अपने ढंग से बेवकूफ भी नहीं थी। वह जानती थी कि दुनिया में एक तो मालिक है जिनका काम हुक्म देना है, दूसरे आम लोग है जिनका काम हुक्म की तामील करना है। इसलिए दासत्व और दीनता का प्रदर्शन उनके हृदय को कभी नहीं कचोटता था। फिर भी अपने मातहतों के प्रति वह रहमदिल और मेहरबान थी, बिना कुछ दिए भिखारी को कभी नहीं लौटाती थीं और लोगों पर कभी फतवे नहीं कसती थी, हालांकि कभी कभी इधर-की-उधर लगाने-सुनने में उन्हें आनन्द आता था। जवानी के दिनों में उनका रूप बहुत आकर्षक था। तब वह पियानो पर स-र-ग-म बजाया करती थी और थोड़ी-बहुत फ्रेंच बोल लेती थीं। लेकिन मर्जी के खिलाफ शादी और ऐसे पति के साथ बरसों तक देशाटन के फलस्वरूप उनके शरीर पर चर्बी चढ़ चली और संगीत तथा फ्रेंच दोनों ही वह भूल गईं। अपने बेटे को वह प्यार करती थीं और इतना अधिक उससे डरती थीं कि कुछ कहना नहीं। जागीर का बन्दोबस्त उन्होंने वसीली इवानिच पर छोड़ दिया था, और उसे लेकर अब अपने दिमाग को परेशान नहीं करती थीं। जब कभी उनके बूढ़े पति जल्दी ही किए जानेवाले सुधारों और अपनी योजनाओं की चर्चा छेड़ते तो वह केवल अस्त-सी कराहती, रुमाल से झिड़ककर उन्हें टालती और आशंका से अपनी भौंहों को ऊंचा उठा लेती। काल्पनिक खतरों का वहम पीछा न छोड़ता, हर घड़ी किसी महान विपत्ति का खटका-सा लगा रहता और किसी भी दुखद बात का ध्यान आते ही आंखों में आंसू उमड़ने लगते ... ऐसी स्त्रियां अब दिखाई नहीं देतीं। खुदा जाने, इसपर हमें खुश होना चाहिए अथवा नहीं।

बिस्तर से उठते ही आरकादी ने खिड़की खोली, और वसीली इवानिच पर सबसे पहले उसकी नजर पड़ी। बुखारी चोगा पहने, पेटी की जगह एक बड़ा-सा रूमाल कसे, वृद्ध बगीचे में कुछ खटर-मटर कर रहे थे। अपने युवक मेहमान पर नजर पड़ते ही फावड़े की टेक लेते हुए चिल्लाए:

"सुबह मुबारक हो, जनाब! कहिए, नींद तो खूब आई न?"

"हां, खूब!" आरकादी ने जवाब दिया।

"ठीक। और यह देखिए, विदेहराज की भांति यहां धरती गोड़ रहा हूं। सोचा, अपनी शलजमों के लिए एक क्यारी ही तैयार कर लूं। जमाना अब कुछ ऐसा आ गया है—और मैं तो कहता हूं कि इसके लिए हमें खुदा का शुक्रगुजार होना चाहिए—कि हर आदमी को अपनी रोज़ी खुद अपने हाथों से कमानी होगी; दूसरों पर भरोसा करने से नहीं चलेगा, आदमी को खुद अपने हाथो से मेहनत करनी होगी। और सो लगता है रूसो ने ठीक ही कहा था। आधे घंटे पहले समझे जनाब, अगर आप मुझे देखते तो मैं बिल्कुल दूसरे ही चोले में नजर आता। एक किसान स्त्री पेट चलने की शिकायत लेकर आई। यह इसे पेट चलना ही कहती है, हम कहते हैं पेचिश। मैंने उसे—भला कैसे कहना चाहिए मुझे ... मैंने उसे अफीम की सुई दी, और एक अन्य स्त्री का दांत उखाड़ा। मैंने कहा कि ठहरो, जरा मसूड़ा सुन्न कर दूं... लेकिन वह भला क्यों मानने लगी। और यह सब मै gratis * करता हूं—अनमत्योर **। यों, मेरे लिए यह कोई नई चीज नही। जानते ही हो,

---

* मुफ़्त। (लैटिन)—सं०

** अनमत्योर (फ्रेंच en amateur)—शौक़िया।—सं०

मैं ठेठ धरती का कीड़ा हूं, homo novus*, — मेरी रगों में कुलीनों का नीला खून नहीं सरसराता, जैसा कि मेरी जीवन-संगिनी की रगों में बहता है लेकिन तुम यहां छाया में क्या नहीं निकल आते? नाश्ते से पहले थोड़ी ताज़ा हवा मिल जाएगी।"

आरकादी बाहर उनके पास आ गया।

"आइए, एक बार फिर स्वागत करता हूं," अपनी चीकट-सी टोपी को छूकर फौजी सलामी देते हुए वसीली इवानिच ने कहा। "मैं जानता हूं, आप ऐश व इशरत के आदी हैं, लेकिन इस दुनिया के बड़े-से-बड़े महान भी झोंपड़ी में समय बिताने में हिचका नहीं करते।"

"हे भगवान," आरकादी ने क्षोभ प्रकट किया, "इस दुनिया के महानों में कब से मेरी गिनती होने लगी? और न ही मैं ऐश आराम का आदी हूं।"

"ज्यादा बात न बनाओ," वसीली इवानिच ने सुहावनी मुसकान के साथ टाला, "भले ही ज़माने की भाग-दौड़ से मैं अलग पड़ गया होऊं, लेकिन मैंने भी दुनिया की थोड़ी-बहुत धूल छानी है — आम और जामुन में मैं भी कुछ तमीज़ करना जानता हूं। अपने ढंग से थोड़ा-बहुत मनोविज्ञान भी मैं जानता हूं, और सामुद्रिक शास्त्र भी। अगर ऐसा न होता — जिसे कि मैं प्रतिभा कहने का साहस करता हूं — तो मैं बहुत पहले ही अण्टा चित्त हो गया होता। मुझ जैसे मुफ़लिस आदमी को धकियाना कौन बड़ी बात है। और मुझे खुलकर कहने दीजिए कि आपके और अपने बेटे के बीच मित्रता देखकर मेरा हृदय आंतरिक खुशी से छलछला उठा है। अभी, कुछ ही पहले, मैंने उसे देखा था। सदा की भांति वह तड़के ही उठ खड़ा हुआ — उसकी इस आदत से

---

*नया मानव। (लैटिन) — सं०

शायद आप परिचित होंगे–और देहातों की छानबीन के लिए निकल गया। उत्सुकता माफ़, क्या आप येवगेनी को वहुत दिनों से जानते है?"

"पिछले जाड़ों से।"

"समझा। और क्या मै यह भी पूछ सकता हूं–अरे, आप वैठ क्यों नहीं जाते–एक पिता के नाते, विना किसी छिपाव के, क्या मै यह जान सकता हूं कि मेरे येवगेनी के वारे मे आपकी क्या राय है?"

"मेरी समझ में आपके सुपुत्र जैसा उल्लेखनीय व्यक्ति मुश्किल से ही मिलेगा," आरकादी ने संजीदगी से कहा।

वसीली इवानिच की आंखे एकाएक फैलकर वड़ी हो गई और गाल हल्की लाली से दमक उठे। फावड़ा हाथ से छूटकर नीचे आ गिरा।

"सो, आपकी समझ में ..." उसने कहना शुरू किया।

"इसमें शक नहीं," आरकादी कहता गया, "कि आपका पुत्र भाग्य का वड़ा धनी है। उसी क्षण जव पहले-पहल हम मिले, यह वात मेरे मन में समा गई।"

"क्यों ... कैसे हुआ यह?" वसीली इवानिच हांफते-से हकला उठे। उनका चौड़ा मुह आनन्द से उच्छ्वसित मुसकान में फैल गया और वैसे ही फैला रहा।

"सो आप जानना चाहते है कि हम कैसे मिले?"

"हां ... और मोटे तौर से यह ..."

आरकादी ने और भी अधिक हार्दिकता तथा उछाह के साथ वजारोव के वारे में वताना शुरू किया। इस स्मरणीय सांझ को भी जव वह ओदिनत्सोवा के साथ नाचा था, उसने इतनी अधिक हार्दिकता और उछाह का परिचय नही दिया था।

वसीली इवानिच एकटक उसकी बात सुनते रहे। कभी वह सुडकते कभी हथेलियों के बीच रूमाल की गेन्द-सी बनाते कभी खासते कभी अपने बालो को उगलियों से छितराते। आखिर वह अपने को सभाल न सके और आरकादी के ऊपर झुकते हुए उसके कधे को चूम उठे।

सच मै बयान नहीं कर सकता कि तुमने मेरे हृदय को कितना अधिक खुशी से भर दिया है दाध मुसकान के साथ उन्होंने कहा। बस इतना ही समझ लो कि मै वह मेरे रोम रोम में बसा है। और अपनी बुढिया के बारे मे मै कुछ नहीं कहता—कहने की जरूरत भी नहीं वह है मा—और बस इसके बाद कुछ और कहने को नहीं रह जाता। लेकिन उसके अपने लड़के के—सामने मे अपने भावो को व्यक्त करने का साहस नहीं जुटा पाता। उसे यह अच्छा नहीं लगता। प्रेम के प्रदर्शन से—चाहे जिस रूप मे भी वह हो—वह भन्ना उठता है। उसका यह रूखापन बहुतो को अखरता है। वे इसे दम्भ या भावशून्यता की निशानी समझते है। लेकिन उस जैसे व्यक्तियों को साधारण नियमो की कसौटी पर नहीं कसना चाहिए। क्यो क्या तुम्हे ऐसा नहीं लगता? अच्छा मिसाल के लिए यह देखो। उसकी जगह अगर और कोई होता तो वह अपने मा-बाप के गले मे चक्की का पाट बनकर लटका रहता। लेकिन वह है कि उसने—तुम चाहे विश्वास करो या न करो—हमसे एक फूटी कौडी भी कभी फाजिल नहीं ली—नहीं कसम खाने के लिए भी नहीं।

वह ईमानदार और बगरज आदमी है आरकादी ने राय दी।

बगरज—ठीक यही। और जहा तक मेरी बात है सो आरकादी निकोलायविच मै उसपर केवल न्योछावर ही नहीं हू बल्कि गर्व भी करता हू और मेरा एकमात्र आकाक्षा यह है कि किसी

दिन उसकी जीवनी में मुझे निम्न शब्द अंकित देखने का अवसर प्राप्त हो: 'एक मामूली फ़ौजी सरजन का पुत्र जिन्होंने, इस सबके बावजूद, छोटी उम्र में ही अपने पुत्र में निहित महान सम्भावनाओं को पहचाना और उसकी शिक्षा-दीक्षा के मामले मे कोई कसर न उठा रखी...'" वृद्ध की आवाज रुंध गई।

आरकादी ने उनका हाथ दबाया।

"क्या खयाल है तुम्हारा," कुछ देर तक मौन रहने के बाद वसीली इवानिच ने फिर पूछा, "जिस शोहरत की तुम बात कर रहे हो, उसे क्या वह डाक्टरी से भिन्न किसी अन्य क्षेत्र में प्राप्त करेगा, क्यों, यही न?"

"निश्चय ही डाक्टरी के क्षेत्र मे नही, हालांकि इस क्षेत्र मे भी वह एक उल्लेखनीय विभूति सिद्ध होगा।"

"तो फिर, आरकादी निकोलायेविच, तुम्हारे खयाल से वह कौन-सा क्षेत्र होगा?"

"अभी यह कहना कठिन है, लेकिन वह प्रसिद्ध होगा।"

"वह प्रसिद्ध होगा!" वृद्ध ने प्रतिध्वनि की और विचारों में खो गया।

तभी एक बहुत बड़ी रकाबी में पकी हुई रसभरियां लिए उधर से गुजरते हुए अनफ़ीसुश्का ने सूचना दी:

"अरीना व्लासियेवना नाश्ते के लिए आपको बुला रही है।"

वसीली इवानिच जैसे सोते से जागे।

"तो क्या ठंडी की गई मलाई के साथ रसभरियों का रंग जमेगा?"

"हां, मालिक।"

"तो देखना, मलाई एक दम ठंडी हो। और आरकादी,

तकल्लुफ म काम नहा चलगा। जरा फुर्ती म हाथ चलाना। लेकिन
ग्रवगनी इतना दर कहा ग्रटक गया '

मैं यहा हू ग्राग्वादी क कमरे म बजारोव ने ग्रावाज दी।

वसीली इवानिच तजी म घूम गए।

ग्रन्न मोचा कि चलो दोस्त का भी हाल चाल पूछ ग्राए। लकिन तुम पिछड गए ग्रा ce*,—ग्रौर यहा हम बहुत देर से बनिया रह है। ग्रव नाश्त के लिए चलना चाहिए। हा, याद ग्राया, तुमसे कुछ बात करना है।

किस बारे में ?

यहा एक दहकान है जो इक्टरस से परेशान है '

यानी पीलिया से '

हा बहुत ही पुरान ग्रौर सरख्त इक्टरस से। मैंने उसके लिए सैन्तौरी ग्रौर सन्तजौन बूटी तजवीज की है गाजर खाने के लिए उसस कहा है ग्रौर उसे सोडा दिया है। लेकिन ये सब तो थोडा सभालन की चीजें है। कोई ग्रौर उग्र उपाय काम में लाना होगा। हालांकि तुम चिकित्सा विज्ञान का मजाक उडाते हो, फिर भी यह तय है कि तुम कोई माकूल सलाह दे सकते हो। लेकिन इसपर बाद में बात करेंगे। ग्रभी तो चलो नाश्ता कर लिया जाए। '

वसीली इवानिच फुर्ती स उठ खडे हुए ग्रौर ' राबर ल दि ग्रायल क गीत का एक ग्गीन टकडा गा उठ

मदिरा की प्यालिया
मद भरी ग्रटखनिया

---

*दोस्त। (लैटिन) —स०

"अद्भुत! कितनी जिन्दादिली है इनमें!" खिड़की से हटते हुए बजारोव के मुह से निकला।

दोपहर का समय था। सफ़ेद बादलों के झीने आवरण मे से सूरज झांक रहा था। हर चीज पर एक स्थिरता छाई हुई थी। केवल गांव के मुर्गे भारी उछाह से बाग दे रहे थे और हृदय में एक अजीब बेचैनी तथा अलसाहट का संचार कर रहे थे। कभी कभी, कही ऊंचे पेड़ों की चोटियों से, बाज के बच्चे की अनवरत चीची विलाप-ध्वनि की भांति मालूम होती थी। आरकादी और बजारोव घास की एक छोटी-सी गंजी की छांव मे लेटे थे। बदन के नीचे उन्होंने एक या दो कौली भर घास बिछा ली थी जो भुरभुरी हो जाने पर भी अभी हरी और सुगंधित थी।

"वह जो आस्पन का पेड़ है न," बजारोव ने कहना शुरू किया, "उसे देखकर मुझे अपने बचपन की याद आ जाती है। वह एक गढ़े के किनारे खड़ा है जहा पहले ईटों की खत्ती थी। उन दिनों मुझे पक्का विश्वास था कि यह पेड़ और खत्ती दोनों में कोई ख़ास जादू है। उनके पास जाता तो मेरा जी कभी न अघाता। तब मैं नही जानता था कि मेरे न अघाने का कारण केवल यह था कि मै बच्चा था। और अब जबकि मैं बड़ा हो गया हूं, वह जादू भी छूमन्तर हो गया है।"

"कुल मिलाकर यहां तुम कितने दिन रहे होगे?" आरकादी ने पूछा।

"लगातार दो साल तक। उसके बाद कभी कभी ही यहां आना होता। चलता-फिरता जीवन बिताया है हम लोगों ने। आज इस शहर में हैं तो कल उसमें। ज्यादातर इसी तरह भटकते रहे।"

"और क्या यह मकान बहुत पुराना बना है?"

हा बहुत पहले का। मेरे नाना के समय में बना था।

तुम्हारे नाना कौन थे?

शैतान ही जाने। सुना है कि ऐसे ही कोई सेकण्ड-मेजर थे। सुवोरोव के मातहत रह चुके थे और आल्पस पर्वत के बीच की कहानियां सुनाया करते थे। एकदम मनगढ़न्त उसमें शक नहीं।

इसी लिए बरामदे में सुवोरोव की तस्वीर लगी है। जो हो तुम्हारा घर है अच्छा—पुराना और आरामदेह। ऐसे छोटे छोटे घर मुझे पसन्द हैं। अपनी एक खास गंध से महकते।

लैम्प के तेल और मेलीलोट की गंध से बजारोव ने जमुहाई लेते हुए कहा और इन प्यारे छोटे घरों में भिनकती मक्खियों का जहां तक सम्बन्ध है बस खुदा ही बचाए!

जरा इधर सुनो कुछ रुककर आरकादी ने पूछा यह बताओ बचपन में तुम्हें दाबकर तो नहीं रखा जाता था?

मेरे मां-बाप किस कैंड के हैं तुम देख ही रहे हो। उन्हें सख्त नहीं कहा जा सकता क्यों?

क्या तुम उन्हें प्यार करते हो यवगनी?

करता हूं आरकादी!

ओह तुम उन्हें कितने प्यारे हो!

बजारोव चुप रहा।

फिर कुछ ही देर बाद अपने हाथों को सिर के पीछे बांधते हुए बोला

क्या तुम जानते हो कि मैं क्या सोच रहा हूं?

नहीं। क्या सोच रहे हो?

सोच रहा हूं कितना अच्छा जीवन बिता रहे हैं ये लोग इस दुनिया में। मेरे पिता साठ वर्ष के हो गए हैं फिर भी कुछ न कुछ खटर-पटर करते रहते हैं कष्ट हल्का करनेवाली दवाइयों की बातें करते

है, रोगी लोगों का इलाज करते हैं, किसानो के प्रति उदारता से पेश आते हैं—मोटे तौर से यह कि अपने जीवन को भरा-पूरा बनाए है। और मां—वह भी सुखी है। दुनिया भर के काम और ओह-आह करते उनका दिन बीतता है—इस हद तक कि विराम लेने और दिमागी उधेड़बुन में डूबने की नौबत ही नही आती। एक मैं हूं कि..."

"तुम्हें क्या हुआ, क्यों?"

"मैं सोचता हूं: एक मैं हूं कि यहां घास की गंजी की छांव में पसरा हूं... बित्ता भर यह जगह जिसे मैं घेरे हूं, उस बाक़ी जगह के मुक़ाबिले कितनी नगण्य और कितनी तुच्छातितुच्छ है जहां मैं नही हूं और जहां किसी को रत्ती भर भी मेरी पर्वाह नही है। और मेरे जीवन की यह नगण्य अवधि, काल के उस चिरन्तन विस्तार के मुकाबिले कुछ भी नहीं है, जिसमें मेरा कोई अस्तित्व नही रहा और न ही रह सकेगा... फिर भी इस परमाणु में, अंकगणित के इस शून्य में, रक्त दौड़ता है, मस्तिष्क काम करता है, उमंगें लपलपाती हैं... ओह, कितना विकट—और कितना बेहूदा है यह!"

"लेकिन सुनो, तुम्हारी यह बात अकेले तुम्हीं पर नहीं बल्कि समान रूप से सभी पर लागू होती है..."

"ठीक, तुम ठीक कहते हो," बजारोव बीच में ही बोला। "मैं जो कहना चाहता था वह यह कि क्या बात है जो फिर भी वे—यानी मेरे माता-पिता—हर घड़ी जुटे रहते है और अपनी नगण्यता को लेकर कभी परेशान नही होते—यह उनके हृदय को नहीं कुरेदती... जबकि मैं... मैं भन्ना जाता हूं, बुरी तरह विक्षुब्ध हो उठता हूं।"

"विक्षुब्ध क्यों? विक्षुब्ध क्यों हो उठते हो?"

"क्यों? तुम पूछते हो कि क्यों? क्या तुम भूल गए?"

मूना म कुछ नहीं हू लेकिन फिर भी मैं नहा समझता कि तुम्हें विशुद्ध होने का कोई अधिकार है। माना कि तुम दुखी हो लेकिन

ओह अब समझा आपको। प्रम के बारे म तुम्हारी धारणा भी वसी ही है जसी कि अन्य सभी आधुनिक युवा लोगों की पुच पुच मेरी नन्ही मुर्गी और जसे ही नन्ही मुर्गी न तुम्हारी पुचकार से खिचना शुरू किया कि तुम दुम दबाकर भाग निकले। म उस किस्म का नहीं हू। लेकिन छोडो। मजबूरी का सतिपूर्ति बाना म नहीं की जा सकती!

उसने बगल के बल करवट ली। फिर बोला

खर! यह देखो इस नन्ही-सी लगडी चींटी को देखो किस तरह एक अधमरी मक्खी को खीचे लिए जा रही है। खीचे जा मेरी नन्ही चीटी खीचे जा। पर्वाह न कर उसके छटपटाने और हाथ पाव मारने की। अपने अधिकार का जमकर प्रयोग कर जो जानवर होने के नाते तुझे मिला है। हम जसे आत्म-खण्डित लोगों की भांति दया माया की भावनाओं के चक्कर म पडना तेरा काम नहीं!

कम से कम तुम्हारे मुह से एसी बात नहीं निकलनी चाहिए यवगनी आखिर तुम कब से आत्म-खण्डित हो गए?

बजारोव ने अपना सिर उठाया।

यही तो एक गनीमत है जिसपर म गर्व कर सकता हूं। मने कभी अपने को नहीं टूटने दिया और पटीकोटो की दुनिया म इतनी विसात नहीं जो कभी मुझ तोड सके। आमीन! हवा का एक झोका था जो आया और चला गया। बस बात खत्म। अब उसके बारे म एक शब्द भी कभी मेरे मुह से नहीं निकलेगा!

कुछ देर तो दोनो चुप पडे रहे।

"हां," वजारोव ने कहना शुरू किया। "आदमी भी एक अजीव जन्तु है। दूर से जव हम अपने वडों के इस जीवन पर नजर डालते है तो मुग्ध रह जाना पड़ता है—लगता है कि वस, अव और कुछ नहीं चाहिए। खाओ, पियो और समझो कि जो कुछ हम कर रहे हैं वह सही और तर्क-सगत है। लेकिन नही, एक तरह की वेचैनी—जलन—धर दवोचती है। जी करता है कि लोगों को झंझोड़ डालें—हां, उन्हें झंझोड़ डाले, और भी कुछ नही तो उन्हें झिड़किया ही सुनाएं!"

"जीवन की कुछ इस ढंग से व्यवस्था होनी चाहिए कि उसका प्रत्येक क्षण अपनी सार्थकता व्यक्त करे," आरकादी ने कुछ सोचते हुए कहा।

"वस वस, ठीक यही। सार्थकता—चाहे वह कृत्रिम ही क्यो न हो—मधुर होती है, और आदमी नगण्यता तक को सह लेता है... लेकिन यह ओछी घिसघिस, छोटी छोटी वातों के लिए यह हायतोवा... असल में यही मुसीवत की जड़ है।"

"लेकिन यह ओछी घिसघिस उस आदमी के लिए कोई अस्तित्व नही रख सकती जो उसे मानने के लिए ही तैयार न हो।"

"हुंः... इसी को कहते हैं औंधी वूम मारना!"

"ऐं... भला, क्या मतलव है तुम्हारा इससे?"

"केवल यह: मिसाल के लिए अगर कोई कहे कि शिक्षा लाभदायक है तो वूम मारना हुआ, लेकिन अगर कोई कहे कि शिक्षा नुक्सानदेह है तो यह औंधी वूम मारना कहलाएगा। सुनने में भले ही इसमें निरालापन नजर आए, लेकिन असल में नतीजा इसका भी वही निकलता है जो पहली का।"

"तो फिर सत्य कहां है?"

कहाँ है? इसके जवाब में मैं भी यही प्रतिध्वनि करूँगा—कहाँ है?

तुम आज कुछ खिन्न मालूम होते हो, यवगनी।'

ऐसा? शायद धूप की वजह से और फिर इतनी अधिक रसभरियाँ खाना भी बुरा है।

तो अच्छा हो कि थोड़ी झपकी ले ली जाए," आरकादी ने सुझाया।

मंजूर है। लेकिन मेरी ओर ताकना नहीं—नींद में सोया आदमी आमतौर से बड़ा मूर्ख मालूम होता है।

तो तुम इसकी चिन्ता करते हो—यह कि तुम दूसरों को कैसे मालूम होते हो?

ठीक से नहीं कह सकता। जो वास्तव में आदमी है, उसे इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। वास्तविक आदमी वह है जिसके बारे में लोग सोचते नहीं उसकी तामील करते हैं—या फिर उससे घृणा करते हैं।

अजीब बात करते हो कुछ रुककर आरकादी ने कहा मैं तो किसी से घृणा नहीं करता।

लेकिन मैं करता हूँ—और ढेर सारी करता हूँ। तुम मोम हृदय और बिना रीढ़ के आदमी हो तुम किसी से घृणा नहीं कर सकते तुम जरूरत से ज्यादा दब्बू हो, काफी आत्मविश्वास का तुममें अभाव है

और तुम? आरकादी ने बीच में ही कहा। तुम तो शायद आत्मविश्वास के अवतार हो? अपने को तुम बहुत ऊँचा समझते हो क्या?

वजारोव ने एकाएक कोई जवाव नही दिया। फिर शब्दो का धीरे धीरे उच्चारण करते हुए वोला:

"जब कोई ऐसा आदमी मेरे सामने आएगा जो मुझसे टक्कर लेकर भी सीधा खड़ा रह सके तो मैं अपने बारे मे अपनी राय बदल डालूंगा। और घृणा क्यों? मिसाल के लिए आज की ही बात लो, उस समय जब हम अपने अमलदार फ़िलीप की झोंपड़ी के पास से गुज़र रहे थे – कितनी प्यारी सफ़ेद वुर्राक झोंपड़ी है वह – तो वहां तुमने कहा था कि रूस तभी एक आदर्श देश बन सकेगा जब अदना-से-अदना किसान को भी ऐसे ही झोंपड़े में रहना मयस्सर होगा, और यह कि उस दिन को लाने में हम सबको हाथ बंटाना चाहिए... लेकिन तुम्हारे उस अदना-से-अदना किसान से – तुम्हारे उस फ़िलीप और सीदोर तथा बाक़ी अन्य सबसे मुझे नफ़रत है, जिनके लिए मुझसे हाड़-मांस गलाने की आशा की जाती है, बदले में धन्यवाद का एक शब्द तक प्राप्त किए बिना... और उसके इस 'धन्यवाद' का भी मैं क्या अचार डालूंगा? अच्छी बात, वह सफ़ेद झोंपड़ी मे रहे और मैं अपनी आहुति भी देता रहूं, लेकिन इसके बाद?"

"बस बस, येवगेनी... आज तुम्हारी बातें सुनकर उन लोगों की बात मानने को जी चाहता है जो हमपर सिद्धान्तहीनता का आरोप लगाते है।"

"तुम अपने ताऊजी की वाणी बोल रहे हो। आमतौर से सिद्धान्त-विद्धान्त जैसी कोई चीज नही होती – ताज्जुब होता है कि अभी तक तुम इतनी-सी बात भी नही पकड़ पाए, केवल स्पन्दन-संवेदन होते है। हर चीज उन्हीं पर निर्भर करती है।"

"सो कैसे?"

"बिल्कुल सीधी बात है। मिसाल के लिए मुझे ही लो: मेरा

रवैया नकारात्मक है—स्पन्दन की बदौलत। मैं नकारात्मक ढंग पसद करता हूं, मेरा मस्तिष्क कुछ उसी ढंग का बना है—बस, कुल जमा इतना ही। रसायन विज्ञान में मेरी क्या रुचि है? तुम सब क्यों पसद करते हो? सब स्पन्दन-संवेदन की बदौलत। सबमें वही एक बात है। गहराई की यह इति है। हर कोई यह खुलकर नहीं कहेगा। और मैं भी इस तरह फिर कभी तुम्हारी पकड में नहीं आऊंगा।"

"तो क्या ईमानदारी भी एक स्पन्दन मात्र है?"

"करीब करीब।"

"सेवगेनी !" आरकादी ने कुछ त्रास से कहा।

"एह, यह क्या? बात गले में अटक गई, क्यो?" बज़ारोव बीच में ही बोला। "नहीं, जनाब! जब हर चीज़ को काटकर अलग फेंकने का निश्चय कर लिया तो फिर बीच में रुकना कैसा? उसे आखिरी सीमा तक पहुंचाना ही होगा। लेकिन यह मैं दार्शनिकता पर उतर आया। पुश्किन ने कहा है—'प्रकृति देती वरदान नींद की नीरवता का।'"

"पुश्किन ने ऐसी बात कभी नहीं कही!" आरकादी ने विरोध किया।

"तो इससे क्या? नहीं कही तो, कवि होने के नाते, वह इसे कह सकते थे और उन्हें कहनी चाहिए थी। लेकिन सुनो, वह फौज में जरूर रहे होंगे।"

"नहीं, वह कभी फौज में नहीं रहे।"

"लेकिन, मेरे प्यारे बचुवा, उसकी रचनाओं के हर पन्ने से यह आवाज क्यों आती है—'बढे चलो, बढे चलो, रूस के गौरव की रक्षा के लिए'।"

"यह क्या बकवास है यह कालिख पोतने से कम नहीं, सच!"

"कालिख पोतना? ऊंह! इस शब्द से तुम मुझे डरा नही सकते। लाख कोशिश करने पर भी हम किसी पर उतनी कालिख नही पोत सकते जितनी कि वास्तव में उसपर पोती जानी चाहिए।"

"अच्छा हो कि अब हम सो रहें," आरकादी ने खीझकर कहा।

"बेहद खुशी से," बजारोव ने तुरत जवाब दिया।

लेकिन नींद दोनों में से किसी को भी न आई। क़रीब क़रीब अदावत जैसी एक भावना दोनों युवकों के हृदयों में सरसरा गई। पांच मिनट बाद उन्होंने अपनी आंखें खोलीं और बिना कुछ कहे आंखों ही आंखों में एक-दूसरे को परखा।

"अरे देखो," सहसा आरकादी ने कहा। "मेपल वृक्ष का सूखा पत्ता फड़फड़ाता हुआ जमीन पर गिर रहा है। इसकी गति तो देखो, बिल्कुल तितली की उड़ान की भांति। है न विचित्र? सूखे पत्ते जैसी एकदम उदास और मुर्दा चीज तितली जैसी एकदम प्रफुल्ल और चेतन चीज से मिलती-जुलती है।"

"सुनो, मेरे मित्र, आरकादी निकोलायेविच!" बजारोव ने कहा। "एक अर्ज है तुम से–यह कविता में बातें करना छोड़ो।"

"जैसा मुझसे बनेगा, वैसे बात करूंगा... अगर सुनना चाहते हो तो सुनो, यह निरी निरंकुशशाही है। अगर कोई विचार सूझता है तो मैं उसे व्यक्त क्यों न करूं?"

"बहुत ठीक। लेकिन मैं भी अपने विचार व्यक्त करने के लिए उतना ही स्वतंत्र हूं। और मैं समझता हूं कि कविता में बातें करना अशिष्टता है।"

"तो शिष्टता क्या है?" गालियां देना?"

आह् देखना हू कि तुमने अपने ताऊजी के पदचिन्हो पर चलने का पक्का इरादा कर लिया है। तुम्हारी बाते सुनकर उस मूढ को भारी खुशी होगी।

पावेल पत्रोविच के लिए क्या कहा तुमने?

वही जो कहना चाहिए–मूढ!

लेकिन इसे कोई बरदाश्त नही करेगा!

ओह आखिर रक्त बोल उठा बजारोव ने ठडे भाव से कहा। मैने देखा है कि इसका असर बडा सरकश होता है। आदमी हर चीज को रद्द कर सकता है तमाम पूर्वाग्रहा विश्वासो को छोडने के लिए तयार हो सकता है लेकिन–मिसाल के लिए–यह स्वीकार नही कर सकता कि उसका भाई जो दूसरो के रूमालो पर हाथ साफ करता है चोर है। यह मानना उसके बूते से बाहर है। भला यह कैसे हो सकता है कि वह जो मेरा भाई है एकदम मेरा प्रतिभा का पुज न हो?

सीधी-सच्ची न्याय की भावना से मैने वह बात कही थी रक्त के नाते से नही आरकादी ने चिकोटी-सी काटते हुए जवाब दिया। लेकिन चूकि तुम उसे समझ नही सकते–सवेदन के अभाव की बदौलत–इसलिए तुम उसके निर्णायक भी नही हो सकते।

दूसरे शब्दो में आरकादी किरसानोव के विचार इतने ऊचे हैं कि मैं उनतक पहुच नही सकता–मैं घुटने झुकाता हू, और अब एक लफ्ज नही बोलूगा।

छोडो यवगेनी। झगडे के सिवा इस तरह और कुछ पल्ले नहीं पडेगा।

लेकिन, आरकादी मैं कहता हू कि आओ, एक बार खुल कर झगडा कर लिया जाए–पूरी तरह नाखून और दात पैनाकर एक-दूसरे को एकदम मटियामेट करने की हद तक।

और अन्त में

"घूंसेबाज़ी पर उतर आएं, यही न?" वज़ारोव तुरत बोल उठा। "लेकिन इससे क्या? यह घास, देहाती वातावरण की यह स्वप्निल चित्रमयता, दुनिया और लोगों की नजर से काले कोसों दूर–खयाल कुछ बुरा नहीं। लेकिन तुम मेरी जोड़ में भला क्या टिकोगे। तुम्हारा टेंटुआ पकड़कर..."

वजारोव ने अपनी लौह उंगलियां फैलाई... आरकादी घूमा और जैसे मजाक़ में वचाव का पैंतरा उसने धारण कर लिया... लेकिन उसके दोस्त के चेहरे में भयानकता की कुछ ऐसी झलक थी, खीझ और उपेक्षा से वल खाए उसके होंठों और चमकती हुई आंखों में कुत्सा का कुछ ऐसा भाव था कि आरकादी वरवस सहम गया...

उसी क्षण वसीली इवानिच की आवाज़ सुनाई दी:

"ओह, सो तुम लोग यहां छिपे हो!" घर की वनी डक-जाकेट और इसी प्रकार घर की वनी सींकों की टोपी पहने वृद्ध फ़ौजी सर्जन युवकों के सामने आ नमूदार हुए। "तुम्हारी खोज में मैंने एक एक कोना छान डाला... जो हो, जगह तुमने शानदार चुनी है, और तुम्हारा यह शग्ल भी वढ़िया है... धरती पर चित्त लेटकर आकाश की ओर ताकना... जानते हो, इसमें भी एक गूढ़ रहस्य छिपा है।"

"मैं तो तभी आकाश की ओर ताकता हूं जब मुझे छींक लेनी होती है," वजारोव भुनभुनाया और फिर आरकादी की ओर मुड़ते हुए दवी आवाज में वोला, "इन्हें भी इसी वक़्त टपकना था। सव गड़वड़ कर दिया।"

"शुक्राना भेजो," आरकादी ने फुसफुसाते और चुपके से अपने मित्र का हाथ दवोचते हुए कहा। "कोई भी मित्रता ऐसे थपेड़े खाकर अधिक नहीं टिक सकती।"

जब मैं तुम दोनों युवा मित्रों को देखता हूं, सिर हिलाते और बड़ी चतुराई से लहरियां डाली गई छड़ी के ऊपर अपने दोनों हाथों को टेके—यह छड़ी खुद उनकी कारीगरी का नतीजा थी और उसकी मूठ तुर्क के सिर के आकार की थी—वसीली इवानिच कह रहे थे, तो मेरा दिल खिल जाता है। कितनी स्फूर्ति, कितनी योग्यता और कितनी प्रतिभा के धनी हो तुम! जैसे यौवन का सागर चांद को छूने के लिए उछल रहा हो। एकदम... कैस्टर और पौलक्स* की भांति!

ज़रा सुनो तो, बज़ारोव ने कहा, क्या देव-माला का फुहारा छूट रहा है। कोई भी यह कहने में देर नहीं करेगा कि अपने ज़माने में आप पक्के लैटिनपंथी रहे होंगे। और मैं समझता हूं निबंध-रचना में एकाध रजत-पदक भी ज़रूर फटकारा होगा। क्यों, ठीक है न?

डिओस्कूर बंधु, डिओस्कूर बंधु! वसीली इवानिच ने दोहराया।

बस बस, पिताजी, काफी हो चुका, अब यह कूकना बन्द कीजिए।

साल में एकाध बार भूल भटके कूक लेने में कोई हर्ज नहीं, वृद्ध ने बुदबुदाकर कहा। लेकिन महानुभावो, मैं आप लोगों की इसलिए तलाश नहीं कर रहा था कि मुझे आपको सलामी बजानी थी। मुझे तो आपको सूचना देनी थी—सर्व प्रथम तो यह कि हमें जल्द ही कलेवा करना है, दूसरे यह कि येवगेनी, मैं तुम्हें पहले से

---

*प्राचीन यूनानी गाथाओं के दो जुड़वां भाई (डिओस्कूर) जो अपनी अटूट मित्रता के लिए प्रसिद्ध थे।—सं०

ही एक बात चेता देना चाहता था... तुम चतुर आदमी हो, लोगो को समझते हो, और स्त्रियों को भी कि वे कैसी होती है। सो तुम्हें कुछ सहनशीलता बरतनी चाहिए... तुम्हारे घर आने के उपलक्ष्य में तुम्हारी मां कुछ पूजा-पाठ कराना चाहती थी। यह न समझ बैठना कि मैं तुम्हे पूजा-पाठ में शामिल होने के लिए कह रहा हूं। वह सब तो कभी का हो चुका, लेकिन फादर अलेक्सेई..."

"अच्छा, वह पादरी?"

"अरे... हां वही पादरी... वह कलेवे पर हमारे साथ होंगे... मुझे इसका कुछ पता नही था, और सच पूछो तो मै इसके खिलाफ़ तक था... फिर भी जाने कैसे यह नौबत आ गई... वह मेरी बात कुछ समझे नही... फिर, अरीना व्लासियेवना... यों आदमी वह भला और समझदार हैं।"

"कही ऐसा तो नही है कि वह मेरे हिस्से का भोजन चटकर जाएं, क्यो?" बजारोव ने पूछा

वसीली इवानिच खिलखिला पड़े।

"हद करते हो तुम भी! इसके बाद जाने और क्या कहोगे!"

"तब कोई बात नहीं! मैं किसी के साथ भी भोजन की मेज़ पर बैठ सकता हूं।"

वसीली इवानिच ने अपने सिर की टोपी ठीक की।

"यह तो मुझे पहले से ही यक़ीन था कि तुम सभी पूर्वाग्रहों से ऊपर हो। मुझे देखो, मैं एक बूढ़ा आदमी हूं, बासठवें साल की ओर डग बढ़ा रहा हूं, और मैं भी किसी तरह के पूर्वाग्रहों से वास्ता नहीं रखता।" (वसीली इवानिच को यह स्वीकार करने का साहस नहीं हुआ कि वह खुद भी पूजा-पाठ कराना चाहते थे। धर्म-निष्ठा में वह भी उतने ही बढ़े-चढ़े थे जितनी कि उनकी पत्नी।) "और फिर फादर

अनेक्सेई तुमसे मिलने के लिए भी बहुत उत्सुक हैं। देखना, तुम्हें वह जरूर पसंद आएंगे। दो-चार हाथ ताश खेलने से भी वह परहेज नहीं करते, और किसी से कहना नहीं वह तम्बाकू तक पीते हैं।"

"ठीक है। भोजन के बाद इसी की चौकड़ी जमेगी। देखना, मैं कैसा उन्हें मात करता हूं।"

"ही-ही-ही! सो भी देखेंगे, उस समय जब मुकाबिले पर डटोगे। अभी मंजिल दूर है।"

"ओहो, क्या बासी कढ़ी में फिर उबाल आनेवाला है?" एक खास अन्दाज में जोर देते हुए बजारोव ने कहा।

वसीली इवानिच के गेहुंवा चेहरे पर लाली की एक हल्की-सी झलक दौड़ गई।

"शर्म करो, येवगेनी बीते दिनों को न कुरेदो। लेकिन इन महानुभाव के सामने मुझे यह स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं कि जवानी के दिनों में मुझे इसकी लत थी, हां सचमुच लत थी, मैंने इसका नतीजा भी भुगता। लेकिन आज कुछ गर्मी अधिक है, क्यों? न हो तो मैं तुम्हारे पास ही बैठ जाऊं। तुम्हें कुछ दिक्कत तो न होगी, क्यों?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं," आरकादी ने जवाब दिया।

वसीली इवानिच कांखते हुए से घास पर बैठ गए।

"महानुभावो, आपका यह गुदगुदा आसन," उन्होंने कहना शुरू किया, "मुझे उन फौजी दिनों की याद दिलाता है जब हम खुले में पड़ाव डालते थे। घास की ऐसी ही किसी गंजी के पास हम अपना मरहम-पट्टी का तामझाम जमाते और इसी को बहुत बड़ी गनीमत समझते।" कहते कहते उन्होंने उसांस भरी। फिर बोले—"हां, अपने जमाने में मुझे जाने क्या क्या देखना पड़ा है। मिसाल के लिए, अगर

सुनना चाहो तो, वेस्सारेविया में ताऊन की महामारीवाली वह घटना भी कुछ कम अजीव नहीं है।"

"वही न जिसमें आपको सन्त व्लादिमीर का पदक मिला था?" वजारोव ने बीच में ही कहा। "हम उसके बारे में सुन चुके है... लेकिन यह बताइए, आप वह पदक लगाते क्यों नही?"

"कहा तो कि मै कोई पूर्वाग्रह नहीं पालता," वसीली इवानिच बुदबुदाए, हालांकि उन्होंने एक ही दिन पहले उस लाल फीते को अपने कोट से उखड़वाया था—और इसके बाद ताऊनवाली घटना सुनानी शुरू कर दी। फिर, बीच में ही, सहसा फुसफुसा उठे—"अरे, ये तो सो गए हजरत!" और परिहास से पुतलियां चमकाते हुए वजारोव की ओर इशारा किया। फिर जोरों से बोले, "येवगेनी, उठो! चलो, भोजन के लिए चलना है..."

फादर अलेक्सेई रोवदार शक्ल-सूरत के आदमी थे। डील-डौल में भी विधाता ने काफ़ी उदारता बरती थी। पट्टेदार बाल बहुत ही सावधानी से संवरे थे और बैगनी रंग के रेशमी कैस्सोक जामे के ऊपर कामदार पेटी कसी थी। वह बहुत ही काइयां और हाजिरजवाब व्यक्ति सिद्ध हुए। आते ही, तपाक से पहले उन्होने आरकादी और वज़ारोव से हाथ मिलाए, जैसे यह पहले से जानते हों कि इन्हें उनके आशीर्वाद की जरूरत नहीं है। और, मोटे तौर से, सहजभाव स्वाभाविक बने रहे। उन्होंने अपने चेहरे में शिकन नहीं आने दी, न औरों को ठेस पहुंचाई। गिरजा-मार्का लैटिन को निशाना बनाकर उड़ाई गई खिल्लियों में उन्होंने रस लिया और अपने बिशप का पक्ष लेकर लड़े। शराव के दो जाम गले में उंडेल गए और जब तीसरा दिया गया तो इन्कार कर दिया। आरकादी ने चुरुट पेश किया तो ले लिया, मगर सुलगाया नही, कहा कि इसे घर ले जाऊंगा। केवल एक

अनेक्सेई तुमसे मिलने के लिए भी बहुत उत्सुक है। देखना तुम्हें वह जरूर पसंद आएगा। दो चार हाथ ताश खेलने में भी यह परहेज नहीं करते और किसी से कहना नहीं वह तम्बाकू तक पीते हैं।

ठीक है। भोजन के बाद इसी का चौकन्नी जमेगी। देखना, मैं कैसा उन्हें मात करता हूं।

ही ही-ही! सो भी देखेंगे उस समय जब मुकाबिले पर डटोगे। अभी मंजिल दूर है।

ओहो क्या बासी कढ़ी में फिर उबाल आनेवाला है? एक खास अन्दाज में जोर देते हुए बजारोव ने कहा।

वसीली इवानिच के गेहुंवा चेहरे पर लाली की एक हल्की-सी झलक दौड़ गई।

शर्म करो येवगनी बीते दिनों को न कुरेदो। लेकिन इन महानुभाव के सामने मुझे यह स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं कि जवानी के दिनों में मुझे इसकी लत थी हां सचमुच लत थी, मैंने इसका नतीजा भी भुगता। लेकिन आज कुछ गर्मी अधिक है, क्या? न हो तो मैं तुम्हारे पास ही बैठ जाऊं। तुम्हें कुछ दिक्कत तो न होगी क्यों?

नहीं बिल्कुल नहीं, आरकादी ने जवाब दिया।

वसीली इवानिच खांसते हुए से घास पर बैठ गए।

महानुभावो, आपका यह गुदगुदा आसन, उन्होंने कहना शुरू किया मुझे उन फौजी दिनों की याद दिलाता है जब हम खुले में पड़ाव डालते थे। घास की ऐसी ही किसी गंजी के पास हम अपना मरहम-पट्टी का तामझाम जमाते और इसी को बहुत बड़ी गनीमत समझते। कहते कहते उन्होंने उसांस भरी। फिर बोले— हां अपने जमाने में मुझे जाने क्या क्या देखना पड़ा है। मिसाल के लिए अगर

सुनना चाहो तो, वेस्सारेविया मे ताऊन की महामारीवाली वह घटना भी कुछ कम अजीब नहीं है।"

"वही न जिसमें आपको सन्त व्लादिमीर का पदक मिला था?" वजारोव ने बीच में ही कहा। "हम उसके बारे में सुन चुके हैं... लेकिन यह बताइए, आप वह पदक लगाते क्यों नही?"

"कहा तो कि मै कोई पूर्वाग्रह नही पालता," वसीली इवानिच बुदबुदाए, हालांकि उन्होने एक ही दिन पहले उस लाल फीते को अपने कोट से उधड़वाया था—और इसके बाद ताऊनवाली घटना सुनानी शुरू कर दी। फिर, बीच में ही, सहसा फुसफुसा उठे—"अरे, ये तो सो गए हजरत!" और परिहास से पुतलियां चमकाते हुए वजारोव की ओर इशारा किया। फिर जोरों से बोले, "येवगेनी, उठो! चलो, भोजन के लिए चलना है..."

फादर अलेक्सेई रोबदार शक्ल-सूरत के आदमी थे। डील-डौल में भी विधाता ने काफ़ी उदारता बरती थी। पट्टेदार बाल बहुत ही सावधानी से संवरे थे और बैंगनी रंग के रेशमी कैस्सोक जामे के ऊपर कामदार पेटी कसी थी। वह बहुत ही काइयां और हाजिरजवाब व्यक्ति सिद्ध हुए। आते ही, तपाक से पहले उन्होंने आरकादी और वजारोव से हाथ मिलाए, जैसे यह पहले से जानते हों कि इन्हें उनके आशीर्वाद की जरूरत नहीं है। और, मोटे तौर से, सहजभाव स्वाभाविक बने रहे। उन्होंने अपने चेहरे में शिकन नहीं आने दी, न औरों को ठेस पहुंचाई। गिरजा-मार्का लैटिन को निशाना बनाकर उड़ाई गई खिल्लियों में उन्होने रस लिया और अपने विशप का पक्ष लेकर लड़े। शराब के दो जाम गले में उंडेल गए और जब तीसरा दिया गया तो इन्कार कर दिया। आरकादी ने चुरुट पेश किया तो ले लिया, मगर सुलगाया नहीं, कहा कि इसे घर ले जाऊंगा। केवल एक

ही चीज़ उनमें नागवार नज़र आई–चेहरे पर आ बैठी मक्खियों को दबोचने के लिए धीरे धीरे और अहतियात से हाथ उठाना और उन्हें कचर तक डालना। यह उनकी आदत में शामिल था। चेहरे पर नरमदिली प्रसन्नता छिटकाए वह हरा भाटन बिछी ताश की मेज़ पर बैठ और बज़ारोव से रोगी की शक्ल में दो रूबल पचास कोपेक जीत कर उठ। अरीना व्लासियेव्ना के घर में चांदी के सिक्के गिनने का किसी को मनाग़िरा नहीं था मानविन (वह ताश नहीं खलती थी) सदा की भांति अपने बेट की बगल में बैठी थी चेहरे को अपनी हथेली पर टिकाए। वह तभी हरकत करती जब उन्हें किसी नयी चीज़ के परोसने का आदेश देना होता। बज़ारोव को दुलराने वह सहमती थी। खुद बज़ारोव इसके लिए बढ़ावा नहीं देता था न ही कोई गुंजाइश छोड़ता था। इसके अलावा वसीली इवानिच ने भी उन्हें ताकीद कर दी थी कि देखो उसे ज़्यादा तंग न करना। नौजवान यह सब पसन्द नहीं करते उन्होंने ज़ोर देकर कहा था। (उस दिन भोजन में क्या क्या परसा गया यह सब बताने की ज़रूरत नहीं। खुद तिमोफ़ेइच एक खास किस्म का चेरकासी मांस लाने के लिए पौ फटते-न-फटते घोड़े पर दौड़ गया था। इससे ठीक विपरीत दिशा में–बागी टँगा और बड़ी झींगा लाने के लिए अमलदार रवाना गया था। और अकेले कुकुरमुत्तों के लिए किसान स्त्रियों को और भी कुछ नहीं तो बयालीस कोपेक के ताम्बे के सिक्के दिए गए थे।) लेकिन अरीना व्लासियेव्ना की आंखों में जो एकटक बज़ारोव के चेहरे पर जमी थीं केवल न्योछावर होने की भावना और स्नेहसिक्त कामना ही नहीं झलक रही थी बल्कि उनमें उदासी का साथ ही कुछ जिज्ञासा और भय का–एक तरह के विनम्र उलाहने का–पुट घुला मिला था।

बज़ारोव का दिमाग़ कहना चाहिए, मां की आंखों की भाषा

पढ़ने में नहीं, दूसरी चीजों में उलझा था। विरले ही वह मां को सम्बोधित करता, और जब करता भी तो संक्षिप्त अन्दाज में। एक वार तो मा का हाथ देखने को मांगा कि इससे 'भाग्य जगता है' या नहीं। मां ने अपना छोटा-सा मुलायम हाथ उसकी कड़ी चौड़ी हथेली में खिसका दिया।

"हां, तो," मां ने कुछ क्षण वाद पूछा, "कैसा रहा?"

"पहले से भी बुरा," व्यंग से मुसकराते हुए उसने जवाब दिया।

"ये लोग आग से खेलते हैं," अपनी नफ़ीस दाढ़ी को सहलाते हुए फादर अलेक्सेई ने कुछ खिन्न आवाज में कहा।

"नैपोलियन की भांति, फादर," इक्का बढ़ाते हुए वसीली इवांनिच ने कहा।

"जिसका अन्त सन्त हेलेना में हुआ," इक्के को तुरुप से काटते हुए फादर अलेक्सेई बुदबुदाए।

"कहो तो थोड़ा सरवेरी का रस मंगा दूं, प्यारे येवगेनी," अरीना व्लासियेवना ने पूछा।

बजारोव ने केवल कंधे बिचकाए, कहा कुछ नहीं।

•

"नहीं," अगले ही दिन बजारोव आरकादी से कह रहा था, "कल ही मैं यहां से गोल हो जाऊंगा। तंग आ गया। मै काम करना चाहता हूं और यहां कुछ हो नही सकता। मैं फिर तुम्हारे यहां चलूंगा, मेरा सारा किया-कराया वही पड़ा है। वहां कम से कम कुछ एकान्त तो मिल जाता है–ऐसा कि कोई पास न फटके। यहां पिता तो बार बार भुनभुनाते हैं: 'मेरा अध्ययनकक्ष तुम्हारे लिए हाजिर है। कोई तुम्हारे पास नही फटकेगा,' लेकिन एक क्षण के लिए भी वह वहां से नहीं खिसकते। और यह भी नही हो सकता कि मैं उन्हें बाहर निकालकर दरवाजा

बन्द कर दू उन्हे परेशान हो न दू। और मेरी मां! दीवार की आड़ में से उनकी आह-कराह काना को छलनी है और जब उठकर उनके पास पहुंचता हूं तो समझ में नहीं आता कि उनसे क्या कहूं।

तुम्हें आता देख वह बुरी तरह परेशान हो उठेंगी, भारवानी ने कहा और साथ ही पिता भी।

लेकिन उनके पास फिर लौटकर तो आऊंगा।

कब?

सन्त पीलमवग जात्रा से पहले।

मुझे तो खासतौर से तुम्हारी मा के लिए दुख होता है।

सो क्यो? रसभरियां खिलाकर उन्होंने तुम्हारा मन जीत लिया है क्या?

भारवानी ने अपनी आंखें झुका ली।

तुम अपनी मा को नहीं जानते यवगनी। वह केवल नेक ही नहीं है बल्कि—सच—बहुत चतुर भी हैं। आज सुबह ही वह मुझसे आध घंटे तक बात करती रही—बहुत ही रोचक और समझ से भरी बातें।

ज्यादातर मुझे लेकर ही तूमार बांधती रही होंगी क्या?

नहीं हमने दूसरी भी बात की।

हो सकता है। बाहरी आदमी इन चीजो को शायद ज्यादा साफ तौर से देख और समझ सकता है। कोई स्त्री बिना तार तोड़े आधे घंटे तक बात कर सके यह अच्छा लक्षण है। जो हो इससे मेरे खिसकने में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

लेकिन तुम उनसे कहोगे कैसे? उन्हें इसकी खबर देना आसान न होगा। हर घड़ी वे तो यही बतियाते रहते है कि इस पखवारे के बाद क्या करेंगे।

"हां, यह आसान नहीं होगा। और जाने मेरे दिमाग़ पर क्या शैतान सवार हुआ कि आज सुबह मैं अपने पिता को चिढ़ा बैठा। उस दिन उन्होंने अपने एक आसामी भू-दास को कोड़े लगाने का हुक्म दिया—और बिल्कुल वाजिब ही हुक्म दिया—हां, बिल्कुल वाजिब! समझे? इस तरह आंखें फाड़कर मेरी ओर न देखो! कारण, वह इतना पक्का पियक्कड़ और चोर है कि कुछ कहना नहीं। केवल पिता को इसका गुमान तक न था, कि मुझे भी कानोंकान ख़बर लग जाएगी। सो वह बौखला गए, और इसके बाद जले पर यह नमक ... लेकिन चिन्ता न करो। इसे रोका-संभाला नहीं जा सकता।"

बजारोव ने कहने को तो कह दिया कि चिन्ता न करो, लेकिन वसीली इवानिच को अपने इरादे की सूचना देने के लिए साहस बटोरने में उसे पूरा दिन लग गया। आख़िर रात को, सोने से पहले अध्ययनकक्ष में उनसे विदा लेते समय, जान-बूझकर जमुहाई लेता हुआ अलस अन्दाज में बोला:

"और ... हां ... यह बताना तो मैं क़रीब क़रीब भूल ही गया ... क्या आप कल फ़ेदोत की चौकी तक पहुंचने के लिए घोड़े कसवाने की कृपा करेंगे?"

वसीली इवानिच चौंके।

"क्या मिस्टर किरसानोव यहां से जा रहे हैं?"

"हां, और साथ ही मैं भी।"

वसीली इवानिच लट्टू की भांति घूम गए।

"क्या तुम जा रहे हो?"

"हां ... मजबूरी है। कृपया घोड़ों का इन्तजाम करना न भूलें।"

"बहुत अच्छा ..." वृद्ध का गला रुंध-सा गया, "घोड़े ... अच्छा .... बहुत अच्छा ... लेकिन ... लेकिन ... हुआ क्या?"

कुछ दिनों के लिए उसके यहां जाना जरूरी है। लौटकर फिर यहीं आऊंगा।

हां कुछ दिनों के लिए ठीक वसीली इवानिच ने अपना रूमाल निकाला और करीब करीब धरती तक दोहरे होते हुए नाक साफ़ की। हां तो? बस इतना ही। मैं सोचता था, तुम अभी अभी और रुकोगे तीन दिन सो भी तीन साल बाद कुछ कुछ भी तो नहीं समझती।

लेकिन मैंने कहा कि जल्दी ही लौट आऊंगा। जाना जरूरी है।'

जरूरी है अच्छा ठीक। कर्तव्य पहले बेशक सो तुम चाहते हो घोड़े भेज दिए जाएं। ठीक। बेशक हमें इसकी उम्मीद नहीं थी। अरीना ने पड़ोसी से फूलों के लिए कहा था। तुम्हारा कमरा सजाने के लिए। (वसीली इवानिच ने इस बारे में कोई जिक्र नहीं किया कि रोज सुबह की सफेदी के छिटकते ही नंगे पांवों में फटफट स्लीपर डाले किस प्रकार वह तिमोफेइच से बतियाते और बाजार से सामान लाने के लिए किस प्रकार एक के बाद एक, कांपती उंगलियों से चिथड़ा हुए बैंकनोट निकालकर थमाते थे खाने की उन चीजों और लाल मदिरा पर खासतौर से जोर देते हुए जो अन्दाज़ से अधिक इन युवकों को प्रिय थी।) आजादी से बढ़कर कुछ नहीं यह मेरा नियम है कभी आड़े न आना कभी नहीं

वह अचानक चुप हो गए और दरवाज़े की ओर बढ़े।

जल्दी ही हम फिर मिलेंगे पिताजी। सच।'

लेकिन वसीली इवानिच ने बिना सिर मोड़े ही खिन्न भाव से हाथ हिलाया और कमरे से चले गए। अपने सोने के कमरे में जब पहुंचे तो देखा कि उनकी पत्नी सो गई है। इस खयाल से कि कहीं उसकी नींद न उचट

जाए, फुसफुसाकर उन्होंने अपनी प्रार्थना की। लेकिन फिर भी उसकी नींद उचट ही गई।

"क्या तुम हो, वसीली इवानिच?" उसने पूछा।

"हां, मालकिन।"

"येवगेनी के पास से आ रहे हो न? मुझे लगता है कि उसे कौच पर आराम न मिलता होगा। मैंने अनफ़ीसुश्का से कहा है कि उसे तुम्हारा सफ़री बिछौना और कुछ नये तकिये दे दे। मैं तो उसके लिए अपना परोंवाला गद्दा निकाल देती, लेकिन अगर मैं भूलती नहीं तो वह मुलायम बिछावन पसंद नहीं करता।"

"कोई बात नहीं, मालकिन, चिन्ता मत करो। वह आराम से है। खुदा हम गुनहगारों पर रहम करे," दबे स्वर में अपनी प्रार्थना को सम्पूर्ण करते हुए उन्होंने कहा। वसीली इवानिच का हृदय अपनी पत्नी के लिए दया से भर गया। सुबह से पहले वह यह नहीं बताना चाहते थे कि कितना बड़ा दुःख उसकी बाट जोह रहा है।

अगले दिन बजारोव और आरकादी चल दिए। सुबह से ही समूचे घर पर उदासी छा गई। अनफ़ीसुश्का की उंगलियां चीनी के बरतनों को पकड़ नहीं पा रही थी—वे बार बार फिसल जाते थे। यहां तक कि फ़ेदिया का चेहरा भी उतर आया था और अन्त मे उसने जूते उतार कर दूर रख दिए। वसीली इवानिच, और भी अधिक फिरकी बने, इधर-से-उधर लपक-झपक रहे थे। साफ़ था कि वह अपने आपको कड़े जी का सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहे थे। जोरो से बोलते, इधर-से-उधर पांव पटकते। लेकिन उनके चेहरे पर वीरानगी छाई थी और उनकी आंखें बेटे के चेहरे से कतराती नजर आती थीं। अरीना व्लासियेवना दबी सिसकियों में रो रही थी। अगर उसके पति ने पूरे दो घंटे तक आज

जैसा तुम्हारा मर्जी अन्त में उसने कहा।

वा' श्रार वाचवान! आरकादी चिल्लाया।

तरन्नाम निकोलस्वाय का श्रार धचकाने वाली बढ़ चली। श्रोर यह पागलपन करने के बाद दोना मित्रा ने अपने मुह श्रोर भी कसकर- अन्यित हठ के साथ—बंद कर लिए। लगता था जैसे वे एक-दूसरे से भरे बैठे हो।

आदिनसोवा की ड्योढी पर पहुचते ही जिस प्रकार भडारी ने उनका स्वागत किया उससे हमारे दोना मित्रा को इस बात का चेत जरूर हो गया होगा कि अपनी उस आकस्मिक तरग में बहकर उन्होंने कोई समझदारी का काम नहीं किया। स्पष्ट ही उनका आना एक अनहोनी बात थी। दुम दबाए उन्हे काफी देर तक ड्राइगरूम में एडिया खुजलाना पडी। आखिर आदिनत्सोवा आई। आदत के अनुसार मिलनसारी के साथ उसने उनका अभिवादन किया लेकिन उनके इतनी उतावली म लौट आने से वह चकित थी और उसकी मरियल बातो तथा हरकतो से मालूम होता था कि उसे यह सही मानी में अच्छा नहीं लगा। उन्होंने तुरत बात सभाली एलान किया कि वे शहर जा रहे थे रास्ते में इधर भी हो लिए और यह कि चार-पाच घटे म ही फिर रवाना हो जाएगे। बदले म उसने केवल एक हल्की-सी ऊह की, आरकादी से कहा कि अपने पिता से मेरा यथायोग्य कहना और अपनी मौसी को बुला भेजा। उनीदी-सी आखें लिए मौसी आई जिससे उनका जीर्ण मुखडा और भी अधिक झल्लाया हुआ मालूम था। कात्या की तबीयत कुछ ठीक नही थी सो वह अप उतरी। आरकादी ने अचानक एक कचनी का अनुभव १। न की चाह भी उसके

सेर्गेयेवना को देखने की। कभी इस और कभी उस विषय पर बेसिलसिले की बातों में चार घंटे बीत गए। अन्ना सुनती रही, बोली भी, लेकिन उसका चेहरा मुसकान से बराबर रीता ही रहा। केवल विदा के समय पहलेवाली घनिष्ठता का उसने कुछ परिचय दिया।

"उदासी का दौरा मुझे दबोचे है," उसने ऐलान किया, "मगर आप—और यह मैं दोनों से ही कहती हूं—इसे मन में न लें। कुछ दिन बाद फिर जरूर आएं।"

जवाब में बजारोव और आरकादी दोनो ने चुपचाप गरदन झुकाई, अपनी गाड़ी में सवार हुए और सीधे अपने घर मारिनो की ओर चल दिए। अगले दिन सांझ को वे वहां सही-सलामत पहुंचे। रास्ते भर दोनों में से एक ने भी, और तो और, ओदिनत्सोवा का नाम तक नही लिया। खासतौर से बजारोव ने तो अपना मुंह भी शायद मुश्किल से ही खोला हो। भीषण तनाव के साथ वह एक ओर सड़क से कहीं दूर घूरता रहा।

मारिनो में सभी ने खुशी से उनका स्वागत किया। निकोलाई पेत्रोविच अपने लड़के की लम्बी गैरहाजिरी से चिन्तित हो उठे थे। खुशी के मारे वह चहक उठे, हवा में उनके पांव उछले और सोफ़े पर कुदकने लगे जब, आंखों में चमक लिए, फेनिचका दौड़ती हुई आई और 'छोटे मालिकों' के आने की उसने सूचना दी। पावेल पेत्रोविच तक ने मन ही मन खुशी की एक हल्की सरसराहट का अनुभव किया और लौटे हुए घुमक्कड़ों से हाथ मिलाते समय वह दुलार से खिल उठे। फिर सफ़र के वर्णनों और सवालों का दौर चला। ज्यादातर आरकादी ही बोला, खासतौर से सांझ के खाने-पीने के समय जो आधी रात के बाद भी काफ़ी देर तक चलता रहा। निकोलाई पेत्रोविच ने हाल ही में मास्को से आई पोर्ट की कई बोतलें निकलवाईं और इतना जमकर उनके पीछे पड़े कि उनके गाल लाल दमकने लगे। वह बराबर

हस रहे थे। उनकी इस हंसी में एक तरह की बचकाना विह्वलता थी। हंसी-खुशी की इस भ्राम लहर से नौकरों का वामा भी अछूता नहीं रहा। दुयाशा आपा भूली इधर-से उधर लपक रही थी। हर बार जब भी वह बाहर जाती या भीतर आती दरवाजा धड़ाक से आवाज करता। उधर प्योत्र रात के तीन बजे जाने पर भी अपनी धुन में मस्त वाल्ट्ज नृत्य की धुन बजाने के लिए अपने गिटार से जूझ रहा था। हवा स्थिर थी और गिटार के तारों से एक सुहावनी विषाद ध्वनि की झंकार निकल रही थी। लेकिन वह पढ़ा लिखा खवास आलाप की नुमाइशी टेर से आगे न बढ़ सका। अन्य कलाओं की भांति संगीत की कला से भी प्रकृति ने उसे वंचित कर रखा था।

मारिनो की शान्ति भी इधर कुछ ढंग से नहीं चल रही थी और बेचारे निकोलाई पेत्रोविच के दिन काफी कठिनाई से गुजर रहे थे। खेती-बारी की चिंताएं—बिल्कुल बेरस और बेकार की चिन्ताएं—नाक में दम किए थीं और आए दिन बढ़ती ही जाती थीं। भाड़े के मजूर असह्य हो उठे थे। कई थे जो हिसाब साफ करने या तरक्की देने की मांग कर रहे थे, कई पेशगी का पैसा हजम कर चंपत भी हो गए थे। घोड़ों का बुरा हाल था। जोतों की टूट-फूट ने भयंकर रूप धारण कर लिया था। काम जैसे तैसे किया जा रहा था। मास्को से कूटने की मशीन मंगाई गई। वह इतनी वजनी थी कि काम की नहीं निकली। ओसाई की मशीन पहली परीक्षा में ही टें बोल गई—ऐसी कि मरम्मत भी न हो सके। मवेशीखाने का आधा भाग जलकर खाक हो गया। यह इसलिए कि नौकरों के वास की एक अंधी बुढ़िया तेज हवा में जलती लुकाठी लिए अपनी गाय को धुआने चली थी और सच पकड़े जाने पर पलटकर बोली कि यह मालिक की एक से एक नयी धुन का—नये

ढंग से पनीर और गोरस की चीजें बनाने का – नतीजा है। मैनेजर एकाएक काहिल हो गया था और काहिली की रोटी खाने का चस्का लगे हर रूसी की भांति मोटाता भी जा रहा था। निकोलाई पेत्रोविच पर अगर दूर से भी नजर पड़ जाती तो अपनी मुस्तैदी दिखाने के लिए पास गुजरते सूअर पर वह चैली फेंकता या किसी अधनंगे छोकरे को घूंसा दिखाता, अन्यथा वह ज्यादातर ऊंघता रहता। जिन किसानों को काश्त का हक़ दे दिया गया था, वे लगान बाक़ी चढ़ाए थे और मालिक की इमारती लकड़ी चुरा ले जाते थे। शायद ही ऐसी कोई रात बीतती हो जब किसानों के छुट्टा घोड़े फार्म के चरागाह में चरते न पकड़े गए हों और उन्हें कांजीहाउस में न बंद किया गया हो। नाजायज़ पैठ के लिए निकोलाई पेत्रोविच ने जुरमाना लगा रखा था, लेकिन आमतौर पर होता यही था कि एक या दो दिन तक जागीरी चारा खिलाने के बाद घोड़ों को उनके मालिकों के पास लौटा दिया जाता था। कोढ़ में खाज यह कि किसान आपस मे भी एक-दूसरे से लड़ने लगे थे। भाई जायदाद के बंटवारे के लिए लड़ते, उनकी पत्निया अलग बैर साधतीं, यहां तक कि अचानक मारपीट का हल्ला मचता, पलक झपकते सभी बाहर खिंच आते, दफ़्तर के दरवाजे पर उनका झुड जमा हो जाता और न्याय तथा फ़ैसले की मांग करते मालिक के सिर पर सवार हो जाते। कितनों के चेहरे नोचे-खरोचे हुए, और नशे मे धुत्त। गुल-गपाड़े और गुहारों का तूफ़ान। स्त्रियों का रोना-किकियाना और पुरुषों का कोसना। इसके सिवा कोई चारा नही कि विरोधी पक्षों में बीच-बचाव करने की कोशिश में चिल्लाकर अपना गला बैठा लिया जाए, ख़ूब अच्छी तरह से यह जानते हुए भी कि किसी माक़ूल नतीजे पर नही पहुंचा जा सकता। फ़सल काटने के समय मजदूरों की कमी पड़ गई। फ़रिश्तों जैसी शक्लवाले पड़ोस के एक ताल्लुकेदार ने ठेका किया था

कि वह न म्बन पा दम्मियातिन के हिसाब म कटाई करनवाला को भज देगा। लकिन वह बडा बशर्मी स निकालाई पत्रोविच को दगा द गया। स्थानिक किसान स्त्रियो न मजूरो के नाम बुरी तरह मह फलाए। उधर अनाज था कि बालियो म ही बिगडा जा रहा था घास की कटाई भी यो ही पडी थी और पच-परिषद रहन के मूड को पूरी और तुरत अन्यायता का घमकिया और माग पर उतर आई थी

मगडा ता इन्तहा आ पहुचा एक स अधिक बार निकालाई पत्रोविच न निराशा म क्रन्दन किया मैं खुद उनसे अच्छी तरह निबट नहीं सकता और पुलिस अफसर को बुलाना मेरे सिद्धान्तो के खिलाफ है तिस पर यह भी एक मानी हुई बात है कि सजा का डर दिखाए बिना कुछ किया नही जा सकता।

Du calme du calme* पावेल पेत्रोविच उन्हे तसल्ली देने का प्रयत्न करते जबकि वह अपने साथ को सिकोडते मूछो के बाल खोचते और मन ही मन गुर्राते।

बजारोव इन मामलो से दूर ही रहता। इसके अलावा मेहमान होने के नाते इन सब बातो म वह पड भी नही सकता था। मारिनो आने के बाद अगले ही दिन स वह अपने मेंढको बीजाणु घोलो और रासायनिक द्रव्यो म जुट गया और अपना अधिकाश समय उन्ही में बिताता। उधर आरकादी न सोचा कि अपने पिता की मदद करना—या मदद करने की अपनी तत्परता का परिचय देना—उसका कतव्य है। पिता की बातो को वह धीरज स सुनता एकाध बार उसने कुछ सलाह भी दी—इसलिए नही कि वह मानी जाए बल्कि अपनी हमदर्दी जताने के लिए। खेती-बारी के—फाम चलाने के—काम स वह घिनाता नही था। सच

---

*धीरज स काम लो धीरज स। (फ्रच)—स०

तो यह है कि वह खुद भी भविष्य में उन्हे अपनाने का सपना देखता था, लेकिन इस समय उसका दिमाग अन्य चीजों से उलझा था। निकोलस्कोये का खयाल – और यह देखकर खुद उसे भी आश्चर्य होता था – उसे बराबर बना रहता था। पहले अगर कोई इस बात की सम्भावना का भी जिक्र करता कि वह बजारोव की संगत – और साथ ही अपने पिता की छत्रछाया से भी – ऊब सकता है तो वह महज अपने कंधे बिचकाकर रह जाता। लेकिन अब वह सचमुच ऊब उठा था और उससे पीछा छुड़ाने के लिए छटपटाता था। उसने लम्बी, थका देने-वाली मटरगश्ती का सहारा लिया, लेकिन बेकार। एक दिन, अपने पिता से बातचीत के दौरान में, आरकादी को मालूम हुआ कि उसके पिता के पास कुछ पत्र है – सो भी काफी दिलचस्प पत्र – जो ओदिनत्सोवा की मां ने उनकी स्वर्गीय पत्नी को लिखे थे। आरकादी अपने पिता के पीछे पड़ गया और अन्त में उसने पत्रों को लेकर ही छोड़ा। पत्रों की खोज मे निकोलाई पेत्रोविच ने बीसियों दराजें और ट्रंक खोल डाले। इन अधगले-से पत्रों को कब्जे में करने के बाद ऐसा लगा जैसे आरकादी की मुराद पूरी हो गई हो, जैसे उस लक्ष्य की झलक उसे मिल गयी हो जिसे वह पाना चाहता था। "और यह मैं दोनों से ही कहती हूं," वह बार बार अपने आपसे फुसफुसाया। "यह खुद उसने कहा था। गोली मारो सबको, मुझे वहां जाना है, मैं जरूर वहां जाऊंगा।" तभी पिछली मुलाकात का चित्र उसकी आखो के सामने मूर्त्त हो उठा, बेरुखी से भरे उस स्वागत की उसे याद आई, और झिझक तथा भय की भावना ने पहले की भांति फिर उसे घेर लिया। लेकिन जोखिम से खेलने की यौवन-सुलभ वृत्ति ने, अपना भाग्य आजमाने तथा अकेले ही अपनी शक्ति को कसने की निहित ललक ने, अन्त में उसकी झिझक और दुविधा पर विजय प्राप्त की। मारिनो

लौटने के दस दिन के भीतर ही रविवारी स्कूलों के संगठन का अध्ययन करने के बहाने उसने शहर का और वहां से फिर निकोलस्कोय का रास्ता पकड़ा। पूरी उत्कटा के साथ कोचवान को उकसाता वह इस प्रकार अपनी मंजिल की ओर लपक रहा था जैसे कोई युवा अफसर अपने मोर्चे की ओर बढ़ रहा हो। भय और खुशी के भाव एक साथ उसे मथ रहे थे और बेसब्री ने उसके हृदय को उखाड़ डाला था। मुख्य बात यह है वह बार बार अपने से कह रहा था कि इसे अपने दिमाग में ही न आने दूं। कोचवान—और इसे सौभाग्य ही कहिए—मिलनसार तबीयत का आदमी था। रास्ते में जब भी कोई दारूघर आता, अपने घोड़ों की रास रोकता और कहता क्या ख्याल है गला तर कर लिया जाय? लेकिन गला तर करने के बाद वह कोई कसर न छोड़ता और घोड़े हवा से बातें करने लगते। आखिर चिर-परिचित घर की ऊंची छत नजर के सामने उभर आई ... मुझे भी यह क्या सूझा? आरकादी के मन में कौंधा। लेकिन अब लौटा भी नहीं जा सकता। गाड़ी सड़क की धज्जियां उड़ा रही थी कोचवान हुंकार और सिसकार रहा था। लकड़ी का वह छोटा-सा पुल आया और टापों की खनखनाहट तथा पहियों की गड़गड़ाहट के साथ गुजर गया और अब राह के दोनों ओर सनोवर-वृक्षों की पांत तेजी से उनकी ओर लपकी आ रही थी गहरी हरियाली के बीच गुलाबी फ्राक फरफरा उठी और छतरी की हल्की झालर की ओट में से कोई युवा चेहरा झांका ... उसने कात्या को पहचाना और कात्या भी उसे पहचानने में पीछे न रही। आरकादी ने दौड़ते घोड़ों की रास खींचने के लिए कोचवान से कहा छलांग मार कर गाड़ी से बाहर आ गया और उसकी ओर बढ़ चला।

अरे तुम हो! वह कुनकुनाई और उसके गाल धीरे धीरे लाली

में रंग चले। "चलिए, बहिन के पास चलें। वह भी यहीं बाग में है। आपको देखकर खुश होंगी।"

कात्या आरकादी को बाग में ले चली। आरकादी को उसका यह मिलन अद्भुत रूप में शुभ लक्षण मालूम हुआ। उसे उतनी ही खुशी हुई जितनी कि अपनी निकटतम, और प्रियतम, वस्तु को देखकर होती है। इससे ज्यादा अच्छा और क्या हो सकता था–न भंडारी, न खबर करवाने का झमेला। रास्ते के एक मोड़ पर अन्ना सेर्गेयेवना की झलक दिखाई दी। वह उसकी ओर पीठ किए खड़ी थी। पांवों की आहट सुन धीरे धीरे मुड़ी।

आरकादी के हृदय में बेचैनी ने फिर सिर उठाना शुरू किया। लेकिन उसके मुंह से निकले पहले शब्दों ने ही उसे आश्वस्त कर दिया।

"ओह, तुम आ गए, भगोडे-पंछी!" अपने मृदु और सुहावने अन्दाज में उसने कहा और मुसकराते तथा सूरज की चौंध और हवा के मारे अपनी आंखों को सिकोड़े आरकादी से मिलने के लिए आगे बढ़ी। "यह तुम्हें कहां मिले, कात्या?"

"आपके लिए मैं एक चीज़ लाया हूं, अन्ना सेर्गेयेवना," आरकादी ने कहना शुरू किया, "ऐसी कि आप सपने में ..."

"बस बस, आप अपने आपको ले आए, इससे अच्छी चीज़ भला और क्या होगी?"

२३

उपहास का पुट मिले खेद के साथ आरकादी को विदा करने और यह जताने के बाद कि उसकी यात्रा के असली मक़सद के बारे में उसे जरा भी भ्रम नहीं है, बजारोव ने अपने आपको पूर्ण एकान्तवास में

समट लिया। लगता जैसे उसके ऊपर काम का—व्यस्तता का—भूत सवार हो। पावेल पेत्रोविच के साथ अब वह पहले की भांति न उलझता, खासकर उस समय से जब से कि उन्होंने, उसकी मौजूदगी में, और भी ज्यादा कुलीनत्व का प्रदर्शन शुरू कर दिया था, और अपने मतों को शब्दों के बजाय आवाजों से व्यक्त करने लगे थे। केवल एक बार—बाल्टिक के कुलीनों के अधिकार संबंधी उन दिनों की फैशनेबुल चर्चा को लेकर पावेल पेत्रोविच ने निहिलिस्ट से टकराने का साहस किया, लेकिन उन्होंने अचानक बीच में ही अपने आपको रोक लिया और एकदम सर्द मुद्रा में शालीनता के साथ बोले 'लेकिन छोड़िए, हम दोनों एक-दूसरे को समझ नहीं सकते—कम से कम मैं, खेद के साथ कहना पड़ता है, आपको नहीं समझ पाता।'

"इसमें भी क्या शक है" बजारोव बोल उठा, "आदमी हर चीज समझने की क्षमता तो रखता है—यह कि हवा में कैसे कम्पन होता है और सूरज की सतह पर क्या कुछ हो रहा है, लेकिन यह उसकी समझ में नहीं आता कि जिस अन्दाज में वह नाक सुड़कता है, उसके अलावा भी और कोई अन्दाज हो सकता है।"

"और शायद आप इसे बहुत ही मजेदार जवाब समझते हैं क्या?" पावेल पेत्रोविच ने टोका और उठकर चल दिए।

लेकिन यह भी सच है कि कभी कभी वह बजारोव के प्रयोगों को देखने की इच्छा प्रकट करते थे, और एक बार तो किसी बहुत ही बढ़िया इत्र में बसा अपना चेहरा खुर्दबीन तक से अड़ाकर देखा कि किस प्रकार एक पारदर्शी बीजाणु एक हरे से धब्बे को बड़ी तेजी से निगल और कण्ठ में स्थित अत्यन्त चपल बारीक कांटे की मदद से उदरस्थ कर रहा है। निकोलाई पेत्रोविच अपने भाई के मुकाबिले अधिक बहुतायत से बजारोव के पास पहुंच जाते थे। अगर खेती-बारी में इतने न फंसे

होते तो, उनके ही शब्दों में, कुछ सीखने के लिए वह रोज उसके पास जा धमकते। युवक पदार्थशास्त्री को वह जरा भी अस्तव्यस्त करने में बाधा नही पहुंचाते थे। आमतौर से एक कोने में जम जाते और बस ध्यान से देखा करते। केवल कभी कभी, विरल अवसरों पर ही, समझ-बूझ के साथ सवाल पूछने को तैयार होते। भोजन के समय बातचीत के सिलसिले को वह भौतिक विज्ञान, भूतत्व या रसायन विज्ञान की ओर मोड़ने का प्रयत्न करते। कारण कि अन्य सभी विषय – राजनीति की तो बात ही छोड़िए – खेती-बारी तक खतरे से ख़ाली नहीं थे। टक्कर की बात अगर छोड़ भी दें तो उनसे आपसी बदमजगी तो पैदा हो ही सकती थी। निकोलाई पेत्रोविच भांपते कि बजारोव के प्रति उनके भाई की भन्नाहट जरा भी कम नहीं हुई है। और तो और, एक नगण्य-सी घटना ने इस धारणा की पुष्टि कर दी। पड़ौस मे हैजा फूट पड़ा था और मारिनो के दो निवासी भी उसकी चपेट में आ गए थे। एक रात पावेल पेत्रोविच बुरी तरह बीमार पड़ गए। वह सुबह तक छटपटाते रहे, लेकिन बजारोव की दक्षता का मुह नही देखा। अगली सुबह जब बजारोव उनसे मिला और उसने पूछा कि उन्होंने उसे क्यों नही बुला भेजा, तो अभी तक पीले पड़े लेकिन खूब चिकने-चुपड़े और हजामत बने चेहरे से बोले: "अगर मैं भूलता नहीं तो शायद खुद आपने ही यह कहा था कि दवा-दारू में आपका विश्वास नही है?" इस प्रकार दिन आते और चले जाते। झुंझलाहट और जिद्द से भरा बजारोव काम में जुटा रहता। लगता जैसे सिवा इसके दुनिया में और कोई रस न हो। लेकिन, उसके प्रति इस उदासीनता के बावजूद, निकोलाई पेत्रोविच के घर में एक ऐसा जीव भी मौजूद था जिसकी संगत में उसे आनन्द मिलता था ... यह जीव था फेनिचका।

फ़ेनिचका से उसकी भेंट अक्सर तड़के ही होती – बाग में या अहाते

समेट लिया। लगता जैसे उनके ऊपर काम का—व्यस्तता का—भूत सवार हो पावेल पत्रोविच के साथ अब वह पहले की भांति न उलझता खासकर उस समय से जब से कि उन्होंने उसकी मौजूदगी में और भी ज्यादा कुलीनत्व का प्रदर्शन शुरू कर दिया था और अपने मतों को शब्दों के बजाय आवाज़ों में व्यक्त करने लगे थे। केवल एक बार—बाल्तिक के कुलीनों के अधिकार संबंधी उन दिनों की फैशनेबुल चर्चा को लेकर पावेल पत्रोविच ने निहिलिस्ट से टकराने का साहस किया लेकिन उन्होंने अचानक बीच में ही अपने आपको रोक लिया और एकदम सर्द मना में शालीनता के साथ बोले लेकिन छोड़िए हम दोनों एक दूसरे को समझ नहीं सकते—कम से कम मैं खुद के साथ कहना पड़ता है आपको नहीं समझ पाता।

इसमें भी क्या शक है बज़ारोव बोल उठा आदमी हर चीज़ समझने की क्षमता तो रखता है—यह कि हवा में कैसे कम्पन होता है और सूरज की सतह पर क्या कुछ हो रहा है लेकिन यह उसकी समझ में नहीं आता कि जिस अन्दाज़ में वह नाक सुड़कता है उसके अलावा भी और कोई अन्दाज़ हो सकता है।

और शायद आप इसे बहुत ही मज़ेदार जवाब समझते हैं क्या? पावेल पत्रोविच ने टोका और उठकर चले दिए।

लेकिन यह भी सच है कि कभी कभी वह बज़ारोव के प्रयोगों को देखने की इच्छा प्रकट करते थे और एक बार तो किसी बहुत ही बढ़िया इत्र में बसा अपना चेहरा खुर्दबीन तक से अड़ाकर देखा कि किस प्रकार एक पारदर्शी कीटाणु एक हरे-से धब्बे को बड़ी तेज़ी से निगल और कठोरता में स्थित अयत्न चपल बारीक काट की मदद से उदरस्थ कर रहा है। निकालाई पत्रोविच अपने भाई के मुकाबिले अधिक बहुतायत में बज़ारोव के पास पहुंच जाते थे। अगर खेती-बारी में इतने न फंसे

होते तो, उनके ही शब्दों में, कुछ सीखने के लिए वह रोज उसके पास जा धमकते। युवक पदार्थशास्त्री को वह जरा भी अस्तव्यस्त करने में बाधा नहीं पहुंचाते थे। आमतौर से एक कोने में जम जाते और बस ध्यान से देखा करते। केवल कभी कभी, विरल अवसरों पर ही, समझ-बूझ के साथ सवाल पूछने को तैयार होते। भोजन के समय बातचीत के सिलसिले को वह भौतिक विज्ञान, भूतत्व या रसायन विज्ञान की ओर मोड़ने का प्रयत्न करते। कारण कि अन्य सभी विषय–राजनीति की तो बात ही छोड़िए–खेती-बारी तक खतरे से खाली नहीं थे। टक्कर की बात अगर छोड़ भी दें तो उनसे आपसी बदमजगी तो पैदा हो ही सकती थी। निकोलाई पेत्रोविच भांपते कि बजारोव के प्रति उनके भाई की भन्नाहट जरा भी कम नहीं हुई है। और तो और, एक नगण्य-सी घटना ने इस धारणा की पुष्टि कर दी। पड़ौस में हैजा फूट पड़ा था और मारिनो के दो निवासी भी उसकी चपेट में आ गए थे। एक रात पावेल पेत्रोविच बुरी तरह बीमार पड़ गए। वह सुबह तक छटपटाते रहे, लेकिन बजारोव की दक्षता का मुह नहीं देखा। अगली सुबह जब बजारोव उनसे मिला और उसने पूछा कि उन्होंने उसे क्यों नहीं बुला भेजा, तो अभी तक पीले पड़े लेकिन खूब चिकने-चुपड़े और हजामत बने चेहरे से बोले: "अगर मैं भूलता नहीं तो शायद खुद आपने ही यह कहा था कि दवा-दारू में आपका विश्वास नहीं है?" इस प्रकार दिन आते और चले जाते। झुझलाहट और जिद्द से भरा बजारोव काम में जुटा रहता। लगता जैसे सिवा इसके दुनिया में और कोई रस न हो। लेकिन, उसके प्रति इस उदासीनता के बावजूद, निकोलाई पेत्रोविच के घर में एक ऐसा जीव भी मौजूद था जिसकी संगत में उसे आनन्द मिलता था ... यह जीव था फेनिचका।

फ़ेनिचका से उसकी भेंट अक्सर तड़के ही होती–बाग में या अहाते

में। उसके कमरे की ओर वह कभी न जाता। खुद वह भी केवल एक बार उसके दरवाज़े तक गई थी, यह पूछने कि मित्या को नहलाया जा सकता है या नहीं। केवल यही नहीं कि वह उसपर भरोसा रखती थी और उससे भय नहीं खाती थी बल्कि उसकी मौजूदगी में वह अधिक अपनत्व का अनुभव करती थी, निकोलाई पेत्रोविच की सगत से भी ज्यादा सहूलियत के साथ सांस ले सकती थी। ऐसा क्यों था, यह कहना कठिन है। शायद इसका कारण यह था कि अपने भीतरी मन की सहज वृत्ति से उसने जान लिया था कि बज़ारोव महामहिम कुलीनों के आभिजात्य से अछूता है— उस ऊंचे सिंहासन पर वह स्थित नहीं है जो मोह और आतंक, दोनों का एक साथ संचार करता है। उसके लिए वह एक बहुत ही बढ़िया डाक्टर और एक सीधा-सादा आदमी भर था। बिना किसी झिझक के उसके सामने वह अपने बच्चे को दूध पिलाती और एक बार जब अचानक सिर चकराने और दुखने लगा तो बज़ारोव के हाथों से उसने एक चम्मच दवा भी पी ली। निकोलाई पेत्रोविच की उपस्थिति में वह बज़ारोव से कुछ कतराती-सी मालूम होती उन्हें छलने की नीयत से नहीं, बल्कि इसलिए कि वह उनका लिहाज़ करती थी। पावेल पेत्रोविच से वह अब भी वैसे ही, बल्कि और भी ज्यादा, डरती थी। इधर कुछ दिनों से वह उसकी चौकसी-सी करने लगे थे। एकदम अचानक, मानो धरती फोड़कर, वह उसके पीछे से प्रकट हो जाते, अपना बेदाग सूट पहने, जेबों में अपने हाथ खोंसे, और चेहरे को सतर्कता के चौखटे में जड़े। "वह तो सुन्न कर देनेवाले सर्द झोंके की भांति है," फेनिचका दुन्याशा से दुखड़ा रोती। जवाब में वह एक आह भर के रह जाती और एक अन्य 'पाला मारे' आदमी की कल्पना उसके हृदय में उभर आती।

बजारोव, एकदम अनजाने में ही, उसके हृदय का क्रुद्ध आततायी बन गया था।

फ़ेनिचका बजारोव को पसन्द करती थी, और बजारोव भी उसे पसंद करता था। फ़ेनिचका से बातें करते समय उसके चेहरे तक में एक परिवर्तन आ जाता—उसके चेहरे पर एक प्रकार की शान्त स्थिरता और क़रीब क़रीब मृदुता का सा भाव छा जाता और बेपर्वाही तथा उपेक्षा से भरा उसका अन्दाज़—जो कि उसकी आदत में शामिल था—खुशमिजाजी की आभा से रंग जाता। फ़ेनिचका का सौन्दर्य दिन दिन निखर-उभर रहा था। युवती स्त्रियों के जीवन में ऐसा समय आता है जब वे ग्रीष्मकालीन गुलाब की भांति अचानक चटखना और खिलना शुरू कर देती हैं। फ़ेनिचका का वह समय आ गया था। हर चीज उसके अनुकूल थी—यहां तक कि जुलाई मास की उमस-भरी गर्मी भी। हल्के सफ़ेद कपड़ों में वह खुद भी अधिक हल्की और अधिक उजली मालूम होती। धूप में तपना उसे न सुहाता और गर्मी ने जिससे बचने का वह निष्फल प्रयास करती, उसके गालों और कानों को एक मृदु आभा से दमका दिया, एक निढाल अलसाहट उसके रोम रोम में सरसरा गई, और उसकी प्यारी आंखों में स्वप्निल मूर्च्छना-सी बनकर तैरने लगी। उससे कुछ भी करते न बनता और उसके हाथ, खोए खोए से, बार बार उसकी गोद में फिसल आते। हिलना-डुलना तक उसे न सुहाता और बेबसी के छोटे छोटे विस्मयकारी उद्‌गार मुह से प्रकट करती।

"तुम्हें और भी अधिक स्नान करना चाहिए," निकोलाई पेत्रोविच उससे अक्सर कहते। अपने तालाबों में से एक के किनारे, जो अभी सूखा नहीं था, नहाने के लिए उन्होंने कनात लगवा दी।

"ओह निकोलाई पेत्रोविच! तालाब तक पहुंचते न पहुंचते जान-सी निकल जाती है, और वहां से लौटते न लौटते भी आदमी

अधमरा हो जाता है। बाग़ में बसंत साल भर का भी तो छाव नहीं है।

हाँ भी तो है अपनी भौंहों को सरकाते हुए वह जवाब देती बाग़ में छाव नहीं है।

एक दिन सुबह के छ बजे से कुछ ही ऊपर बजारोव टहलकर लौट रहा था कि लिलक के कुंज में फनिच्का से भेंट हो गई। लिलक के खिलने के दिन तो कभी के बीत चुके थे लेकिन घनी और गहरी हरियाली अभी भी छाई थी। सदा की भांति सिर पर रूमाल डाले वह एक बेंच पर बैठी थी। पास ही लाल और सफेद गुलाब के फलों का ढेर लगा था। फल अभी भी ओस से भीगे थे। उसने प्रातःकालीन शुभाभिवादन किया।

आह यवगेनी वसील्येविच! फनिच्का ने कहा और रूमाल का एक छोर उठाकर उसे देखने के प्रयास में उसकी बांह कोहनी तक उघर गई।

यहां तुम क्या कर रही हो? उसके निकट बैठते हुए बजारोव ने कहा। ओह गुलदस्ता बना रही हो क्यों?

हाँ नाश्ते की मेज के लिए। निकोलाई पेत्रोविच को इसका बड़ा चाव है।

लेकिन नाश्ते में अभी बहुत देर है। भाई खूब तुमने तो फलों का पूरा अम्बार जमा कर लिया!

बाद को गरमी हो जाएगी और मुझसे बाहर निकलते नहीं बनेगा इसलिए अभी चुन लिए। केवल यही समय है जब मैं कुछ खुल कर सांस ले सकती हूं। गर्मी तो बुरी तरह जान सोख लेती है। जाने मेरी तबीयत को क्या हो गया है।

"तुम भी क्या सोचती हो! ज़रा अपनी नब्ज तो दिखाओ!"

बज़ारोव ने उसका हाथ थामा, समगति से धड़कती नब्ज़ का अनुभव किया और धड़कनों को गिनने तक की चिन्ता न कर उसके हाथ को छोड़ते हुए बोला :

"सौ साल तक जियोगी।"

"ओह, खुदा न करे!"

"क्यों, क्या लम्बी आयु पसंद नहीं?"

"मगर पूरे सौ साल! दादी पचासी की थीं, बस, जिन्दा लाश ही समझो। काली, निपट बहरी, कमान की भांति दोहरी और हर घड़ी खो खो।

"तो युवावस्था ही बेहतर है?"

"हां, बेशक!"

"क्यों बेहतर है? बताओ तो।"

"क्या सवाल किया है? अच्छा तो सुनो। अभी मैं जवान हूं, चाहे जो कर सकती हूं, आ सकती हूं, जा सकती हूं, चीजों को उठा-धर सकती हूं, काम के लिए किसी का आसरा मुझे नहीं देखना पड़ता .. इससे अच्छा भला और क्या होगा?"

"जवान हूं तो और बूढ़ा हूं तो, मेरे लिए दोनों एक है।"

"यह तुम कैसे कह सकते हो कि दोनों एक है? यह असम्भव है, तुम जो कह रहे हो।"

"खुद तुम्हीं सोचकर देखो, फ़ेदोसिया निकोलायवना, यह यौवन किस काम का है मेरे लिए? मैं एकदम अकेला रहता हूं—निरीह एकाकी जीव ..."

"यह सब तो खुद तुम्हीं पर निर्भर है।"

"ठीक यही तो मुसीबत है—यह कि मुझपर निर्भर नहीं है। काश कि कोई मुझपर तरस खा सकता।"

फनिचका ने कनखियों से उसकी ओर देखा, लेकिन कहा कुछ नहीं। फिर अनायास ही पूछा

यह कौनसी पुस्तक लिए हो?

यह? यह अति ज्ञानवर्द्धक किताब है, भेदों से भरी।

और आप हर घड़ी पढ़ने-सीखने रहते हैं। क्या जी नहीं उकताता? लगता है जानने योग्य एक भी बात आपसे नहीं बची होगी।

स्पष्ट ही ऐसा नहीं है। यह लो इसमें से कुछ पढ़ने की कोशिश कर देखो।

लेकिन मेरे पल्ले तो कुछ पड़ेगा नहीं। क्या यह रूसी भाषा में है? फनिचका ने पूछा। फिर दोनों हाथों में भारी भरकम जिल्द बंधी किताब संभालते हुए बोली आह कितनी मोटी किताब है!

हां रूसी में है।

जो हो मैं तो इसे समझ पाऊंगी नहीं।

मेरा मतलब तुम्हारे समझने से थोड़े ही है। मैं तो केवल तुम्हें पढ़ते हुए देखना चाहता हूं। जब तुम पढ़ती हो तो तुम्हारी नाक बहुत ही प्यारे ढंग से कुलबुलाती है।

फनिचका जिसने क्रओसोत के बारे में दीपक को दबी आवाज में एक एक अक्षर करके पढ़ना शुरू कर दिया था खिलखिलाकर हंस पड़ी और पुस्तक उसके हाथों से छूट गई बैंच पर से फिसलकर वह धरती पर जा गिरी।

तुम्हें हंसते हुए देखना भी मुझे अच्छा लगता है बजारोव ने कहा।

बस बस रहने दो।

जब तुम बोलती हो तो बड़ा सुहाना मालूम होता है—जैसे कोई झरना छलछला रहा हो।

फ़ेनिचका ने मुह फेर लिया।

"ओह, तो क्या सचमुच!" फूलों से खेलते हुए वह बुदबुदाई। "मेरी बातों में भला तुम्हें क्या मिलेगा? तुम एक से एक समझदार स्त्रियों से बातें कर चुके हो।"

"आह, फ़ेदोसिया निकोलायेवना! मेरा विश्वास करो, दुनिया भर की सारी समझदार स्त्रियां भी तुम्हारी कानी उंगली की बराबरी नही कर सकती!"

"बस बस, तुम्हारी बातों का भी कोई पार नही," अपने हाथों को समेटते हुए फ़ेनिचका फुसफुसाई।

बजारोव ने पुस्तक को धरती पर से उठा लिया।

"यह डाक्टरी की किताब है। इसे यों ही नही फेंक देना चाहिए।"

"डाक्टरी की किताब?" फ़ेनिचका प्रतिध्वनि कर उठी और घूमकर उसकी ओर मुंह कर लिया। "अरे सुनो तो, जब से तुमने मुझे बूंदे दीं—याद है न?—तब से मित्या को बहुत ही बढ़िया नीद आ रही है। कुछ सूझ नही पड़ता कि तुम्हे कैसे धन्यवाद दू—सच, तुम बहुत सदय हो।"

"सच पूछो तो डाक्टरों को फ़ीस देनी चाहिए," बजारोव ने मुसकराते हुए कहा, "डाक्टर लोग, तुम जानती ही हो, पैसों पर गुजर करनेवाले जीव होते हैं।"

फ़ेनिचका ने आंखें उठाकर बजारोव की ओर देखा। उसके चेहरे के ऊपरी हिस्से की पीली आभा की पृष्ठभूमि में उसकी काली आंखें और भी काली हो उठी थीं। वह कुछ समझ नही सकी कि बजारोव हंसी कर रहा है या संजीदगी से कह रहा है।

"अगर तुम चाहो तो बड़ी खुशी ... मैं निकोलाई पेत्रोविच से इसका जिक्र करूंगी ..."

अरे नग्ग क्या तुम ममझना हो कि मैं पैसा चाहता हूं

वज्ञाराव ने बीच में ही कहा महा मुझे तुमसे कोई पैसा-वैसा नहीं चाहिए।

तो फिर? फनिचका ने पूछा।

तो फिर? वज्ञाराव ने दोहराया। तुम्हीं अन्दाज लगा देखो कि मुझे क्या चाहिए।

अन्दाज लगाने में मैं माहिर नहीं हूं।

तब मैं ही बताता हूं मैं चाहता हूं—गुलाब के उन फूलों में से एक।

फनिचका फिर खिलखिलाकर हंस पड़ी और उसके हाथ तक हवा में उछल गए। वज्ञाराव की इच्छा उसे बहुत ही मजेदार मालूम हुई। वह हंसी ही नहीं बल्कि उसने एक गर्व का भी अनुभव किया। वज्ञारोव एकटक उसकी ओर देख रहा था।

वाह क्या नहीं आखिर उसने कहा और बेंच पर झुकते हुए फूलों को छूने लगी कौनसा पसन्द करोगे—लाल या सफेद?

लाल और बहुत बड़ा न हो।

वह सीधी हो गई।

यह लीजिए अपना उसने कहा मगर उसी क्षण अपना हाथ खींच लिया होंठों को काटते हुए कुंज के प्रवेश-द्वार की ओर देखा और कुछ सुनने का प्रयास करने लगी।

क्या है? वज्ञारोव ने पूछा। निकोलाई पेत्रोविच तो नहीं?

नहीं वह तो खेतों पर गए हैं उनसे मैं नहीं डरती मगर पावेल पेत्रोविच पल भर में मुझे कुछ ऐसा लगा

क्या लगा?

"मुझे ऐसा लगा जैसे वह चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं। नही ... कोई नहीं है। लो, यह लो।"

फ़ेनिचका ने बजारोव को फूल दे दिया।

"तुम पावेल पेत्रोविच से इतना क्यों डरती हो?"

"उनका भय पल-भर को पीछा नही छोड़ता। मुह से वह कुछ नहीं कहते, बस अजीब ढंग से ताकते हैं। लेकिन खुद तुम भी तो उन्हें पसन्द नही करते। क्या तुम्हें याद है कि किस प्रकार तुम सदा उनसे बहसों में जूझा करते थे? यह तो मै नही जानती कि किस चीज को लेकर वे बहसें होती थीं, लेकिन यह मैं भी देखती थी कि किस प्रकार कभी तुम उन्हें इधर को मरोड़ते, कभी उधर को ..."

फ़ेनिचका ने अपने हाथों की हरकत से बताया कि किस प्रकार बजारोव, उसकी समझ से, पावेल पेत्रोविच को इधर से उधर मरोड़ता था।

बजारोव मुसकराया।

"अगर वह मुझसे मजबूत पड़ते तो," बजारोव ने पूछा, "तो क्या तुम मेरा पक्ष लेती?"

"तुम्हारा पक्ष मैं किस प्रकार ले सकती थी? इसके अलावा, तुमसे भला कौन मजबूत पड़ सकता है?"

"ऐसा सोचती हो तुम? लेकिन मै एक ऐसे हाथ को जानता हूं जो अगर चाहे तो मुझे अपनी कानी उंगली से पछाड़ सकता है।"

"वह कौनसा हाथ है?"

"अरे, तो क्या तुम इतना भी नही जानती? कितनी अच्छी महक है इस फूल में जो तुमने मुझे दिया है। जरा सूंघकर देखो।"

फ़ेनिचका ने अपनी छरहरी गरदन आगे की ओर की और फूल तक अपना चेहरा ले गई ... रूमाल खिसककर उसके कंधों पर आ गया

ग्रौर बाल चमकदार बालों की कामल राशि थोड़ी ग्रस्तव्यस्त उधर गई।

जरा ठहरो मैं भी तुम्हारे साथ इसका मज़ा लेना चाहता हूँ बज़ारोव बुदबुदाया और नीचे झुकते हुए उसके अधखुले होठों पर एक व्यग्र चुम्बन ग्रंकित कर दिया।

वह चौंक उठी और ग्रपने दोनों हाथों से उसकी छाती को धकेलने का प्रयास करने लगी। लेकिन उसकी बाहों में शक्ति नहीं थी और बज़ारोव ग्रपने चुम्बन दोहराने और सुदीर्घ बनाने में समर्थ हो गया।

तभी निकट की झाड़ियों के पीछे से स्त्रासेन की सूखी ग्रावाज़ सुनाई दी। फेनिचका पलक झपकते न झपकते बेंच के परले छोर पर खिसक गई। पावेल पेत्रोविच दरवाज़े के सामने से गुज़रे धीरे से सिर झुकाया और एक तरह की वहशियाना उदासी के साथ ग्रोह ग्राप यहाँ हैं! कहकर ग्रागे बढ़ गए। फेनिचका ने उतावली के साथ फूलों को बटोरा और कुंज से निकल गई और दरवाज़े से बाहर पाँव रखते न रखते बोली

तुम्हें शर्म ग्रानी चाहिए येवगेनी वसील्येविच!

उसकी ग्रावाज़ में सच्चे उलाहने का पुट था।

बज़ारोव की कल्पना में हाल की एक ग्रौर घटना का चित्र मूर्त हो उठा और उसका हृदय ग्रपराध की भावना तथा झिझक भरी झुंझलाहट से झनझना गया। लेकिन उसने तुरंत अपने सिर को झटका सेलाडोन्का सिलादोना* की पाँत में इस प्रकार अपना नाम लिखाने के लिए व्यंग्य के ग्रन्दाज़ में ग्रपने ग्रापको बधाई दी और फिर ग्रपने कमरे में चला गया।

---

* सिलादोन—फ्रान्सीसी लेखक द्यूर्फ़े की पुस्तक 'आस्त्रे' का एक व्यसनी चरित्र। —ग्रनु०

और पावेल पेत्रोविच बाग़ से बाहर निकल धीरे धीरे वन की ओर चल दिए। वहां वह काफ़ी देर तक रहे, और वहां से जब नाश्ते के समय लौटे तो उनका चेहरा इतनी गहरी छाया से घिरा था कि निकोलाई पेत्रोविच से नहीं रहा गया और व्यग्र भाव से पूछा कि तबीयत तो ठीक है न।

"तुम तो जानते ही हो कभी कभी मुझे पित्त-विकार के दौरे हो आते हैं," पावेल पेत्रोविच ने शान्त भाव से जवाब दिया।

२४

कोई दो घंटे बाद पावेल पेत्रोविच ने बजारोव के कमरे का दरवाजा खटखटाया।

"आपके विद्वत्तापूर्ण अध्ययन में बाधा डालने के लिए क्षमा मांगना जरूरी है," खिड़की के पास एक कुर्सी पर आसन जमाते और हाथीदांत की मूठवाले ख़ूबसूरत बेंत पर अपने दोनों हाथों को टिकाते हुए (यों बेंत लेकर कहीं जाने की उन्हें आदत नहीं थी) उन्होंने कहा। "लेकिन मजबूरी है। आपके समय में से पांच मिनट की मोहलत चाहता हूं। केवल पांच ही मिनट, अधिक नहीं।"

"मेरा सारा समय आपके लिए हाजिर है," बजारोव ने जवाब दिया जिसके चेहरे पर, पावेल पेत्रोविच के भीतर पांव रखते ही, जाने कैसा एक भाव दौड़ गया था।

"पांच मिनट ही मेरे लिए काफी होंगे। मैं बस एक प्रश्न करने के लिए आपके पास आया हूं।"

"प्रश्न? किस बारे में?"

"अच्छा तो कृपा कर सुनें। यहां मेरे भाई के घर में आपके

आगमन के प्रारम्भ में – उन दिनों में जबकि आपसे बातचीत करने के आनन्द से मैंने अपने आपको वंचित नहीं किया था, अनेक विषयों पर आपके विचार सुनने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। लेकिन, जहां तक मुझे याद है, न तो हम दोनों के बीच और न ही मेरी मौजूदगी में द्वन्द्व-युद्धों का कभी कोई ज़िक्र हुआ। क्या मैं जान सकता हूं कि इस बारे में आपके क्या विचार हैं?

बज़ारोव, जो पावेल पेत्रोविच के आने पर उठकर खड़ा हो गया था, मेज़ के छोर पर बैठ गया और उसने अपने हाथ दोनों बग़लों में दबा लिए।

मेरा विचार यह है, उसने कहा, सिद्धान्त की नज़र से मैं इसे बेहूदा समझता हूं, लेकिन व्यवहार की दृष्टि से – वह और बात है।

इसका मतलब – अगर मैंने आपको ठीक से समझा है तो – यह कि द्वन्द्व-युद्ध के बारे में आपका सैद्धांतिक मत चाहे जो भी हो, लेकिन वस्तुतः बिना सन्तुष्ट हुए आप अपने को अपमानित नहीं होने दे सकते।

आपका यह अनुमान बिल्कुल ठीक है।

बहुत ठीक, श्रीमान। आपसे यह सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई। आपके इस बयान ने मुझे अस्थिरता से मुक्त कर दिया

अनिश्चितता से, यही न?

एक ही बात है। मेरे भाव समझ में आ जाएं, इसी लिए मैं अपने को व्यक्त करता हूं। मैं गुरुकुल का चूहा नहीं हूं। तुम्हारे बयान ने मुझे एक खेदजनक अनिवार्यता की दुविधा से मुक्त कर दिया। मैंने आपके साथ द्वन्द्व-युद्ध करने का निश्चय किया है।

बज़ारोव चौंका।

मेरे साथ?

हां, बिल्कुल आपके ही साथ।

"खुदा खैर करे। लेकिन किस लिए?"

"कारण तो बता सकता हूं," पावेल पेत्रोविच ने कहना शुरू किया, "लेकिन उसे अनकहा रहने देना अच्छा होता। आप मुझे कतई नहीं सुहाते, मैं आपसे घृणा करता हूं, आपको देखकर उबकने लगता हूं, और अगर इतना काफ़ी नहीं है तो . "

पावेल पेत्रोविच की आंखें कौंध रही थी ... बजारोव की आखों में भी दमक का अभाव नहीं था।

"अच्छी बात है, श्रीमान," बजारोव ने कहा, "अब और अधिक व्याख्या करने की जरूरत नही। आपने ठान लिया है कि मेरे साथ अपने शौर्य की आजमाइश करें। चाहता तो इस आनन्द से मैं आपको वंचित कर सकता था। लेकिन खैर, कोई बात नही।"

"इस कृपा के लिए बहुत बहुत कृतज्ञ हूं," पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया, "और अब मै आशा कर सकता हूं कि हिंसा का सहारा लेने के लिए मुझे बाध्य किए बिना ही आप मेरी चुनौती मंजूर कर लेंगे।"

"दूसरे शब्दों में–अगर कविता में बातें न की जाएं तो–उस बेंत का सहारा लिए बिना?" बज़ारोव ने अविचलित भाव से कहा।

"बिल्कुल ठीक। आपको मुझे अपमानित नहीं करना पड़ेगा। और ऐसा करना पूर्णतया निरापद भी न होगा। आपकी सज्जनता बरक़रार रहेगी... मै भी, एक सज्जन की ही भांति, आपकी चुनौती मंजूर करता हूं।"

"बहुत खूब!" पावेल पेत्रोविच ने कहा और अपना बेंत उठाकर एक कोने में रख दिया। "दो-चार शब्द अब द्वन्द्व की शर्तों के बारे में भी। लेकिन पहले मैं यह जानना चाहूंगा कि क्या आप, मेरी चुनौती के लिए एक बहाने के रूप में, कोई छोटा-मोटा झगड़ा मोल लेने की औपचारिकता का सहारा लेना जरूरी समझते है?"

"नहीं, औपचारिकता को ताक़ पर रखना ही अच्छा होगा।"

"मैं भी ऐसा ही समझता हूं। इसी प्रकार अपने विरोध के असली कारणों का कुरेदना भी, मेरे ख्याल में, बेकार होगा। हम एक-दूसरे को बर्दाश्त नहीं कर सकते। इसके बाद और कुछ कहने की जरूरत भी क्या है?"

"और कुछ कहने की जरूरत भी क्या है?" बज़ारोव ने व्यंग्यपूर्वक दुहराया।

"और जहां तक द्वन्द्व की शर्तों का सम्बन्ध है, चूंकि हम अपने साथ कोई मध्यस्थ नहीं रखेंगे—और उन्हें हम पाएंगे भी कहां..."

"बिल्कुल, हम उन्हें पाएंगे भी कहां?"

"तो मैं सम्मानपूर्वक सुझाव रखता हूं: द्वन्द्व कल सुबह हो, यही छै बजे, पिस्तौलों से, ईंधन-वन के पास, और बीच की दूरी दस डग..."

"दस डग? बहुत खूब, हम एक-दूसरे से दस डग दूर से घृणा करते हैं।"

"चाहें तो आठ कर सकते हैं," पावेल पेत्रोविच ने कहा।

"बेशक, आठ क्यों न हों?"

"दोनों दो-दो गोलियां दागेंगे। नागहानी के लिए दोनों की जेब में एक-एक पत्र रहेगा कि अपनी मौत के खुद हम ज़िम्मेदार हैं।"

"बस बस, इस बात से मैं कुछ सहमत नहीं," बज़ारोव ने कहा, "इसमें ज़रा फ्रांसीसी उपन्यासों की गंध आती है। बात कुछ जंचती नहीं।"

"हो सकता है। लेकिन यह तो आप मानेंगे ही कि हत्या का शक पैदा करना भी कोई खुशगवार बात नहीं।"

"मानता हूं। लेकिन इस दुःखद शक से बचने का एक तरीका है। यह सही है कि हम अपना मध्यस्थ साथ नहीं रखेंगे, लेकिन साक्षी तो रख ही सकते हैं।"

"क्या मैं पूछ सकता हूं, ठीक कौन व्यक्ति आपकी नजर में है?"

"क्यों, प्योत्र।"

"प्योत्र कौन?"

"आपके भाई का खवास। वह एक ऐसा आदमी है जो आधुनिक शिक्षा की बरकतों से लैस है और ढंग से—कामिलफो*—अपनी भूमिका का निर्वाह भी कर सकता है।"

"लगता है कि आप मजाक़ कर रहे हैं, प्रिय महोदय!"

"बिल्कुल नहीं। अगर आप मेरे सुझाव पर गंभीरता से सोचें तो मालूम होगा कि वह सहज-बुद्धि और सरलता से पगा है। हत्या छिपी तो रहेगी नहीं, लेकिन प्योत्र को इस मौके के लिए तैयार करने और उसे युद्धस्थल तक लाने का जिम्मा मैं लेता हूं।"

"आप तो बराबर मजाक़ करने पर तुले हैं," अपनी कुर्सी से उठते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा, "लेकिन जिस शिष्ट मनोभाव का आपने परिचय दिया है, उसके बाद कोई शिकवा करने की गुंजाइश नही रह जाती... सो मामले को तय समझा जाए... लेकिन हां, पिस्तौलें तो आपके पास है न?"

"पिस्तौलो से मेरा भला क्या वास्ता हो सकता है, पावेल पेत्रोविच? मैं कोई योद्धा तो हूं नही।"

"तब मैं अपने पिस्तौल ही आपके सामने हाजिर कर दूंगा। विश्वास करे, पांच साल से मैंने उन्हे हाथ से छुआ तक नही है।"

"यह आपने अच्छी दिलासे की खबर दी।"

पावेल पेत्रोविच ने अपना बेंत उठा लिया।

---

* मौक़े के मुताबिक़। (फ़्रेंच)—सं०

'हा ता, प्रिय महानुभाव, अब इतना ही काम और बाकी रहा है कि आपको धन्यवाद देकर यहा से विदा लू जिससे आप अपने अध्ययन में फिर जुट सके। आपका विनम्र सेवक, श्रीमान!"

कल के सुखद मिलन तक के लिए विदा, प्रिय महोदय!" बाहर तक जाकर उन्हे विदा करते हुए बज़ारोव ने कहा।

पावेल पत्रोविच विदा लेकर चल दिए। बज़ारोव कुछ देर तक बंद दरवाज़े के पीछे खड़ा रहा। फिर सहसा बोल उठा "हु, पूरा शैतान है। कितना नफीस और कितना बेवकूफ! और कितना भोंडा नाटक किया हमने यह! जैसे दो सधे हुए कुत्ते अपनी पिछली टागो पर कूदते रहे हो। लेकिन मैं उससे भली भाति इन्कार भी तो नही कर सकता था? अगर वह हाथ उठा बैठता तो " (इस विचार मात्र से बज़ारोव स्तब्ध हो गया और उसका समूचा अभिमान विद्रोह कर उठा) "तो बिलौटे की भाति मैं उसका गला घोट देता।" वह अपनी खुर्दबीन के पास लौट आया, लेकिन उसका हृदय उद्वेलित हो गया था और परीक्षण के लिए आवश्यक स्थिरता गायब हो चुकी थी। वह सोच रहा था—"उसने आज हमें देख लिया, लेकिन अपने भाई की खातिर क्या वह इस हद तक अपने आपको उत्तेजित कर सकता है? चुम्बन न हुआ, कहर हो गया। हो न हो, इसके पीछे कोई और बात है। उह, मुझे तो लगता है कि वह उससे प्रेम करता है। बेशक, करता है। दिन की रोशनी की भाति एकदम साफ़ यह अच्छा झमेला उठ खड़ा हुआ। चाहे जिस पहलू से देखो," अन्त में उसने निश्चय किया। "मामला टेढा है। सब से पहली बात तो यह कि खतरा मोल लो, दूसरे यह कि और भी कुछ नही तो यहा से कूच तो करना ही होगा, फिर आरकादी है और स्वय का वह फरिश्ता

निकोलाई पेत्रोविच है, खुदा उसे अपने साथ मे रखे। ऊह, मामला टेढ़ा है, एकदम टेढ़ा!"

जैसे-तैसे, एक अजीव खामोशी तथा अनमने ढंग से, दिन बीता। फ़ेनिचका के तो अस्तित्व तक मे सन्देह होता था। बिल में दुबके चूहे की भांति वह अपने कमरे में ही बैठी रही। निकोलाई पेत्रोविच अलग परेशान थे। उन्हें पता चला था कि गेहूं के उनके खेत मे फफूंद लग गई है। अपनी इस फसल से वह खास उम्मीद बांधे हुए थे। पावेल पेत्रोविच की बरफानी शिष्टता हरेक को–यहा तक कि प्रोकोफ़िच को भी–आतंकित किए थी। बजारोव ने अपने पिता को एक पत्र लिखना शुरू किया, फिर उसके टुकड़े टुकडे कर डाले और मेज के नीचे उसे फेंक दिया। "अगर मै मर गया," उसने सोचा, "तो वे इसकी खबर सुन ही लेंगे। लेकिन मै मरूंगा नही। अभी मुझे बहुत बाजियां जीतनी है।" उसने प्योत्र से कहा कि कल सुबह पौ फटते ही आकर मिले, जरूरी काम है। प्योत्र इस खयाल में था कि वह उसे अपन साथ पीतर्सबर्ग ले जाना चाहता है। बजारोव बहुत देर से बिस्तर पर गया, और सारी रात बेतुके सपने उसे परेशान करते रहे . ओदिनत्सोवा उसे सपनों में दिखाई दी। ओदिनत्सोवा भी थी और साथ ही उसकी मा भी। काली मूंछोंवाली एक बिल्ली उसके साथ लगी थी और यह बिल्ली फ़ेनिचका थी। पावेल पेत्रोविच एक बड़े जंगल की शक्ल में दिखाई दिए जिनके साथ उसे अभी द्वन्द्व-युद्ध करना था। प्योत्र ने चार बजे आकर उसे जगाया। उसने जल्दी से कपड़े पहने और उसके साथ बाहर निकल गया।

उजली और स्वच्छ सुबह थी। ताजगी से भरी। आकाश की पीतवर्ण नीलिमा में रूई के गालों जैसे छोटे छोटे रंगबिरंगे बादल सजे थे। ओस की बूंदें पत्तो और घास पर छाई थी और मकड़ी के जालो

मे मानिया की भांति चमचमा रही थी। काली नम धरती अभी भी ऊषा की गुलाबी आभा में रंगी थी। नया पानी का मर्मान आकार में निर्झर की भांति बरस रहा था। बज़ारोव ईंधन-वन पहुंचा और वन के द्वार पर छांव में बैठ गया। तभी उसने प्योत्र को बताया कि उसे क्या काम करना है। पढ़ा-लिखा खवास डर के मारे बदहवास-सा हो गया। लेकिन बज़ारोव ने यह दिलासा देकर उसे धीरज बंधाया कि तुम्हें तो केवल दूर खड़े होकर बस देखते भर रहना है, और यह कि तुमपर कोई ज़िम्मेदारी नहीं आएगी। "तुम खुद ही ज़रा सोचो," अन्त में उसने कहा, 'कि कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निबाहना तुम्हारे भाग्य में लिखा है।' प्योत्र ने अपने हाथ फैलाए, नज़र जमाए धरती की ओर देखता रहा, चेहरा उसका एकदम हरा पड़ गया और बदन को वृक्ष के सहारे टिका लिया।

मारिनायकी मास्को जाने का चक्कर लगाती चली गई थी। सड़क की हल्की धूल ने कल से किसी पहिए या पांव का मुंह नहीं देखा था। बज़ारोव की नज़र बरबस सड़क की थाह ले रही थी, घास की कोंपलों को नोचकर दांतों से कुतर और बार-बार अपने में कह रहा था "यह क्या हिमाकत है!" सुबह की हवा इतनी सर्द थी कि एक या दो बार उसका बदन थरथरा गया। प्योत्र ने मातमी नज़र से उसकी ओर देखा, लेकिन बज़ारोव केवल मुसकरा दिया—उसके पौरुष ने घुटने नहीं टेके थे।

सड़क पर टापों की आवाज़ सुनाई दी। पेड़ों की ओट में से एक किसान उभर आया। वह टखनों बंधे दो घोड़ों को हांक रहा था। पास से गुज़रते समय, बिना किसी सलाम-दुआ के, उसने कुछ अजीब नज़र से बज़ारोव की ओर देखा। प्योत्र को यह अप्रत्यक्ष अपसगुन मालूम हुआ। "यह आदमी भी," बज़ारोव ने सोचा, "मुंह अंधेरे

ही उठ आया है, लेकिन इसके सामने कम से कम एक काम तो है . मगर हम ?"

"लगता है कि वह आ रहे हैं," प्योत्र फुसफुसाया।

बजारोव ने सिर उठाया और पावेल पेत्रोविच पर उसकी नजर पड़ी। हल्की चेकदार जाकेट और बर्फ-सी सफ़ेद पतलून पहने वह तेज डगों से सड़क पर चले आ रहे थे। बगल में एक पेटी दबाए थे जो हरे कपड़े में लिपटी थी।

"माफ़ करना। मैं डर रहा था कि कही आप देर से इन्तजार न कर रहे हो," पहले बजारोव और फिर प्योत्र की ओर सिर झुकाते हुए उसने कहा—प्योत्र की ओर इस अन्दाज़ मे मानो मध्यस्थ होने के नाते वह उसकी ओर यह सम्मान जता रहे हों। फिर बोले: "हुआ यह कि मै अपने ख़वास को जगाना नही चाहता था।"

"ठीक है," बजारोव ने जवाब दिया, "हम खुद भी अभी अभी आए है।"

"ओह, तब और भी अच्छा है," कहते हुए पावेल पेत्रोविच ने चारों ओर देखा। "कोई नजर नहीं आता, बाधा का डर नही... तो शुरू करे न?"

"हां, शुरू करें।"

"मेरी समझ में अब और कोई तफ़सील बताने की जरूरत नहीं।"

"नहीं, कोई जरूरत नही।"

"क्या आप गोली भरना चाहेंगे?" पेटी से पिस्तौलों को निकालते हुए पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"नही, आप खुद ही भर दीजिए। मै इतने डग नाप लेता हूं।" फिर हंसी की मुद्रा में मुसकराते हुए बोला: "मेरी टांगें ज्यादा लम्बी है! एक, दो, तीन..."

मवगनी वमीलियविच ! प्यात्र हकला उठा (वेह भासपन के पत्ते की भांति कांप रहा था) जो मन में भ्राए आप करें। म इस पचडे से दूर रहूगा।

चार पाच दूर ही रहो मेरे भाई। चाहो तो पेड की ओट में खड हो जाओ और अपने कान भी मूद लो लेकिन आखें न मूदना। अगर कोई गिर पड तो लपककर उठा लेना छै सात आठ बजारोव रुक गया और पावेल पेत्राविच की ओर मुडते हुए बोला इतना ही काफी होगा या दो-एक डग और डाल लू?

जैसा चाहो दूसरी गोली भरते हुए पावेल पेत्रोविच न जवाब दिया।

अच्छी बात है। दो एक डग और शामिल कर लिए जाए। बजारोव न जूते की नोक से जमीन पर एक लकीर खींची फिर बोला यह सीमा रेखा है। लेकिन हा सीमा रेखा से हम कितने डग दूर रहेंगे? यह भी एक महत्वपूर्ण बात है। कल इसपर हमने कोई विचार नहीं किया।

दस डग रख लीजिए और क्या! बजारोव के आगे पिस्तौल बढाते हुए पावेल पेत्राविच न कहा कृपा कर इनमें से एक चुन लीजिए।

जरूर चनूगा। लकिन पावेल पेत्रोविच क्या आप इस बात से सहमत नहीं हैं कि हमारा यह द्वद्व-युद्ध बेहूदगी की हद तक निराला है? जरा अपने इस मध्यस्थ के चेहरे पर तो नजर डालकर देखिए!

आप अभी तक इस मामले को एक मजाक समझने पर तुले हैं पावेल पेत्रोविच न जवाब दिया मैं इससे इन्कार नहीं करता कि हमारा यह द्वन्द्व-युद्ध कुछ न आपको यह चेता

देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं कि मैं पूरी संजीदगी से लड़ने जा रहा हूं। A bon entendeur, salut!*"

"ओह नहीं, इसमें मुझे जरा भी शक नहीं कि हम एक-दूसरे को मटियामेट करने पर तुले हैं। लेकिन जैसा कि कहते हैं utile dulci**, चलते-चलाते थोड़ा हंस लिया जाए तो क्या हर्ज। सो देखा आपने, आपके फ़्रांसीसी टुकड़े और मेरे लैटिनी मुहावरे मे कैसा जोड रहा।"

"लेकिन मैं पूरी संजीदगी से लड़ने जा रहा हूं," पावेल पेत्रोविच ने दोहराया और अपने मोर्चे पर डट गए। बजारोव भी अपनी पारी में सीमा-रेखा से दस डग हटकर खड़ा हो गया।

"आप तैयार हैं न?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"बिल्कुल।"

"तो अब हम बढ सकते है।"

बजारोव ने धीमे से आगे की ओर हरकत की। पावेल पेत्रोविच भी उसकी ओर बढ़े—बायां हाथ अपनी जेब में खोसे और दाहिने से पिस्तौल के मुंह को स्थिर गति से साधे... "सीधे मेरी नाक को निशाना बनाए हुए है," बजारोव ने सोचा, "और देखो न, कितनी सावधानी से अपनी अधमिची आंख मुझपर जमाए हुए है, लफ़ंगा कही का! लेकिन यह ऐसी चीज नही जो सुहावनी मालूम हो। मै उसकी घड़ी की चेन से अपनी नजर नही डिगने दूंगा..." तभी कोई चीज आनन-फ़ानन में बजारोव के कान के पास से सनसनाती हुई निकल गई और क्षण बीतते न बीतते गोली दगने की आवाज आई। "मैंने

---

* जिन्हें कान हैं, वे सुनें। (फ़्रेंच)—सं०

** एक पंथ, दो काज। (लैटिन)—सं०

अपने कानों से सुना बज़ारोव के सन्निकट से गयी गोली सो समझना चाहिए कि सब ठीक है। वह एक क़दम आगे बढ़ा और बिना निशाना साधे घोड़ा दबा दिया।

पावेल पेत्रोविच थोड़ा-सा डिगे और अपनी जांघ को उन्होंने दबा लिया उनकी सफ़ेद पतलून पर से ख़ून की धारा बह चली।

बज़ारोव ने पिस्तौल नीचे फेंक दिया और अपने विपक्षी के पास पहुंचा।

क्या घायल हो गए? उसने पूछा।

सीमा-रेखा तक मुझे बुलाने का आपको अधिकार था पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया और घाव भी कुछ नहीं। शर्तों के अनुसार अभी दोनों एक एक निशाना और साध सकते हैं।

मगर अफ़सोस वह अभी नहीं हो सकता। उसे किसी और दिन के लिए छोड़ना होगा पावेल पेत्रोविच को संभालते हुए जिनका रंग अब पीला पड़ता जा रहा था बज़ारोव ने जवाब दिया। अब मैं द्वन्द्व योद्धा नहीं डाक्टर हूं और आपका घाव देखना मेरे लिए लाज़िमी है। प्योत्र इधर आओ लेकिन कहां जा छिपे हो?

आह यह कुछ नहीं किसी मदद की मुझे ज़रूरत नहीं धीरे धीरे शब्दों का अटक अटक कर उच्चारण करते हुए पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया और हम अभी एक बार और उन्होंने अपनी मूंछों में ताव देना चाहा लेकिन उनका हाथ बेदम-सा लटक गया आंखें चढ़ गई और वह निश्चल हो गए।

ओह कहानी का यह दौरा भी ख़ूब! अनायास ही बज़ारोव के मुंह से निकला और उसने पावेल पेत्रोविच को घास पर लिटा दिया। देखें तो आख़िर मामला क्या है? उसने कहा जब से रूमाल निकालकर ख़ून पोंछा और घाव के इर्द गिर्द टोहकर देखा हड्डी तो सही-सलामत है वह बड़बड़ाया ऊपरी घाव है

गोली साफ़ पार हो गई, केवल एक पेशी वासतुस एकस्टर्नुस मे हल्की-सी चोट लगी है। तीन सप्ताह में ही नाचने लायक़ हो जाएगा... और वेहोशी का यह दौरा—कमाल है! भगवान ही वचाए इन कच्चे स्नायुवाले लोगों से! देखो न, चमड़ी कितनी नाजुक है!"

"मर तो नहीं गए, मालिक?" कापती आवाज में पीछे से प्योत्र घिघिया उठा।

वजारोव घूम गया।

"जाओ, और लपककर थोड़ा पानी तो ले आओ, वडे भाई। मरना कैसा, वह हम दोनों से ज्यादा दिन जिएंगे!"

लेकिन ऐसा मालूम होता था कि मिट्टी का माधो नौकर कुछ समझा नही कि उमसे क्या कहा जा रहा है, कारण वह टस से मस तक नहीं हुआ। पावेल पेत्रोविच ने धीरे धीरे अपनी आंखे खोली। "अरे, इनकी जान निकल रही है," थरथराती आवाज में प्योत्र ने कहा और क्रास के निशान वनाने लगा।

"ठीक कहते हो... चेहरा तो देखो जैसे वुद्धू हो!" क्षीण मुसकान के साथ घायल सज्जन ने कहा।

"क्या हुआ तेरे उस कम्वख्त पानी का! जा, जल्दी लपककर ले आ!" वजारोव ने चिल्लाकर कहा।

"कोई जरूरत नहीं... योंही जरा सिर चकरा गया था.. वस, सहारा देकर जरा उठा दीजिए... हां, अव ठीक है... इस खरोंच पर थोड़ा पट्टी वांधने की जरूरत है, फिर तो मैं अपने आप घर तक पहुंच जाऊंगा, या मेरे लिए गाड़ी भी भेजी जा सकती है। अगर आप चाहें तो द्वन्द्व-युद्ध को फिर से आरंभ नही किया जाएगा। आपने वड़ी नेकी वरती... आज, केवल आज—इसका ध्यान रहे।"

"अतीत को कुरेदने की जरूरत नही," वजारोव ने जवाव दिया,

अपने कानों से सुना बज़ारोव के मस्तिष्क में ख़याल कौंधा सो समझना चाहिए कि सब ठीक है। वह एक डग आगे बढ़ा और बिना निशाना साधे घोड़ा दबा दिया।

पावेल पेत्रोविच थोड़ा-सा छिटके और अपनी जाँघ को उन्होंने दबोच लिया। उनकी सफ़ेद पतलून पर से ख़ून की धारा बह चली।

बज़ारोव ने पिस्तौल नीचे फेंक दिया और अपने विपक्षी के पास पहुँचा।

क्या घायल हो गए? उसने पूछा।

सीमा रेखा तक मुझे बुलाने का आपको अधिकार था पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया और घाव, सो कुछ नहीं। शर्तों के अनुसार अभी दोनों एक एक निशाना और साध सकते हैं।

मगर अफ़सोस वह अभी नहीं हो सकता। उसे किसी और दिन के लिए छोड़ना होगा पावेल पेत्रोविच को सँभालते हुए जिनका रंग अब पीला पड़ता जा रहा था बज़ारोव ने जवाब दिया। अब मैं द्वन्द्व योद्धा नहीं डाक्टर हूँ और आपका घाव देखना मेरे लिए लाज़िमी है। प्योत्र इधर आओ! कहाँ जा छिपे हो?

आह यह कुछ नहीं किसी मदद की मुझे ज़रूरत नहीं धीरे धीरे शब्दों को अटक अटक कर उच्चारण करते हुए पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया और हम अभी एक बार और उन्होंने अपनी मूछों में ताव देना चाहा लेकिन उनका हाथ बेदम-सा लटक गया आँखें चढ़ गईं और वह निश्चेत हो गए।

ओह! वहाँगी का यह दौरा भई ख़ूब! अनायास ही बज़ारोव के मुँह से निकला और उसने पावेल पेत्रोविच को घास पर लिटा दिया। देखें तो आख़िर मामला क्या है? उसने कहा जब में रूमाल निकालकर ख़ून पोंछा और घाव के इर्द गिर्द टोहकर देखा हड्डी तो सही-सलामत है वह बुदबुदाया ऊपरी घाव है

गोली साफ़ पार हो गई, केवल एक पेशी वासतुस एकस्टर्नुस मे हल्की-सी चोट लगी है। तीन सप्ताह में ही नाचने लायक़ हो जाएगा... और बेहोशी का यह दौरा—कमाल है! भगवान ही बचाए इन कच्चे स्नायुवाले लोगों से! देखो न, चमड़ी कितनी नाजुक है!"

"मर तो नही गए, मालिक?" कापती आवाज मे पीछे से प्योत्र घिघिया उठा।

बजारोव घूम गया।

"जाओ, और लपककर थोड़ा पानी तो ले आओ, बडे भाई। मरना कैसा, वह हम दोनों से ज्यादा दिन जिएंगे!"

लेकिन ऐसा मालूम होता था कि मिट्टी का माधो नौकर कुछ समझा नही कि उससे क्या कहा जा रहा है, कारण वह टस से मस तक नही हुआ। पावेल पेत्रोविच ने धीरे धीरे अपनी आंखें खोलीं। "अरे, इनकी जान निकल रही है," थरथराती आवाज में प्योत्र ने कहा और क्रास के निशान बनाने लगा।

"ठीक कहते हो... चेहरा तो देखो जैसे बुद्धू हो!" क्षीण मुसकान के साथ घायल सज्जन ने कहा।

"क्या हुआ तेरे उस कम्बख्त पानी का! जा, जल्दी लपककर ले आ!" बजारोव ने चिल्लाकर कहा।

"कोई जरूरत नही... योंही ज़रा सिर चकरा गया था.. बस, सहारा देकर जरा उठा दीजिए... हां, अब ठीक है... इस खरोंच पर थोड़ा पट्टी बांधने की ज़रूरत है, फिर तो मैं अपने आप घर तक पहुंच जाऊंगा, या मेरे लिए गाड़ी भी भेजी जा सकती है। अगर आप चाहें तो द्वन्द्व-युद्ध को फिर से आरंभ नहीं किया जाएगा। आपने बड़ी नेकी बरती... आज, केवल आज—इसका ध्यान रहे।"

"अतीत को कुरेदने की ज़रूरत नही," बजारोव ने जवाब दिया,

"और जहा तक भविष्य का सबध है, सो उसकी चिन्ता करना भी बेकार है, क्योंकि मैं यहा से तुरत खिसक जाना चाहता हू। हा, तो अब जरा पट्टी बधवा लीजिए। आपका घाव खतरनाक नही है। फिर भी खून का रोकना अच्छा होगा। लेकिन पहले इस मरदूद के होश ठिकाने पर ले आए।"

बजारोव ने प्योत्र का कालर पकडकर झझोडा और गाडी लाने के लिए उसे रवाना कर दिया।

"और देखो, मेरे भाई को घबरा न देना," पावेल पेत्रोविच ने ताडना की, "तुम्ही जानो, अगर कुछ भी उनसे कहने का दुस्साहस किया तो!"

प्योत्र लपक गया। उसके गाडी लेकर आने तक दोनो प्रतिद्वन्द्वी खामोश बैठे रहे। पावेल पेत्रोविच ने कोशिश की कि बजारोव दिखाई तक न दे। वह कतई नही चाहते थे कि उससे सुलह हो। अपने उद्धतपन और असफलता पर शर्म से गडे जा रहे थे। उन्हे शर्म मालूम हो रही थी कि उन्होने यह तूफान खडा किया, हालाकि वह यह भी अनुभव कर रहे थे कि मामले का इससे ज्यादा सन्तोषजनक अन्त नही हो सकता था। "जो हो," उन्होने अपने को तसल्ली दी, "एक अच्छी बात यह हुई कि अब वह यहा से दफा हो जाएगा।" खामोशी अटपटी और त्रस्त करनेवाली बनती जा रही थी। दोनो कसमसा उठे थे। दोनो को यह अहसास था कि एक-दूसरे की स्थिति को पूर्णतया समझ रहे है। यह अनुभूति मित्रो के बीच सुखद मालूम होती है, लेकिन शत्रुओ के बीच अत्यन्त दुखद। खासतौर से उस समय जबकि मामले को ठीक ढग से रखने या साथ छोडने की कोई गुजाइश न हो।

"क्यों, पट्टी कुछ जरूरत से ज्यादा कसकर तो नहीं बंध गई?" बजारोव ने आखिर पूछा।

"नहीं, ठीक है, बहुत ठीक," पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया। फिर थोड़ा रुककर बोले: "मेरे भाई भुलावे में आनेवाले नहीं हैं। उन्हें बताना ही होगा कि राजनीति ने हमें टकरा दिया।"

"बहुत खूब," बजारोव ने कहा, "आप उनसे कह सकते हैं कि मैं अंग्रेजियत के तमाम शैदाइयों की पगड़ी उछालने पर उतर आया था।"

"भई वाह!" पावेल पेत्रोविच ने कहा और फिर एक किसान की ओर इशारा करते हुए बोले: "कुछ बता सकते हो कि वह हमारे बारे में क्या सोच रहा है?"

यह वही किसान था जो द्वन्द्व-युद्ध से कुछ मिनट पहले टंगड़ी बंधे घोड़ों को हांकता बजारोव के पास से गुज़रा था। वह अब लौट रहा था। इस बार, कुलीनों पर नज़र पड़ते ही, उसने अपने आपको संभाला और टोपी उतारकर सिर झुकाया।

"खुदा ही जाने," बजारोव ने जवाब दिया, "शायद वह कुछ भी नहीं सोच रहा है। रूसी किसान एक रहस्यमय जीव है—एक अजनबी प्राणी जिसके बारे में श्रीमती रेडक्लिफ़ ने इतना अधिक बखान किया है। कौन जाने? शायद वह खुद भी न जानता हो कि वह क्या सोच रहा है।"

"सो ऐसा सोचते हैं आप," पावेल पेत्रोविच ने कहना शुरु किया और फिर अचानक चिल्ला उठे: "देखो न, तुम्हारे उस गधे के बच्चे प्योत्र ने जाकर क्या तमाशा किया है! मेरे भाई सड़क को चीरते चले आ रहे हैं!"

बज़ारोव घूमा और गाडी में बैठे निकोलाई पेत्रोविच पर उसकी नज़र पडी। उनका चेहरा पीला पड गया। गाडी के रुकने से पहले ही वह उछलकर बाहर आ गए और लपककर अपने भाई के पास पहुंचे।

"क्या क्या मतलब है इसका?" विचलित आवाज़ में वह चिल्लाए, "येवगेनी वसीलियेविच, आखिर मामला क्या है?"

"सब ठीक है," पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया, "कम्बख्तों ने नाहक आपको परेशान किया। मिस्टर बज़ारोव और मुझमें ऐसे ही झडप हो गई थी, और मुझे थोडी मात खानी पडी।"

"आखिर हुआ क्या, खुदा के लिए बताइए न?"

"अच्छा, अगर जानना ही चाहते हैं तो सुनिए। मिस्टर बज़ारोव ने सर रौबर्ट पील की शान में कुछ बेजा शब्दों का इस्तेमाल किया। लेकिन साथ ही यह भी मैं तुरत बता दूं कि दोष सारा मेरा था। मि० बज़ारोव ने अपना बरताव शानदार रखा। मैंने ही उन्हें चुनौती दी।"

"लेकिन, हे मेरे भगवान, आपके बदन से तो खून बह रहा है?"

"तो क्या आप समझते थे कि मेरी रगों में पानी भरा है? लेकिन इस तरह थोडा खून बह जाना स्वास्थ्य के लिए बुरा नहीं होता। क्यों, ठीक है न, डाक्टर महोदय? समझे भाई, यह उदासी छोडो, और सहारा देकर मुझे गाडी में बैठने में मदद दो। कल तक मैं बिल्कुल चंगा हो जाऊंगा। हां, इस तरह, बहुत ठीक। चलो, कोचवान, अब ज़रा लपक चलो।"

निकोलाई पेत्रोविच गाडी के साथ हो लिए। बज़ारोव पीछे था

"जब तक शहर से दूसरा डाक्टर नहीं आ जाता," निकोलाई पेत्रोविच ने उससे कहा, "तब तक मेरे भाई की देखभाल आपको ही करनी होगी।"

बज़ारोव ने चुपचाप सिर झुका लिया।

घंटा भर बाद पावेल पेत्रोविच बिस्तरे पर लेटे थे। टांग की मरहम-पट्टी बड़ी दक्षता से की गई थी। सारे घर में एक कुहराम-सा मचा था। फ़ेनिचका को ग़श आ गया था। निकोलाई पेत्रोविच, नज़र बचाकर, हाथों को मरोड़ रहे थे। पावेल पेत्रोविच हंस और मजाक कर रहे थे–खासतौर से बज़ारोव के साथ। वह कैम्ब्रिक की बढ़िया क़मीज़ पहने थे, क़मीज़ पर लक़दक़ प्रातःकालीन जाकेट सजी थी और सिर पर फैंज टोपी लगाए थे। उन्होंने खिड़कियों के परदे तक नही गिराने दिए और परहेज के नाम पर भूखे रहने की जरूरत का मजाक उड़ाते हुए शिकायत की।

लेकिन रात को ताप बढ़ गया और माथा दर्द करने लगा। शहर से डाक्टर आया (निकोलाई पेत्रोविच ने अपने भाई की ना-नुकर कुछ नहीं सुनी और खुद बजारोव ने भी डाक्टर को बुलाने पर जोर दिया था। वह दिन भर अपने कमरे में ही बैठा रहा, चेहरे पर तनाव और पीलापन लिए। बीच बीच में, बहुत थोड़ी देर के लिए, रोगी को भी देख आता। एक या दो बार फ़ेनिचका से भी मुठभेड़ हुई जो उसे देखते ही भय से सकपकाकर सिमट गई।) नये डाक्टर ने स्फूर्तिदायक पेय की तजवीज की और कुल मिलाकर बज़ारोव के इस आश्वासन की पुष्टि की कि खतरे की सम्भावना क़तई नहीं है। निकोलाई पेत्रोविच ने डाक्टर को बताया कि उनके भाई दुर्घटनावश घायल हो गए। सुनकर डाक्टर ने 'हुं:!' किया, लेकिन उसी क्षण चांदी के नगद पच्चीस रूबल पाकर बोले: "आश्चर्य! कोई अनहोनी बात नहीं, आप जानते ही है!"

घर में न तो किसी ने कपड़े बदले और न ही कोई सोने गया। रह रहकर निकोलाई पेत्रोविच पंजों के बल अपने भाई के कमरे में जाते और पंजों के बल ही लौट आते। रोगी गहरी नींद से

घिरा था। वह थोड़ा-सा कराह उठा, फ्रेंच भाषा में "Couchez vous"* कहा और पीने के लिए कुछ मांगा। एक बार लेमनेड का गिलास लेकर निकोलाई पत्रोविच ने फेनिचका को भेजा। पावेल पेत्रोविच ने एकटक उसे देखा और गिलास खाली कर दिया। सुबह होते न होते ताप कुछ और बढ़ चला और रोगी को हल्का सरसाम हो गया। पहले तो अनाप-शनाप जाने क्या बकते रहे, फिर अचानक अपनी आंखें खोलीं और चिन्तित मुद्रा में भाई को अपने ऊपर झुका हुआ देखकर बुदबुदा उठे

'क्या निकोलाई, क्या आपको ऐसा नहीं मालूम होता कि फेनिचका में नेली की कुछ छाप है?"

"नेली कौन, पावल?"

"अरे, इतना भी नहीं जानते! वही राजकुमारी 'र'। खासतौर से उसके चहरे का ऊपरी हिस्सा। C'est de la même famille!**"

निकोलाई पत्रोविच ने कुछ जवाब नहीं दिया। लेकिन यह सोचकर उन्हें हैरानी हुई कि आदमी को पुरानी भावनाएं उसे कितना जकड़े रहती हैं। "यही समय होता है जब वे उभरना शुरू करती हैं," उन्होंने सोचा।

"ओह, कितना प्यार करता हूं मैं उस पागल को," पावेल पेत्रोविच कराह उठे और वेदना से सिर के पीछे अपने दोनों हाथों को उमेठा। एकाध मिनट बाद फिर बड़बड़ाए "मैं यह बरदाश्त नहीं कर सकता कि कोई बदमाश उसे छूने तक का साहस करे"

---

*लेट जाएं। (फ्रेंच)—स०

**उसी सांचे में ढला हुआ है। (फ्रेंच)—स०

निकोलाई पेत्रोविच ने एक उसांस भरी। उन्हें इसका गुमान तक नही था कि इन शब्दों का असली तात्पर्य क्या है।

अगले दिन, सुबह आठ बजे के क़रीब, बजारोव उन्हें देखने के लिए आया। उसने अपना सामान बांध लिया था और अपने सारे मेंढकों, कीड़ों और पक्षियों को रिहा कर दिया था।

"तो आप विदा लेने के लिए आए हैं, क्यों?" मिलने के लिए उठते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने कहा।

"जी हां।"

"मैं आपकी भावना की क़द्र और उसका पूर्णतया समर्थन करता हूं। इसमें शक नही, दोष मेरे दयनीय भाई का है, और उन्हें इसकी सजा भी मिल चुकी है। उन्होंने खुद मुझे बताया कि यह उनके ढील देने का–आपको ऐसी स्थिति में रखने का–नतीजा है। इसके सिवा आप और कुछ नहीं कर सकते थे। और मैं समझता हूं कि आप उस द्वन्द्व-युद्ध को भी नही टाल सकते थे जो... जो एक हद तक केवल आपके पारस्परिक विचारों के निरन्तर विरोध के कारण हुआ।" (निकोलाई पेत्रोविच बोलने में कुछ उलझ गए थे।) "मेरे भाई पुराने ढर्रे के आदमी हैं, तेज-दिमाग़ और हठी... खुदा का शुक्र है कि मामले का अन्त किसी अन्य रूप में न होकर इस रूप में हुआ। मामले को दबाने के लिए जो कुछ करना जरूरी था, वह सब मैंने कर लिया है..."

"मैं आपके पास अपना पता छोड़ जाऊंगा, अगर कोई बखेड़ा हो तो," बजारोव ने यों ही बेपर्वाही से कहा।

"मैं आशा यही करता हूं कि कोई बखेड़ा नहीं होगा, येवगेनी वसीलियेविच... मुझे इस बात का बड़ा दुःख है कि हमारे घर में

आपके प्रवास का इस   इस तरह अन्त हुआ। और सबसे ज्यादा दुःख तो मुझे इस बात का है कि आरकादी "

"सम्भवतः उससे भेंट होगी," बज़ारोव ने जो हर प्रकार की 'सफाइयां' और 'भावुकता के प्रदर्शन' से चिढ़ता था, बीच में ही कहा, "अगर नहीं तो कृपा कर उससे मेरा अभिवादन कहें और आप खुद भी मेरा अनुताप स्वीकार करें।"

"और आप भी कृपया " निकोलाई पेत्रोविच ने कहना शुरू किया, लेकिन बज़ारोव उनके कथन को बीच में ही छोड़ वहां से चला आया।

यह मालूम होने पर कि बज़ारोव जा रहा है, पावेल पेत्रोविच ने उससे मिलने की इच्छा प्रकट की, और उससे हाथ मिलाया। लेकिन बज़ारोव बर्फ की भांति सर्द बना रहा। उसे लगा कि पावेल पेत्रोविच उदारता का अभिनय करना चाहते हैं। फेनिचका से विदा लेने का उसे अवसर नहीं मिला। केवल खिड़की की राह एक नज़र डालकर रह गया। उसे लगा जैसे उसका चेहरा उदास हो। "मालूम होता है, इसके लिए यह भारी पड़ेगा," उसने मन ही मन सोचा, "जो हो, आशा करनी चाहिए कि वह किसी तरह पार कर ले जाएगी।" प्योत्र शोक में इतना अभिभूत हो गया कि उसके कंधे पर सिर रखकर रोने लगा। आखिर यह कहकर बज़ारोव ने उसे संभाला कि "बस बस, आंसुओं की यह बाढ़ अब बंद करो!" दुन्याशा तो अपनी आकुलता को छिपाने के लिए ईंधन-वन में जा छिपी। इस सारे ऊहापोह और आकुलता का मूलाधार – बज़ारोव – आखिर गाड़ी में सवार हुआ, अपने सिगार को उसने सुलगाया और कोस भर आगे मोड़ के पास किरसानोव का खेत और नया बना मकान जब आखिरी बार उसकी आंखों के सामने

से गुज़रा तो वह थूकते हुए केवल इतना ही बुदबुदाया: "कमबख़्त सामन्तशाही!" और उसने अपना कोट बदन के और भी निकट समेट लिया।

पावेल पेत्रोविच जल्द ही ठीक होने लगा। लेकिन फिर भी क़रीब सात दिन तक उन्हें बिस्तरा सेना पड़ा। अपनी इस 'क़ैद' को—जैसा कि वह कहते थे—उन्होंने धीरज के साथ सहा। लेकिन अपनी सफ़ाई-धुलाई पर वह काफ़ी हल्ला मचाते और कमरे को बार बार सुवासित करने के लिए जान खाते। निकोलाई पेत्रोविच उन्हें पत्र-पत्रिकाएं पढ़कर सुनाते, फ़ेनिचका पहले की भांति तत्पर रहती—उनके लिए शोरबा, लैमनेड, अध-उबले अंडे, चाय लेकर आती। लेकिन हर बार जब भी वह कमरे में पांव रखती, एक अनबूझ भय उसे जकड़ लेता। पावेल पेत्रोविच के उतावले आचरण से यों तो समूचे घर की जान सांसत में थी, लेकिन फ़ेनिचका की अन्य सबसे अधिक। केवल प्रोकोफ़िच ऐसा था जो जरा भी विचलित नहीं हुआ। वह अपने जमाने के कुलीनों की चर्चा करता कि लड़ते वे भी थे, लेकिन असली कुलीनों की भांति, और इस तरह के बदमाशों के लिए तो वे बस सीधे अस्तबल में ले जाकर कोड़े लगाने की सजा देते थे ताकि उनकी सारी गुस्ताख़ी झड़ जाए!

फ़ेनिचका अपने हृदय में किसी ख़ास खटक का, आत्मप्रतारणा का, अनुभव नहीं करती थी। लेकिन कभी कभी झगड़े के असली कारण का आभास उसे उलझन में डाल देता। फिर पावेल पेत्रोविच कुछ इतनी अजीब दृष्टि से उसकी ओर देखते थे... उनकी ओर पीठ किए होने पर भी वह उनकी नज़र की सरसराहट का अनुभव करती।

अनवरत व्यग्रता से वह पतली हो चली और, जैसा कि होना था, उसका सूनापन और अधिक निखर आया।

एक दिन—सुबह का समय था—पावेल पेत्रोविच का जी काफी अच्छा था और वह बिस्तरे से अपने सोफे पर आ गए थे। निकोलाई पत्रोविच आए और उनकी तबीयत का हाल पूछकर खलिहान चले गए। फ़ेनिचका चाय की प्याली लेकर आई और उसे मेज पर रखकर लौट ही रही थी कि पावेल पत्रोविच ने उसे रोका।

एसी जल्दी क्या है फ़ेदोसिया निकोलायवना? उन्होंने कहना शुरू किया। क्या कोई खास काम अटका है?

नहीं मालिक लेकिन चाय के प्याले तो तैयार करने ही हैं।

यह काम तो तुम्हारे बिना दुन्याशा भी कर लेगी। कुछ देर तो बीमार के पास बैठो। एसे ही तुमसे कुछ बात करना चाहता हूं।

फ़ेनिचका आरामकुर्सी के छोर पर चुपचाप बैठ गई।

देखो अपनी मूछों से उलझते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा बहुत दिनों से मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता था। एसा मालूम होता है जैसे तुम मुझसे डरती हो क्यों?

मैं मालिक?

हां तुम। तुम कभी मेरी ओर आंख उठाकर नहीं देखती। जैसे तुम्हारा हृदय साफ नहीं हो।

फ़ेनिचका लाल हो आई। लेकिन उसकी आंखें घूमकर पावेल पेत्रोविच की ओर मुड़ीं। वह अपनी उसी विचित्र दृष्टि से उसे टोह रहे थे। फ़ेनिचका का हृदय सकपका गया।

तुम्हारा हृदय तो साफ है न क्यों? उन्होंने जोर देकर पूछा।

साफ क्यों नहीं होगा? फ़ेनिचका फुसफुसाई।

"कौन जाने! पता नहीं, किसका बुरा सोचा है तुमने? मेरा? इसकी सम्भावना नहीं। घर में किसी अन्य का? वह भी मुमकिन नहीं। शायद मेरे भाई का? लेकिन तुम उसे प्यार करती हो–करती हो न?"

"हां, करती हूं।"

"अपनी समूची आत्मा और हृदय से?"

"निकोलाई पेत्रोविच को मैं जी-जान से प्यार करती हूं।"

"सच? मेरी ओर देखो, फ़ेनिचका।" (पहली बार उन्होंने उसे इस नाम से सम्बोधित किया था।) "जानती ही हो, झूठ बोलना कितना बड़ा गुनाह है।"

"मैं झूठ नहीं बोल रही हूं, पावेल पेत्रोविच। निकोलाई पेत्रोविच को मैं प्यार न करूं, यह क्या सम्भव है? ऐसा होने पर मैं जी नहीं सकती।"

"और अन्य किसी की भी खातिर तुम उसे छोड़ नहीं सकती?"

"उन्हें भला मैं किसकी खातिर छोड़ सकती हूं?"

"यह कोई कैसे जान सकता है? लेकिन, मान लो, उन्हीं सज्जन की खातिर जो अभी यहां से विदा हुए हैं।"

फ़ेनिचका बैठी न रह सकी। उठती हुई बोली:

"हाय राम, मुझे इतना क्यों सताते हैं, पावेल पेत्रोविच? मैंन आपका क्या बिगाड़ा है? ऐसी बात आप अपने मुंह से कैसे निकाल सके?"

"फ़ेनिचका," उदास लहजे में पावेल पेत्रोविच ने कहा, "जानती हो, मैंने खुद अपनी आंखों से ..."

"क्या देखा था, मालिक?"

"वहां ... कुंज में।"

फ़ेनिचका के बालों की जड़ें तक लाल हो उठीं।

"लेकिन उसके लिए मुझे कैसे दोषी ठहराया जा सकता है?" काफ़ी प्रयास के बाद उसके मुंह से निकला।

अनवरत व्यग्रता से वह पतली हो चली और जैसा कि होना था उसका सलोनापन और अधिक निखर आया।

एक दिन–सुबह का समय था–पावेल पेत्रोविच का जी काफी अच्छा था और वह बिस्तरे से अपने सोफ़ा पर आ गए थे। निकोलाई पेत्रोविच आए और उनकी तबीयत का हाल पूछकर खलिहान चले गए। फनिचका चाय की प्याली लेकर आई और उसे मेज़ पर रखकर लौट ही रही थी कि पावेल पेत्रोविच ने उसे रोका।

ऐसी जल्दी क्या है फ़ेदोसिया निकोलायेवना? उन्होंने कहना शुरू किया। क्या कोई खास काम अटका है?

नहीं मालिक लेकिन चाय के प्याले तो तैयार करने ही हैं।

यह काम तो तुम्हारे बिना दुन्याशा भी कर लेगी। कुछ देर तो बीमार के पास बैठो। ऐसे ही तुमसे कुछ बात करना चाहता हूँ।

फनिचका आरामकुर्सी के छोर पर चुपचाप बैठ गई।

देखो अपनी मूछों में उलझते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा बहुत दिनों से मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता था। ऐसा मालूम होता है जैसे तुम मुझसे डरती हो क्या?

मैं मालिक?

हाँ तुम। तुम कभी मेरी और आँख उठाकर नहीं देखती। जैसे तुम्हारा हृदय साफ नहीं हो।

फनिचका लाल हो आई। लेकिन उसकी आँखें घूमकर पावेल पेत्रोविच की ओर मुड़ी। वह अपनी उसी विचित्र दृष्टि से उसे टोह रहे थे। फनिचका का हृदय सकपका गया।

तुम्हारा हृदय तो साफ है न क्यों? उन्होंने ज़ोर देकर पूछा।

साफ़ क्या नहीं होगा? फ़निचका फुसफुसाई।

हो गया था—अचरज ने इस हद तक उसे अभिभूत कर लिया था। और उस समय जब पावेल पेत्रोविच ने—हां, खुद पावेल पेत्रोविच ने ही—उसका हाथ उठाकर अपने होंठों से लगाया और बिना चूमे ही होंठों से उसे सटाए रहे और सिर्फ़ रह रहकर—बरबस और बेसुध—उसांसें भरते रहे...

"हे भगवान," फ़ेनिचका ने सोचा, "कहीं ऐसा तो नहीं कि इन्हे कोई दौरा पड़नेवाला हो..!"

उस क्षण खण्डहर जीवन की तमाम स्मृतियां उस आदमी को थपेड़े मार रही थीं।

तभी जीने की सीढ़ियां तेज़ डगों के नीचे चरमरा उठी ... उन्होंने उसे अलग धकेल दिया और खुद अपने तकिए पर लुढ़क गए। दरवाजा खुला और निकोलाई पेत्रोविच ने भीतर पांव रखा। वह प्रसन्नता से खिले थे, चेहरा ताजगी और गुलाबी आभा से दमक रहा था। मित्या, अपने पिता की भांति ताजगी और गुलाबीपन लिए, केवल क़मीजनुमा फतुरी पहने, उनके सीने पर उछल और किलबिला रहा था। उसके नंगे पांवों की छोटी छोटी उंगलियां घर के कते-बुने उनके कोट के बड़े बड़े बटनों में रह रहकर उलझ जाती थी।

फ़ेनिचका अनायास ही उनकी ओर लपकी, उनके तथा अपने बच्चे के इर्द-गिर्द अपनी बांहें डाली और उनके कंधे से अपना सिर सटाकर कुनमुनाने लगी। निकोलाई पेत्रोविच चकित रह गए—उनकी लजीली और गंभीर फ़ेनिचका ने उनके प्रति अपने प्रेम का प्रदर्शन किसी तीसरे व्यक्ति के सामने आज तक कभी नहीं किया था।

"अरे, आज तुम्हें यह क्या हुआ?" उन्होंने कहा और अपने भाई की ओर एक नजर डालते हुए मित्या को फ़ेनिचका के हाथो में सौंप

दिया। फिर पावेल पेत्रोविच के पास जाकर पूछा "कही ऐसा तो नही कि आपकी तबीयत फिर गडबडा गई हो?"

पावेल पेत्रोविच ने कैम्ब्रिक के रूमाल में अपना चेहरा दुबका लिया।

"नही कुछ नही मैं ठीक हू बल्कि कहिए कि कही अच्छा महसूस कर रहा हू।"

"लेकिन आपको सोफे पर आने में इतनी उतावली नहीं करनी चाहिए।" फिर फेनिचका की ओर मुडते हुए बोले "अरे, तुम कहा जा रही हो?" लेकिन वह तब तक बाहर निकलकर दरवाजा बद भी कर चुकी थी। "तुम्हे दिखाने के लिए ही तो मैं नन्हे को लेकर यहा आया था—यह कि अपने ताऊजी के लिए वह कितना ललकता है। लेकिन वह उसे लेकर भाग क्यो गई? तुम दोनो के बीच यहा कुछ कहा-सुनी तो नही हुई?"

"भाई!" पावेल पेत्रोविच ने गभीर भाव से कहा।

निकोलाई पेत्रोविच चौंके। सहमकर स्तब्ध-से रह गए, जाने क्यो।

"भाई," पावेल पेत्रोविच ने दोहराया, "मेरा एक अनुरोध है। वचन दो कि उसे पूरा करोगे।"

"कैसा अनुरोध? क्या कहना चाहते है आप?"

"वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। तुम्हारे जीवन की समूची खुशी, मेरी समझ में, उसपर निभर करती है। इधर काफी मैंने विचार किया है, उस बात पर जो मैं तुमसे कहने जा रहा हू भाई, अपना दायित्व पूरा करो, एक ईमानदार और खरे आदमी का दायित्व। माया-मोह और उस बुरी मिसाल का अन्त कर दो जो कि तुम रख रहे हो, तुम जो नरो में श्रेष्ठ हो।"

"आप कहना क्या चाहते हैं, पावेल ?"

"यह कि फ़ेनिचका से विवाह कर लो ... वह तुमसे प्रेम करती है, वह तुम्हारे बच्चे की मां है।"

निकोलाई पेत्रोविच सकपकाकर पीछे हटे और हवा में उन्होंने अपने हाथ फेंके।

"और यह आप कहते हैं, पावेल? आप, जिन्हें मैं इस तरह के विवाहों का सदा कट्टर विरोधी मानता रहा हूं। यह आप कहते हैं? सच पूछो तो आपके प्रति सम्मान की भावना का ख़याल करके ही मैंने वह नहीं किया जिसे आपने ठीक ही मेरा कर्तव्य कहा है।"

"तब तो मेरा ऐसा सम्मान करके तुमने ग़लती की," निराशापूर्ण मुसकान के साथ पावेल पेत्रोविच ने कहा, "अब तो मुझे भी कुछ ऐसा मालूम होने लगा है कि बजारोव ने आभिजात्य का जो आरोप मुझपर लगाया था, वह सही था। नहीं, भाई, नहीं, अब समय आ गया है कि दिखावे और सभा-समाज की चिन्ता को विदा कर दिया जाए। हम बूढ़े और निरीह जीव है। समय है कि अब दुनियावी टीमटाम को उतार फेंके। असल बात यह है कि अपना कर्तव्य निवाहना शुरू कर दें, जैसा कि तुम कहते हो। और कोई अचरज नहीं कि इसमें हमारे सुख के दिन भी छिपे हों।"

आलिंगन करने के लिए निकोलाई पेत्रोविच अपने भाई की ओर लपके।

"आपने तो पूर्णतया मेरी आंखें खोल दीं," वह चहक उठे, "मैंने हमेशा ही आपको दुनिया में सबसे दयावान और सबसे चतुर आदमी कहा है, और अब मैं देखता हूं कि आप जितने उदार हैं, उतने ही समझदार भी।"

अरे बस बस जरा सभल के पावेल पेत्रोविच ने टोका अपने इस समझदार भाई की टाग न कचर डालना जो करीब पचास साल की आयु में अधकचरे झडाबरदार की भाति द्वद्व युद्ध में कूद पडा। हा तो इस मामले को अब तय समझा जाए फेनिचका bel e soeur * होगी।

प्यारे पावेल लेकिन आरकादी क्या कहेगा ?

आरकादी ? क्या वह खुशी के मारे छलछला उठेगा ! माना कि विवाह का उसके सिद्धान्तो में स्थान नही है लेकिन समता-समानता की उसकी भावना तो इसपर गर्व का अनुभव करेगी। और सच सोचकर देखा तो हमारी इस उन्नीसवी शती म वर्ग-जाति है भी क्या चीज ! फ्रेंच भाषा का पुट मिलाते हुए उन्होने कहा।

आह पावेल पावेल एक बार और गले लग लेने दो मुझे। घबराओ नही मैं सावधान रहूगा।

दोनो भाई आलिंगन में गथ गए।

कहो क्या खयाल है अगर फेनिचका को अभी इस निर्णय की सूचना दे दी जाए तो? पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

ऐसी जल्दी क्या है? निकोलाई पेत्रोविच ने कहा अरे हा कहीं ऐसा तो नही कि आपने उससे इस बारे में कुछ कहा-सुना हो?

भई खूब ! पावेल पेत्रोविच ने उद्गार प्रकट किया भला उससे क्या कहना-सुनना था ?

यह अच्छा किया। पहले अच्छे हो जाओ यह ऐसी चीज नहीं जो फिर हाथ न आए। इसपर खूब अच्छी तरह से विचार करना और सोचना-समझना जरूरी है

---

* बहू। (फ्रेंच) – स०

"लेकिन तय तो तुम कर चुके हो, कर चुके हो न?"

"बेशक, तय कर चुका हूं, और इसके लिए आपका तहे-दिल से शुक्रगुजार हूं। अब मैं चलता हूं। आपके लिए विश्राम करना जरूरी है। ज्यादा आवेग और विह्वलता आपके लिए अच्छी नहीं ... इसपर फिर बातें करेंगे। अब सो जाइए, मेरे प्यारे भाई, खुदा आपको खूब भला-चंगा बनाए।"

"यह शुक्रिया किस लिए?" अकेला रह जाने पर पावेल पेत्रोविच ने सोचा। "मानो यह उसपर निर्भर न हो! और जहां तक मेरा सम्बन्ध है, विवाह के होते ही मैं यहां से कहीं दूर चल दूंगा—ड्रेस्डन, या फ़्लोरेन्स, और जीवन के अन्तिम क्षणों तक वहीं बना रहूंगा।"

पावेल पेत्रोविच ने माथे पर यू-द-कोलोन के छपके दिए और आंखें मूंद लीं। दिन की रोशनी से आलोकित उनका क्षीण पीला चेहरा शव के सिर की भांति तकिए पर टिका था... और सचमुच वह एक जीवित लाश थे भी!

२५

निकोलस्कोये के बगीचे में कात्या और आरकादी एक ऊंचे ऐश वृक्ष की छांव में एक हरी-भरी मेंड़ पर बैठे थे। उनके पांव के पास उनका शिकारी कुत्ता फ़िफ़ी पसरा था। उसका लम्बा बदन, बहुत ही कमनीय ढंग से कमान की भांति बल खाए था—बिल्कुल 'खरहे की मुद्रा' में जैसा कि शिकारी लोग कहते हैं। कात्या और आरकादी दोनों चुप थे। आरकादी अपने हाथ में एक अधखुली किताब थामे था जबकि कात्या टोकरी में बाक़ी बचे रोटियों के चूरे को चुन चुनकर गौरैयों के एक छोटे से परिवार के सामने फेंक रही थी। गौरैयां भी, अपनी सहज भीरु

ढिठाई के साथ, उसके पात्र के पास ही फुदक और चहचहा रही थी। हल्की हवा के झोंके ऐश वृक्ष के पत्तों को सरसरा रहे थे और थिरकते प्रकाश के स्वर्ण-पीत धब्बे छायादार पथ तथा फ़िगी की कत्थई पीठ पर नाच रहे थे। आरकादी और कात्या गहरी छाव में सिमटे थे और प्रकाश की एकाध रेखा जब तब कात्या के बालों को चमका जाती थी। दोनों में से बोल एक भी नहीं रहा था, लेकिन उनकी यह खामोशी और जिस प्रकार वे पास पास बैठे थे, विश्वासपूर्ण घनिष्ठता के ही सूचक थे। ऐसा मालूम होता था जैसे वे एक दूसरे के अस्तित्व से बेखबर हों, और फिर भी मन ही मन इस समीपता से प्रसन्न हों। उनके चेहरे भी—पिछली बार जब हमने उन्हें देखा था तब से—बदल गए थे। आरकादी अब पहले से ज्यादा शान्त और स्थिर नजर आ रहा था, और कात्या पहले से अधिक प्रफुल्ल तथा अधिक साहसपूर्ण।

"क्या तुम ऐसा नहीं सोचती, कात्या," आरकादी ने कहना शुरू किया, "कि ऐश वृक्ष के लिए रूसी शब्द बहुत ही फबता है। कोई भी अन्य वृक्ष इतने अछूते अन्दाज और सुस्पष्टता के साथ हवा में सिर ऊंचा किए नजर नहीं आता।*"

कात्या ने अपनी आंखें ऊपर उठाई और बुदबुदा उठी "हां।" और आरकादी ने सोचा "कविता बघारने के लिए इसने मुझे झिड़का नहीं।"

"हाइने मुझे पसन्द नहीं," आरकादी के हाथवाली किताब की ओर अपनी आंखों से संकेत करते हुए कात्या ने घोषणा की। "न उस समय

---

* ऐश वृक्ष को रूसी में 'यासेन' कहते हैं जिसका दूसरा अर्थ है स्पष्ट, उजला।—अनु०

जब वह हंसता है, और न तब जब वह रोता है। जब वह किसी सोच में डूबा और उदास होता है, तभी मुझे अच्छा लगता है।"

"और मुझे तब अच्छा लगता है जब वह हंसता है," आरकादी ने अपनी राय दी।

"व्यंग करने की तुम्हारी पुरानी आदत का असर अभी तक नहीं गया। इस समय वही प्रकट हो रहा है..." ("पुरानी आदत का असर!" आरकादी ने सोचा, "काश, बज़ारोव यह सुन पाता।") "ज़रा धीरज रखो, तुम्हारी बाक़ायदा कायापलट हो जाएगी।"

"कौन करेगा मेरी कायापलट? – तुम?"

"कौन क्या – मेरी बहिन, पोरफ़िरी प्लातोनिच जिसके साथ तुम अब नहीं झगड़ते, और मेरी मौसी जिसके साथ तुम उस दिन गिरजा गए थे।"

"लेकिन मैं इन्कार भी तो नहीं कर सकता था, नहीं कर सकता था न? और जहां तक अन्ना सेर्गेयेवना का संबंध है, तुम्हें याद होगा कि अनेक बातों में वह येवगेनी से सहमत थीं।"

"मेरी बहिन उन दिनों उसके असर में थीं, जैसे कि तुम थे।"

"जैसे कि मैं था? तो क्या मैं अब तुम्हें उसके प्रभाव से मुक्त मालूम होता हूं?"

कात्या चुप रही।

"मैं जानता हूं," आरकादी ने फिर कहा, "तुमने कभी उसे पसन्द नहीं किया।"

"मैं उसके भले-बुरे होने की परख नहीं कर सकती।"

"और क्या तुम जानती हो, कातेरीना सेर्गेयेवना? जब भी तुम्हारे मुंह से मैंने यह उत्तर सुना, मुझे विश्वास नहीं हुआ... ऐसा

एक भा व्यक्ति नहीं है जिसपर हममें से जो भी चाहे अपनी राय न दे सके। यह तो निरा बहाना बनाना है।

अच्छा ता सुनो मैं तुम्हे बताता हू कि वह हा, यह ता मैं ठीक से नहा कह सकती कि उसे नापसद करती हू लेकिन मुझे एसा लगता है जसे वह मेरी प्रकृति से भिन्न जाति का जीव है और मै उसकी प्रकृति से भिन्न जाति की जीव हू और वह तुम्हारी प्रकृति से भी भिन्न है।

सो कैसे?

किन शब्दों में मै इसे व्यक्त करू—वह बनैला है और हम-तुम पालतू।

मै भी पालतू हू?

कात्या ने सिर हिलाया।

आरकादी ने अपना कान खरोंचा।

देखो कातेरीना सेर्गेयेवना, ऐसा कहकर क्या तुम मेरी भावनाओं को ठेस नहा पहुचाती?

क्या क्या तुम बनैला बनना पसन्द करोगे?

बनैला—नहीं लेकिन सबल और प्राणवान—अवश्य।

यह एसी चीज़ नहीं जिसे तुम चाह सको लेकिन तुम्हारा वह मित्र—वह इसे चाहता नहा मगर फिर भी इसमे लैस है।

हु! सो तुम्हारा खयाल है कि अन्ना सेर्गेयेवना पर उसका काफ़ी ज़बर्दस्त असर था?

हा कात्या ने कहा और फिर दबे स्वर मे जोडा लेकिन अधिक दिनों तक कोई भी उनपर हावी नहा रह सकता।

यह तुमने कैसे जाना?

"वह बहुत ही गर्वीली है... नहीं, सो नहीं... वह अपनी आजादी को सबसे ज्यादा महत्व देती है।"

"कौन ऐसा है जो नहीं देता?" आरकादी ने पूछा और उसी क्षण उसके मस्तिष्क में कौंधा: "बेकार, बिल्कुल बेकार!" कात्या के मन ने भी यही कहा: "बेकार, बिल्कुल बेकार!" युवा लोग जो अक्सर मिलते और मित्रतापूर्ण आदान-प्रदान करते हैं, उनके मस्तिष्क भी बराबर एक-से विचारों में रमने लगते है।

आरकादी मुसकराया और कात्या के थोड़ा और निकट खिसकते हुए फुसफुसाया:

"देखो, मुकरना नहीं। साफ़ साफ़ कह दो कि तुम उससे डरती हो?"

"किससे?"

"उसी से," आरकादी ने अर्थभरे अन्दाज़ में दोहराया।

"और तुम..?" कात्या ने पलटकर पूछा।

"मैं भी, लेकिन ध्यान रखना, मैंने कहा, मै भी।"

कात्या ने अपनी तर्जनी उंगली हिलाई।

"अजीब बात करते हो," वह कहती गई, "बहिन जितनी प्रसन्न नजर से तुम्हें अब देखती है, उतना पहले कभी नही देखती थी,—पहली बार जब तुम यहां आए थे तब से कहीं ज्यादा!"

"ऐसा?"

"क्या तुम्हें ऐसा नजर नहीं आता? क्या तुम इससे खुश नहीं हो?"

आरकादी ने सोचा; फिर बोला:

"ऐसा मैंने क्या किया है जो अन्ना सेर्गेयेवना मुझपर इतनी प्रसन्न है? इसका कारण क्या वास्तव में तुम्हारी मां के वे पत्र नहीं हैं जो मैंने उन्हें लाकर दिए है? क्यों, ठीक है न?"

हा इसी लिए साथ हा अन्य कारणा के लिए भी जो मैं तुम्हे नहा बताऊगी।

क्या?

नही बताऊगी बस!

आह समझा—तुम बडी जिद्दिन हो!

हा हू।

और तेज नजरवाली भी।

काया न कनखियो से उसकी ओर देखा।

क्या क्या तुम इससे झुझला उठे हो? आखिर तुम सोच क्या रहे हो?

म सोच रहा हू—इतनी पैनी नजर तुमने कहा से पाई? तुमने जो इतनी भीरु हो जो इतनी अविश्वासपूर्ण हो और सबसे इतना कतराती हो

बहुत कुछ मुझे अपने ही भरोसे छोड दिया गया है। सो जान अनजान मैं कुछ अपने म ही रमना—सोच विचार करना—सीख गई हू। लेकिन क्या म सबसे कतराती हू?

मारवाडी न इतने नजर से उसकी ओर देखा।

यह सब तो ठीक उसने कहना शुरू किया लेकिन तुम जसी स्थिति के लोग—मतलब यह कि तुम जैसे सम्पन्न लोग—विरले ही इस प्रतिभा के धनी होते है। राजा-महाराजाओ की भाति सत्य उनके पास भी आसानी से नही पहुच पाता।

लेकिन म सम्पन्न कहा हू?

मारवाडी सकपका गया। एकाएक उसका आशय पकड नही सका। बाद उसे जसे चेत हुआ जागीर तो सारी इसकी बहिन की है और यह विचार उसे कुछ बुरा नही मालूम हुआ।

"कितने बढ़िया, नफ़ीस ढंग से तुम यह कह गई," वह बुदबुदाया।

"सो कैसे?"

"बहुत ही नफ़ासत से कहा तुमने। बड़ी सरलता से, बिना किसी लाज या बनावट का सहारा लिए। और सुनो, मुझे ऐसा लगता है कि जो लोग यह जानते और मानते हैं कि वे गरीब हैं, उनकी भावना में एक अपना निरालापन—एक खास क़िस्म का दम्भ—घर कर जाता है।"

"ऐसी किसी चीज का मैंने कभी अनुभव नहीं किया, और इसके लिए मैं अपनी बहिन की कृतज्ञ हूं। मैंने तो यों ही, सो भी बात चलने पर, अपनी स्थिति का उल्लेख कर दिया।"

"सो तो ठीक। लेकिन तुम्हें यह भी मान लेना चाहिए कि तुम में उस दम्भ के भी कुछ कण मौजूद हैं जिसका कि मैं अभी जिक्र कर रहा था।"

"जैसे?"

"जैसे यह कि तुम—इस बात के लिए माफ़ करना—किसी धनी से ब्याह नहीं करोगी, नहीं करोगी न?"

"अगर मैं उसे अत्यधिक प्यार करती हूं... लेकिन नहीं, मेरा खयाल है कि तब भी मैं उससे विवाह नहीं करूंगी।"

"ओह, देखा तुमने!" आरकादी ने हुमककर कहा और फिर कुछ रुककर बोला: "तुम उससे विवाह क्यों नहीं करोगी?"

"इसलिए कि हीन दुलहिन का राग सुन चुकी हूं..."

"शायद तुम अपना हाथ सख्त रखना चाहती हो, या..."

"ओह, नहीं! आखिर किस लिए? उल्टे, मैं समर्पण के लिए तैयार हूं। केवल असमानता असह्य है। समर्पण करते हुए आदमी अपना

आत्मसम्मान बनाए रह सकता है। यह बात मेरी समझ में आती है। यह मुक्त है। लेकिन गुलामी का जीवन नहीं, बाज़ आई मैं ऐसे जीवन से!

बाज़ आई ऐसे जीवन से! आरकादी ने प्रतिध्वनि की। क्यों न हो वह कहता गया, अन्ततः तुम्हारी रगों में भी वही खून दौड़ रहा है जो अन्ना सर्गेयेवना की। तुम भी उतनी ही आज़ाद हो जितनी कि वह। बस अन्तर इतना ही है कि तुम उससे ज्यादा घुन्नी हो। मेरा पक्का विश्वास है कि तुम कभी भी, अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में पहल नहीं करोगी, चाहे वे कितनी ही प्रबल और पवित्र क्यों न हों

इसके सिवा अन्यथा क्योंकर हो सकता था?" कात्या ने पूछा।

तुम उतनी ही चतुर भी हो। चरित्र की दृढ़ता भी, अगर ज्यादा नहीं तो तुममें उतनी ही है जितनी कि उसमें "

'कृपा कर मेरी तुलना मेरी बहिन से न करो,' कात्या ने तुरंत टोका। इस तरह तुम मुझे भारी टोटे में डाल देते हो। ऐसा मालूम होता कि तुम्हें यह याद नहीं रहा कि मेरी बहिन सुन्दर हैं, चतुर है और कम से कम तुम्हें ऐसी बात मुंह से नहीं निकालनी चाहिए सो भी इतना गम्भीर चेहरा बनाकर।'

'कम से कम तुम्हें'—भला, क्या मतलब है इसका? और यह तुमने कैसे जाना कि मैं मजाक कर रहा हूं?"

'बेशक, तुम मजाक कर रहे हो!"

क्या तुम ऐसा सोचती हो? लेकिन जो कुछ मैं कह रहा हूं, अगर वही मेरा विश्वास भी हो तो? अगर मैं यह समझता हूं कि अपनी बात को काफी जोरदार ढंग से मैं व्यक्त नहीं कर सका, जैसा कि मुझे करना चाहिए था?'

"तुम्हें समझना मेरे बूते से बाहर है।"

"क्या सचमुच? तो यह कहो कि तुम्हारी तेज़ नजर की तारीफ़ में मैं कुछ जरूरत से ज़्यादा आगे बढ़ गया था!"

"मतलब?"

आरकादी ने कोई जवाब नहीं दिया और उसने दूसरी ओर मुंह फेर लिया। कात्या ने कुछ और चूरे के लिए डलिया को टटोला और जो मिला उसे गौरैयों के लिए फेंक दिया। लेकिन उसके हाथ की हरकत कुछ इतनी तेजी से हुई थी कि चुगने के बजाय गौरैयां दूर उड़ गईं।

"कातेरीना सेर्गेयेवना," सहसा आरकादी ने कहा, "शायद तुम्हारे लिए यह महत्व की बात न हो, मगर मैं तुम्हें इस बात का भान कराना चाहता हूं कि तुम्हारी बहिन हो या कोई और, इस दुनिया में तुमसे बढ़कर मेरे लिए अन्य कोई नहीं है।"

वह उठ खड़ा हुआ और तेज डगों से वहां से चल दिया, मानो इस विस्फोट ने खुद उसे ही चौंका दिया हो।

कात्या के दोनों हाथ, मय डलिया के, उसकी गोद में आ गिरे, और वह सिर झुकाए देर तक आरकादी के ओझल होते हुए आकार को देखती रही। धीरे धीरे उसके गाल लाली से चुनचुना उठे। उसके होंठ अभी भी मुसकराहट से सूने थे और उसकी काली आंखों में एक हैरानी छाई थी, साथ ही कुछ और भी, एक ऐसी भावना जो अभी तक संज्ञाविहीन थी।

"अरे, तुम अकेली हो?" पास ही अन्ना सेर्गेयेवना की आवाज सुनाई दी। "मैं तो यह समझे थी कि तुम आरकादी के साथ बगीचे में गई हो।"

कात्या ने फुरसत के भाव से नजर उठाकर अपनी बहिन की ओर देखा (बहुत ही सुचारु, बल्कि कहिए कि उत्कृष्ट ढंग से सजी वह

पगडंडी पर खड़ी थी और अपनी खुली हुई छतरी की नोक से किसी के कानों को गुदगुदा रही थी) और उतने ही फुरसत के भाव से बोली

"हां, मैं अकेली ही हूं।"

"ओह, समझी!" लघु हंसी हंसते हुए बहन ने चुटकी ली। "तो यह कहो कि वह अपने कमरे में चला गया है, क्यों?"

"हां।"

"क्या तुम दोनों मिलकर पढ़ रहे थे?"

"हां।"

अन्ना सेर्गेयेवना ने कात्या की ठोड़ी पकड़कर उसका सिर ऊंचा किया।

"कहीं ऐसा तो नहीं कि दोनों लड़ पड़े हो?"

'नहीं," कात्या ने कहा और चुपचाप अपनी बहिन का हाथ हटा दिया।

'कितने भारी अन्दाज में जवाब देती हो तुम! मैंने सोचा कि वह यहां मिल जाएगा और कुछ देर साथ टहलने के लिए उससे मैं कहूंगी। जब देखो तब इसके लिए पीछे पड़ा रहता था। और सुनो, शहर से तुम्हारे लिए एक जोड़ी जूता मंगाया है। जाओ और पहिनकर देखो कि ठीक है या नहीं। कल मेरी नजर गई तो देखा कि तुम्हारे जूते फट चले हैं। जाने तुम्हारी क्या आदत है कि तुम अपना काफी ध्यान नहीं रखती—सो भी तब जब तुम्हारे छोटे छोटे पांव इतने लुभावने हैं। तुम्हारे हाथ भी बहुत प्यारे हैं गोकि कुछ बड़े जरूर हैं। सो तुम्हें अपने पांवों पर सबसे ज्यादा ध्यान देना चाहिए। लेकिन किया क्या जाए, रीझना-रिझाना तो तुम जानती ही नहीं।"

अन्ना सेर्गेयेवना पगडंडी पर आगे बढ़ गई। उसका सुन्दर गाउन सरसराहट की धीमी ध्वनि कर रहा था। कात्या भी उठ खड़ी हुई और

हाइने की पुस्तक हाथ में लिए वहां से चल दी – लेकिन जूते पहनकर देखने के लिए नहीं।

"छोटे छोटे लुभावने पांव!" धूप से झुलसती तिदरी की पत्थर की सीढ़ियों पर धीमे और हल्के डग रखते समय वह सोच रही थी। "छोटे छोटे लुभावने पांव यही कहा न तुमने ... तो सुनो, इन्हीं पांवों पर वह पसरा हुआ नजर आएगा!"

वह तुरत लाज से कट गई और लपककर एक ही सांस में बाक़ी पैंड़ियों को लांघ गई।

आरकादी गलियारे को पार कर अपने कमरे की ओर जा रहा था। तभी भंडारी भागता हुआ उसके पास पहुंचा और बताया कि बज़ारोव आपके कमरे में बैठे आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

"येवगेनी!" त्रस्त-सी मुद्रा में आरकादी बुदबुदाया, "क्या वह काफ़ी देर से आए हुए है?"

"नहीं मालिक, अभी अभी आए है। बोले कि अन्ना सेर्गेयेवना को उनके आने की सूचना न दी जाए, बल्कि सीधे आपके कमरे में उन्हे पहुंचा दिया जाए।"

"कौन जाने, घर पर कोई गड़बड़ हो गई हो? आरकादी ने सोचा और भागकर जीना चढ़ते हुए एक ही झटके में दरवाजा खोल डाला। बजारोव पर नजर पड़ते ही वह तुरत आश्वस्त हो गया, हालांकि और अधिक पारखी आंखों से यह छिपा नही रहता कि इस अप्रत्याशित आगन्तुक के पहले से कुछ दुबले लेकिन अभी भी चेतन – स्फूर्तिवान – आकार-प्रकार में आन्तरिक बेचैनी के चिन्ह मौजूद हैं। कंधों पर अपना धूल-धूसरित कोट डाले और सिर पर टोपी लगाए वह खिड़की की ओटक पर बैठा था, और वह उस समय भी वैसे ही बैठा रहा जब आरकादी शोर मचाता उसके गले से लिपट गया।

"भई वाह, तुमने तो चकित कर दिया! कहो, कैसे आए?" आरकादी बार बार दोहरा रहा था और उस आदमी की भांति इधर-से-उधर उचक रहा था जिसे न केवल अपने खुश होने का विश्वास है बल्कि जो अपनी इस खुशी का प्रदर्शन भी करना चाहता है। "आशा है कि घर पर सब ठीक-ठाक है और सब भले-चंगे हैं, क्यों?"

"ठीक-ठाक तो सब है, लेकिन भले-चंगे सब नहीं हैं," बजारोव ने कहा। "लेकिन यह चहकना छोड़ो, क्वास पेय लाने के लिए किसी को रवाना करो, यहां आकर बैठो और गिने-चुने किन्तु—जैसी कि आशा है—सटीक शब्दों में जो कुछ मैं कहने जा रहा हूं, उसे सुनो।"

आरकादी ठंडा पड़ गया, और बजारोव ने पावेल पेत्रोविच के साथ अपने द्वन्द्व-युद्ध का किस्सा उसे बताया। आरकादी स्तब्ध ही नहीं, बल्कि त्रस्त भी हो उठा। लेकिन उसने अपने भावों को प्रकट नहीं होने दिया। इसी में उसे बुद्धिमानी दिखाई दी। उसने केवल इतना ही पूछा कि ताऊजी का घाव सचमुच में खतरनाक तो नहीं है, और यह मालूम होने पर कि घाव दिलचस्प जरूर है, लेकिन डाक्टरी दृष्टिकोण से नहीं, उसके होंठों पर एक वक्र मुस्कान फैल गई, और हृदय एक अज्ञात भय और शर्म से घिर गया। बजारोव से उसके मस्तिष्क की स्थिति छिपी न रही।

"हां, मेरे प्यारे साथी," उसने कहा, "सामन्तों के साथ रहने का ऐसा ही नतीजा होता है। तुम खुद भी सामन्त बन जाओगे—तुम्हें पता भी नहीं चलेगा कि क्या से क्या हो गया—और एक दिन, अनायास ही, राजा-बहादुरों के दंगलों में मूंछों को पैनाते नजर आओगे। सो अपना बधना-बोरिया समेट घर का रास्ता नापने का मैंने तय किया," अपनी कहानी को समेटते हुए बजारोव ने कहा, "और रास्ते में यहां आ उतरा... बेकार झूठ बोलना अगर मूर्खता न समझता तो कहता—

तुम्हे यह सब बताने के लिए ही यहां आया। नहीं, यहां आने की यह हरकत... शैतान ही जानता है कि मैंने क्यों की। देखो न, यह अच्छा ही है अगर आदमी, कभी कभी, आजाद होने के लिए इतना तिलमिला उठे कि अपना टॅटुआ पकड़कर खेत की मूली की भांति अपने आपको जड़ से उखाड़ फेंके : मेरी यह नयी हरकत ठीक ऐसी ही है... लेकिन जिस चीज से मैंने नाता तोड़ा है उसे—उस ज़मीन को जिसमें मैं जमा हुआ था—चलते-चलाते एक बार फिर देखने के लिए मन ललक उठा।"

"मैं विश्वास करता हूं कि जो कुछ तुमने कहा उसका मुझसे सम्बन्ध नही है," आरकादी ने विचलित भाव से कहा, "मैं भरोसा करता हूं कि तुम मुझसे अलग होने की बात नहीं सोच रहे हो?"

बजारोव ने उसे गहरी, क़रीब क़रीब मर्मभेदी, नज़र से देखा।

"ओह, तो क्या सचमुच तुम्हें इससे इतना त्रास होगा? मुझे तो लगता है कि तुम पहले ही मुझसे अलग हो चुके हो। तुम कुछ इतने ज़िन्दादिली और ताज़गी में पगे हो जैसे डेजी का फूल... अन्ना सेर्गेयेवना के साथ निश्चय ही तुम्हारी ठाठ से गुज़र रही होगी।"

"ठाठ से गुजर रही होगी, मतलब?"

"बस, रहने दो। क्या तुम, मेरे छौने, उसके लिए ही यहां नहीं आए? और हां, तुम्हारे रविवारी स्कूलों का क्या हाल है? बोलो, क्या तुम उससे प्रेम नहीं करते? या मामला यहां तक पहुंच चुका है कि तुम विनम्रता का प्रदर्शन कर सकते हो?"

"येवगेनी, तुम जानते हो कि मैंने कभी तुमसे दुराव नहीं रखा। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं, खुदा को साक्षी करके कहता हूं, कि तुम्हारा ख़याल ग़लत है।"

हू। यह भी एक नया वाली है बजारोव ने दव स्वर में कहा लेकिन तुम्हें इस तरह ओर छोर नापने की जरूरत नहीं। सच तो यह है कि मुझे इसमें जरा भी दिलचस्पी नहीं। कोई रोमानवादी होता तो कहता लगता है कि अब अलग अलग रास्ता पकड़ने का समय आ गया। लेकिन मैं केवल इतना भर कहूंगा कि हम एक दूसरे से आजिज आ चुके हैं।

अवगनी

मेरे प्यारे मुनुआ ऐसा कहने में कोई हर्ज नहीं है। जरा सोचो तो यह दुनिया ऐसी चीजों से कितनी भरी है जिनसे लोग आजिज आ जाते हैं। हां तो अब अलविदा की रस्म पूरी कर ली जाए। जब से यहां पांव रखा है जाने कैसी एक माहुस-सी भावना का मैं अनुभव कर रहा हूं मानो कलूगा के गवर्नर की पत्नी के नाम गोगोल के पत्रों की दलदल में मैं धंसा हूं। जो हो मैं कोचवान से कह आया था कि घोड़ों को खोले नहीं उन्हें तैयार रखे।

ओह् नहीं यह नहीं हो सकता।

क्यों?

अपनी मैं कुछ नहीं कहूंगा लेकिन अन्ना सेर्गेयेवना के प्रति यह बहुत बेअदबी होगी जो निश्चय ही तुमसे मिलने की चाह अपने हृदय में संजोए है।

तुम्हारा यह खयाल गलत है समझे।

उलटे मेरी समझ में बिल्कुल ठीक है, आरकादी ने पलटकर जवाब दिया। बेकार नाटक न करो। और सच पूछो तो क्या तुम उसकी खातिर ही यहां नहीं आए?

हो सकता है। लेकिन तुम्हारा खयाल फिर भी गलत है।

जो हो आरकादी की बात ठीक थी। अन्ना सेर्गेयेवना बजारोव

से मिलना चाहती थी और भंडारी के जरिये उसने उसे बुला भेजा। जाने से पहले बजारोव ने कपड़े बदले। पता चला कि उसने अपना नया सूट सबसे ऊपर ही रख छोड़ा था ताकि उसे आसानी से निकाला जा सके।

ओदिनत्सोवा ने उसका स्वागत किया—उस कमरे मे नही जहां उसने इतने अचानक रूप मे अपने प्रेम का इजहार किया था, बल्कि ड्राइंगरूम में। उसने कृपापूर्ण अन्दाज में अपनी उंगलियों के छोर उसकी ओर बढ़ाए, लेकिन उसके चेहरे पर कशमकश का एक भाव छाया था।

"अन्ना सेर्गेयेवना," बजारोव ने अविलम्ब कहा, "सबसे पहले एक बात का मै तुम्हें यक़ीन दिलाना चाहता हूं। तुम्हारे सामने इस मर्त्यलोक का एक ऐसा जीव मौजूद है जो अर्से से अपने होश में आ चुका है और उम्मीद करता है कि उसकी मूर्खता भूली जा चुकी होगी। मै अब एक मुद्दत के लिए विदा हो रहा हूं, और बावजूद इसके कि मैं मोम का पुतला नही हूं, यह तुम भी मानोगी कि हृदय में एक ऐसी खटक लेकर जाना कोई सुखद बात नही होगी कि एक घिनौनी स्मृति मैं तुम्हारे पास छोड़े जा रहा हूं।"

अन्ना सेर्गेयेवना ने एक गहरी सास खींची—उस आदमी की भांति जो एक ऊंची पहाड़ी पर चढ़ता हुआ उसकी चोटी पर पहुंच गया हो, और उसका चेहरा मुसकानों की बन्दनवार से खिल गया। उसने फिर बजारोव की ओर अपना हाथ बढ़ाया और खुद अपने हाथ की दाब से उसके हाथ की दाब का जवाब दिया।

"गड़े मुर्दे उखाड़ने से कोई लाभ नहीं," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा, "इसलिए और भी अधिक—अगर सच पूछो तो—इस मामले में मै खुद [illegible] बेदाग़ नहीं हूं, गुनाह मैंने भी किया. अगर

रोयन रिझान मे नही तो विमी और ढग से। सो जमे हम पहले मित्र थ वम ही बन गए। वह सब एक सपना था क्या था न? और सपनो को कोई याद नही रखता।

वाक कोई याद नही रखता। और फिर प्रम प्रम एक ढकोसला है।

क्या सचमुच? यह जानकर मुझ बहुत खुशी हुई।

सो अन्ना सेगयवना न इस प्रकार अपन आपको व्यक्त किया और इस प्रकार बज़ारोव न अपन आपको व्यक्त किया। दोना न सोचा वे सच बोल रहे ह। लेकिन क्या वह सच था, पूण सच था वह जो उन्होन कहा? यह वे खद भी नही जानत और यह लेखक भी इस मामले म उतना अनजान है। लेकिन बाता में वे कुछ इस तरह रमे थ जमे वे एक-दूसरे की बाता को एकदम सच मान रहे हा।

अय बाता के साथ साथ अन्ना सेगयवना न यह भी बज़ारोव म पूछा कि किरसानोव परिवार के साथ किस प्रकार उसका समय गुज़रा। पावेल पेत्रोविच के साथ द्वद्व की बात उसके होठो तक आई ही थी कि उसने अपन आपको रोक लिया यह सोचकर कि कही वह यह न समझ कि वह बन रहा है। सो उसने जवाब दिया कि वह हर घडी अपन काम मे ही वास्ता रखता था।

और म अन्ना सेगयवना न कहा जान क्या उदासी के भूत न मुझ कुछ इस तरह दवोचा कि ओह जरा सोचो तो कि मैं विदेश तक जान की बात सोचन लगी फिर वह उतर गया। तुम्हारे मित्र आरकादी निकोलायविच आ गए और फिर वही पुराना चरखा चलन लगा अपना वास्तविक चोला मन धारण कर लिया।

वास्तविक चोला —क्या म जान सकता हू कि वह क्या है?

"चाची, कुंवारी कन्या की अभिभाविका, मां–जो भी चाहें, कह लें। लेकिन यह तो बताओ, तुम जानो, आरकादी निकोलायेविच के साथ तुम्हारी मित्रता को मैं पहले कुछ ठीक से समझ नही सकी थी। मै उसे अपेक्षाकृत नगण्य ख़याल करती थी। लेकिन अब उसे अच्छी तरह जानने का मौक़ा मिला, और मैंने देखा कि वह चतुर है... और सब से बड़ी बात यह कि वह युवा है... तुम्हारी और मेरी भाति नही, येवगेनी वसीलियेविच!"

"क्या वह अब भी तुमसे शरमाता है?" बजारोव ने पूछा।

"अरे, तो पहले क्या वह..." कहते कहते बीच में ही अन्ना सेर्गेयेवना रुक गई, और क्षण भर कुछ सोचने के बाद बोली: "अब वह कुछ अधिक आश्वस्त बन गया है, मुझसे बातें करता और बतियाता है। पहले वह कतराता था। साथ ही यह भी सच है कि मैंने कभी उसका संग नही चाहा। कात्या और वह–दोनों में ख़ूब घुटती है।"

बजारोव कुछ खीज-सा उठा। मन-ही-मन सोचा: "नारी के छल-कपट का क्या कभी अन्त नही होता?"

"तुमने कहा कि वह तुमसे कतराता था," उसके स्वर में ताने का कुछ पुट था, "लेकिन यह बात शायद तुमसे छिपी न थी कि वह तुमसे प्रेम करता था।"

"क्या? तो क्या वह भी...?" अचानक अन्ना सेर्गेयेवना के मुंह से निकला।

"हां, वह भी," गम्भीर अन्दाज़ मे सिर झुकाते हुए बजारोव ने दोहराया। "लेकिन क्या तुम कहना चाहती हो कि तुम्हें इसका पता नहीं था, और पहली बार ही यह समाचार तुम सुन रही हो?"

अन्ना सेगयवना न अपनी आखें झुका ली।

तुम्हारा यह खयाल गलत है यवगनी वसीलियविच!

मैं एसा नहा समझता। लेकिन शायद मुझ इसे जुबान पर नही लाना चाहिए था। फिर मन-ही-मन कहा मतलब यह कि तुम्ह अभी और अधिक कौशल स काम लेना सीखना होगा।

ज़िक्र क्यो नही करना चाहिए था? लेकिन मेरा खयाल है कि इस मामल म फिर एक क्षणिक प्रभाव को अत्यधिक महत्व दे रहे हो?

लेकिन छोडो अन्ना सेर्गेयवना, इस विषय को न छडना ही अच्छा है।

सो क्यो? उसन पलटकर कहा और इसके बाद खुद ही दूसरा विषय छड दिया। बावजूद इसके कि उसन उसस यह कहा था और अपन मन को भी यह समझा लिया था कि सारी बाते भुलाई जा चुकी है बज़ारोव की सगत म उसे बडा अटपटा-सा लग रहा था। अत्यन्त निस्सग भाव स बतियाते और यहा तक कि हसी मज़ाक करते हुए भी वह एक अस्पष्ट-सी घबराहट का अनुभव कर रही थी। बहुत कुछ वसे ही जैसे कि जहाज़ के यात्री निस्सग भाव से बतियाते और हसत ह – मानो वे समूची दुनिया को यह जताना चाहते हो कि ठोस धरती पर उनके पाव टिके है लेकिन जैसे ही कोई हल्का-सा हिचकोला या किसी अनहोनी घटना का चिन्ह नज़र आता है उनके चेहरो पर अजीब हवाइया-सी उडन लगती हैं और अनवरत खतरे से त्रस्त उनकी अनवरत चेतना निरावरण हो जाती है।

बज़ारोव के साथ अन्ना सर्गेयवना की बातचीत ज्यादा देर तक नही चली। वह जान किस चिन्ता में खो गई बमन से जवाब देन लगी और अन्त में सुझाव दिया कि चलो बैठक में चल। वहा

राजकुमारी और कात्या मौजूद थी। "और आरकादी निकोलायेविच कहां है?" मालकिन ने पूछा और जब यह मालूम हुआ कि एक घंटे से भी अधिक समय से वह दिखाई नही दिया तो उसे बुलवा भेजा। उसे खोजने में कुछ वक़्त लग गया: वह बाग़ की गहराइयों मे पहुंच गया था और दोनों हाथों पर ठोड़ी टेके किन्ही विचारों में डूबा था। उसके इन विचारों में गहराई और गम्भीरता चाहे जितनी हो, लेकिन निराशा की वेदना नहीं थी। वह जानता था कि अन्ना सेर्गेयेवना बजारोव के साथ अकेली बैठी है, फिर भी उसके हृदय में ईर्ष्या की कोई चुभन नहीं थी, जैसे कि पहले हुआ करती थी। उसका चेहरा एक तरह के कोमल आलोक से निखरा था। एसा मालूम होता था जैसे वह अचरज का, आन्तरिक सुख और एक तरह के संकल्प का, भाव व्यक्त कर रहा हो।

२६

नवीनताओं के प्रति स्वर्गीय ओदिनत्सोव में कोई मोह नहीं था, लेकिन "परिष्कृत रुचि के लिए थोड़ा खिलवाड़" कर लेने में वह कोई हर्ज नहीं समझते थे। इसी का यह नतीजा था कि उनके बग़ीचे में, ग्रीष्म-घर और ताल के बीच, रूसी ईंटों से बनी एक इमारत नज़र आने लगी थी जो देखने में यूनानी बारहदरी की भांति मालूम होती थी। इस बारहदरी या छतदार गलियारे की सबसे पिछली मुंह-बंद दीवार में प्रतिमाएं सजाने के लिए छै आले बने थे। इन प्रतिमाओं को ओदिनत्सोव विदेशों से मंगानेवाले थे। प्रत्येक प्रतिमा निम्न भावों को व्यक्त करती–एकान्त, मौन, चिंतन, उदासी, लज्जा और भावुकता। इनमें से एक, मौन की देवी, अपनी एक उंगली होंठों पर रखे, आ भी गई थी और उसे उसके स्थान पर प्रतिष्ठित भी कर दिया गया

था। लेकिन उसी दिन गढ़ी के बच्चों ने उसकी नाक तोड़ डाली। एक स्थानीय प्लास्तरमाज़ ने ज़िम्मा लिया कि वह नयी नाक लगा देगा जो पुरानी से दूनी बढ़िया होगी, लेकिन इस सबके बावजूद मार्क्सिमोव ने उस प्रतिमा को वहां से हटवाकर खलिहान घर के एक कोने में रखवा दिया। सो बरसों से वह वहीं विराज और स्त्रियों के हृदयों में अंधविश्वासी भीरुता का संचार कर रही थी। बारहदरी का अग्र भाग जाने कब से झाड़ियों ने तोप रखा था केवल खम्बों के शिरोभाग—उनके मत्थे—इस झाड़ झंखाड़ से कुछ उभरे नज़र आते थे। बारहदरी के भीतर, दोपहर में भी, ठंडक रहती थी। अन्ना सेर्गेयेवना, उसी दिन से जब एक घसियत साँप पर उसकी नज़र पड़ी, इधर नहीं फटकती थी। लेकिन कात्या अक्सर यहां आती और प्रतिमा के लिए बने एक बड़े-से पत्थर के आसन पर बैठा करती। यहां की ठंडी छांव में बैठकर वह पढ़ती, काम करती या अपने आपको भावुकता में—चरम शान्ति के उन स्पन्दनों में—लिप्त देती जिनसे हम सभी परिचित हैं। वे मादक क्षण जिनमें हमें अपने चारों ओर तथा भीतर, निरंतर तरंगित जीवन के तेज़ प्रवाह का नाम मात्र का ही भान होता है और एक मूक चेतना हमें अभिभूत कर लेती है।

बज़ारोव के आगमन के अगले दिन कात्या अपनी उसी प्रिय जगह पर बैठी थी। आरकादी इस समय भी उसके साथ था। खुद उसने ही यहां, बारहदरी आने के लिए कात्या को तैयार किया था।

कलेवा से करीब एक घंटा पहले का समय था। ओस में भीगी सुबह दिन की उमस में बदल चली थी। आरकादी के चेहरे पर अब भी कल जैसा ही भाव छाया था। कात्या कुछ चिन्तित नज़र आती थी। नाश्ते के बाद उसकी बहिन उसे अध्ययनकक्ष में लिवा ले गई थी। थोड़ा थपकने और दुलराने के बाद—एक ऐसी चीज़ जिससे

कात्या हमेशा कुछ आशंकित-सी हो उठती थी—उसने सलाह दी कि आरकादी की ओर से जरा चौकस रहे, खासतौर से अकेले में उससे ज्यादा न घुले-मिले। साथ ही यह भी जता दिया कि मौसी और समूचे घर की नजर इसपर पड़ चुकी है। इसके अलावा पिछली सांझ अन्ना सेर्गेयेवना की तबीयत कुछ बेहाल-सी थी, और वह खुद भी एक तरह की सचेत बेचैनी का—जैसे उसने कोई अपराध किया हो—अनुभव कर रही थी। सो आरकादी का अनुरोध तो उसने मान लिया, लेकिन मन ही मन निश्चय किया कि बस, आखिरी बार वह उसके साथ जा रही है।

"कातेरीना सेर्गेयेवना," एक प्रकार की संकोच युक्त स्थिरता के साथ उसने कहना शुरू किया, "एक ही छत के नीचे तुम्हारे संग रहने का जब से मुझे सुख नसीब हुआ है, जाने कितनी चीजों पर मैंने तुमसे बातें की है, लेकिन एक... अरे... एक... मसले को मैंने अब तक नहीं छुआ जो मेरे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कल बातो ही बातों में तुमने मेरी कायापलट होने के बारे मे कुछ कहा था," कात्या की नज़रों की थाह लेते और साथ ही उनसे बचने का भी प्रयास करते हुए वह कहता गया। "सच ही मै बहुत कुछ बदल गया हूं, और इसे तुमसे ज़्यादा भला और कौन जान सकता है—तुम जो कि मेरे इस परिवर्तन का वास्तव में आधार हो।"

"मैं ? मुझे ?" कात्या के मुह से निकला।

"अब मुझमे वह लड़कपन—निरा बछेड़ापन—नही रहा जो कि पहले था," आरकादी कहता गया। "आख़िर चौबीसवें वसन्त की ओर मै बढ़ रहा हूं। अपने को उपयोगी बनाने की कामना मुझमें मौजूद है, सत्य की खोज मे अपनी सारी शक्तियां मै लगाना चाहता हूं। लेकिन मेरे आदर्शो का केन्द्र अब वह नहीं है जो पहले था। पहले की भांति अब

मैं नहीं भटकना। मैं देखता हूं ये आदत बहुत निकट हैं। अब तक मैं खुद अपने में भी यम्बर था, ऐसे निवालों पर मुंह मारता था जिन्हें निगलना मेरे बूते से बाहर था आखिर, हाल ही में, मेरी आंखें खुलीं एक ऐसी भावना का मेरे हृदय में उदय हुआ आह, मैं अपने आपको ठीक स्पष्टता के साथ व्यक्त नहीं कर पा रहा हूं, लेकिन आशा है कि तुम मुझे समझ रही होगी "

कात्या ने कुछ नहीं कहा, लेकिन उसकी आंखें अब आरकादी की ओर नहीं देख रही थीं।

मैं समझता हूं पहले से भी अधिक विह्वलता के साथ उसने कहना शुरू किया और ऊपर, बर्च वृक्ष पर, चाफ्रिंच पक्षी हुमक कर अपना गीत गाए जा रहा था, "मेरा विश्वास है कि हर ईमानदार आदमी का यह कर्तव्य है कि उनके उन लोगों के थोड़े में यह कि उन लोगों के साथ जिन्हें वह अपना समझता है कतई छिपाव न रखे सो मैं मेरा इरादा है "

और यहां तक आकर आरकादी की जबान जवाब दे गई, उसने झोंका-सा खाया, लड़खड़ाई और विराम लेने के लिए मजबूर हो गई। कात्या की आंखें अभी भी धरती पर जमी थीं। लगता था जैसे उसकी समझ में यह नहीं आ रहा है कि वह कहना क्या चाहता है। सो वह अधर में लटकी मालूम होती थी।

"मुझे डर है कि कहीं तुम चौंक न उठो,' साहस बटोरकर आरकादी ने फिर कहना शुरू किया, 'इसलिए और भी अधिक कि एक हद तक यह भावना—ध्यान रहे—यह भावना . तुमसे सम्बन्ध रखती है। कल, तुम्हें याद होगा, तुमने मुझे झिड़का था कि मैं वाजिब संजीदगी से काम नहीं लेता," उस आदमी की भांति जो

दलदल में फंस गया है, जो अनुभव करता है कि हर डग पर वह गहरा धंसता जा रहा है लेकिन फिर भी दलदल से उबरने की आशा में जोर लगाना नहीं छोड़ता, आरकादी कहता गया, "जो युवक है अक्सर उनपर... उन्हें अपना निशाना बनाकर... उस समय भी जबकि वे इसके हक़दार नही होते... इस झिड़की की बौछार की जाती है... अगर मुझमें कुछ और आत्मविश्वास होता..." (डूबते आदमी की भांति आरकादी जैसे छटपटा रहा था– "अरे, खुदा के लिए तुम क्यों नहीं मुझे सहारा देती!" लेकिन वह अभी भी कोई जुम्बिश नहीं कर रही थी।) "अगर मैं सिर्फ़ यह आशा कर सकता..."

तभी अन्ना सेर्गेयेवना की सुस्पष्ट आवाज सुनाई दी:

"हां, अगर मुझे सिर्फ़ तुम्हारे मन पर–जो कुछ तुम जुबान पर लाने जा रहे हो उसपर–भरोसा होता!"

आरकादी के होठों तक आए शब्द वहीं के वही मुरझाकर रह गए। कात्या भी पीली पड़ गई। बारहदरी को ओट में करनेवाली झाड़ियों के पास से एक पगडंडी गुजरती थी। अन्ना सेर्गेयेवना उसपर टहल रही थी। साथ में बजारोव भी था। कात्या और आरकादी को वे दिखाई नही दिए, लेकिन उनका एक एक शब्द उन्हें सुनाई दिया। अन्ना के गाउन की सरसराहट, यहां तक कि उनके सांस लेने की आवाज तक सुनाई दे रही थी। वे कुछ डग बढ़े और फिर एकदम रुक गए, मानो जानबूझकर, ठीक बारहदरी के सामने ही।

"हां तो देखा तुमने," अन्ना सेर्गेयेवना कह रही थी, "हम दोनों ही ग़लत हैं। यौवन का वह पहला वसन्त–वह उल्लास और हुमक–न तुम्हारे पास है, न मेरे, खासकर मेरे। हम दुनिया में थोड़ा-बहुत रम चुके हैं। हम थके-मांदे हैं। हम दोनों–इधर-उधर करने से क्या फ़ायदा–चतुर हैं। पहले हममें एक-दूसरे के लिए

दिलचस्पी पैदा हुई कौतुक न अपने पख पसारे और फिर

और फिर कामो कड़ी में उबाल आया बज़ारोव ने बीच में ही कहा।

नहीं, तुम जानते हो कि हमारे छिटकने का यह कारण नहीं है। लेकिन कारण चाहे जो भी हो तत्व की बात यह है कि हमें एक-दूसरे की जरूरत नहीं थी। हममें जरूरत से ज्यादा ओह क्या कहते हैं भला उसे जरूरत से ज्यादा समानता थी। इसे हम तुरत ही नहीं समझ सके। इसके प्रतिकूल आरकादी

क्या तुम्हें उसकी जरूरत मालूम होती है? बज़ारोव ने पूछा।

आह बस करो यवगनी वसीलियविच। तुम कहते हो कि उसका मन मुझसे रमा है खुद मुझे भी बराबर कुछ ऐसा महसूस होता रहा है कि मैं उसे पसद हू। मैं जानती हू कि उम्र में मैं उसकी चाची-मौसी के बराबर हू लेकिन तुमसे मैं नहीं छिपाऊंगी कि वह अब मेरे ख्यालों में रमता जा रहा है। आह एक अजीब लुभावनापन है इस नवजात और ताजगी में पगी इस भावना में

ऐसे मामलों में आमतौर से सम्मोहन शब्द का ज्यादा प्रयोग किया जाता है बज़ारोव ने बीच में ही कहा। शान्त और स्थिर होते हुए भी उसकी आवाज किसी रिसती हुई कसक के कारण धुधली-सी पड गई थी। इस आरकादी मोम की भाति पिघलकर घनिष्ठ हो उठा था लेकिन उसने तुम्हारे या तुम्हारी बहिन के बारे में एक भी शब्द नहीं कहा यह एक महत्वपूर्ण लक्षण है।

कात्या को जैसे वह अपनी बहिन समझता है अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा और उसकी यह विशेषता मुझे पसद है। फिर भी,

शायद, उनके बीच इतनी घनिष्ठता .मुझे नहीं पनपने देनी चाहिए।"

"यह क्या... वह्नि की आवाज है?" वजारोव ने अलसा कर पूछा।

"वेशक... लेकिन हम खड़े क्यो है? चलिए, टहलते चलें। हमने भी क्या अनोखी वातें शुरू कर दीं? क्यों, क्या तुम्हे ऐसा नहीं मालूम होता? मैं यह सोच तक नही सकती थी कि तुमसे कभी इस तरह से वातें कर सकूंगी। जानते ही हो, मै तुमसे कुछ डरती हूं... और फिर भी तुमपर भरोसा करती हूं। कारण, तुम सचमुच में वहुत ही भले हो।"

"पहली वात तो यह कि मैं क़तई भला नहीं हूं। दूसरे यह कि तुम्हारे लिए अव मै कोई अर्थ नही रखता। फिर भी तुम मुझे कहती हो... यह ऐसा ही है जैसे कोई मुर्दे के सिर पर माला चढ़ाए।"

"येवगेनी वसीलियेविच, हममें इतना वल नही..." उसने कहना शुरू किया, लेकिन हवा का एक झोंका पत्तों को सरसराता उसके शव्दों को वहा ले गया।

"लेकिन तुम, फिर भी, आजाद हो," कुछ रुककर वजारोव ने कहा। वाक़ी शव्द एकाकार हो गए। कुछ सुनाई न दिया। पांवों की आहट दूर तक होती गई... सन्नाटा घिर आया।

आरकादी कात्या की ओर मुड़ा। वह अभी भी उसी मुद्रा में वैठी थी। केवल उसका सिर और अधिक झुक गया था।

"कातेरीना सेर्गेयेवना," उसकी आवाज़ कांप रही थी और उसके हाथों की मुट्ठियां भिंची थीं, "मैं तुम्हें प्यार करता हूं, आखिरी तौर पर और हमेशा के लिए। तुम्हारे सिवा मैं और किसी को प्यार नहीं करता। यही वह चीज है जो मैं तुम्हें वताना,

तुम्हारे मन की बात जानता और तुमसे पाणिग्रहण के लिए कहना चाह रहा था। कारण, मैं धनवान नहीं हूं और मेरा हृदय सभी कुछ न्योछावर करने के लिए हुमक रहा है तुम जवाब क्यों नहीं देती? क्या तुम मेरा विश्वास नहीं करती? क्या तुम समझती हो कि मैं यों ही छलछला रहा हूं? लेकिन पिछले कुछ दिनों की याद करो! क्या तुमने नहीं देखा कि बाकी सभी कुछ—विश्वास करो—बाकी सभी कुछ, वह सब, कभी का विलीन हो चुका है और उसका एक भी चिन्ह अब शेष नहीं रहा है? मेरी ओर देखो, कुछ तो मुह से कहो मैं प्यार मैं तुमसे प्यार करता हूं विश्वास करो मुझपर!"

कात्या ने गीली उजली आखों से उसे देखा और थोड़ी हिचकिचाहट के बाद होंठों पर मुसकान की एक परछाई-सी लाती हुई बुदबुदाई

"हां।"

आरकादी हुमककर खड़ा हो गया।

"'हां'! तुमने 'हां' कहा, कातेरीना सेर्गेयेवना! इसका अर्थ क्या है? क्या इसका अर्थ यह है कि मैं तुमसे प्यार करती हूं, या यह कि तुम मुझपर विश्वास करती हो या या ओह, मुझमें साहस नहीं कि उसे अपनी जुबान पर ला सकू "

"हां," कात्या ने दोहराया, और इस बार उसके समझने में कसर नहीं रही। उसने उसके बड़े बड़े सुन्दर हाथों को अपने हाथों में थामा और आनन्दातिरेक से आत्मविभोर हो उन्हें अपने हृदय से सटा लिया। अपने पैरों पर खड़ा होना तक उसके लिए दुस्वार हो रहा था, और वह बार बार दोहरा रहा था "कात्या, कात्या!" उधर कात्या थी कि उसने एक अजीब अल्हड़ अन्दाज़ में आसू चुआने

शुरू कर दिए थे। वह रोती भी जाती थी और अपने इन आंसुओं पर मृदु मृदु मुसकराती भी जाती थी। जिसने अपनी प्रेयसी की आंखों में ऐसे आंसू न देखे, जिसका हृदय नहीं थरथराया, वह भला क्या जाने कि क्षणभंगुर मानव इस धरती पर कितना सुखी हो सकता है!

अगले दिन, तड़के ही, अन्ना सेर्गेयेवना ने बजारोव को अध्ययनकक्ष में बुलाया और अटपटी-सी हंसी हंसते हुए मुड़ा हुआ एक काग़ज़ उसे थमा दिया। यह आरकादी का पत्र था जिसमें उसने उसकी बहिन से विवाह करने का प्रस्ताव किया था।

बजारोव जल्दी से पत्र पढ़ गया और कुत्सित प्रसन्नता की भावना को, जो सहसा उसके हृदय में उमड़ आई थी, व्यक्त करते करते रुक गया।

"सो यह बात है," उसने कहा, "और तुम, मेरी समझ में कल ही तो, यह सोच रही थीं कि वह कातेरीना सेर्गेयेवना को अपनी बहिन मानता है। हां तो अब क्या इरादा है?"

"तुम क्या सलाह दोगे?" अभी भी वैसे ही हंसते हुए अन्ना सेर्गेयेवना ने पूछा।

"अच्छा तो सुनो," बज़ारोव ने भी हंसते हुए कहा, हालांकि अन्ना सेर्गेयेवना की भांति हंसने की मनःस्थिति में वह भी नहीं था, "मेरा ख़याल है कि तुम्हें इन युवा जनों को अपना आशीर्वाद देना चाहिए। जोड़ी हर लिहाज से अच्छी है। किरसानोव काफी सम्पन्न है, इकलौता लड़का है, और उसका बाप बहुत ही भला आदमी है, वह विरोध नहीं करेगा।"

ओदिनत्सोवा ने कमरे में एक चक्कर लगाया। उसका चेहरा लाल से सफ़ेद हो चला।

तो तुम ऐसा सोचते हो? उसने कहा। अच्छी बात है, मुझे भी इसमें कोई आपत्ति नहीं दिखाई देती। कात्या की खातिर मैं प्रसन्न हूं और आरकादी निकोलायविच की खातिर भी। बेशक उसके पिता का जवाब आने तक मैं राह देखूंगी। मैं खुद उसे ही इसके लिए रवाना करूंगी। आखिर वह सही निकला जो कल मैंने तुमसे कहा था—यह कि हम दोनों बूढ़े चले हैं लेकिन यह कैसे हुआ कि मैं कुछ भी नहीं जान सकी? बड़े अचरज की बात है!'

अन्ना सेर्गेयेवना फिर ठहाकर हंसी और उसी क्षण दूसरी ओर घूम गई।

आज के युवा डाल डाल पात-पात चलने में बड़े चतुर हैं, बजारोव ने भी हंसते हुए टीका की। फिर कुछ रुककर बोला अच्छा तो अब विदा। उम्मीद है कि इस मामले को तुम खुशी के साथ निबटा सकोगी। मैं भी दूर से ही देखकर खुश हो लूंगा।

ओदिनत्सोवा तेजी से उसकी ओर मुड़ी।

क्या क्या तुम जा रहे हो? अब तुम्हें रुकने में भला क्या आपत्ति हो सकती है? रुको न तुमसे बात करने में एक अजीब थरथराहट का अनुभव होता है जैसे किसी गहरे खड्ड के कगारे पर चल रहे हो। एक बार तो हृदय सकपका जाता है, लेकिन फिर—जाने कैसे—हिम्मत बांध बढ़ चलता है। सच रुक जाओ!

रुकने के लिए निमंत्रण और बात करने की मेरी प्रतिभा की खुश कर देनेवाली प्रशंसा दोनों के लिए धन्यवाद, अन्ना सेर्गेयेवना। लेकिन मुझे लगता है कि मैं कुछ जरूरत से ज्यादा लम्बे अर्से से अजनबी वातावरण में रम रहा हूं। उड़न-मछली कुछ समय के लिए ही हवा में निराधार टिकी रह सकती है लेकिन फिर अविलम्ब पानी

में उसका फड़फड़ाकर गिरना अनिवार्य है। सो कृपा कर अब मुझे भी अपने असली ठौर-ठिकाने पर लगने दीजिए।"

ओदिनत्सोवा ने ध्यान से उसे परखा। बजारोव का चेहरा कटु मुसकान से बल खा रहा था। "यह आदमी मुझे प्यार करता था!" उसने सोचा, अचानक तरस का एक भाव उसके हृदय में उमड़ा और संवेदना से अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया।

लेकिन उसका यह भाव उससे छिपा न रहा।

"नहीं," एक डग पीछे हटते हुए उसने कहा, "मैं ग़रीब हूं, लेकिन आज तक मैंने कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया। अच्छा तो विदा मैडम; और बस, भली-चंगी रहना।"

"मेरा विश्वास है कि हमारी यह मुलाक़ात आख़िरी मुलाक़ात नहीं सिद्ध होगी," अन्ना सेर्गेयेवना ने सहज स्निग्धता के साथ कहा।

"हमारी इस दुनिया में जो भी हो जाए थोड़ा है," बजारोव ने जवाब में कहा, सिर झुकाया और बाहर चल दिया।

"सो तुमने अपने लिए एक घोंसला बनाने का निश्चय कर लिया है," उसी दिन, उस समय जबकि अपने सूटकेस के सामने बैठा वह कपड़े रख रहा था, उसने आरकादी से कहा, "जो हो, खयाल बुरा नहीं है। लेकिन इतनी-सी बात के लिए यह लुकाव-छिपाव क्यों? मैं उम्मीद करता था कि तुम किसी दूसरी, सर्वथा भिन्न, डोंगी का पाल संभालोगे। या फिर हो सकता है कि तुम खुद भी अनजाने में ही पकड़े गए?"

"सच पूछो तो तुम्हें छोड़कर आते समय खुद मुझे भी इसका गुमान नहीं था," आरकादी ने जवाब दिया, "लेकिन यह बेकार का बन्धन किस लिए? तुम्हारा यह कहना कि 'खयाल अच्छा है,'—विवाह के बारे में तुम्हारे विचार क्या ऐसी चीज हैं जो मुझसे छिपे हों?"

"ओह मेरे प्यारे मित्र!" बजारोव ने कहा। "तुम्हारी बातें भी एक तमाशा होती हैं। देखा न, तुम्हारी आत्मा के सामने ही मैं क्या कर रहा हूं? मेरे सूटकेस में कुछ जगह खाली है, उसे मैं घास-फूस से भर रहा हूं। जीवन के सूटकेस का भी यही हाल है। जो मन में आए भर लो, बस शून्य नहीं रहना चाहिए। बुरा न मानना, मेहरबानी करके। कात्रेरीना सेर्गेयेवना के बारे में मेरी जो सदा राय रही है, उसे शायद तुम भूले न होगे। कुछ लड़कियां केवल इसी लिए दक्षता का सर्टीफिकेट पा जाती हैं कि वे बड़ा चतुराई से आह भरना जानती हैं। लेकिन तुमने जिस लड़की को चुना है वह तुमसे अपनी बातें मनवाकर छोड़गी और तुम्हें अपने कब्जे में रखेगी, यह मैं दावे से कह सकता हूं। और ऐसा ही होना भी चाहिए।" सूटकेस का ढक्कन फटाक से बंद करते और फर्श से उठते हुए वह कहता गया। "और अब, इस समय जबकि मैं विदा हो रहा हूं, मैं फिर दोहराना चाहता हूं... अपने को भुलावा देने से कोई लाभ नहीं, हम हमेशा के लिए अलग हो रहे हैं और यह तुम खुद भी समझते हो... तुमने समझदारी का काम किया, हमारे जैसे कड़वे, ऊबड़-खाबड़ और एकाकी जीवन के लिए तुम पैदा नहीं हुए। तुममें न साहस है, न क्रोध। तुममें केवल हौसला है, युवक सुलभ जोश है जो हमारे मकसद का नहीं। कुलीन वर्ग के तुम लोग बहुत जोर मारने पर भी शरीफ़ाना नम्रता या शरीफ़ाना विक्षोभ से आगे नहीं बढ़ पाते, जो बिल्कुल बेकार है। लड़ाई से तुम दूर भागते हो और फिर भी अपने को तीसमारखां से कम नहीं समझते, लेकिन हम हैं कि लड़ने के लिए कसमसाते रहते हैं। क्यों न हो, हमारी धूल तुम्हारी आंखों को घायल कर देगी, हमारी गंदगी तुम्हारे उजलेपन को चटकर जाएगी। इसके अलावा हमारे लिए अभी तुम्हारे दूध के दांत तक नहीं टूटे हैं, तुम अनजान ही अपने को सराहते हो, आत्म-भर्त्सना

में—अपने को कोंचने में—तुम रस लेते हो। इन सब चीजों से हम ऊब चुके हैं, कोई नयी चीज हम चाहते हैं। तोड़ने को और बहुत हैं! यों तुम एक अच्छे लड़के हो, लेकिन हो आखिर एकदम मुलायम, कुलीनों के एक उदार घराने की एक चिन्दिया—हां, वोलातू*, जैसा कि मेरे पिता कह उठते।"

"हमेशा के लिए तुम अलविदा कह रहे हो, येवगेनी," आरकादी ने उदास मुद्रा में कहा, "उसके अलावा क्या और कुछ तुम्हारे पास कहने के लिए नहीं है?"

बजारोव अपनी कनपटी खुजलाने लगा।

"है, आरकादी, मेरे पास अन्य शब्द भी हैं, लेकिन मैं उनका प्रयोग नहीं करूंगा, कारण कि ऐसा करना रोमाण्टिकता होगी, दूसरे शब्दों में, छलछला पड़ना होगा। तुम जाओ, शादी करो, अपने नन्हे-से घोंसले को गुदगुदा बनाओ, नन्हे मुन्नों की फ़ौज पैदा करो—जितने अधिक हों, उतना ही अच्छा। वे बढ़िया जीव होंगे, अन्य किसी लिए नही तो केवल इसी लिए कि उन्हें इस दुनिया में वाजिब समय पर आने का सौभाग्य प्राप्त होगा—हमारी-तुम्हारी तरह नहीं। ओह, देखता हूं कि घोड़े तैयार हैं। चलने का समय हो गया। विदा भी सबसे ले चुका ... अच्छा तो ... आओ, गले मिल लिया जाए, ठीक है न?"

आरकादी अपने भूतपूर्व निर्देशक और मित्र के गले से लिपट गया। उसकी आंखों में आंसू छलछला रहे थे।

"ओह, यौवन का यह आवेश!" बजारोव ने स्थिर भाव से कहा। "लेकिन मुझे कातेरीना सेर्गेयेवना पर भरोसा है। देख लेना, कितनी जल्दी वह तुम्हारे घावों पर मरहम लगाती है!"

---

* बस और क्या। (फ़्रेंच)—सं०

अच्छा तो विदा मेरे पुराने साथी, गाडी में बैठ जाने के बाद बजारोव ने आरकादी से कहा और फिर अस्तबल की छत पर सटकर बैठी कागा की जोडी की ओर संकेत करते हुए बोला यह देखो, तुम्हारे लिए एक प्रत्यक्ष दृष्टान्त मौजूद है!

मतलब? आरकादी ने पूछा।

अरे प्रकृति के इतिहास का क्या तुम्हे इतना भी ज्ञान नहीं, या तुम भूल गए कि घर बसाकर बैठनेवाले पक्षियो में काग का दरजा बहुत ऊचा है? बस उसका अनुकरण करो अच्छा तो विदा, श्रीमान!'

गाडी उचककर बढ चली।

बजारोव ने सच ही कहा था। उसी शाम कात्या से बात करते समय आरकादी अपने निर्देशक को एकदम भूल गया। वह अभी से उसके असर में आना शुरू हो गया था। खुद कात्या ने भी यह महसूस किया और इसमे उसे कोई अचरज नहीं हुआ। अगले दिन आरकादी को मारिनो जाना और निकोलाई पेत्रोविच से बात करके मामले को ठीक करना था। अन्ना सेर्गेयेवना युवा लोगो के लिए बाधा नहीं बनना चाहती थी और केवल दुनियादारी का खयाल कर उन्हे जरूरत से ज्यादा देर तक अकेले नहीं रहने देती थी। राजकुमारी को उनकी राह से अलग ही रखने में उसने काफी शानदार भावना का परिचय दिया। आसन्न परिणय के समाचार ने आंसुओ और बेहद झल्लाहट के भवर में उसे डुबा दिया था। अन्ना सेर्गेयेवना भी शुरू शुरू में आशंकित हो उठी थी कि उनके सुख का दृश्य उसके लिए कष्टकर होगा, लेकिन हुआ इससे उलटा न केवल यह कि उनके सुख को देखकर वह अप्रसन्न नहीं हुई बल्कि यह कि वह उसे रमणीय – यहा तक कि हृदय-स्पर्शी मालूम हुआ। उसकी इस अनुभूति में प्रसन्नता भी थी और उदासी भी। लगता है कि बजारोव का

कहना ठीक था," उसने सोचा, "उत्सुकता, निरी उत्सुकता – इसके सिवा कुछ नही, आराम-पसन्दी और स्वार्थपरता ..."

"बच्चो!" उसने सस्वर कहा, "प्यार क्या कोई ढकोसला है?"

लेकिन न कात्या और न आरकादी, उसकी बात समझ सके। दोनों उससे सकुचाते थे। अनजान मे सुने शब्द उनके मस्तिष्क में गहरे अटक गए। लेकिन अन्ना सेर्गेयेवना ने जल्दी ही उनकी खटक दूर कर दी। और इसके लिए उसे विशेष प्रयास भी नही करना पड़ा – कारण, वह खुद भी अब अपनी सहज स्वाभाविक स्थिति में आ गई थी।

२७

बेटे के अचानक लौट आने पर वृद्ध बजारोव दम्पत्ति की खुशी का और भी वारपार नहीं रहा। उन्हें कतई उम्मीद नही थी कि वह इतनी जल्दी लौट आएगा। अरीना व्लासियेवना घर में फिर्की बनी घूमती थी और इस हद तक अभिभूत हो गई थी कि वसीली इवानिच ने 'कुड़क मुर्गी' से उसकी तुलना की; और सचमुच दुमकटी अपनी छोटी जाकेट पहने वह पक्षी की ही भांति दिखाई भी देती थी। और खुद उनका जहां तक सम्बंध था, वह केवल कांखते-कखियाते, अपने पाइप के अम्बर के छोर को दांतों से कुतरते, दोनों हाथों में गरदन को पकड़कर अपने सिर को ऐंठते, मानो यह जांचना चाहते हों कि कोई क़ब्ज़ा तो ढीला नही हो गया है, और मौन आल्हाद में उनका मुंह मटका-सा खुला रह जाता।

"पूरे छै सप्ताह तक जमकर रहने के लिए मैं आया हूं, समझे बुढ़ऊ," बज़ारोव ने उनसे कहा, "और कुछ काम मैं करना चाहता हूं, सो कृपा कर कोई बाधा न डालना।"

बाधा डालने की बात—ओह मैं ऐसा करूंगा कि तुम्हें मेरी दावत तक याद बनी रहेगी। वसीली इवानिच ने जवाब में कहा।

और उन्होंने अपना वचन निभाया भी। बेटे को अपने अध्ययनकक्ष में जमाने के बाद उन्होंने अपने आपको उसकी आंखों से अगर एकदम नहीं तो करीब करीब ओझल-सा ही कर लिया साथ ही अपनी पत्नी की भी लगाम कसी कि वह अपने प्रेम प्रदर्शन को जरा काबू में रखे—एकदम छलछला न पड़े। सुनो प्रिय उन्होंने कहा पिछली बार जब यवगेनी यहां था तो हमने इतना लाड़-दुलार जताया कि उसे कुछ अपच-सा हो गया। अब हमें जरा समझदारी से काम लेना होगा। अरीना व्लासियेवना ने यह मजूर तो कर लिया लेकिन इससे उसके पल्ले कुछ नहीं पड़ा। अपने बेटे को अब वह केवल खाना खाने के समय ही देख पाती और उसे सम्बोधित तक करते भय से कांप उठती। प्यारे यवगेनी वह कहना शुरू करती और इससे पहले कि वह मुंह फेरे उसकी उंगलियां जालीदार बटुवे की डोरियों पर फिसलने लगती और उसकी जबान लड़खड़ाने लगती— नहीं कुछ नहीं मैं तो केवल इसके बाद वह वसीली इवानिच के पास पहुंचती और अपनी ठोडी को हाथ की अंजुली में टिकाती हुई कहती यह कैसे मालूम करें प्रिय कि आज कलेवे में कौन चीज यवगेनी को ज्यादा पसन्द आएगी—गोभी का शोरबा या पुलाव? लेकिन यह खुद तुमने उससे क्यों नहीं पूछ लिया? मैं उसके काम में बाधा डालना नहीं चाहती थी। लेकिन बजारोव ने जल्दी ही अपना वह एकान्तवास छोड़ दिया। उसकी क्रियाशीलता का ज्वार ठण्डा पड़ चला और एक क्लान्त अलसाहट तथा सुन्न कर देनेवाली बेचैनी उसके रोम रोम में सरसराने लगी। उसकी सभी हरकतों में एक अजीब बेढंगापन छाई थी यहां तक कि उसकी चाल-ढाल भी—जिसमें सदा एक दृढ़ता और

अदम्य आत्मविश्वास नजर आता था – बदल गई थी। अब वह अकेले घूमने न जाता और संग-साथ के लिए उसका हृदय हुमकता। बराण्डे में बैठकर अब वह चाय पीता, वसीली इवानिच के साथ बगीचे में चक्कर लगाता और उसके साथ धूम्रपान करता। एक बार उसने फ़ादर अलेक्सेई के बारे में भी पूछा-ताछा। यह परिवर्तन देख वसीली इवानिच का हृदय शुरू में तो उछल उठा, लेकिन उसकी यह खुशी कुछ ज्यादा नहीं टिकी। "येवगेनी को देखकर चिन्ता होती है," अकेले में उसने अपनी पत्नी से दुःखड़ा रोया। "यह नहीं कि वह नाखुश या नाराज हो, अगर ऐसा होता तो भी गनीमत थी, लेकिन वह त्रस्त और दुःखी मालूम होता है, और यही सबसे बुरा है। किसी घड़ी भी अपने मुंह से एक शब्द नहीं निकालता। इससे तो अच्छा होता अगर वह हमें झिड़कता, डाट-डपट ही करता। दिन दिन दुबलाता आ रहा है और चेहरे का रंग ऐसा हो गया है कि जरा भी नहीं देखा जाता।" "भगवान ही मालिक है," वृद्धा फुसफुसाकर कहती, "मै तो उसके गले में पाक तावीज ही डाल देती, लेकिन उसे भला यह कहां सुहाएगा?" एक या दो बार, बडी चतुराई से, वसीली इवानिच ने उसकी थाह लेनी चाही – उसके काम, स्वास्थ्य और आरकादी का जिक्र छेड़ा... लेकिन बजारोव अनमने और उड़ते हुए ढंग से टाल गया और एक दिन तो, यह आभास पाकर कि उसके पिता उसकी टोह लेने की कोशिश कर रहे हैं, झल्लाकर बोला: "यह चोर की तरह तुम क्यों मेरे इर्द-गिर्द मंडराते रहते हो? यह तो पहले से भी बुरा है।" "अरे, बस बस, सो कुछ नहीं!" बेचारे वसीली इवानिच ने हड़बड़ाकर कहा। राजनीति के सहारे टोह लेने में भी उन्हें अधिक सफलता नहीं मिली। एक बार उन्होंने प्रगति और किसान-वर्ग की आसन्न मुक्ति की चर्चा छेड़ी – इस आशा से कि शायद बेटे की दिलचस्पी कुछ

जाग जाग नहिन उसने अनमने अन्दाज में जवाब दिया वन जब मैं बाड़ के पास से गुजर रहा था तो पास ही कहीं कुछ किसान नदेवा के गाने की आवाज सुनाई दी। पुराने बस्तिया गीतों को छोड़ के कोई बकवास गाने रच रहे थे– मरी जान तेरी अन्दाज ने मारा –यह है तुम्हारी प्रगति!

कभी कभी बजारोव टहलता हुआ गाव में निकल जाता और किसी उड़ा के अपने पुराने अन्दाज में किसी एक किसान से बतियाना शुरू कर देता। हाँ तो बड़ऊ वह उससे कहता झटपट यह तो बताओ कि जमिन के बारे में तुम्हारे क्या विचार हैं? कहते हैं कि रूस की समूची शक्ति और उसका भविष्य तुममें समाया है कि इतिहास में तुम एक नये युग का सूत्रपात करोगे–कि तुम हमें एक प्रामाणिक भाषा देओगे और हमारे लिए विधान की दाग-बेल डालोगे हो! बुढ़ऊ या तो गुमसुम बने रहते या ऐसे ही कुछ कह उठते एइयो सो तो हम कर सकते हैं अब तुमी देखो, पर जो है जो है सो हमारा दरजा जो है

मुझे तो बस तुम यह बता दो कि तुम्हारा यह मीर * क्या है? बजारोव बीच में ही टोकता क्या यह वही मीर' है जो तीन मछलियों पर टिका कहा जाता है?

सो तो मालिक जो धरती है जो तीन मछ्छियों पर टिकी है स्थिर-गम्भीर अन्दाज और बड़े बूढ़े बुजुर्ग की भाँति कृपापूर्ण तथा लयदार आवाज में देहाती बुड़ऊ कहते हमारा जो मीर तो जो है सो सब कोई जाने मालिकों की मर्जी पर टिका है चाहे मालिक आप

---

* रूसी भाषा में मीर शब्द के तीन अर्थ हैं देहाती समाज संसार और शान्ति।–अनु०

ही हमारे भाई-बाप हो। औ, मालिक जित्ता सखत होता है, उत्ता ही जादा दहकान उसे चाता है।"

इस तरह के प्रलाप को सुन एक बार बजारोव ने घिन्नाकर कंधे बिचकाए, दहकान को वहीं फटफटाता छोड़ा और मुह मोड़कर चल दिया।

"क्या बतिया रहे थे, बाबा?" संजीदा चेहरेवाले अधेड़ आयु के एक किसान ने अपनी झोंपड़ी की चौखट पर खड़े खड़े ही अपने उस गांव-भाई से पूछा, "क्या बक़ाया के बारे में बतिया रहे थे?"

"अजी राम कहो, जो है सो बक़ाया का उससे भला क्या वास्ता!" पहलेवाले किसान ने जवाब दिया, और इस बार उसकी आवाज में बड़े-बूढ़ों जैसे उस लयदार लहजे का कही नाम तक नही था, उलटे उसमें हिकारत से भरा एक भारीपन आ गया था। "यों ही कुछ बूंकने के लिए छोकरे का जी चर्रा उठा, सो लगा बाबा आदम का राग अलापने। निरा लिफाफ़ा, देखा नही तुमने, क्या जाने कि कुत्ते के कित्ती टांग होती है!"

"एइयो, वह क्या जाने?" दूसरे दहकान ने प्रतिध्वनि की और सिर हिला हिलाकर तथा अपनी पेटियों को कसते हुए वे अपने घर-बार की चर्चा में जुट गए। आह! बजारोव जिसने घृणा से अपने कंधे बिचका लिए थे, बजारोव जो किसानों से बतियाना जानता था (पावेल पेत्रोविच के साथ बहस में उसने ऐसी ही शेखी बघारी थी), बजारोव जो अपने आपमें इतना आश्वस्त था—उसने कभी सपने में भी यह गुमान न किया होगा कि किसानों की नजर में वह गपोड़शंखों की बिरादरी का जीव है ...

लेकिन, अन्ततोगत्वा, बजारोव को भी अपने लिए एक रास्ता मिल गया। एक दिन—उस समय वह भी मौजूद था—वसीली

इवानिच किसी किसान की लजी टाग म पट्टी बाधने म जुटे थ लेकिन बन्ऊ क हाथ काप रहे थ और पट्टी सभाले नहीं सभल रही थी। बेट न उनकी मन्द की और इसके बाद उनकी डाक्टरी में हाथ बटाना शरू कर दिया हालाकि वह अब भी खद अपन तजबाज इलाजा की—जिन्ह उसके पिता नुस्त असम में लाते थ—खिल्ली उडान से नही चूकता था। बजारोव की इस छीटाकशी स वसीली इवानिच जरा भी विचलित नही होते बल्कि वह गदगदा तक उठते। अपन चीकट चोग को पेट क ऊपर दो उगलियो म थामे और अपन पाइप से धुवा छोडत हुए चिडियां उडानवाली अपन बेटे की टिप्पणियो को खुशी से वह सुनते और बदमाशी की मात्रा जितनी ही अधिक उनम होती उतना ही अधिक हार्दिकता के साथ खशी म मगन पिता हसते और कालोंछ चढी उनकी बत्तीसी का एक एक दात चमक उठता। यहा तक कि इन बेतुकी या बेमतलब फाजलियो को कभी कभी वह खुद भी दोहरान लगते। मिसाल के लिए कई दिन तक मौके-बेमौके एक इस मिसरे की माला जपते रहे खदा क घर म कही एसा न कर बैठना! —सिफ इसलिए कि यह मालूम होने पर कि वह प्रात प्रार्थना के लिए गिरजे म जाते ह बजारोव न यह फिकरा उनपर कसा था। खुदा का शुक्र है उन्होने अपनी पत्नी से फुसफुसाकर कहा वह अब कुछ खुश नजर आता है। बस क्या कहू आज तो उसन मुझ एकदम चित्त ही कर दिया! एसा सहयोगी पान की कल्पना मात्र स उनके हृदय का रोम रोम छलछला उठता और गर्व स वह भर जाते। अरे अपना भाग्य सराहो प्रिय मटमैला मरदाना ओवरकोट पहन और सिर पर कसी देहाती टोपी लगाए किसी किसान स्त्री को गुलाब-लोशन की शीशी या हरबन-मलहम की डिबिया देते हुए कहते तुम अपना भाग्य सराहो भली औरत कि मेरा बेटा आजकल यहा आया हुआ है और एकदम नय

वैज्ञानिक तरीकों से तुम्हारा इलाज किया जा रहा है, समझी? इतना बढ़िया डाक्टर फ़्रान्स के शाह नैपोलियन को भी नसीब न हुआ होगा।"
और वह स्त्री जो 'आंव-मरोड़े' की शिकायत लेकर आई थी (हालाकि न वह आंव का मतलब जानती थी और न मरोड़े का) धरती पर माथा टेकती और अंगिया के भीतर से डाक्टर की फ़ीस—अंगोछे के छोर में लिपटे चार अंडे—खोज खाज कर बाहर निकालती।

एक बार बज़ारोव ने सामने से गुजरते कपड़े की फेरी करनेवाले का दांत भी उखाड़ा और हालाकि वह एक बहुत ही मामूली दांत था, लेकिन वसीली इवानिच ने उसे एक तोहफे के रूप में रख छोड़ा, फ़ादर अलेक्सेई को उसे दिखाया और यह कहते न अघाए:

"जरा इस दन्तुल्ले की जडो पर तो ध्यान दो! बजारोव का ही दम था जो उसने इसे उखाड डाला। और वह फेरीवाला, वह तो दांत के साथ ही उठता चला आया... सच, ओक का पेड़ भी उस झटके की ताब न ला पाता ..."

"बहुत खूब!" अन्त में, और कुछ न सूझने पर खुशी से छलछलाते वृद्ध से पिंड छुड़ाने के लिए फादर अलेक्सेई ने कहा।

एक दिन पास के गाव का एक किसान अपने भाई को लेकर वसीली इवानिच को दिखाने लाया। वह टाइफ़स ज्वर से पीड़ित था। घास के एक पूले पर पड़ा बेचारा दम तोड़ रहा था। सारे बदन पर काले चकत्ते हो गए थे और काफी देर से बेहोश था। वसीली इवानिच ने खेद प्रकट किया कि डाक्टरी मदद लेने की बात लोगों को पहले क्यों नही सूझती, और ऐलान किया कि अब कोई उम्मीद नहीं है। और ऐसा ही हुआ भी। किसान अपने भाई को लेकर घर पहुंच भी न पाया कि गाड़ी में ही उसकी मृत्यु हो गई।

इसके तीन दिन बाद वज्राराव ने अपने पिता के कमरे में दाखिल होते हुए पूछा

लूनर कास्टिक होगा थोड़ा-सा?

हां है। क्या करोगे?

जरूरत है   कट को दागना है।

किसके

खुद अपने।

खुद तुम्हारे? सो कैसे? क्यों कर कटा? किस जगह?

यहां उंगली में। आज मैं गांव गया था — जहां से वह टाइफस पीड़ित किसान आया था न वहीं। जान गया, लाश की चीर-फाड़ की जानी थी। और इस तरह के काम का मेरा अभ्यास बहुत दिनों से छूटा था।

तो?

तो यह कि मैंने स्थानिक डाक्टर से कहा कि मुझे करने दो। नतीजा यह कि अपनी उंगली काट ली।

वसीली इवानिच का चेहरा अचानक पीला पड़ गया और बिना एक शब्द कहे दौड़कर अपने अध्ययनकक्ष में पहुंचे और हाथ में लूनर कास्टिक का एक टुकड़ा लिए तुरंत लौट आए। वज्रारोव उसे लेकर चलने को हुआ।

खुदा के लिए वह बुदबुदा उठे, यह मुझ ही को कर लेने दो।

वज्रारोव के होंठों पर एक वक्र मुसकराहट फैल गई।

अभ्यास का मौका हथियाने के लिए उतावलापन तुममें भी कुछ कम नहीं है!

दया करो, मजाक न करो। जरा अपनी उंगली दिखाओ। नहीं, ऐसा कुछ ज्यादा कटा-वटा नहीं है। क्या दुखता है?"

"डरो नही, खूब जोरों से दबाओ।"

वसीली इवानिच ठिठके।

"तुम्हारा क्या खयाल है येवगेनी, लोहे से दागना क्या ज्यादा अच्छा नहीं रहेगा?"

"यह सब बहुत पहले हो जाना चाहिए था। अब, सच पूछो तो, लूनर कास्टिक भी बेकार है। जो छूत लगनी थी, लग चुकी, उसे अब नही रोका जा सकता।"

"क्यों ... रोका क्यों ... नहीं जा सकता . ." जैसे-तैसे, लड़खड़ाते शब्दों में वसीली इवानिच ने कहा।

"मुझे तो ऐसा ही लगता है। चार घटे से भी ज्यादा हो चुके हैं।"

वसीली इवानिच ने घाव को एक बार फिर कास्टिक से दागा।

"क्या उस डाक्टर के पास लूनर कास्टिक नही था?"

"नहीं।"

"ओह, भगवान, भला यह कैसे हो सकता है? कहने को डाक्टर, और उसके पास इतनी आवश्यक चीज भी नही!"

"और उसके चीरफाड़ के सामान–काश कि तुम उन्हे देख पाते!" बजारोव ने कहा और कमरे से चल दिया।

उस सारी रात और अगले दिन अपने बेटे के कमरे में जाने के लिए हर सम्भव बहाने का वसीली इवानिच ने आविष्कार किया, और बावजूद इसके कि उन्होंने दुनिया भर की तो बातें कीं लेकिन घाव के बारे में एक शब्द भी मुह से नहीं निकला, वह कुछ इतना नज़र जमाकर उसकी आंखों में देखते और इतनी व्यग्रता से उसे निहारते कि बजारोव अधिक धीरज न रख सका और उसने वहां से भाग जाने की धमकी दी। वसीली इवानिच ने वायदा किया कि अपनी उद्विग्नता को अब वह

काबू म रखगा इसलिए और भी अधिक कि अरीना व्लामियवना न भी जिसम उन्होन बिना शक सारी बात छिपा रखा था उनको जान हानी शरू कर दी थी कि रात को माने क्यो नही ह तुम्हे हो क्या गया है? पूरे दो दिन उन्होन जैसे-तैसे निभाया हालाकि बट के चेहरे की रगत उन्हे कतई अच्छी नही मालूम हो रही थी लुक छिपकर वह उस देखत रहत थे। लेकिन तीसरे दिन खाने के समय वह और अधिक जब्त नही कर सके। बजारोव आख थकाए बठा था और खान को उसन छुआ तक नही था।

खाना क्यो नही खाते? जितना भी उनसे हो सकता था निश्चिन्तता जताते हुए उन्होन पूछा। खाना तो काफी स्वादिष्ट बना है क्यो?

जी नही करता इसलिए खाया भी नहा जाता।

क्या भूख नही है सिर कैसा है? दुखता तो नही? सहमी-सी आवाज म उन्होन पूछा।

दुखता है। और दुखता क्या नही?

अरीना व्लामियवना चौकस हो सीधी बठ गई।

कृपा कर नाराज न होना थेवगनी वसीली इवानिच कहते गए न हो तो जरा मुझ अपनी नाडी ही देख लन दो।

बजारोव उठ खडा हुआ।

बिना नाडी देखे ही म तुम्ह बता सकता हू कि मुझे तेज बुखार है।

क्या झुरझुरी भी मालूम हाती है?

हा। म चलकर लेटता हू। मेरे लिए थोडी लीमू के फूलो की चाय भज देना। शायद ठड लग गई है।

"तभी तो! रात तुम्हारे खांसने की आवाज आ रही थी," अरीना व्लासियेवना ने कहा।

"ठंड लग गई है," बजारोव ने दोहराया और कमरे से चल दिया।

अरीना व्लासियेवना लीमू की चाय बनाने मे जुट गई। वसीली इवानिच बराबरवाले कमरे में चले गए और निर्वाक आन्तरिक वेदना में अपने बालों में उंगलिया गड़ा दीं।

उस दिन बजारोव बिस्तरे में पड़ा रहा और रात भर एक बोझिल अधजगी तन्द्रा उसे घेरे रही। रात को, एक बजे, जैसे-तैसे जब उसने आंखें खोलीं तो बिस्तरे पर झुके और देवमूर्ति के दिये की मद्धिम लौ में टिमटिमाते पिता के पीतवर्ण चेहरे पर उसकी नजर पड़ी। उसने उनसे चले जाने के लिए कहा। वृद्ध ने बात मान ली, लेकिन फिर तुरत ही दबे पांव लौट आए और किताबोंवाली अलमारी की ओट मे आधा छिपकर स्थिर नजर से अपने बेटे को ताकते रहे। अरीना व्लासियेवना भी निश्चल नही थी। अधखुले दरवाजे के पास चुपचाप खडी होकर वह अपने प्यारे येवगेनी की सांसों को सुनने और वसीली इवानिच की एक झलक पाने का प्रयत्न करती रही। लेकिन सिवा उसकी झुकी हुई पीठ के, जो जरा भी हरकत नही कर रही थी और कुछ नजर न आता। वह इतने को ही बहुत मान एक हल्केपन का अनुभव करती। सुबह होने पर बजारोव ने उठने की कोशिश की। उसका सिर चकराया और नाक से खून आने लगा। वह फिर बिस्तरे पर पड़ गया। वसीली इवानिच चुपचाप टहल मे लगे रहे। अरीना व्लासियेवना आई और पूछा कि उसका जी कैसा है। उसने जबाव दिया: "ठीक हू," और दीवार की ओर अपना मुंह फेर लिया। वसीली इवानिच ने अपनी पत्नी को उड़नछू करने के लिए एक साथ दोनों हाथ हिलाए। रुलाई रोकने के लिए

पत्नी ने अपने होंठ में दांत गड़ाए और वहां से चली गई। ऐसा मालूम होता था जैसे समूचा घर अचानक अंधेरे में डूब गया हो। सभी के चेहरे उतरे थे और हर चीज़ को एक अजीब सन्नाटे ने घेर लिया था। खलिहान के रामा को जो बहुत शोर मचाता था, पकड़कर दूर गांव में पहुंचा दिया गया। उस बेचारे की समझ में ही नहीं आया कि उसके साथ इतनी बेमुरौवती का सलूक क्यों किया गया। वज़ीराव अभी भी वैसे ही दीवार की ओर मुंह किए पड़ा था। वसीली इवानिच ने उससे तरह तरह के सवाल पूछने की कोशिश की लेकिन वज़ीराव उनसे दिक हो उठा और वृद्ध ने—बिना हिले डुले—अपनी आरामकुर्सी की शरण ली। बस, वह कभी कभी अपनी उंगलियां चटखा लेते। कुछ क्षणों के लिए वह बाहर बगीचे में भी जाते और पत्थर की मूर्ति की भांति वहां जाकर खड़े हो जाते मानो किसी अकथनीय आश्चर्य ने उन्हें वहीं-का-वहीं जाम कर दिया हो (उन दिनों उनके चेहरे पर, आमतौर से, स्थायी आश्चर्य का भाव जैसे जमकर रह गया था), और फिर अपने बेटे के पास लौट आते। पत्नी के बेचैन प्रश्नों से वह बचने की कोशिश करते लेकिन अन्ततोगत्वा वह उनकी बांह पकड़ ही लेती और मरोड़-सी लाती करीब करीब आतंकपूर्ण स्वर में पुकार उठती, "उसे क्या हुआ है?" तब वह अपने आपको बटोरने की कोशिश करते और जवाब में अपने होठों पर ज़बरदस्ती एक मुस्कराहट लाना चाहते, लेकिन वह भय से कांप उठते जब देखते कि मुस्कराने के बजाय वह ठठाकर हंसने लगे हैं। आज सुबह ही डाक्टर को बुलवाने के लिए उन्होंने आदमी भेजा था। उनको बेटा कहीं इससे नाराज़ न हो जाए, इसलिए उसे इसकी खबर देना वह ज़रूरी समझते थे।

सहसा वज़ीराव करवट लेकर सोफे पर मुड़ा, पथराई-सी आंखों से पिता की ओर उसने ताका और पीने के लिए कुछ मांगा।

वसीली इवानिच ने उसे थोड़ा पानी दिया और इस बहाने उसे उसका माथा छूने का मौक़ा मिल गया। वह बुखार से भभक रहा था।

"क्या देखते हो, बुढ़ऊ," धीमी भरभराई आवाज में बजारोव ने कहा, "मेरा परवाना आ गया। छूत ने अपना दखल जमा लिया है, दो-एक दिनों में ही मुझे दफ़नाने का नम्बर आ जाएगा।"

वसीली इवानिच का समूचा बदन डोल गया, जैसे उनके पांवों के नीचे की जमीन एकदम खिसक गयी हो।

"येवगेनी," लड़खड़ाती आवाज में उन्होंने कहा, "ये कैसी बातें करते हो? खुदा तुम्हें सलामत रखे। थोड़ी ठंड खा गए हो..."

"बस बस," बिना किसी उतावली के बजारोव ने टोका, "डाक्टर होकर ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए। सारे लक्षण छूत के हैं, यह खुद तुमसे भी छिपा नहीं है।"

"नहीं तो... कहां है... छूत के लक्षण... तुम भी अजीब बात करते हो, येवगेनी!"

"यह सब क्या है?" बजारोव ने कहा और कमीज की आस्तीन उलटकर अपने पिता को वे भयानक लाल चकत्ते दिखाए जो उसके समूचे बदन पर उभर आए थे।

वसीली इवानिच को जैसे काठ मार गया और उनका खून सर्द हो चला।

"तो इससे क्या?" आखिर जैसे-तैसे उन्होंने कहा। "अगर... यह... छूत.. जैसी कोई चीज हो भी.. तो इससे क्या..."

"प्याएमिया," उसके बेटे ने चेताया।

"ए... हां... महामारी ऐनी..."

"प्या-ए-मि-या," निर्मम स्पष्टता के साथ बजारोव ने दोहराया, "मालूम होता है कि आप डाक्टरी का क-ख-ग-घ तक भूल गए हैं!"

"आ   हा   बिल्कुल ठीक   यही सही   बीत जाएगा यह सब भी।

"कोई सम्भावना नहीं। लेकिन छोड़ो, या कुछ नहीं। मुझे उम्मीद नहीं थी कि इतनी जल्दी बिस्तरा गोल करना पड़ेगा। इसी को कहते हैं भाग्य की मार। तुम और मा दोनों का धर्म में जबरदस्त विश्वास है। मा उसका दामन पकड़ना, जितना भी पकड़ा जा सके। परखकर देखना कितना दम है उसमें।" कुछ और पानी पीकर उसने गला तर किया। "और   जब तक मेरा यह दिमाग सही सलामत है   मैं चाहता हूं कि मेरा एक काम कर दो   जानने ही हो   कल या परसों तक यह दिमाग भी इस्तीफा दे देगा। मैं तो अब भी निश्चय से नहीं कह सकता कि मेरे होश-हवास एकदम दुरुस्त हैं। अभी यहां पड़े पड़े मुझे लगा जैसे लाल शिकारी कुत्ते चारों ओर से मेरा पीछा कर रहे हैं, और तुम मुझपर ऐसे नज़र गड़ाए हो मानो मैं कोई जंगली मृग होऊं। लगता है जैसे एक नशा-सा मुझपर सवार हो। क्या मेरी बात तो ठीक से समझ में आ रही है न?"

सच, येवगेनी, तुम बिल्कुल अच्छे आदमियों की भांति बोल रहे हो।'

"तब तो और भी अच्छा है। तुमने मुझे बताया कि डाक्टर को बुलवा भेजा है   चलो तुम्हारा यह खेल भी सही   अब मुझपर भी एक दयायत करो   किसी को भेजकर   "

"आरकादी निकोलायेविच के पास?" वृद्ध ने बीच में ही कहा।

"आरकादी निकोलायेविच कौन?" बज़ारोव कुछ शंकित-सा बुदबुदाया। 'आह, वह नये परोंवाला पंछी? न, उसे परेशान न करो, वह अब घामले का जीव बन गया है। चौंको नहीं, अभी सरसाम शुरू नहीं हुआ। आदिन्त्सोवा—अन्ना सेर्गेयेवना

ओदिनत्सोवा–के पास किसी को भेज दो। इधर ही उसकी जागीर है... क्या तुम उसे जानते हो?" वसीली इवानिच ने सिर हिलाया। "उसके पास मेरा, येवगेनी बजारोव का, सलाम भेजना और उसे यह खबर करना है कि वह मृत्यु-शय्या पर पड़ा है। क्यों, इतना कर दोगे न?"

"जरूर... लेकिन तुम मृत्यु-शय्या पर? भला यह कैसे हो सकता है, येवगेनी... अब, खुद तुम्हीं सोचो .. क्या यह ठीक है?"

"सो मैं नहीं जानता। लेकिन देखो, सन्देश जरूर भेज दो।"

"मैं अभी आदमी रवाना किए देता हूं, और खुद अपने हाथ से उसे एक पुर्जा लिखकर दे दूंगा।"

"नहीं, यह सब किस लिए? उससे सिर्फ इतना कहना है कि मैंने सलाम भेजा है, बस और कुछ नहीं। हां तो अब मैं फिर अपने उन शिकारी कुत्तों के पास पहुंचता हूं। अजीब तमाशा है। मैं मौत का चेहरा देखना चाहता हूं–चाहता हूं कि अपनी कल्पना के डोरों से बांधकर उसे अपनी आंखों के सामने खड़ा करूं लेकिन सब बेकार। ले-देकर एक धब्बा-सा नजर आता है... बस इतना ही, और कुछ नहीं।"

कसमसाकर उसने फिर दीवार की ओर मुंह कर लिया। वसीली इवानिच अध्ययनकक्ष से बाहर आ गए, पांवों को घसीटते अपनी पत्नी के सोने के कमरे में पहुंचे और देवमूर्तियों के आगे घुटनों के बल गिर पड़े।

"दुआ करो, अरीना, दुआ करो," वह कराह उठे, "हमारा बेटा मर रहा है।"

डाक्टर आया–वही डाक्टर जिसके पास बजारोव के लिए लूनर कास्टिक तक नहीं था। रोगी की जांच करने के बाद उसने

चिकित्सा की प्रतीक्षा प्रणाली तजवीजी और बडा तत्परता के साथ यह भी विश्वास प्रकट किया कि रोगी क चगा हान की सम्भावना है।

क्या आपन मझ जसी हालतवाले लागा का कभी मौत के म म स लौटत भी देखा है? दजारोव न पूछा और अचानक सोफ क पास पडी भारी मेज का पाया पकडकर उस इतन जोरा स हिलाया कि वह डगमगा गई

जीवन का सारी हमक अभी भा मौजूद है उसन कहा फिर भी मझ मरना हागा वद्ध आदमी के लिए कम से कम इतना ता है ही कि उसके जीन का अभ्यास शप हो चुका होता है लकिन म शक्ति हो तो अब मौत से इन्कार करके उसे आजमाओ। वह तुमस इन्कार करती है और बस सारा खल खत्म। लकिन यह रो कौन रहा है? थोडा रुककर उसन कहा। मा? बचारी मा! अपना लाजवाब पुलाव अब वह किसे खिलाएगी? और तुम वसीली इवानिच देखता हू कि तुमन भी आसुओ का नल खोल दिया है। अच्छा अगर ईसाइयत सहारा न द तो दाशनिक या वरागी बन जाना। क्या दार्शनिक हान का ता तुम दावा भी किया करते थ न?

कहा का और कसा दार्शनिक! वसीली इवानिच शोक से मर्माहत चीख उठ और आसू उनके गालो पर से ढरक ढरककर धरती को भिगान लग।

बजारोव की हालत हर घडी बद से बदतर होती गई। रोग तजी स लपक रहा था जसा कि जर्राही जहरवाद म अक्सर होता है। अभी उसकी चेतना लुप्त नहा हुई थी और कही हुई बात समझ लेता था। वह अभी भा लड रहा था। नहा म अपन को बदहवास नही होन दूगा अपनी मुट्ठिया का कसत हुए वह फुसफुसाया क्या वाहियात है?

इसके बाद कहता—"आठ में से दस घटाओ,—क्या बचा?"
वसीली इवानिच ऐसे मंडरा रहे थे, जैसे सिर पर भूत सवार हो, एक के बाद दूसरी दवाई तजवीज रहे थे और अपने बेटे के पावों को निरन्तर ढक रहे थे। "ठंडी चादर लपेटे रहो.. कै कराओ... पेट पर अलसी की पुलटिस बांधो... गंदा खून निकालो," बार-बार वह दोहरा रहे थे। डाक्टर, जिसे उन्होंने आग्रहपूर्वक रोक लिया था, सिर हिलाकर उनकी हर बात पर हामी भरता, रोगी को लैमोनेड देता, अपने लिए कभी पाइप की फ़रमाइश करता और कभी 'रूह अफजा' की—यानी वोदका की। अरीना व्लासियेवना दरवाजे के पास एक छोटे से मोढ़े पर बैठी थी और बीच बीच में केवल दुआ करने के लिए वहां से थोड़ा खिसक जाती थी। अभी उस दिन एक दस्ती आईना उसकी उंगलियों से फिसलकर टूट गया था, और इसे वह सदा ही एक बुरा सगुन मानती थी। अनफ़ीसुश्का की समझ में न आता था कि क्या कहकर वह उन्हें ढारस बंधाए। तिमोफ़ेइच घोड़े पर ओदिनत्सोवा को खबर देने चला गया था।

वजारोव ने रात बुरी तरह बिताई... जानलेवा ज्वर ने उसे एक घड़ी चैन नहीं लेने दिया। सुबह होते होते उसने कुछ हल्कापन अनुभव किया। अरीना व्लासियेवना से कहकर उसने अपने बालों में कंघी करवाई, उसके हाथ को चूमा और चाय की एकाध चुस्की ली। वसीली इवानिच के चेहरे पर खुशी की एक रेखा दौड़ गई।

"शुक्र है खुदा का," उसने आश्वासन के साथ कहा, "एक संकट था जो आया... और टल गया।"

"भई वाह!" वजारोव ने कहा, "भला शब्दों में क्या है। कोई एक शब्द चुन लो, जैसे 'संकट' और बस—जी हल्का हो गया। आश्चर्य, मानव किस प्रकार आज भी शब्दों में विश्वास रखता है।

मिमान व लिए उमम वहा कि तुम मूख हो फिर देखो कि किम प्रकार बिना मार म्याए हो उसका चहरा धूल चाटन लगता है वहा कि तुम वड होशियार हो और फिर दखा कि बिना कुछ लिए ही किम प्रकार व गुलगला उठता है।

वजारोव क इम नये मम्भाषण म जो उमकी पुरानी फब्तियो की याद दिलाता था वसीली इवानिच का हृदय खिल गया।

भई वाह! सच बहुत खूब कहा! उनके मुह म बरबम निकला और हाथो को ऐमे डुलाया जमे तालिया बजा रहे हो।

वजारोव क चहरे पर उदाम मुसकराहट दौड गई।

मो तुम्हारा ममय में उमन पूछा क्या सही है—सकट का आना या टल जाना?

मय तो यही सूझता है कि तुम अब बहतर हो और यही मम्य चीज है वसीली इवानिच न जवाब दिया।

ठीक तो खुशी मनाओ यह हमेशा अच्छा होता है। उसके पाम तो किसी को भज दिया है न?

हा बताव।

वजारोव की तबीयत ज्यादा दर तक सभली नही रह सकी। रोगी ने फिर पलटा खाया। वमीली इवानिच वजारोव की पाटी के पाम बठे थ। एमा मालूम होता था जैसे कोई खास तीव्र वेदना उन्हे झझोड रही हो। कई बार उन्होने बोलने की कोशिश की पर बोल नहो सके।

यवगनी आखिर उनके मुह स निकला मेरे बेटे! मेरे लाल! मेरे जिगर के टुकडे!

इस असाधारण सबोधन से वजारोव द्रवित हो उठा उसने अपना सिर तनिक सा फेरा और गशी की स्थिति को झटककर दूर करन का प्रत्यक्ष प्रयास करते हुए बोला

"अरे यह क्या, प्यारे दद्दा ?"

"येवगेनी," कहते कहते वसीली इवानिच बजारोव के सामने घुटनों के बल गिर गए। बजारोव की आखें मुदी थी और वह उन्हें देख नहीं सकता था। वह कहते गए—"येवगेनी, अब तुम पहले से अच्छे हो। खुदा ने चाहा तो तुम अब जरूर ठीक हो जाओगे। लेकिन, अपनी मां की और मेरी खातिर, यह ऐसा समय है जब तुम्हे अपना ईसाई कर्तव्य पूरा कर लेना चाहिए। मेरे लिए बडा हौलनाक है तुमसे यह कहना, लेकिन न कहना और भी ज्यादा हौलनाक होता... यह चिर काल के लिए है, येवगेनी... जरा सोचो तो, क्या अर्थ है इसका ..."

वृद्ध का गला रुंध गया, और उसके बेटे के चेहरे पर एक अजीब-सी छाया रेंग गई, हालाकि वह अभी भी वैसे ही आखें मूदे पड़ा था।

"अगर तुम्हें इससे कुछ राहत मिलती हो तो मुझे कोई उज्र नहीं," आखिर वह बुदबुदाया। "लेकिन मेरी समझ मे नही आता कि अभी ऐसी जल्दी क्या है। खुद तुम्ही ने तो कहा था कि मेरी हालत अब बेहतर है।"

"सो तो है, येवगेनी, तुम्हारी हालत पहले से बेहतर है। लेकिन कौन जाने, खुदा की क्या इच्छा है, और अगर तुम अपना यह फ़र्ज पूरा कर लेते..."

"नही, अभी नही," बजारोव ने बीच में ही कहा, "मै तुमसे सहमत हूं कि संकट आ धमका है। और अगर हमारी बात गलत निकलती है, तो फिर! —बेहोशी की हालत में भी तो आदमी इस अन्तिम धर्माचरण का लाभ ग्रहण कर सकता है..."

"लेकिन, प्यारे येवगेनी..."

नगी अभी कुछ नहीं। और मैं अब सोना चाहता हूँ। दिक न करो।

और उसने अपना सिर फिर पहलेवाली स्थिति में कर लिया।

वद्ध वना से उठा आरामकुर्सी में बठ गया और ठोडी को अपनी हथली म थाम दातो स उगलिया काटन लगा।

सहसा देहात की निस्तब्धता में और अधिक मुखर होकर, कमानीदार गाडी की आवाज उनके कानो स आकर टकराई। गाडी के ? के पहिया की घरघराहट निकट से निकटतर आती आ रही थी, और अब तो घोडे का हिनहिनाना तक सुनाई देने लगा था। वसीली इवानिच तेजी से खिडकी की ओर लपके। दो सीटो की एक गाडी, जिसम चार घाड जते थ झपाट के साथ अहाते म आ गई। भीतर स एकाएक निबध खुशी का एसा ज्वार उमडा कि क्या उचित है और क्या नही की सुध बिसरा वह दौडकर बाहर वराण्डे में निकल आए वर्दी-कसे एक प्यादे ने गाडी का दरवाजा खोला और काला नकाब तथा काला लबादा पहन एक महिला गाडी म मे प्रकट हुई।

म ओदिन्त्सोवा हूं उसन कहा यवगनी वसीलियविच तो अभी सही-सलामत है न? और आप —क्या आप उनके पिता हैं? मैं अपने साथ एक डाक्टर भी लिवा लाई हू।

देवी अदिता हो तुम! वसीली इवानिच के मुह से निकला और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर उसने उद्विग्नता के साथ अपने होठो मे लगा लिया। इस बीच वह डाक्टर जो उसके साथ आया था इत्मीनान क साथ गाडी मे उतर आया। आखो पर चश्मा चढाए वह एक मुस्तकिल-सा आदमी था और शक्ल से जमन मालूम होता था।

"वह जीवित है, मेरा येवगेनी अभी जीवित है, और अब वह निश्चय ही बच जाएगा। मालकिन, मालकिन, देखो न, ईश्वर ने ऐन वक़्त पर इस फ़रिश्ते को हमारे यहा भेजा है..."

"ओह क्या है, भगवान तुम्हारा भला करे," अधूरी-पूरी आवाज मे यही कहती वृद्धा बैठक से बाहर दौड आई और एकदम भ्रमित-सी होकर अन्ना सेर्गेयेवना के पांवों से लिपट गई। वह जैसे आपे में नही थी और अन्ना सेर्गेयेवना के गाउन के छोर को बार बार चूम रही थी।

"अरे, बस, बस, यह आप क्या कर रही है!" अन्ना सेर्गेयेवना उन्हें रोक रही थी, लेकिन अरीना व्लासियेवना को जैसे कुछ सुनाई नही दे रहा था। उधर वसीली इवानिच अलग अपनी माला जपे जा रहे थे—"फ़रिश्ता, फ़रिश्ता!"

"Wo ist der Kranke?"* जब नही रहा गया तो अन्त में डाक्टर ने कुछ झुंझलाकर पूछा, "रोगी कहां है?"

वसीली इवानिच ने अपने आपको संभालकर स्थिर किया।

"यहां, इधर—आइए मेहरबान," उन्होंने कहा और फिर पुराने दिनों की याद कर जर्मन मे बोले—"इधर आइए, वेरतेसतेर हेर कोल्लेगा!**"

"अच्छा!" खीज के साथ बत्तीसी दिखाते हुए जर्मन ने कहा।

वसीली इवानिच उसे लेकर अपने अध्ययनकक्ष में पहुंचे।

"अन्ना सेर्गेयेवना ओदिन्त्सोवा के यहा से ये डाक्टर साहब आए है," बेटे के कान के पास झुकते हुए वह बोले, "और वह ख़ुद भी यहां मौजूद है।"

---

* रोगी कहां है? (जर्मन)—सं०

** मेरे मानवीय सहकर्मी। (जर्मन)—सं०

बजारोव ने तुरत अपनी आखें खोल लीं।

क्या था ... क्या कहा आपने ?

"मैंने कहा कि अन्ना सेर्गेयेवना यहां आ गई है और तुम्हारे लिए एक डाक्टर को भी ले आई हैं – यह है वह महानुभाव!

बज़ारोव की आंख कमरे में घूम गईं।

वह यहां है ? मैं इन्हें देखना चाहता हूं।

देखोगे येवगेनी जरूर देखोगे। पहले डाक्टर साहब से निबट लिया जाए। सीदोर सीदोरिच (यह जिले के डाक्टर का नाम था) तो चले गए इसलिए मैं इन्हें तुम्हारे रोग का इतिहास बता दूंगा और फिर थोड़ा सलाह-मशविरा करेंगे।

बज़ारोव ने जर्मन पर एक नजर डाली।

अच्छी बात है। लेकिन जरा जल्दी कीजिए। और देखिए लैटिन न बूकिएगा मैं जानता हूं कि जाम मॉरित्यूर * का क्या मतलब है।

साफ है कि महोदय जर्मन खूब जानते हैं वसीली इवानिच की ओर मुड़ते हुए धन्वन्तरि के इस नये अवतार ने जर्मन में कहा।

इख हाबे अच्छा हो आप रूसी में बात करें, वृद्ध ने कहा।

आह ! बोल्त अच्छा

और सलाह-मशविरा होने लगा।

---

* मौत आ पहुंची। (लैटिन) – स०

आधे घंटे बाद वसीली इवानिच के साथ अन्ना सेर्गेयेवना ने रोगी के कमरे में प्रवेश किया। डाक्टर ने पहले ही उसके कानों में फुसफुसाकर बता दिया था कि रोगी के अच्छा होने की कोई उम्मीद नहीं है।

उसने बजारोव की ओर देखा ... और दरवाज़े पर जड़वत् खड़ी रह गई। बज़ारोव की पथराई-सी आंखें उसपर जमी थीं। चेहरे पर सूजन थी और रंग राख जैसा हो गया था। देखकर उसे काठ मार गया। भय की सुन्न कर देनेवाली मर्मवेधी भावना से वह आतंकित हो उठी। यह खयाल कि अगर वह उससे प्यार करती होती तो उसकी संवेदनशीलता इससे भिन्न होती, उसके दिमाग में कौंध गया।

"शु-क्रि-या," उसने सप्रयास कहा, "मुझे उम्मीद नहीं थी। यह आपकी मेहरबानी है कि हम फिर मिल रहे हैं, जैसा कि आपने आश्वासन दिया था।"

"अन्ना सेर्गेयेवना इतनी भली है ..." वसीली इवानिच ने कहना शुरू किया।

"पिता, हमें अकेला छोड़ आप यहां से चले जाइए। क्यों, अन्ना सेर्गेयेवना, आपको तो इसमें आपत्ति नही? मैं समझता हूं कि अब ..."

सिर के एक हल्के से संचालन से उसने अपनी पस्त और कमजोर देह की ओर संकेत किया।

वसीली इवानिच कमरे से बाहर चले गए।

"तो शुक्रिया," बजारोव ने फिर दोहराया, "यह शाही मेहरबानी है। कहते हैं कि बादशाहत भी मरते हुओं के पास आकर उन्हें दर्शन दे देती है।"

"येवगेनी वसीलियेविच, मुझे उम्मीद ..."

'है-हां, अन्ना सेर्गेयेवना, अच्छा हो कि हम सच को मालो की ओट न करें। मेरा तो अब किस्सा ही तमाम है। दलदल में धंस चुका हूं। आखिर यही निकला कि भविष्य के तुम्हारे बारे में कोई तुक नहीं थी। मौत की कहानी बड़ी पुरानी है, और पुरानी होते हुए भी नयी बनकर हरेक को वह भेंटती है। अभी भी मैंने घुटने नहीं टेके हैं लेकिन विराम आएगा और तब—यह बुलबुला फुर हो जाएगी! उसने एक क्षीण-सा संकेत किया। "हां तो क्या कहूं मैं तुमसे यह कि मैं तुमसे प्यार करता था? लेकिन इसमें तब भी कोई तत्व नहीं था, अब तो और भी नहीं है। प्रेम एक आकार है और खुद मेरा आकार निराकार हो रहा है। सो अच्छा यही है कि मैं कहूं, तुम कितनी सुन्दर हो। आह, तुम यहां खड़ी ऐसी मालूम होती हो जैसे सौन्दर्य इस धरती पर उतर आया हो "

अन्ना सेर्गेयवना बरबस थरथरा उठी।

"लेकिन छोड़ो। इतना उद्विग्न होने की जरूरत नहीं वहां, उधर, बैठ जाओ ओह नहीं, मेरे पास न आना जानती ही हो मेरा यह रोग उड़कर पकड़ता है।"

अन्ना सेर्गेयवना क्षिप्र गति से कमरे में आई और जिस सोफे पर बजारोव पड़ा था, उसके पास आरामकुर्सी पर बैठ गई।

'मेरी अधिष्ठात्री देवी," वह फुसफुसाया, "ओह कितनी निकट, कितनी यौवनमय, ताजा और निर्मल इस बीभत्स कमरे में ! हां तो विदा! बहुत बहुत दिनों तक जियो, इससे बढ़कर कुछ नहीं, और चूको नहीं—जो पा सको उसका अच्छे से अच्छा उपयोग करो। देखो न, कितना घिनौना दृश्य है यह अधकुचला कीट, लेकिन फिर भी अपनी अकड़ से बाज न आता हुआ। ओह, क्या शान थी मेरी भी—सोचता था, मरना कैसा, अभी इन हाथों में बहुत दम है, बहुत

कुछ मुझे करना है, भीम का सा बल मेरे रगों-रेशों में सरसरा रहा है। लेकिन अब... अब उस भीम की मुख्य चिन्ता यह है कि किस प्रकार आबरू के साथ मरा जाए, हालांकि इसकी रत्ती भर भी किसी को पर्वाह नहीं है कि वह कैसे मरता है... जो हो, दुम मैं कभी नहीं हिलाऊंगा!"

बज़ारोव चुप हो गया और पानी का गिलास टोहने लगा। अन्ना सेर्गेयेवना ने बिना दस्ताने उतारे ही उसे पानी दिया। सांस लेने का साहस तक उसे मुश्किल से हो पा रहा था।

"तुम भूल जाओगी मुझे," उसने फिर कहना शुरू किया। "मृतक जीवितों के संगी नहीं हुआ करते। मेरे पिता, इसमें शक नहीं, तुम्हें बताएंगे कि कितनी बड़ी विभूति रूस से विदा हो गई... निरी बकवास, लेकिन बूढ़े का यह भ्रम न तोड़ना। जानती ही हो... जीवन की इस नीरवता में जो भी सहारा मिल जाए... और मां का ध्यान रखना। चिराग़ लेकर तुम्हारी दुनिया का कोना कोना छान लेने पर भी ऐसे लोग ढूंढे नहीं मिलेंगे... रूस को मेरी जरूरत है... नहीं, प्रत्यक्षतः नहीं है। तो फिर किसकी जरूरत है? जरूरत है मोची की, दर्जी की, कसाई की... जो मांस बेचता है... वह कसाई... लेकिन देखो... ओह, मेरा दिमाग़ गड़बड़ा रहा है... वह एक जंगल..."

बजारोव ने माथे पर अपना हाथ रखा।

अन्ना सेर्गेयेवना ने अपना बदन आगे को झुकाया।

"येवगेनी वसीलियेविच; इधर मेरी ओर देखो..."

उसने तुरत अपना हाथ हटा लिया और कोहनियों के सहारे उचक गया।

विग आकस्मिक आवग के साथ उसन कहा और उसकी आखा में लौ की आखिरी लपक चमक उठी। विग मुनो उस बार मैंन तुम्हे चूमा नही था, तुम जानती हो इस बुझते हुए दिए को अपनी साम का स्पश दो वह बुझ जाए

अन्ना सेर्गेयवना न उसके माथ पर अपन होठ रख दिए।

बस और कुछ नही वह बुदबुदाया और फिर अपन तकिए पर लुढक गया। अब अधकार

अन्ना सेगयवना दब पाव कमरे मे बाहर चली गई।

क्यो? क्सीली इवानिच न फुमफुसाकर पूछा।

सो गए है उसन इतन धीम से कहा कि मुनना मुश्किल था।

बजारोव की मुदी हुई आखें फिर नही खुली। साझ होते न होते उसपर मौत से पहले की बहोशी छा गयी और अगले दिन वह चल बसा। फादर अलक्सेई न धार्मिक कृत्य पूरे किए। अन्तिम क्रिया के दौरान म—उस समय जबकि उसकी छाती को पवित्र तेल से सिक्त किया जा रहा था—उसकी एक आख खुली। एसा मालूम हुआ जसे धार्मिक लबादे से लैस पादरी धूपदान से उठते हुए गूगल के धुए और देवमूर्तिया के सामन जलती मोमबत्तिया को देखकर मरनवाले के बजान चेहरे पर दारुण भय की एक कपकपी-सी दौड गई हो। अन्त में जब प्राण-पखेरू उड और समूचा घर स्यापे की चीखो से गूज उठा तब वसीली इवानिच को एकाएक जैस उन्माद ने जकड लिया। मन कहा था कि म यह बरदाश्त नही करूगा। भरभराई-सी आवाज म वह चिल्ला उठ। उनका चेहरा ऐंठ और दहक रहा था और किसी को अवज्ञा करन की मशा में अपनी मुट्ठी को हवा में हिला हिला कर वह कह रह थ— और मैं यह बरदाश्त नही करूगा कभी

नहीं करूंगा!" लेकिन अरीना व्लासियेवना, आंसुओं में डूबती-उतराती, उसके गले से लिपट गई और वह दोनों घुटनों के बल फ़र्श पर ढह गए। "और वे उसी प्रकार घुटनों के बल बैठे रहे," बाद में नौकरों के वासे में अनफ़ीसुश्का ने वर्णन करते हुए कहा। "एक-दूसरे से सटे, सिर झुकाए, ठीक दोपहर में दो निरीह मेमनों की भांति..."

लेकिन दोपहर की तपन ढल जाती है, फिर सांझ आती है और फिर रात अपना शीतल आंचल फैला देती है जिसकी छाया में थके-मांदे शांति की नींद सोते हैं...

२८

छै महीने बीत चुके थे। श्वेत-केशी शिशिर ऋतु आ गयी थी। निर्मेघ पाले की क्रूर निस्तब्धता, कचर कचर करती बर्फ़ का बोझिल कंबल, पेड़ों पर गुलाबी चमक लिए हिम के फाहे, मुरझाया मरकती आकाश, धुआंरों से उठते धुएं के गुब्बारे, पटापट खुले दरवाजों से निकलते भाप के घूमदार बादल, पाले से खिले चेहरे और ठिठुरे घोड़ों की हड़बड़ाई-सी दुलकियां। जनवरी का दिन था वह। सांझ होने को आ रही थी। शाम की सर्द सांस ने स्थिर हवा को अपने बर्फ़ीले पंजे में जकड़ लिया था और सूर्यास्त की रक्तिम चमक बड़ी तेजी से धुंधला गयी थी। मारिनो के घरों में बत्तियां जल उठी थीं। काली अचकन और उजले दस्ताने पहने प्रोकोफ़िच आज ग़ैरमामूली बाजाब्तगी के साथ सात जनों के लिए दस्तरखान चुन रहा था। आज से हफ़्ता भर पहले, बस्ती के छोटे-से गिरजे में, एक

साथ दो दो नभ लग्न सपन्न हुए थ—बिना किसी तन्त्र मडप के और लगभग बिना किसी साम्यी-साक्षियो के। इन दोनों शादियो में एक तो थी आरकादी और काथा का दूसरी निकोलाई पेत्रोविच और फनिचका की। और आज निकोलाई पेत्रोविच अपने भाई की विदाई म भोज दे रहे थ। भाई कारोबार के सिलसिले में मास्को जा रहे थ। अन्ना सगयवना पहले ही विवाह के तुरन्त बाद मास्को चली गयी थी। विवाह म उसने छोटे नव-दम्पति को काफी उदारता से दहेज दिया था।

ठीक तीन बजे सभी कोई स्थान की मेज पर आ बठे। मित्या को भी पगत म जगह मिली थी। आजकल उसके लिए एक धाय रख ली गयी थी जो किमखाब की टोपी पहनती थी। पावल पेत्रोविच, काथा और फनिचका के बीच म बैठे थ। दोनो शौहर अपनी अपनी बीवी के पासवाली कुर्सी पर थ। हमारे दोस्त इधर कुछ बदल गए थ सभी पहले से अधिक परिपक्व जान पडते थ और सभी के रूप निखर आए थ। सिर्फ पावेल पेत्रोविच दुबले नजर आते थ। लेकिन उनका यह दुबला होना भी उनकी बोलती मुद्रा और आभिजात्य में पगी शानदार भाव भगिमा की नफासत में और भी वृद्धि कर रहा था। फनिचका भी बदल गई थी। ताजा रेशमी लबादा चौडी मखमली टोपी और गले में सोने की लडी पहन वह अदब के मारे निश्चल बैठी थी। वह अपने प्रति और अपने चारो ओर की हर चीज के प्रति सम्मान की भावना से भरी थी। और वह कुछ इस तरह मसकुरा रही थी कि मानो कह रही हो माफ करना इसमें मेरा दोष नहा है। सच पूछो तो बाकी अन्य सब भी मसकुरा रहे थ और हरेक के चेहरे पर इस मुसकराने के लिए माफी मागने का सा भाव छाया था। हरेक को कुछ अटपटा-सा और कुछ उदास-सा लग रहा था। मगर

सच पूछो तो हर कोई बहुत ही खुश था। हर कोई हरेक के साथ बड़े ही मजेदार ढंग से तकल्लुफ बरत रहा था मानो मौन सहमति से सब ने आज कोई निश्छल प्रहसन खेलने का निश्चय कर लिया हो। कात्या उपस्थित जनों में सबसे ज्यादा इतमीनान से बैठी थी; उसकी नजरों में विश्वास की झलक थी और यह आसानी से देखा जा सकता था कि निकोलाई पेत्रोविच उसे अपनी आखो की पुतली की भांति प्यार करते है। भोज शेष होने के पहले वह उठकर खड़े हुए और अपना जाम उठाकर पावेल पेत्रोविच की ओर मुड़े।

"तुम हमे छोडकर जा रहे हो ... तुम हमे छोड़े जा रहे हो, प्यारे भाई," उन्होने कहना शुरू किया, "लेकिन बेशक ज्यादा दिनो के लिए नही! फिर भी मुझे कहने दीजिए कि मैं... यानी हम... किस प्रकार मैं... यानी हम–किस प्रकार हम... ओह, यही तो मुसीबत है। स्पीचबाजी मेरा धंधा नही। तुम्ही कुछ कहते न, आरकादी!"

"नही पिताजी, यों ही अललटप्पू नही।"

"और मुझे क्या तुम तीसमारखां समझते हो? अच्छा तो भाई साहब, आओ, तुम्हे सिर्फ गले ही लगा लें, तुम्हारे लिए शुभ से शुभ कामना करे। बस, इतना ही है कि जल्द से जल्द लौट आना।"

पावेल पेत्रोविच ने हरेक को चूमा–और मित्या को तो ख़ैर कुछ कहना ही नही। इसके अलावा उन्होने फेनिचका के हाथ को भी चूमा, यद्यपि बेचारी ने चुम्बन के लिए कायदे से हाथ पेश तक करना अभी नही सीखा था। फिर नये भरे गये अपने जाम को एक ही बार मे खाली करते हुए पावेल पेत्रोविच ने गहरी आह भरी और कहा: "तुम सभी के सितारे चमके, मेरे दोस्तो! फेयरवेल!" इस अंगरेज़ी के फुदने पर किसी का ध्यान नही गया, पर हरेक का दिल भर आया।

"वज़ारोव की याद में," कात्या ने अपने पति के कान में फुसफुसाकर कहा और दोनों ने अपने जाम खनकाए। प्रत्युत्तर में आरकादी ने उसकी हथेली अपनी मुट्ठी में लेकर कसके दाबी। मगर उसे यह साहस न हुआ कि बज़ारोव की याद में इस जाम का सबके सामने खुलकर प्रस्ताव करे।

तो क्या कहानी यहीं शेष हो जाती है? लगता तो ऐसा ही है। लेकिन शायद कोई पाठक यह जानने के लिए उत्सुक हो कि हमारी कहानी के अन्य पात्र इस समय, ठीक इस क्षण, क्या कर रहे हैं। पाठक की जिज्ञासा को शांत करने को हम तैयार हैं।

हाल में ही अन्ना सेर्गेयेवना ने शादी कर ली है। प्रेम की बदौलत नहीं, बल्कि एतकाद की बदौलत। जिनसे शादी हुई है, वह रूस के भावी जन नेता हैं। ठोस सूझ-बूझ, बहुत ही चतुर वकील। इरादे के पक्के और शब्दावली के बेजोड़ धनी। अभी नौजवान हैं, स्वभाव के अच्छे और दिल के इतने ठंडे जैसे हिम। दोनों में खूब निभती है। हो सकता है मियां-बीवी आगे चलकर जीवन के सुख का, शायद प्रेम के सुख का, आनंद भी ले सकें,—कौन जाने? राजकुमारी 'एक्स' तो मर गई, और मरने के बाद से ही याद से उतर गई। किरसानोव पिता-पुत्र मारिनो में ही बस गए। हालत सुधरने लगी। आरकादी लगन से किसानी करता है। काश्त से खासी आमदनी हो जाती है। निकोलाई पेत्रोविच ने मीरोवोय पोसरेदनिक* का चोला धारण कर

* शांति का मध्यस्थ। यह पद रूस में किसान मुक्ति के बाद कायम हुआ था। मध्यस्थों का काम था किसानों और ज़मींदारों के बीच के झगड़े सुलझाना।—अनु०

लिया है और खूब जी जान से काम करते हैं। लगातार अपने जिले का दौरा ही करते रहते हैं। लम्बी लम्बी तक़रीरें झाड़ते है (वह यह विश्वास संजोए बैठे है कि मूजिकों को बातें समझा दी जानी चाहिए, मतलब यह कि उनके कानों के पास बराबर एक ही बात का ढोल पीट पीटकर उन्हें सुन्न कर देना चाहिए।) हालांकि सच बात यह है कि वह न तो उस शिक्षित कुलीन वर्ग को ही ठीक से संतुष्ट कर पाते हैं जो किसान मुक्ति के सवाल पर (जिसे कि वे सानुनासिक उच्चारण के साथ यमांसिपास्यों कहते हैं) जैसा भी मौका हो—या तो मुंह फुलाये या मुंह लटकाये नजर आते है, और न ही वह उन अशिक्षित कुलीनों को ठीक से संतुष्ट कर पाते है जो किसान मुक्ति को फ़्रांसीसी में यमांसिपास्यों नहीं कह पाते, इसलिए उसे सीधे मुंशीपेशन कहते और "उस मरदूद मुंशीपेशन" को बुरी तरह कोसते हैं। दोनों के लिए ही वह जरूरत से ज्यादा बोदे थे। कातेरीना सेर्गेयेवना एक पुत्र की माता बन गई है, जिसका नाम निकोलाई है। मित्या पैरों से खूब चलने और बोलने लगा है। फ़ेनिचका—फ़ेदोसिया निकोलायेवना—अपने पति और मित्या के बाद अपनी बहू को जितना चाहती है, उतना दुनिया में और किसी को नही। वहू जब पियानो बजाने बैठती है तो वह बिना अघाए सारे दिन बैठी सुनती रह सकती है। लगे हाथ एकाध शब्द प्योत्र के बारे में भी। हिमाक़त और मियांमिट्ठूपन ने उसे एकदम जड़ बना दिया है। उसने अपने उच्चारण का इतना परिष्कार किया है कि उसे समझना मुश्किल है। पर साथ ही, उसने शादी भी कर ली है। दुलहिन के साथ साथ उसने अच्छे खासे दहेज पर भी हाथ साफ़ किया है। दुलहिन का पिता शहर के लिए साग-भाजी उगाता है। बेटी ने दो अच्छे चाहनेवालों को सिर्फ़ इसलिए ठुकरा दिया कि उनके पास घड़ी नहीं

थी। ध्यास के पास घड़ी भी थी, और साथ ही एक जोड़ा पेटेंट जूते भी।

ड्रेसदन में, ब्रूल तेरास पर, शाम को दो से चार के बीच, यानी शौकीनों की हवाखोरी के समय, आपको लगभग पचास साल के एक सज्जन मिल जाएंगे। बाल सारे पक चुके हैं और देखने में हर पहलू से गठिया के रोगी मालूम होते हैं। लेकिन हैं फिर भी वह रूपवान। सज-धज में एक अजीब नफासत लिए और एक ऐसी भाव भंगिमा से लैस जो समाज के ऊंचे हलकों से एक जमाने तक घनिष्ठ सम्पर्क द्वारा ही हासिल की जा सकती है। यह हैं पावेल पत्रोविच। स्वास्थ्य सुधारने के लिए वह मास्को छोड़कर विदेश चले आए और ड्रेसदेन में आकर टिक गए। यहां वह अक्सर अंगरेजों और रूसी अभ्यागतों से मिलते-जुलते हैं। अंगरेजों के साथ तो वह बहुत ही सादगी के साथ, बल्कि क़रीब क़रीब यह कहिए कि बहुत विनय के साथ पेश आते हैं, पर अपने मान का ध्यान रखते हुए। अंगरेजों को वह कुछ उबा देनेवाले मालूम होते हैं, मगर वे उनकी 'मानहुआ आला शराफत' (a perfect gentleman) की कद्र करते हैं। रूसियों के साथ वह वाज़ीगी नहीं बरतते। उनके आगे वह चिड़चिड़ा उठते हैं, अपने को और दूसरों को निशाना बनाकर मज़ाक़ करते हैं, लेकिन यह सब कुछ वह इतनी मोहक नफ़ासत से करते हैं कि ज़रा भी नहीं खलता। वह स्लाविस्ट विचारों का समर्थन करते हैं जिन्हें, जैसा कि सभी जानते हैं, ऊंची सोसायटी में 'त्रे दिस्तिंग्वे' (उच्चता की निशानी) समझा जाता है। रूसी भाषा की वह कोई चीज़ नहीं पढ़ते लेकिन उनकी मेज़ पर चांदी की एक राखदानी पड़ी रहती है जिसकी शक्ल रूसी देहकानों की छाल से बनी चप्पल जैसी होती है। यात्रा के लिए निकले हमारे देश के लोग उनकी खूब दरबारगीरी करते हैं। मातवेई इलिच कोल्याज़िन ने, जो आरज़ी विरोधी दल

में हैं, बोहेमिया-क्षेत्रों की यात्रा के लिए जाते समय उनसे शाहाना भेंट की। और ड्रेसदेन के मूल निवासी तो जैसे उनकी उपासना करते हैं, हालांकि उन लोगों से वह बहुत कम मिलते-जुलते हैं। दरबारी कीर्तन या नाटक घर के लिए कोई भी शख़्स उतनी आसानी और उतनी जल्दी टिकट नहीं हासिल कर सकता, जितनी आसानी और जल्दी से देर हर बारोन फ़ान किरसानोव। वह अब भी अपनी सामर्थ्य भर भलाई करने की कोशिश करते हैं। अब भी थोड़ी चहल-पहल कर लेते हैं—आखिर वह भी तो कभी समाज-सिंह थे न? लेकिन जीवन अब भार बन गया है... इतना अधिक कि वह खुद भी अंदाज नहीं कर पाते... रूसी गिरजे में उन्हें देखिए तो पता चले। वह सबसे अलग, दीवार से लगे, बिना हिले-डुले, होंठों को कसकर कटु मौन धारण किए, काफ़ी देर तक विचारों में खोए खड़े रहते हैं और फिर, यकायक चेतन होकर हाथों की लगभग न मालूम-सी हरकत से अपने सीने पर सलीब के चिन्ह बनाने शुरू कर देते हैं...

कूक्शिना भी विदेश में ही है। आजकल हैदेलबर्ग में जमी है। अब प्रकृति-विज्ञान नहीं, वास्तु-कला पढ़ती है और इस क्षेत्र में नये नियमों का आविष्कार करने का दावा करती है। वह अब भी विद्यार्थियों से खूब संपर्क रखती है, खासकर पदार्थ और रसायन विज्ञान के रूसी विद्यार्थियों से, जिनकी हैदेलबर्ग में भरमार है और जो भोले जर्मन प्रोफ़ेसरों को शुरू शुरू में दीन-दुनिया सम्बंधी अपने गम्भीर चिन्तन से और फिर अपनी निष्क्रियता और निपट काहिली से हैरानी में डाल देते हैं। ऐसे ही दो या तीन रसायन-शास्त्रियों के साथ—जो आक्सीजन और नाइट्रोजन में भले ही तमीज़ न कर सकें लेकिन खण्डन और आत्मगौरव जिनमें एड़ी से चोटी तक भरा है—और महान येलिसेविच के साथ सितनिकोव सन्त

पीतसबग में बोथिल समय काट नता है। गितनिवाव भी महानता के दावेदारा म मे है और उसका विश्वास है कि वह बज़ारोव के लक्ष्य को पूरा कर रहा है। कहनवाने कहत है कि अभी हाल ही में उसकी पिटाई हा चकी है लेकिन पीटनवाल को उसन भी नहीं बख्शा किसी टुवडियल छरछन्दी अखबार में छरछुद मे उहान एक छोटा-सा पैरा छपाया कि उम मारनवाना कायर था। इसे वह व्यंग कहता है। उसके पिता पन्त की भांति उस उल्लू बनाते है और उसकी पत्नी उसे निरा बुद्धू और निखारिया समझती है।

रूस के दूर दहात में एक छोटा-सा कब्रिस्तान है। करीब करीब हमारे सभी कब्रिस्तानो की भाति इसकी दशा भी दयनीय है चारो तरफ के खाई-खड्डो म झाड-झखाड उग है लकडी के काई चढ़ सलीब आग को झुक आए हैं और उन छतरियो के नीचे जिनपर कभी रग रागन था सड रहे है। कब्रों के ऊपर के पत्थर अपनी जगह से उखड आए ह जैसे कोई उह नीचे मे धकेल रहा हा दो या तीन टेढ निरछ पेड ह जिनसे नाम मात्र को ही छाया होनी है भेडें बनी उद्दडता म कब्रा पर घूमती है। लेकिन एक कब्र एसी है जिसे न काई आदमी हाथ लगाता है न कोई जानवर रौंदता है केवल पक्षी उसपर उतरन ह और प्रभात की वला में अपने गीत गा जाते है। कब्र के चारा तरफ लाहे का एक बाडा है और इसके दोनो ओर फ़र के दो वृक्ष खड ह। इसी कब्र में सोता है यवगनी बज़ाराव। पास के गाव मे अक्सर यहा एक अपाहिज वद्ध पुरुष और स्त्री—पति और पत्नी—आते हैं। एक-दूसरे को सहारा देते अपने थके पावो को घसीटते हुए वे आग बढ़ते है। वे बाड म दाखिल हात है और फिर घुटनो के बल गिरकर बहुत देर तक और फूट फूट कर रोते रहते है। बहुत देर तक वे उस मूक शिला को देखते रहते है जिसके नीचे

उनका बेटा चिरनिद्रा में निमग्न है। दो एक शब्द वे एक-दूसरे से कहते है, क़ब्र के पत्थर की धूल पोंछते हैं, फ़र की नीचे को झुक आई शाखा सीधी करते है, और फिर प्रार्थना करने लगते हैं। वे अपने को उस स्थान से हटा नहीं पाते जहां अपने बेटे और उसकी स्मृतियों के वे इतने निकट हैं... क्या उनकी प्रार्थनाएं, उनके आंसू, निष्फल जाएंगे? क्या प्रेम, अलौकिक आभा से घिरा सच्चा प्रेम, सर्वशक्तिमान नहीं होता? इतना ही नही! क़ब्र में सोया हृदय कितना ही वासनामय, कितना ही पापी, कितना ही विद्रोही क्यों न हो, उसपर खिले फूल अपनी मासूम आंखों से तुम्हारी ओर बड़ी निष्कपटता से देखते हैं; वे केवल अनन्त शांति की ही बातें, 'तटस्थ' प्रकृति की महान शांति की ही बातें, हमसे नही कहते; वे हमसे अनन्त समन्वय और अनन्त जीवन की बातें भी कहते है....